श्रीगणेशायनमः ॥

अथ ज्ञान तरंग ॥

सो० ॥ पातन। थकी बाल तासुतनय शिव चन्द्रधर। अव तारककाज तिहुपुरपूज्य सुबिघ्न हर ॥ वंदत तव पद धूरि करौ कृपा वारण बदन। उपजै आनँद भूरि देहु सुमति हरि कुमति तन ॥ दो० ॥ है अखण्ड अविनाश जो पुरुष पुरातन ईश। वेद देव मानस उरग ध्यावत जाहि मुनीश ॥ चौ० ॥ वेद चारि जे सब जग जानै। ऋग यजु साम अथर्व बखानै ॥ जो ऋगवेद सो और बतावै। यजुर्वेद कुछ और सुनावै ॥ सामवेद की अकथ कहानी। समुझहिं चतुर न जाइ बखानी ॥ कहै अथर्वण आन प्रकारा। एक ब्रह्म हित चारि बिचारा ॥ दो० ॥ चारौ ध्यावत एकही बरणत गुण गंभीर। ज्यहि मारग सत उपाय ज्यहि गहे सुमारग धीर ॥ चौ० ॥ नहिं आश्चर्य बिबुध मन लावैं। चारौ मारग सत्य बतावैं ॥ ऋष्य तपेश्वरादि संन्यासी। वैष्णव मुड़िया और उदासी ॥ निज मति सरिस ताहि सब गावैं। कोउ तासु पार नहिं पावैं ॥ देवसुरेश आदि बुधिराना। गावहिं तासु प्रताप प्रमाना ॥ शेषसहसयुग रसना जाही। बरणत जा-हि न अंत कहाही ॥ व्यास आदि मानस तनधारी। वि-बिधि भांति जिन कथा पसारी ॥ तिनहुं न भेदपाव ज्यहि केरा। तप कीन्हो सहि दण्ड घनेरा ॥ निशिचर आदि महा बलवाना। यवनादिक जे अधिक सुजाना ॥ जिनकी संज्ञा असुरन माहीं। वेदग्रन्थ डोलत ते नाहीं ॥ बिबिधि भांति तिन खोजलगायो। जाकर कतहुं खोजनहिंपायो ॥ अपरौ चतुर जगत बहुतेरे। यतन किये ज्यहि हेत घनेरे ॥ पावन जासु खोज कहुभांती। जासु नाम हर जप दिन

राती ॥ दो० ॥ जो परमातम एक रस व्यापक जल थल
माहिं । अजय अनीह अमान ज्यहि द्वैतभाव कछु नाहिं ॥
तासु चरण बंदौं समुद देहु सुमतिकरतार । नशै सकलअघ
कालिमा बाढ़ै बुद्धि विचार ॥ चौ० ॥ पुनि बंदौं अजचरण
गुणाकर । कुमति तिमिर कहँ ज्ञान दिवाकर ॥ ज्यहि
बहुभांति सृष्टि उपजाई । अति श्रम करि रचि रुचिर ब-
नाई ॥ सेवत जासु कमल पदवानी । करत जो अज्ञानीकहँ
ज्ञानी ॥ सचराचर समस्त तनधारी । रचे कमलभव सकल
विचारी ॥ तासुपदारविंद शिर नाऊं । हरै कुमति निर्मल
बुधि पाऊं ॥ पुनिप्रणवौं गरुड़ासन स्वामी । कृपाउदधिउर
अन्तरयामी ॥ सदा दास निज सरचा करई । सुखद सदैव
दुःखभञ्ज हरई ॥ जब जबअसुर अनीति प्रचारैं । धर्म क्रिया
कर मूल उखारैं ॥ निंदैं वेद विप्र मख बाधा । दुष्ट अनेक
लगावैं बाधा ॥ तब तब मनुज रूप करि धारा । मारि खल-
न पुनि धर्म प्रचारा ॥ लक्ष्मी जासु चरण नित सेवै । महा
अनंत वंदि पद लेवै ॥ थावर जंगम जीव घनेरे । रक्षक रमा-
नाथ सब केरे ॥ दो० ॥ ताकारण माया पते विष्णु पुरातन
रूप । वंदौं पादसरोज तुव देहुधि तिहुंपुर भूप ॥ चौ० ॥ पुनि
बंदौं शंकर सुखकारी । चन्द्रभाल जो उमाबिहारी ॥ भोला-
नाथ कृपा अब कीजै । हरि दुखकुमति सुःख बुधि दीजै ॥ फिरि
विनवौं शारदा भवानी । कुमति नाश निर्मलकर वानी ॥
जाहि प्रसन्न गिरा तू होई । यश भाजन जगमें भो सोई ॥
॥ दो० ॥ इष्टदेव मम कौशपति महावीर सुखदाय । हरौ
विघ्न दुखदासके सुमति देऊ कपिराय ॥ लछो विभीषण
राजमल अरु सुग्रीव कपीश । तव दाया दायानिधि महा-
बीर समईश ॥ चौ० ॥ बन्दौं गुरू पिता अरु माता । ज्ञा-
न सुमति अरु जन्म के दाता ॥ मित्र आदि जे मम हित-
कारी । प्रणवौं तिनके चरण विचारी ॥ कोविद भूसुर जे
जगमाहीं । जिनके शत्रुमित्र कोउ नाहीं ॥ तिन के चरण
कमल धरि ध्याना । निर्णय करौं मनोहर ज्ञाना ॥ दो० ॥

वर्त्तमान अरु भूतकनि होनहार जेकोय। प्रणवौं सबके पद पदम कृपाकारी अब सोय॥ चौ०॥ दुष्ट प्रकृति जिन की जग माहीं। परमल जेनहिं देखि सकाही॥ और ये यमहि जे दोष लगावहिं। धर्म कथा पहँ भूलि न जावहिं॥ जो चोरी अपकारी पावहिं। तौ निज देवहिं अणा चढ़ावहिं॥ यहि प्रकार औरौ खलकेते। बर्णन करौं कहां लगि तेते॥ बन्दौं ते सब निज हित लागी। होउ प्रसन्न सकल छल त्यागी॥ निज कर्त्तव श्रम हेत बिसारी। देउ अशीष मनोरथ कारी॥ बिधि निर्माण सृष्टि जहँ ताई। प्रणवौं सबहिं सुप्रेम बढ़ाई॥ सोहिं प्रसन्न चराचर होऊ। आशिष देउ सुखद करि चोऊ॥ दो०॥ पुनि अब बन्दौं शारदा जो सुधि बुधिदातार। सदा सहायक होउ अब बरणौं ग्रंथ विचार॥ चौ०॥ संवत दिक्रम करौं विचारा। हनुमत पिता भृगु पतितारा॥ निराकार गामी महिधारौ॥ अब शाकः कहु अग्रविचारौ। रावण रिपु अरु दंति समेता। छप्पय धरायुत कवि गनि लेता॥ माधव अपय तीन शशिवारा। तादिन ग्रंथ कीन अवतारा॥ अब हौं नाम कहौं शुभ याको। कवि जन अर्थ बिचारौ ताको॥ चाहत जाहि सुभग योगीजन। प्रथमहिं ताहि लिखो स्थिर मन॥ तापाछे लै उदधि हिलोरा। सुन्दर सुखद नामकबिलोरा॥ राज्य शुभग गौरंड बिराजै। नीति सहित परजा सुखराजै॥ दो०॥ अब धरिध्यान प्रवीन जन सुनों पुरातन ज्ञान। मनको बुद्धि प्रबोध जिमि मनमानी परमान॥ एक समय मन बुद्धिदोउ भयउ एक ढिग आय। मन पूंछे तब बुद्धिसों कछु तू मोहिं बुझाय॥ (मनउवाच) चौ०॥ कछु बुधि कवते ईश्वर भयऊ। कवते सकल सृष्टि निर्मयऊ॥ ब्रह्मा बिष्णु सुशंकर जोई। का ईश्वर कहियत हैसोई॥(बुद्धिरुवाच) सुनमन ईश्वरकौन प्रमाणा। आपुहि आप भया निर्माणा॥ भेद काहू पायो नहिं वाको। रूप रेखकछु गेह न ताको॥ अजय निरंजन अगुण अमा

रा। अगजग दुहूं बात ते न्यारा॥ नहिं मानस नहिं पशु नहिं देवा। नहीं भुजंग करिय ज्यहि सेवा॥ व्यापक सकल सृष्टि महँ ऐसे। शोणित सब शरीर महँ जैसे॥ सब के गुण अवगुण सो देखै। पाप पुण्यकी लयखनी लेखै॥ पापी नहिं धर्मातम सोई। चाहत जौन तुरतसो होई॥ जो तुम ब्रह्माविष्णु बखाने। शंकरकहँ ईश्वर करिजाने॥ तेयरमातम पद अधिकारी। सो निर्णय सनबाहब अगारी॥ अब सुन ज्यहि विधिसोंये भयऊ। जौनी विधि ईश्वरपद लयऊ॥ अरु ज्यहि भांतिसृष्टिनिर्माणा। करिचौरासीयोनि प्रमाणा॥ गवन धरा ब्रह्मांड पतारा। सत रज तम गुण कोउ न प्रचारा॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नाहीं। गणपति फणपति कोउ न तहांही॥ अग्नि वायु जलदेव न नागा। वेद ग्रंथ कोउ नहिं अनुरागा॥ नहिमानस नहिंधर्म'वाराणा। जीवजंतुनहिंकाक मराला॥ दो०॥ जिह्वा चौदह तब नहीं नहिहनुमत न सुरेश। नहिं नारद शारद चतुर नहीं भये असुरेश॥चौ०॥ वरुणकुबेर न तब यमराजा। जातिधर्म नहिं एकौसाजा॥ तपी जपी नहिंमुनि संन्यासी। उदय न चन्द्र सूर सुखरासी॥ सकल पसार तिहूं पुर जोई। तब न, कछू जानों मनसोई॥ इन्द्री आदिज्ञान,विज्ञाना। सोऽक्रोध कछु नाहिं बखाना॥ तब निज एक चराचर साईं। निराकार महँ बैठ गोसाईं॥ स्वइ परब्रह्म वेद जो गावै॥ बार बार ज्यहि शंभु मनावै॥ इच्छा कुछ ताके जो आई। सो माया यह जगत कहाई॥ फिरिसि सुखद शब्द यक बोला। ओंकार यह मन्त्र अमोला॥ दो०॥ तातेब्रह्मा विष्णु अरु उपजे शुभ त्रिपुरारि। निराकार महँ बास शिव तीनोंजन सुख कारि॥ चौ०॥ माया बहु बिचारि करि हारी। ता बश भयो न एक मुरारी॥ तब ओंकार वेद लैआई। तिन कह दै यहि विधि समुझाई॥ करहो सृष्टि की रचना करहु। आज्ञा वेद शीशपर धरहु॥ ब्रह्महि कीन्ह बनावन हारा। शंकर शिर हन्तक-पदभारा॥ विष्णु महा ज्ञानी

गुण राशी। प्रतिपालक भो रमाविलासी॥ पांच तत्व करि सृष्टि उपाई। विविधि भांति कीन्हीनिपुणाई॥ तब त्रैगुण दिये वेद बताई। ब्रह्मा रजगुण लीन्ह सिधाई॥ तमगुण शिव किय अंगीकारा। सतगुण हरि तन कीन्ह प्रचारा॥ दो०॥ यहि विधि तिहुं गुण तिहुं पुरुष एक एक महँलीन। ब्रह्मपुरी महँबैठि पुनि विरच रचन चित दीन॥ मनउवाच॥ चौ०॥ सोतुम कहोब्रह्मपुरनामा। जहां विरंचि कीन्ह निज धामा॥ का सो पुरी रहै विधि आगे। बैठि जहां निज कारज लागे (बुद्धिरुवाच) प्रथम ब्रह्मपुर जीन बनाई। तापाछे पुनि सृष्टि उपाई॥ वरुण कुबेर इन्द्र यमराजा। अग्नि वायु शशि सूर समाजा॥ धरा पताल स्वर्ग इत्यादी। रचे देव अरु दैत्य विषादी॥ मनुज उर्गपशु खग सुवनाये। वेद धर्म कहि सकल बुझाये॥ गा कहु जीन ठाम विधि दयऊ। तहां सुखोस्थितसा मुनि भयऊ॥ यहि विधि सृष्टि सकल उपजाई। बहुत भांति करि विधिनिपुणाई (मनउवाच) दो०॥ प्रथमकहातुम कहोपुनि विष्णु भयो जिमि ईश। सो अब मोहि विचारि कहु नावो तब पद शीश (बुद्धिरुवाच) सामवेद यह कहतहै तीनि बात को ज्ञान। तत्व मसीये तीनि पद जानत कोइ सुजान॥ चौ०॥ तत्पद ईश जहां सुख कारी। जीव भया त्वंपद अधिकारी॥ असिपद ब्रह्म जो प्रथम बखाना। निर्गुण निराकार भगवाना॥ नाहि लपहिं हरिहर विधिदेवा। जिमि दिन जासु करैं अतिसेवा॥ सबमें लिप्त सबन ते दूरी। सब जीवन कर जीवन मूरी॥ दो०॥ ये तीनो पुनि एक है भेद नही है नेक। जिमि छाया द्रुम लगत है का करिसकै विवेक॥ चौ०॥ भयो परन्तु भेद यहि तेरे। भाषे कहिन सो लखे घनेरे॥ हरि माया ज्यहि जगत नचायो। काहु जीव जीति नहिं पायो॥ भै मायावश विषय विलासी। तमगुण गहे भये दुखरासी॥ आपुहि भूलि भया लपिटाने। मोह आदि जिन देह समाने॥ सुनु मनते सब जीव बखाने। का-

तौ क्रिया कर्म नहिं जाने ॥ ज्यहि माया निज बश करि लीनो। विविधिभांति शिष जीवहि दीनी॥ तमरजत्यागि गह्यो गुण सांचा। विषय राग मन जासु न रांचा॥ काम क्रोध साहादिक बांधे। आपन पद निज करतल सांधे॥ सो सच्चिदानंद गुणराशी। तत्पद कह्यो सो रमा बिलाशी॥ यहि विधि विष्णु ईश पद पायो। ज्यहि यश वेद पुराणन गायो॥ स्वइ अवतार सृष्टि महँ धरई। विविधि भांति लीला सो करई॥ जब बहु पाप धरा असि लेई। सकै न भार पाप सो सेई॥ तब नारायण पास पुकारै। विविधि भांति अस्तुति अनुसारै॥ तासु टेर सुनि रमा विहारी। धरै मनुज तन जनदुख हारी॥ ज्यहि विपरीत वेद ते पावैं। ताकहँ हति यमलोक पठावैं॥ देइँ बताइ सुपंथ जीनकहँ। बहुज्ञानी गुणखानि जगत महँ॥ दो० ॥ अब सुनु असिपद ब्रह्मको निर्णय मन चित लाय। जाहि सुने सदेह त्रुव विविधि भांति बहि जाय॥ असिपद पूरण ब्रह्म है निराकार जुनिरेह। व्यापक सब जग में रहै सत्य जासु मन एह॥ चौ० ॥ जीव ईश दूनों महँ व्यापै। ज्यहि बहुभांति सुवेद प्रलापै॥ ईश जीव जो सम कहि दीजै। तौ बड दोष शीश पर लीजै॥ तत्पद मनो सिन्धु परमाना। बिंदु समान जीव अनुमाना॥ असि पद मनो नीर बुधिनाना। दोनो माझ समान समाना॥ अथवा तत्पद ज्यो नर भूपा। त्वंपद है किसान को रूपा॥ मानस असि पद कहतमुजाना। यहिविधि तीनोपद परमाना॥ निज आतम खोजै जो भाई। सो निरगुणपद महँ ठहराई॥ महासहित निरगुणबतावै। सोईसरगुण पंथकहावै॥ दो० ॥ दूनोपंथ पुनीत अति भक्ति मुक्तिदातार। अब जो मन संदेह कछु कहु सो करौं विचार॥ (मनउवाच) अधिक भया संदेह नहिं अब सुनु बुधि मन लाय। करि विस्तार बताइये सब शंका मिटि जाय॥ भाषो सबमें एक रस पारब्रह्म भगवान। ईतभाव याते नहीं सो मानौ पर-

मान ॥ अब कछु रूप स्थूल तैं दृश्य धरे है जोय। कैसे वाकी देह में तिहुं पुर वतन होय ॥ (बुद्धिरुवाच) सुनुतो सौं अब कहौं बुझाई। जिमि स्थूल रूप कृत साई ॥ शीश तासु आकाश विराजै। पवन स्वास महँ शोभा साजै। सूरज चंद्र नयन उजियारा। काल रूप भ्रु व वंक पसारा ॥ पलक चालि निशि द्यौस कहावै। अग्नि तासु मुख शोभा पावै॥ मान्स धरा रुधिर जलधारा। पर्वत अस्थि बनस्पति वारा॥ चरण पताल हृदय करतारा। है भुज हरि हर रूप सम्हारा ॥ सकल लोक ता उदर समाने। माला मेघ शुक्र ता जाने ॥ अलख अरूप अनादि कृपाला। धरे विराट रूप कृतख्याला ॥ दो० ॥ होय विधाता आपु स्वइ रचै सृष्टि बहुभांति। थावर जंगम जीव जे बहु विधि नाना जाति ॥ बहुरि आपु ह्वै रमापति रक्षत सबको धाय। शंकर ह्वै संहार कृत सो प्रभु त्रिभुवन राय ॥ (सनउवाच) या विधि धरि के रूप को करत ख्याल बहु आहि। यह मोको समुझाय कछु कब त्यागत हैं ताहि ॥ (बुद्धिरुवाच). चौ० ॥ भलिपूछेसि तैं बात विचारी। हौं यह बात कहौं निरधारी ॥ थिर ह्वै सुनु तजि दुविधा जीकै। जस जानों तस कहौं भलीकै ॥ जाहि विरंचि कहत कवि ज्ञानी। तासु आयुपर घटित कहानी ॥ आयुर्दाय वर्ष शत केरी। पाई विधि काली न घनेरी ॥ शत युग त्रेता द्वापर जानों। कलियुग सहित प्रमाण बखानों ॥ सत्रह लख वसु विंश हजारा। कृतयुग की परमाण विचारा ॥ जहँ चहु चरण धर्म के राजैं। सुखद चारि अवतार विराजैं॥ सहस छानवे द्वादश लाषा। त्रेता युगपरमाण सुभाषा ॥ तीनि पाद शुभधर्म समेता। त्रै अवतार धरे हरि त्रेता ॥ चौंसठिसहस लक्ष वसु जाहीं। द्वापर युग ये वर्ष सिराहीं ॥ द्विपद धर्म तहँ वेद बताये। द्वै स्वरूप हरि धरे सुहाये ॥ बत्तिस सहस लाख पुनि चारी। कलियुग की परमाण विचारी ॥ धर्म चरण तहँ एक कहोई। एक वार अवतार सु होई ॥ जामहँ नर युवती

है सोई। मारग वेद चलत कोइ कोई॥ रहै न लोकधर्म की भाई। सदा दुखित नर नारि तहांई॥ निज निज धर्म सबै परित्यागी। आय धर्म के मारग लागै॥ दो०॥ तैंतालिस लख सहस नगवर्षे जयचलिजाय। एक चतुर्युग होत तब कहत सकल कविराय॥ चौ०॥ जाय हजार चतुर्युग बीती। होय ब्रह्मदिन तब कहनीती॥ कल्प कहत विधिके दिन काही। चौदह इन्द्रमरैं ज्यहिमाही॥ दिवस प्रमाण कही है जेती। बरणत विबुध निशा पुनि तेती॥ दिनभरि जो विधि सृष्टि बनावै। निशासमय माया मह जावै॥ जाकहँ प्रलय कहत कविज्ञानी। सो ब्रह्माकी रैनि बखानी॥ जादिन जन्म विधाता लेई। आज्ञा वेद ताहि दिन देई॥ वाही दिनते जग उपजावै। विविधिप्रकार सुधीवबनावै॥ पुनि जब अन्त होइ विधि केरा। तबहीं महाप्रलय की बेरा॥ तबन धरा इत्यादिक रहई। यह विधि सत्य सत्य श्रुति कहई॥ निशा दिवस ब्रह्मा को जोई। वहिजात तामें सब कोई॥ दिवस जन्म निशि काल कलेवा। कहि विधि पारजाय भवखेवा॥ मानस कहौ करै का भाई आयुर्दाय नेकसी पाई॥ दो०॥ विधि के उपजतहीधरत तनविराट भगवान। तासु मरतही तजतत्यहि तैंनिजनिय अनुमान॥ मनउवाच॥ उपपति स्थिति नाश जो जगको वर्णन कीन। सोसमुझो भलि भांति हौं रही न शंका पीन॥ अब परंतु समुझाय कहु मानस तनको भेव। कौन तत्व करि सोबनो यह मेटौ अहमेव॥ बुद्धिरुवाच॥ व्योम वायु अरु अग्नि जल पृथ्वी युत ये पाच। इन तत्वन करि तन बन्यो बरणत बुधजन सांच॥ पांच तत्व ये जो कहे पांच तत्वगुण और। शब्दस्पर्शश रूपरस गन्धि कहत कवि मौर॥ चौ०॥ नाशानयन जीभ त्वक जानौ। श्रुति सह इन्द्रिय ज्ञान बखानौ॥ गुदा लिंग कर पद सुख जोई। इन्द्रिय पांच कर्मकी सोई॥ प्राण अपानरुव्यान समाना। और उदान भनों बुधि साना॥ पांच तत्व सूक्ष्म तन पाई। सबह

थूल प्रगटये भाई॥ इनकरि सब देहिनकी शोभा। इनहीं ते नर तन सुख होभा॥ इनकरि पाप सुकृत नर करई। इनकर क्रिया कर्म अनुसरई॥ इनते स्वर्ग नर्क मग धावै। इनकरि हरिपुर शोभा पावै॥ इनहीते संसार पसारो। पांच तत्व येप्रगट निहारो (मनउवाच)॥ दो०॥ पांचतत्व करिजोभयेसत्रह सूक्ष्म नाउ। कौन कहांतेकासोगुण यह मोको समुझाउ (बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ बानी कान व्योम ते भाई। एक कहै दूजे सुनि पाई॥ त्वचा हस्त है प्रगटि समीरा। दोउस्परशहि जानत धीरा॥ नयन चरण इन्द्री हैंजोई। प्रगटी अग्नि तत्वते सोई॥ नयनचहै ज्यहि रूपहि देखा। पात तहां पहुंचाव विशेषा॥ लिंग जीभजल ते बुध भाषै। दोऊ रस बिलास अभिलाषै॥ गुदा नाक पृथ्वी अनुसानै। गन्धि करै यक दूजो जानै॥ प्राण अपान समान बखानो। व्यान उदान पांच ये जानौ॥ पांच ठौर ते गुण पुनि पांचा। एकै पवन अंश यह सांचा॥ दो०॥ धरा तोय वातअग्नि मिलि व्योम तत्व ये पांच। पांचौंके शुभ अंश करि मन बुधि उपजे सांच॥जेतीइन्द्री देहकी भोग करै कछु कोय। स्वादन जानैं तासु को मन बुधि जानै सोय॥ मनहूंते पुनि चतुर जन बुद्धि महासिरदार। होइ सुमति जादेह में करै ताहि भव पार॥ मन उवाच॥ यह सूक्ष्म इन्द्रीन को है बखान किय जौन। थूल भई जा भांति सों वर्णन कीजै तौन (बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ पांचतत्व जगपर जे गाये। तिनही ते तन थूल बनाये॥ एक एकके करि करि पांचा। रचे पचीस प्रगट बुध सांचा॥ सो यह पंचीकरण कहावै। भगवत्गीता भलिकरि गावै॥ अस्थि त्वचा रोमानस मासा। धरातत्व तें करत प्रकाशा॥ स्वेद श्रोण पितलार रहेता। तत्वोदक कबि पंच कहेता॥ क्षुधा तृषा सुख कांति कहावै। नींद और आलस बुध गावै॥ इनकी उपपति सिखि ते भाषी। विदित करी कछु गुप्त न राखी॥ धाइ कोंचलि करि करि चोदे। और प्रसारनि

मौन कहोई॥ दो०॥ शीश कण्ठ हिय उदर कटि व्योमतत्व करि होइ। यह समझौ पंचीकरण कही पचीसो जोइ॥ कही पचीसौ प्रकृति ये थूल जीव तन नाहिं। सुनु तिनको पुनि भेद कछु जो तू जानत नाहिं॥ चौ०॥ यद्यपि पांच पांच करि गाई। तद्यपि कही जो ज्यहि अपनाई॥ अस्थि मुख्य पृथ्वी मल नीरा। अग्नि नाटिका त्वचा समीरा। रोम व्योम जल रेत बिचारी। पित तेज अरु खेद बिचारी॥ रुधिर मही अरु लार अकाशा। क्षुधा तेज पुनि मौन पियासा॥ सुखमा जल अरु आलस धरनी। नीद अकाश अंशते बरनी॥ चालनिचालु पसारनि नाका। क्रूदनि सिखि गावत कबिवाका॥ इलासकोच चलनि जलजानौ। शिर नभ खण्ड वायु पहिंचानौ॥ हिय सिखि उदरनीर कटि धरनी। जो ज्यहि तत्व मिली सो बरनी॥ दो०॥ अस्तितु रेत चर्म भूख पुनि धावनि शिरये पांच। इलानीर सिखि पवन नभ क्रमते खालिस सांच। याविधि थूलशरीर धरि जीव करत बहु भोग। दुख सुख नर्क स्वर्गमुनिपावत रोग निरोग॥ इनहीं ते करि सुक्षतनर भेटि देततन पाप। पारब्रह्म ईश्वर भजत देखत प्रगट प्रताप॥ सूक्षम थूल शरीरहौ कहे तोहिं समुझाय। अवसो मैं कहिहौ सो कहौं यौहरिपद शिरनाय (मनउवाच) प्रथमकहे तुम तीनि गुण सत रज तम ये नाम। परख कहा वा बिधि लहे नर तनमें बिश्राम (मुहिरमवाच) ॥ चौ०॥ सकलवस्तु कहँ होंहि ज्ञाना। अति सुशील बहु भांति सुजाना॥ निर्मल बुद्धि भजै भगवाना। मोहादिक भासन न समाना॥ माया जाहि न सकै भ्रमाई। स्वई सतोगुण जानिय भाई॥ ज्ञान होइ निर्मल तन जासू। सब बिधि बिद्या जिनय प्रकासू॥ लोभ सहित पुनि सब व्योहारा। सो रजगुण बुध करत बिचारा॥ आपुहि भूमिईश बिसरायो। कामादिक ते भौरायो॥ घट्या चित्त मद्दा कटु बानी। ज्ञान बचे बात नहिं जानी॥ माया मोह लोभ के बाधा। राम

गि कोधन कांधा ॥ अपरौ दोषअधिक तनदेखौ। ताहि
सोगुण चितमहँ लेखौ ॥ जो शतगुण को मारग गहई।
न्तसमयहरिपुर सो लहई। रजगुणक्रीयहगतिभाँई।
इकतिरछै तौस्वर्ग हिजाई ॥ तमतेकेवल नर्कबसेरा।अमित
र्पलक्ष नहिं निरवेरा ॥ दो० ॥ निजआतम चीन्ह्योनहीं
हो मोह आधीन। सदा कतंभी जानियम डारि निरै
नदीन॥ (मनउवाच)मोहिंभईशंकासुनतजीवनर्कसेबास।
यमभन्यो तुम मल्लमलवअवकास नर्कनिवास ॥ (बुद्धिरुवाच)
ौ०॥ आदि अन्त अब कहौं कहानी। वारणी तुम कीनौ
हिंचानी ॥ मिलि त्रिय पुरुष अंसदुऊकेरा। उपजत सुत
ुखदाय घनेरा ॥ त्रिय शरीर महँ मल जो रहई। अति
ापवित्र वेद बुधकहई ॥ पूरुपतन कर कामअघोरा। विधि
ंयोग तिय नर करजोरा ॥ मिलि नरमल तियमल जमि
ायऊ। हरि इच्छा निर्मित तन भयऊ ॥ उदर हृदो भुज
ंठबनायो। मुख नासिका नयन भुजभायो ॥ शीशं सुडौल
च्यो जगनाथा। गुदा लिंग इत्यादिक साथा ॥ कीन्ह
सजीव सभा निज डारी। नाटक विद्या करि असुरारी ॥
दो० ॥ बांधि अधोमुख दयो तहिं नहिं पायो अवकाश।
निज सेवा यह खेलहित करि हरि चित्तउलास ॥ चौ० ॥
अधमुख बँधे विकल भोजीवा। सब शरीर लिपटो मलपीवा।
वा। अति दुर्गंधि अन्नपच केरी। विह्वल प्राणन सकति
निवेरी ॥ भच्छ मातुकटु जादिन काहू। उठीउदर ज्वाला
तनदाहू ॥ जठरानल अतिकठिन बखानी। जावश विकल
होत सब प्रानी ॥ परवशपरो न मारगकोई। निजमन हात
विचार भो सोई ॥ विदित बात यह सब जग अहई। दंड
परे नरहरि हरि कहई। नहिं रचक काउ गर्भबसेरे।
सूझे पाप जन्म बहुकेरे ॥ वाहँ प्रथम जो पातक कीना। ता
कारण यी हरि दुख दीना ॥ दो० ॥ अब नारायण कृपा
करि यहि दुखते निरवारु। त्यागि सर्व मवकासना करि
के ज्ञान विचारु ॥ करिहौं सग जप योग अरु भक्ति कृपा-

निधितोरि। सत्य सत्य यह सत्य प्रभु करु रक्षा अब मोरि॥ सुनि निबंध दायानिधि प्रभु सानी परमान। तारक्षा हित आपुही आये श्री भगवान॥ चौ०॥ शीत उष्ण माता जो खावै। प्रभु निज करसों ताहि बरावै॥ जो कछुकष्ट जीव कहं होई। नाथ सकल कृपानिधि सोई॥ रूप चतुर्भुजधरे खरारी। सन्मुख तासु रहै सुखकारी॥ जस जननी पालै निज बाला। तस जीवहि रक्षक गोपाला॥ देखा चहै भजन यक्ष करिहै। भक्ति हेतु जग सुख परिहरिहै॥ जबते ईश भयो रखवारा। तबते तन न कलेशप्रचारा॥ गर्भ दिवस यहि विधि चलि गयऊ। जन्मलेनकर अवसर भयऊ॥ व्यथित शरीर गईसुधिभूली। पच्यसान तन भेजिसिशूली॥ दो०॥ मुर्छित भो क्षणमात्र तबजन्म लेतकी वार। चेत सम्य बहु दिखनहीं देखा निज रखवार॥ अति अधीरह्वै जीव तब कीन्हों कठिन बिलाप। कहां कहां यह शब्द ज्योंकरलेलाग निजपाप॥ चौ०॥ धाइधाइ स्नान कराई कीन्हो स्वच्छ शरीरहि जाई॥ जबलगि नहिं कीन्होपय पाना। तबलगि नहिं भूलो भगवाना॥ क्षीरपानकीन्हो ज्यहि बेरा। सोहंराग तन कीन्ह बसेरा॥ बिसरि निबंध रही सुधि नाहीं। माया जबहिं गही हित बाहीं॥ तैल फुलेल शरीर लगावैं। जननी हलरावैं दुलरावैं॥ उबटि तनहिं चौतनि सिर डारहिं। शुभग पलँगपर लैमौढारहिं॥ आपु काजबहु लागै सोई। सोवत बाल शुद्धि तनखोई॥ स्वेदजजीवकीट इत्यादी। काटहिंतन दुखदाय निषादी॥ दो०॥ जब शरीर कीटन गह्यो रोयो बाल अधीर। बैनकहै समरथ नहीं जो भाषै निजपीर॥ चौ०॥ करै बिलाप सुनै नहिं कोई। दुखद कीट लागे तन सोई॥ आतुरमातसुनि पावणो बानी। लियो उठाय हरो दुख आनी॥ क्षुधावंत आकुल तनभयऊ। मात सदनकारज चितयऊ॥ सुभात दृत उत नयन पसारा। ह्वै अधीर तब रोय पुकारा॥ सुनि सुत रुदन मातु चलि धाई। सुखी

कीन्ह पयःपान कराई॥ कछु दिन बादि चले निज पायन। मात पिता कह अति सुखदायन॥ जहँ तहँ खेलनसहँ चित दयऊ। तृषा क्षुधा भूलत है भयऊ॥ नहिं आवतगृह खेल बिसारी। फिरैं संग बालक है चारी॥ दो०॥ मात पिता दिन शोधिकै गुरु महँ दीन्ह पठाय। पढ़ै लाग विद्या तहाँ नेक नेक चितलाय॥ चौ०॥ जो उत्तम कुल भो अवतारा। तौ विद्यागुण कीन्ह बिचारा॥ जोमै नीचगृह जन्मत भयऊ। तौ यह दशा खेल महँ गयऊ॥ यहि विधि बालापनगा बीती। नाकीन्ह्यसि जो प्रथम कहीती॥ नर उपकार करत जो कोई। जानत सकल जन्म भरि सोई॥ महाकष्ट ते ईश बचायो। ता कहँ कतहुं न शीश नवायो॥ तरुण अवस्था तन महँ आई। मैन व्यथा ते तनतप छाई॥ भ्रात बन्धु मिलि कीन्ह विवाहा। मन प्रसन्न तन बड़ उत्साहा॥ बहु आभरण सजे तनमाहीं। लखि निज रूप न अंग समाहीं॥ दो०॥ मनफूले मारग चलत देखत अपनी छाहिं। कहत महा सुंदर बने काउ हम सम नाहिं॥ चौ०॥ जो कछु ज्ञान चित्त महँ आयो। तौ कारण महँ जिय बहिलायो॥ जो मूरख विद्यादिक हीना। काम त्रिवश तौ फिरै मलीना॥ ताकैं पर तिय लाज बिसारे। धर्म कथाते चलहिं नियारे॥ कहै जो कोउ यह काज न नीका। तौ सुनि बयन कहैं मुख फीका॥ जो कदाचि सम्पति विधि दयऊ। तौ फिरि अधिक गर्व उर छयऊ॥ गालफुलाय चलैं मग माहीं। जनुतिहुं पुरी भूपये जाहीं॥ मिचन हुं सन मीठी बानी। संपति मदन कहै अज्ञानी॥ काहुहि कहै न मधुरी बाता। अहंकारवश उर न समाता॥ दो०॥ साधु संत कह देखिकरि करैं हँसी ते मूढ़। बादि मुड़ायो मूड़ तुम लह्यो न अर्थ अगूढ़॥ चौ०॥ ज्यहि विधि जन्म दीन नर केरा। त्यहि जग भोग रच्यो बहुतेरा॥ तजि पाषंड करौ जग भोगा। बे कारण यह सहौ वियोगा॥ सुनतहि वचन साधु मुसुकाहीं। जिन के मोहलोभ

कछु नाहीं॥ जो विधि जन्म रंक गृह दयऊ। तौ चिन्ता बहु विधि तन छयऊ॥ प्रमदा तनय सुता हित लागी। फिरैं जहां तहँ रंक अभागी॥ करैं जपी अथवा व्यौपारा। पर सेवा करि दिवस निवारा॥ अथवा भिक्षाटन नित करहीं। जग छलि भूति उदर निज भरहीं॥ तिय सुत फाँसि मोह गल डारी। भजै न हरि पद भयो दुखारी॥ दो०॥ गई भूलि सब चतुरई चिंता ग्रसित शरीर। मिलै न धन उर शांति नहिं जहँ तहँ फिरैं अधीर॥ पेटलागे जग फिरैं तिया तनय के हेत। हरि माया अति प्रबल ज्यहि करयो सचेत अचेत॥ प्रभुसों कियो निबंध जो भलि गयो जड़ सोय। कहौ जगत महँ आइ फिरि कस न दुःख बुध होय॥ चौ०॥ भटकतही बीती तरुणाई। जरा देहँ सधि तन नियराई॥ तृष्णावढ़ी अबल तन भयऊ। तबहुँन ईश चरण मन दयऊ॥ अल्प दृष्टि पद द्वौ कर करही। बैठि उठहिं तन अति बल करही॥ इन्द्री सकल भईं बल हीना। कामादिक तनते भो खीना॥ यौवन बिन उद्यम नहिं होई। प्रिय बालक पूँछत नहिं कोई। क्रोध बढ़ो नहिं बरनि सिराहीं॥ कहैं नीति त्यहि अति अलसाही। बैठ रहैं जड़ रूप दुवारे। जातनिकट कोउ नाहिं पुकारे॥ गयो बुढ़ाय शिथिल तन भयऊ। ईश्वर चरण चित्त नहिं दयऊ॥ दो०॥ षट व्यकार सो देहमें बीती तिन महंपांच। छठी आइ नियराइ रहि तबहुँन हरि पद जाँच॥ (मान उवाच) षट व्यकार कासो कहत कहौ मोहिं समुभाय। जिन्है जानिकै मानि भय हौं सुमिरौं सुरराय॥ (बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ जन्महोत यह प्रथम व्यकारा। दूसर तनकर बढ़त विचारा॥ तीसर बालअवस्था भाई। चौथी भणत विबुध तरुणाई॥ पंचम जरा अवस्था सोई। षष्ठम अन्तकाल जो होई॥ षट व्यकार ये कहीयवानी। ते तुम सत्य लेहु मनमानी॥ इन महँ पंचम बीते लागी। भयो न जीव ईश अनुरागी॥ बीती जरा अन्त

नियराना। जस गति भई सो कारौं बखाना ॥ बाढ्यो कफ लाग्यो गल सोई। अन्न मानि कछ रुचि नहिं होई ॥ ज-ई खाँस चली तन माहीं। चन्द्रसूर सन्मुख कछु नाहीं ॥ जहँ तहँ कफ उगिलहिं उबकाही। पड़े रहै जल अन्न न खाहीं ॥ प्रमदा पुत्र सकल घिनखाहीं। कहैं ईश अब ये मरिजाही॥ यह घिनौनमन अब न सुहाई। हारि गये करि वैद्य उपाई॥ कठिन कराल दशा यह भाई। धर्म न करो जो होइ सहाई॥ जस माखी मधु जोरि न खाई। छीने कोउ मनहिं पछिताई ॥ तिमि संपदा जोरि गृह माहीं। दई वराटिक हरिहित नाहीं ॥ प्रथम जीवऐसो अघ खानी। तासु पाप किमि कहौ बखानी ॥ जन्म समस्त वृथा जड़ खोयो। संपति हित सुखनींद न सोयो ॥ दो० ॥ जो दश दोषनसों भरी देह जीव ज्यहिवासु। समनचार करि कोप त्यहिचहै छुडावन आसु॥ मुद्गर फाँसी हाथ लै आये यम के चार। तिनके देखतही विबुध रही न नेक सम्हार॥ चौ० ॥ ह्वै भय भीत तुरत मल मोचा। ता-हू समय न हरि हित शोचा ॥ हनिमुद्गरन डाल गल फाँ-सी। काढ्यो जीव दशौ दिशि गाँसी॥ पिया तनय सेवक परिवारा। खडे सकल कत शोच विचारा ॥ नेक न वश काहूको चाला। यमदूतन कीन्हो बेहाला॥ मारि कूटि यम त्यहि लैगयऊ। संगी तासु कोउ नहिं भयऊ॥ जिन हित सिगरो जन्म गँवाया। प्रिय सत कोउ काम नहिं आयो॥ यमपुर भयो न्याय जब जाई। रञ्चक धर्म न ठह-रो भाई ॥ नहिं हरि भजन न पर उपकारा। तीरथ व्रत नहिं नेक अचारा॥ दो० ॥ सत संगति इत्यादि जे उत्तम जग में काज। ते नेकाऊ पाये नही तब शोचे यमराज ॥ चौ० ॥ महाँ अधम यह जीव चंडारा। हरि हित नैक न कीन्ह बिचारा॥ कहा दण्ड दीजे यह शोचै। ता अघ स-मुझि नैन जल मोचै॥ फिरि हरि मायहि शीश नवायो। भीम रूप निज दूत बोलायो॥ काह्यो डार यहि कुम्भीपा-

का। इनै चोंच शिर खुलते काका॥ धरि धुण दूत डारतहँ जाई। नामधिपरे जीव अकुलाई॥ असकरणी कीन्ही जग माही। कही जीव कस नर्क न जाही॥ यहि विधि जीव नर्क महँ बासा। एकक तासु न छुट दश आसा॥ बहु भांति यह जीव बखानो। निज करणी ते नर्कहि साना॥ दो०॥ बरणि समस्तकही सुघों जीव नर्क ज्यों वास। अब जो पूंछैसो कहौं छूटैभवभय त्रास॥ (मनउवाच) कहै दोष दश प्रथमहुम सो म्वहिं कहौ बुझाइ। संशय तनको जाइ मिटि ज्ञानअधिकसरसाइ॥ (बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ सुनुदश दोष सहित निस्तारा। योगी जन जो करत विचारा॥ प्रथम शौचभाषत बुधिजाना। द्वितियेतन अशुद्धता साना॥ तृतिये तन दुर्गन्धि कहावै। चौथे बहुत खयड बुध गावै॥ पंचम रोगग्रसै तन येहा। षष्टमजरै काष्टवत देहा॥ सप्तम मरै देह सब जानै। अष्टम शिथिल होय पहिचानै॥ नवम बहुरिहोनै यहजानों दशम स्थूलरूप अनुमानों॥ अब जो अपर चहैसोगाऊं। निर्मलमति विज्ञानसुनाऊं॥ ये दशदोष बसै तनमाही। अन्तसमय समस्त मिटिजाही॥(मनउवाच) दो०॥ क्यहि विधि छूटैनर्कते काहु तू मोहिं बुझाइ। कासाधे यहिदेहमें जासो हरिपुरजाइ॥ (बुद्धिरुवाच) जो षटऊर्मी जीतई मिटै सकल तन ताप। होवै जीवन मुक्तनर देखै आपाआप॥ (मनउवाच)॥ सो०॥ षट ऊर्मीका आहि यह मोका समुझाइ काहु। फिरिहौं जीतौ ताहि मेटौ तनकी तापसब॥ (बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ प्रथम कामअति बिबुधकराला। जावश सब जगजीव व्यहाला॥ द्वितिये क्रोध पापकर खानी। विकल होत जावश सबप्रानी॥ तृतिये लोभ महा दुख रासी। सकल जगत गलडाल खपासी॥ मोह चतुर्थ छजन गृहजानी। नर्कोजीव तासु अनुमानी॥ पंचम मान बसै तनमाही। हरि चरित्र ज्यहि कुछन सुहाही॥ षष्ठम तन अपमान कहोई। ज्यहिते जीवहि अति दुखहोई॥ ये षट ऊर्मी संत बखानै। समुझहि चतुर जे ज्ञानहिं जानै॥

जीवन मुक्त होय इनजीते। नर्क जाइ इनके हित हीते॥
(मनउवाच) ॥दो०॥ मोहादिक जे तुम कहे व्यापत सबकी देह। ता उत्पति बिधि जीतिये कहिये सहित सनेह॥
(बुद्धिरुवाच) ॥ चौ० ॥ सुनु उत्पति इनकी चितलाई। सबु प्रसंग तोहिं कहौं बुझाई ॥ देय शरीर बसैमन भूपा। तासु त्रिया द्वै महा स्वरूपा॥ एक प्रवृत्ति दुर्भगा नारी। द्वितिय निवृत्ति महा सुखकारी॥ मोह लोभ अरु क्रोध कराला। काम कुभोग दुष्ट सबकाला॥ अहंकार मिथ्यादिक दोषा। हिंसा दंभ आदि सहरोषा॥ पुनि अविवेक कहो पाषंडा। तृष्णा दुःशीलता प्रचंडा॥ मान अलज्जा आदिक जोई। भये प्रवृत्ति जातसब सोई॥ ज्ञान विवेकाचार बिचारा। दान धर्म वैराग्य सम्हारा॥ दो० ॥ शांति दया अरु शीलता सम संतोष अलोभ। लज्जा क्षमा सुचातुरी मन जानिये अक्षोभ॥ सो० ॥ प्रणय न्याय अरु योग सैख इत्यादिक बसैंतन। निवृत्ति जातये लोग समुभत ज्ञानी योगिजन॥ (मनउवाच) ॥ दो० ॥ द्वैमातायक पिता तें भये प्रगट ये सर्व। वैरभयो कारण कहा मेटो संशय खर्व॥ (बुद्धिरुवाच) ॥ चौ० ॥ विदित बात यहसब जग अहई। बैर बिमातन में कुछ रहई॥ और अधिक याते यह कारण। चहै विवेक जीवकाह तारण॥ मोह चहै निज पितु सुखदीन्हा। ताते बैर भाव उन लीन्हा॥ जो विवेक की पकरै शरणा। सोदेखै श्री हरि के चरणा॥ चलै मोह मारगजो भाई। धर्म रहित नर्कहि चलिजाई॥ जे पंडित जन जगत सयाने। ते विवेकके मारग साने॥ अंत समय पावैं सोई पद। जो षटपिराण वेद आगम बद॥ चलै मोह नश मूरख जोई। अवशि होहि नर्कागति सोई॥ दो० ॥ थिर चित कारि तजि दुर्मतिहि सुनु विवेक की जीति। ज्यहि बिधि हार्‌यो मोहदल भाग्यौ ह्वै भयभीति॥ चौ०॥ पूरब कह्यो बैर कर हेता। अरु उत्पत्ति सुप्रेम समेता॥ अब सुनुकथा रसाल सोहावनि। विज्ञानिन कह अतिमन

थावहि ॥ गह्यो जीव जब पंथ विवेका । हरिहि मिलन हित टेक्यसि टेका ॥ त्याग्यसि सकल विषय परिवारा । ज्ञान धर्म करकीन्ह पसारा ॥ तबही शोच मोह मन ठयऊ । काम क्रोध कह बोलत भयऊ ॥ अब पाषंड शोक संतापा । लोभादिक जिन अधिक प्रतापा ॥ सबसन मिलि यह संमत कीना । हतौ विवेक टंडर्दे पीना ॥ तासु सकल दलबांधि सुलेहु । अथवा देश निकारा देहु ॥ दो० ॥ नाइ चरणशिर मोहसों बोला सुभट पषंड । जीवकरौं हौं आपु वश जीतिविवेक प्रचंड ॥ सो० ॥ आपु धरौ उरधीर कितौ बात यह कृपानिधि । लै आवत्य रणधीर जीति,समर बांधौं रिपुन ॥ चौ०॥ असकहि चलो सुभट पापंडा । निज स्वरूप तबरचो अखंडा ॥ झूंठा शिष्य संग त्यहि छोलै जो प्रतिछण असत्य बच बोलै ॥ रचेविभूति सर्वतन माही । सुंदर जटा सु शीश बढ़ाही ॥ माला गले परी है भारी । कान शीश बहु माल सम्हारी ॥ मध्य दंड माला भुज छोरा । छाती कांध माल है जोरा ॥ टोपा लाल शीश पर सोहै । सुभग कमण्डल कर सधि जोहै ॥ आवत देखि जीव सतभावा । मध्य बाट म्रगचर्म डसावा ॥ निज माया पाखण्ड पसारी । झूंठ शिष्य सो बैठ अगारी ॥ जिमि बक रंगे चोच पद नैना । बने हंस कछु कहै न बैना ॥ निर्णय जल पय जब परिजाई । तब सिगरे जगहोइ हंसाई ॥ तस पाषण्ड कीन यह माया । लखि स्वरूप जीवहि भल भाया ॥ कीन्ह दण्डवतपद शिर नाई । चहै कि चलि आसनढिग जाई ॥ दो० ॥ कही तबहिं ता शिष्यने सुनु रे मूढ गँवार । पाछू गुरु ढिग जायसो प्रथमहिं चरण पखार ॥ नैकहु कीन्ह विचार नहि निराचार तू आहि । पदवी शिष्टाचार की सोतू जानत नाहिं ॥ चौ० ॥ ब्रह्म सभा शुभ देव समाजा । शोभित जहां दयौ ढिग राजा ॥ एक समय तेहि सभा गये गुरु । देखतही उठठाढ भये सुर ॥ ब्रह्मावहु विचार उरलाना । इनहिं योग नहिं आसन पावा ॥ तब

पद मंदिदीन कमलासन। हौंकरजोरि मांगि अनुशासन॥ सो सुर पूज्य गुरू सम राजै। पुण्य स्वरूप महा छबि छाजै॥ तिन ढिग चलपद बिना पधारे। तैंगुरत्व अज्ञान मझारे॥ यह सुनि जीव सत्य करि जाना। तासु बचन को कीन्ह प्रमाना॥ शोच करै शिक्षा यहि लेऊं। अपर बात सिगरी तजि देऊं॥ दो०॥ जब जान्यो जीवहि असत तब पाल्यो सद्भाव। हारि बिवेक बिचारिउर समुझि आपनो दाव॥ चौ०॥ सुनु रे जीव भूल मति भाई। जनिजाकी बातन पर जाई॥ शिष्य झूंठ अरु गुरु पाषण्डी। लोकलाज सिगरी यहि छण्डी॥ जगत सकल छलिबेके काजा। कीन्ह सम्हार देह कर साजा॥ जो लखि भूलि जाहि जग लोगा। सहैं सदा दुख दाय बियोगा॥ यह सुनि दम्भ आपुइ सिकरई। बड़ सद्भाव छुड़ौतू अहई॥ प्रगट कहानी यह जगमाही। आपन सम कोउ दूसर नाहीं॥ सुनु तो कछु भलि बात बताऊं। पुनि अपने मारग महँ लाऊं॥ प्रथमहिं तन कह नीका सम्हारै। तापाछेपुनि भेद पसारै॥ दो०॥ अशुभ रूप जग जँचरै यदपि महा प्रबीन। आदर तदपि न करत कोउ करत सभा ते भीन॥ चौ०॥ याते भल शरीर का साजै। बिबिधि भांति आनँद सो राजै॥ दान देइ जग लहै बड़ाई। पर धन हरै हेत गुरताई॥ बिन स्नान न जग सुख मेलै। करि पूजन पापन कह ठेलै॥ यज्ञ करै बहु भांति अनेका। नेम सहितछूटै नहिं टेका॥ तूकुबेर अरुधर्म न जानैं। काऊ कहनी तोरी को मानै॥ धनाचार तब संग नशाई। बिन अहार बसनन बिनु भाई॥ काहि सहाइ ऐस दुख साया। सुनतै बचन मीटियै आया॥ तब सद्भाव नीति मय बानी। कही बिबेक बिरागइ सानी॥ दो०॥ सुनु कहनी मम ध्यान धरि कहौं तोहि समुझाय। भूषण बसन अनेक बिधि बिय तन अधिक सोहाय॥ चौ०॥ तन शोभा धन अधिक सिंगारा। कै शोभत नृप कै धनवारा॥ दीन चहै नृप सम तन साजा। निज दिशि देखि लहै बड़ि लाजा॥

कहां बसन भूषण नै पावै। जो शरीर नृपसम सजि लावै॥
नृप सोवत भलि सेज बनाई। दीन धरा पर प्यार डसा-
ई॥ भूपति सुखित जन्म सब काटै। दुखिया तन चिंता नित
चाटै॥ रहै सदा स्वाधीन नरेशा। पराधीन परजासु कले-
शा॥ वर्तै मध्यभाग हरिदासा। नहिं भूपति नहिं दीन
दुरासा॥ जस महि परै सेज तस सोवै। दुख सुख दुहं बात
को जोवै॥ दो०॥ कबहूं भोजन भूप सम कबहूंक फल
आहार। दुहूं बात ते रहित कोउ इत हरि हित
अनुसार॥ चौ०॥ कहुं शुभ वस्त्र नग्न कहुं रहई। वल्कल
कतहुं पहिरि सुद लहई। दुख कहुं सुख पावै जगमाही।
ज्ञान अज्ञान विचारत नाही॥ जब यह दशा जीव क-
हँ आवै। तब हरि मारग भल लखि पावै॥ जन्म मनुष्य भयो
यहि हेता। भजै ईश करिकै चितचेता॥ नहिं यहि हेत जो
चहै बडाई। भूषण वसनन स्वांग बनाई॥ निज शरीर कर
करत सम्हारा। ईश भजन सबभांति बिसारा॥ करि पा-
खंड जगत छलि पावै। सो प्रभु नहिं ठगनी मह आवै॥ देखै
तिहूंलोक बिन अंजन। यहि कारण हरि नाम निरंजन॥
ईश्वर नहिं रीझत लखि रूपा। सोहत लखि निज दास
कुरूपा॥ रूपवंत धनवंत नरेशा। होत न संत समान बिदेशा
जो पाखंड पंथ तब गहई। निश्चय अंत नर्क सो लहई॥
पुनि करि कोप बढै यह दंभा। बलि हरि हित किय यज्ञ
अरंभा॥ दो०॥ दानदियो बहुयत्न करि बलि हरिचंद न-
रेश। दशा भई सो विदित जगसुनि पाइयत कलेश॥ चौ०॥
व्याध अधम सहजै गति पाई। गिद्ध सेवरी हरिपुर धाई॥
गणिका अजामील अघ खानी। जिन न विवेक बात कछु
जानी॥ कुंजर पशु इत्यादि अनेका। लही सुगति तजि पंथ
विवेका॥ वेदशास्त्र सबकरैं विवादा। समुझात जीवहि होत
बिषादा॥ कोउ ईश शंभु कहि टेरै। कोउ जगत मात दिशि
हेरै॥ विधि कोउ हरि गणपति भाषै। कोउ टेक सूर पै
राखै॥ बसत जीव देहीमहँ जोई। कहबेदांत ईश है सोई॥

झगरा यह न होय निरुवारा। ताते कछु नहिंपंथ तुम्हारा॥ दो०॥ कछुपुनि गहि केहि पंथको लेवे ईश रिझाइ। तब सद्भाव अनंद युत कही ताहि समुझाइ॥ चौ०॥ तजि इच्छा अरु मान गुमाना। गहै बुद्धि कर ज्ञान कमाना॥ काटि मोह फांसी निज हाथा। ज्ञानी पुरुषन को करि साथा॥ अनईश दुख सुखहू त्यागी। दया धर्म सोंहूं अनुरागी॥ योगभाव आतम निज हेरै। श्रद्धा सहित ईश कह टेरै॥ यहि विधि सो तजि सब पापंडा। अन्त मुक्ति सो लहै अखंडा॥ सुनि पापंड वचन सद्भावा। लज्जा युत अध शीश नवावा॥ बहुबिधि मन बिचार करसोई। सूझि परा नहिं उत्तर कोई॥ अतिदुख सहमृगचर्म उठावा। अलित भांति हत मन पछितावा॥ दो०॥ हारिपरा खल चला गृह मिल्यो मोहको जाय। समाचार सद्भावकर सर्व कहा समुझाय॥ मोहराज अति दुखित ह्वै कामहिं कहा बुझाय। जाहु तात पौरुष करौं जीव लेहु अपनाय॥ जीव संग सद्भाव इत कह विवेक सौं गाय। हारि जानि पापंड को हर्षित भो सवसाय॥ सुनो हतांत विवेक नृकाम कीन्ह दल साज। तब विचार को प्रबल लखि पठवा जानि अकाज॥ चौ०॥ चला कामकरि आपु बनावा। सुमन बान निज धनुष चढावा॥ सँग ऋतुराज उर्वसी नारी। राग रागिनी ताल सम्हारी॥ कोकिल पिक अरु तिहुं गति बाता। मदन दाह उपजै लखिगाता॥ देखिजीव भल ठाठ बनावा। त्यहि अवसर विचार तहँआवा॥ लखि विचारि बोल्यौ तब कामा। सुनरे जीव वचन सुख धामा॥ सुना तु भो सद्भाव संगाती। तजि सुख संग वैठ दुख पांती॥ विधि तनदीन्ह भोग हित लागी। तू मतिमंद दीन्ह त्यहि त्यागी॥ ताते अवशि त्यागि सद्भावा। त्वहिं शिप देन हेत हौं आवा॥ दो०॥ ब्रह्मा विष्णु हरादि सुर सर्व करत नित भोग। जाते अधिकन औौर कछु सुख भाषत बुध लोग॥ चौ०॥ तब बिचार कहसुनु रतिनायक। अति निलज्जतव

संग कुभायक॥ जो बड नीक भोग तुम कहहू। जासु गर्ब अतिभूलत अहहू॥ तासु वृतांत सुनौ चितलाई। याकू जीवहि देहु भसाई॥ नित्य भग आवत रक्त सों रहई। अरु मल मूत्र भरी बुध कहई॥ जासु दशा सुनि मनघिन आवै। परसतही नर नर्क सिधावै॥ ऋतुवसंत अरु तीनि बतासा॥ सुमन वाण लखि शोभित वासा॥ परतिय रमण करत जे मानी। दर्इं गोद्य हतनिज करहानी॥ इत नृप सुनै तुरत धरि सारै। उत यमदूतनर्क गहि डारै॥ दो०॥ हँसीहोय दुहुं लोक में काहाभोग या माहिं। करै कही तुवजोवसो हम न होहिंउयहिमाहिं॥ यह सुनि खल निजहारिलखि गयो गेह अकुलाय। मोहराज सों हारिनिज कही महा दुख पाय॥ चौ०॥ योधा स्वमतिक्रोध अपुपासा। कहोमेटु अब मम परिहासा॥ जीति चमू बांधिये विवेका। करिये जीवनिज बश रहै टेका॥ छूटे पिता कारै बहु भोगा। नत वियोग यहिमरिहै लोगा॥ चल्योक्रोध आज्ञाता मानी। अदयाहिंसादिक मन आनी॥ सजाचारयहभाव विवेका। वोगि चमा कह जो कर नेका॥ चमा अहिंसाआदिक धाई। जहां जीव तहँ तुरतहि आई॥ क्रोधचमालखिनय असकहई। मो देखत तुवधर्म न रहई॥ अर्जुन अस ज्ञानी जग ख्याता। निज कर आपन कुलहि निपाता॥ दो०॥ परशुराम माताहनी ब्राह्मण मारो राम। शंकर सुत माया हरो कीन्होंचडो अकाम॥ सो०॥ यहपौरुषहैमोर मोबिन भग जीवै न कउ। नारग चलै न तोर सो सन्मुख कोटिड जिये॥ चौ०॥ तपसी मुनिहौं घने विडारे। ध्यान जीव भग कहा विचारे॥ चमा कहँचमा दयाधरि मारैं। बांधि निज बंदि ग्रह डारैं॥ पराजित प्रशपची परहेता।

हरिश्चंद्र क्रोधहिन हिंलावा। चांडाल गृह आपु बेचावा॥ मोरध्वज निज शीशचिरावा। धर्म राखितनक्रोधदुरावा॥ जब कछुआय मुष्टिका मारै। तासन जकुटोहनन प्रचारै॥ जो दुखियाय देयकरिक्रोधा। जाय पासबिनती करि बोधा॥ सबसनमधुरीभाषै बाता। प्रभु सिचकरलखै न नाता॥ पर दुखदेखि दुःखमनलावै। सेवा करिता दुखहि दुरावै॥ दो० ॥ तपसी मुनि चण्डाल नर पशु पच्छी अरु कीट। ये समस्त हैं ब्रह्म लखहिं योग सुनु ढीठ॥ नैन लालउर कोप बड़ धारि चला गृह सूत। ज्यौं पौरुष लघुकाहै बढ़िलज्या लहैं कपूत॥ चौ०॥ जाइ क्रोध निज हाल सुनावा। मोह राजमनभा पछितावा॥ ताहीसमय लोभहँकरावा। काम क्रोध हतांत बतावा॥ सुनत लोभ तन भा अतिकोपा। ध-या सह करौं बिबेकहि लोपा॥ धाइ चल्यो जीबहि अप-नावै। अरु बिबेक दलसमर हरावै॥ जबबिबेकने यह सुधि पाई। सपदि दीन्ह सन्तोष पठाई॥ लखि सन्तोष लोभ यह भाषै। मो सन्मुख तो कह को राखै॥ ब्रह्मचर्य बैरा-गी ग्रेही। लोभ लालसा लागि न केही॥ जब बराटिका की भै चाहा। ईश्वर कीन्ह सो पैसा लाहा॥ तब मुद्रा याबैभवप्रानी। मुद्रा स्वर्ण पाव सुखखानी॥ नहि सन्तोष सम्पदा चाहा। मिलै अधिक धन सो उर दाहा॥ यद्यपि छत्र पति पद मिलिजाई। तदपि न उर संतोष दृढ़ाई॥ दुखिया यह बिचार नित करई। परो मिलै कौ पर धन हरई॥ दो०॥ पशु पच्छी इत्यादिजेमोहित त्यागत प्रान। मो बिन सुख पावत नहीं तोहिं तजत कहि स्यान॥ तातें जाऊ पराय गृह हानि आपनी जानि। जीव जियो अप-नाइ हम त्यागौ तेरी कानि॥ चौ०॥ तब संतोष कहै सुनु भाई। ऐसि यहै तुम्हरी प्रभुताई॥ बलि राजा पहँ गयउ न भूले। रह्यो सिराय भये अनमूले॥ हरिश्चन्द्र कर दुख नहिं लागा। लोभ नारि सुत तन जिनत्यागा॥ परशुराम कह नहिं अपनावा। यकैबिसतिधा धरा बढ़ा

वा ॥ खर्ण अतौल लङ्क रघुनाथा । दीन दान जगगावत गाथा ॥ करखाहिं कस नहिं आनि सिखावा। प्रात नित्य अर्जुनहिं लुटावा ॥ मूरख अविवेकी अज्ञानी । तव पथ बरणत देत ते ग्लानी ॥ संपति दुख सुख लिखा लिलारा। विधि अक्षर को मेटन हारा ॥ दो० ॥ देवत ईश्वर लहत सो करत ईश सो होत । यांचत वा प्रभु सो सदा सकल इसारो गोत ॥ विपतिपरेसब धननशै दुखउपजै भर पूरि । लोभ न लावै भजै प्रभु राम सजीवन मूरि ॥ यह सुनिलोभ परायचल बिजयलही संतोष । गहोर्जीवमारग सुभग जाते पावैमोष ॥ चौ०॥ लोभ अनयसुनि मोहरिसाना । पठवा अहंकार बलवाना ॥ इतङ्ग विनय आपन दल साजा । विजय विवेक होत मनभ्राजा ॥ कोवङ्ग वकै हार अहँकारा । चाहिचाहि ढिगमोह पुकारा ॥ अकथ दुःख पायो तव मोहा । निजदल सकल अवल करि जोहा ॥ तव आपुहि उठिचला न्रपाला । तासु चलत तन भूतल हाला ॥ सुन्यो विवेक मोह चलिआवा । प्रथमहिं धीरज आपु पठावन ॥ तापश्चात् शोच छत आपू । मोहराजकर अधिक प्रतापू ॥ असन होइ कङ्ग धीरज हारे। करिप्रपंच भूपति त्यहिटारै॥ दो० ॥ उचित मोहिं पाछेचलौंहनों सकल आराति । उत धीरज कहं देखकर मोहराज मुसुकाति ॥ सो० ॥ सुन धीरज ममबैन कहौ जाय निज नाथ सों। उचितबात यहहैन यांच्योपिता अनीति करि ॥चौ०॥ अस भणि मोहकोह उर लायो । करिवल अमित जीव अपनायो ॥ अरुधीरज अतिकहं असि वानी । जाङ्ग तात नतमैहौ हानी ॥ जो तुम्हार पथ संग्रह करई । त्रिया तनय निज धन परि हरई ॥ वाहन बसन विविध भंडारा। राज्य द्रव्यभूषण परिवारा ॥ सोदरअति प्रियसदन समाजा । मित्र पिता माता सुख साजा ॥ तुरी भूमि गज अश्व समेता । दासीदास जे नित सुखदेता ॥ गोधन आदि विभूति अनेका । इनतजिहै काकरिय विवेका ॥ हिलिमिलि

जीवगणहोतब सत्य पथ इरिसों बाढ़ी प्रीति (मनसनाथ) चौ०॥ गहो जीवजमधारगऔवा। पुनिकसकीन्हकर्मीमत रौवा॥ (बुद्धिरुवाच) जब बिवेक जीवहिअपनायो। तब ता कहँनिज पन्थ बतायो॥ कहिनि साधनाचारि विचारी। यागो जन जेकरत नियारी॥ प्रथम विराग रूप सिख-रावा। ता पाछे निज अंग बतावा॥ सम दम कहि मु-सुच्छ पद दयऊ। जीव छतारथ अस करि भयऊ॥ पुनिमन प्रश्न कीन्ह सिरनाई। सकल हतान्त कहौ समुझाई॥ का विराग का अहै विवेका। का सम दम मुमुच्छ का टेका॥ करै साधना ये नर जोई। परख कहा लच्छण कछ सोई॥ दो०॥ सुनों तात दृष्टान्तशुभ परख साधनाचारि। ध्यस्त व्यस्त निर्णय न कछुकहौं सकल निरधारि॥ चौ०॥ ब्रह्मादेव राज ऋषिराजा। यच्छ वरुण सुर यमभ्राजा॥ भूपति रंकधनी सुखखानी। कामीकुटिल गुणी अज्ञानी॥ तिहुँ पुर देह धारि जे प्रानी। जो छत भोग अधिक सुख मानी॥ सो समस्त दुखदा अनुरागी। काकाविष्ट समलखै विरागी॥ असि मति जासु देखिये भाई। सो वैराग्ययोग स्वबकाई॥ देह अनित्य सदा छलकारी। आतम नित्य स्वछंद विहारी॥ सारासार शुभाशुभ जानै। सो विवेक मारग पहिचानै॥ सकल वासना तजि संसारी। सम दम दान दया अधिकारी॥ दो०॥ विषय दोष निरखै नहीं दुख सुख लखै समान। आज्ञा गुरुश्रुति शीश धरि विचरै जगत सुजान॥ अति श्रद्धा यक चित्त ह्वै ध्यान समाधि ल-गाय। ताहि समाधी कहत जग योगिराज सुखपाय॥ चौ०॥ आवागमन त्याग हित भाई। बहु विधि करैयोग चितलाई॥ बासर रैनिईशपद ध्यावै। सो मुमुक्षु पदधारि कहावै॥ यहि विधि सकल साधना सावै। भजै आपुआ-तम निरुपाधै॥ पूंछि बहुरिमन यहबुधिपाहीं। चित्तअहं मन बुधि तन माहीं॥ बसत सकल गावत कविराजा। नि-र्णय करि बरणौ तिन, साजा॥ सुनों तात तिहुँ पुर कर

ज्ञाना। बसत चित्त बुध करत बखाना॥ प्रथमहिं जो विचार कछु आवा। चित्त कहै ज्यहि जीव चितावा॥ करि लेहौं देहौं सें येही। शोचत यहै अहं कछु तेही॥ दो०॥ यह विधि करै विचार जो काज सिद्धि के हेत। सोहै मन मन जानिये बरणत बुद्धि निकेत॥ सबको थिर करि देइ जो सुन्दर शिष देतात। सो बुधि जा उपदेश ते काजसिद्धि ह्वैजात॥ येई अंतःकरणमन भाषत बुधजनचारि। अन्य भावना होय जो सो बरणौं निरधारि॥ (मनउवाच) लोग कहत संसारके करण योग तिथिवार। रिक्षसहित पंचांग शुभ करत सुसिद्धिविचार॥ चौ०॥ जब पंचांग अशुभ यह होई। सिद्धि काज तबहोय न कोई॥ तहांकौन विधि कारज करई। होइ न हानि लाभ संचरई॥ सोविचार म्वहिं कहौ कृपाकरि। ह्वै प्रसन्न उर अधिक दया धरि॥ दिशा शूल योगिनी बतावै। चन्द्र राहु शुभ अशुभ लखावै॥ करैं गौन हानि अनुमानी। जब ये अशुभ लखै जग प्रानी॥ विष्टमुहूर्त विचारत पंडित। कारज होत लहि सगुन अखंडित॥ यागी जनन विचारत सोई। गौन सिद्धि कारज सिधि होई॥ यह सिद्धांत कहौ समुझाई। जासदुविधा सब जाइ नशाई॥ दो०॥ जेही जन रोगहि लहत औषधि करत अनेक। हृष्ट पुष्ट योगी रहत बिन औषधि गहि टेक॥ शंजन भोजन सैन लघु शंका शंका जौन। इनहीं के विपरीतता होत रोग गृह तौन॥ इन सबको सिद्धान्त जा सो म्वहिं कहौ बुझाय। पांच तत्व को रमण तन ताहि देह समुझाय॥ (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ पूंछसि भल विचार सुखखानी। कहिहौं सकल सुमिरि पद बानी॥ यह पंचांग सत्य करि जानों। शुभ अरु अशुभ हिये अनुमानों॥ज्योतिषमतन योगमत भाई। सबविधि सिद्धि सिद्धि मनपाई॥ तिथि अरुवार योगशुभहोई। सकल सिद्धिद अशुभ न कोई॥ सबहि उचित मनकरैं विचारा। शार्ड़ कारू निशेष निरधारा॥ ज्यहि मत जेन शुभाशुभ भाषै। सम

जीवगशोतव सत्य पथ हरिसों बाढ़ी प्रीति (मनउवाच दो०॥ गह्यो जीवजबमारगसाँचा।पुनिकासकों लहकहोस रॉचा॥ (बुद्धिरुवाच) जब विवेक जीवहिसमनायो।तब त कहँनिज पन्थ बतायो॥ कहिनि साधनाचारि विचारी यागी जन जेकरत नियारी॥ प्रथम विराग रूप सिख रावा। ता पाछे निज अंग बतावा॥ सम दम कहि मु मुक्ष पद दयऊ। जीव हतारथ अस करि भयऊ॥ पुनिसः ग्रस्न कीन्ह गिरनाई। सकल द्यतान्त कहो समुभाई का विराग का अहै विवेका। का सम दम मुमुच का टेका॥ करै साधना ये नर जोई। परख कहा लचण कहु सोई॥ दो०॥ सुनों तात दृष्टान्तशुभ परख साधनाचारि व्यस्त व्यस्त निर्णय न कछुकहौं सकल निरधारि॥ चौ०। ब्रह्मादेव राज ऋषिराजा। यच्छ वरुण सुर यमभ्राजा॥ भूपति रंकधनी सुखखानी। कामीकुटिल गुणी अज्ञानी॥ तिहुँ पुर देह धारि जे प्रानी। जा लत भोग अधिक सुख मानी॥ सो समस्त दुखदा अनुरागी। काकविट समलखै विरागी॥ असि मति जासु देखिये भाई। सो वैराग्ययोग स्वबकाई॥ देह अनित्य सदा छनकारी। आतम नित्य स्वछंद बिहारी॥ सारासार शुभाशुभ जानै। सो विवेक मारग पहिचानै॥ सकल बासना तजि संसारी। सम दम दान दया अधिकारी॥ दो०॥ विषय दोष निरखे नहो दुख सुख लखै समान। आज्ञा गुरुश्रुति शीश धरि विचरै जगत सुजान॥ अति स्पृहा यक चित्त ह्वै ध्यान समाधि लगाय। ताहि समाधी कहत जग योगिराज सुखपाय॥ चौ०॥ आवागमन त्याग हित भाई। बहु विधि करैयोग चितलाई॥ वासर रैनिईशपद ध्यावै। सो मुमुक्षु पदधारि कहावै॥ यहि विधि सकल साधना साधै। भजै आपुआ- तम निरुपाधै॥ पूंछि बहुरिमन यहबुधिपाही। चित्तअहं मन बुधि तन माही॥ बसत सकल गावत कविराजा। नि- र्णय करि बरणो तिन साजा॥ सुनों तात तिहुँ पुर कर

बिचार अनुमानि ॥ चौ० ॥ गायत्री अजपा सुखदाई। सोऽहं हंसः दुविध बताई ॥ नित प्रति गौन खास मगहोई यकइस सहस छसौ कछु सोई ॥ निरगम खास हँकार बिचारै। सहित बिन्दुकीजै निरधारै ॥ विसर्ग सहित सकार प्रवेशा। शुभग मंत्र यह अहै गोशा ॥ यहि सम मंत्र न जप नहिं ज्ञाना। तप न कर्म विद्या नहिं ध्याना ॥ सकल धरमना जे जग माही। जपत मंत्र ते सर्ब मिलाही ॥ सो द्दतांत कहिहौं कछु आगे। सुनों तात व्यहि हित अनुरागे॥ इडा पिंगला सुखमन जोई। सकल सिद्धिदायक है सोई ॥ दो० ॥ इडाबाम पिंगल्ल दक्षिन नाशारंध्रनिवास। दोनों सुर पूरण चलै तब सुखमना प्रकाश ॥ चौ० ॥ इडा चन्द्र थिर कारण दायक। पिंगल रबिचिरकारल लायक॥ सुखमन सकल काज की भंगिनि। केवल ईश भजन की संगिनि ॥ जब सुखमना खास मग होई। तब न काज कीजा जग कोई ॥ सुखमन ध्यान अबिन थित रहई। कारज थिर चर सब सो दहई ॥ इडा चन्द्र सम रूप बखानो। पिंगल भानु विषम पहिचानो ॥ इडा नारि पिंगला पुमाना। शित शशि असित रूप सो भाना ॥ अब सुनु इडा काज चितलाई। थिर कारज कीजिय सुख पाई ॥ आभूषण गढ गढी बनावै। याचा दान बिवाह करावै ॥ दो० ॥ अलंकार मणि बस्त्र को बनवाउब तन धार। दान देब प्रीतिक करसकाष्ठकर्म निरधार ॥ चौ० ॥ स्वामि दरश कीजिये मिताई। बणिज बित गृह प्रबिशिय भाई ॥ सेना कर्म कृषी आरंभा। बीज बवन सघकार प्रारंभा ॥ दिक्षा देइ मंत्र कछु जपई। विद्यारंभ गेह निज थपई ॥ दरश बंधु अरु नारि बँधाउब। रस साधन शुभ बाग लगाउब ॥ बापी कूप समरूप तडागा। कछ शशि चार सहित अनुरागा ॥ गीत वाद्य स्तौत्रादिक कीजै। निधि महि थापि सकल सुख लीजै ॥ भूमि लेब यश नगर बसाउब। बडउपकार जग धर्म बनाउब ॥ अपरौ काज करौ थिर जोई। चन्द्र प्रबाह

विधि मंगलसिद्धि प्रकाशैं ॥ सो सुरज्ञान सुखद सबभांती
धरिय ध्यान तापर दिनराती ॥ बरणौं सुर ज्ञानहि f
सारी । निज मति सम लखि ग्रंथ पछारी ॥ दो० ॥ य
समुद्रवत् ज्ञान है बीच स्वास को गौन । निर्णय कार
जगत को चल जीवन सम तौन ॥ तत्वन को निरधार ज
सो अगाधता जानु । बहु प्रकार के भेद तें मिलत सरित
वत मानु ॥ ता समुद्र के पार को जान चहै नर कोय । बो
हित बिन आरूढ़ भे पार जाय किमि सोय ॥ चौ० ॥ एव
परन्तु सोहिं बखुआई । करै स्वामि गुरु मोरि सहाई
आशिष तरणि आपु कै वारा । बनै तो वेगिहि होइ उ
तारा ॥ करि है सो सहाइ जन जानी । यहिं भरोस य
मन क्रम बानी ॥ ताते वन्दि जलजपद गुरुकै । निर्णयकरौं
ज्ञान सुरफुरकै ॥ सुनो सुरोदय ज्ञान रसेला । कहो उ
मापति शंभु अमोला ॥ नाडी चित बहु विधि तन माही
जानत बुध मूरख जन नाहीं ॥ नाभि अधोलग अण्ड स
माना । सब नाडिन कर उद्भवथाना ॥ अध ऊरध तिर्
यक धाई । सहस बहत्तरि नाड़ि सिधाई ॥ दो० ॥ ति
नहँ दश अति श्रेष्ठ है ताको रियत सो जानु । दशमहँ बेर
घटा इड़ा पिंगल सुखमन मानु ॥ चौ० ॥ चौथी गंधारि
अनुमानो । हस्त जिह्वा पुनि पूषा जानो ॥ यशस्विनी सात
वीं पहिचानौ । अलंबुषा अरु कुहू मानौ ॥ और शंखिनी
कहत सुजाना । ये दश नाडी रहित प्रमाना ॥ अबइनकर
निज धाम बताऊं । जगत काज हित ज्ञान लखाऊं ॥ इडा
वाम नासा पुट माहीं । बसत पिंगला दक्षिण तांही ॥ है
सुर पूरक करै मनाहा । सो सुखमना कहत कवि नाहा ॥
गंधारी वामाक्ष निवासी । हस्त जिह्वा दक्षिण दृगवासी ॥
पूषा दक्षिण श्रुत दिस्वारी । वामेकर्ण यशस्विनि धारी ॥
दो० ॥ अलंबुषा मुख वासिनी कूहू लिंग विराम । शंखिनि
गुप्त स्थान बस दश नाडी दशधाम ॥ दैनाड़ी अति श्रेष्ठ है
गावनहिं कही बखानि । तिनसों जो स्वर स्थान है शुभ

बिचार अनुमानि ॥ चौ० ॥ गायत्री अजपा सुखदाई।
सोहं हंसः दुबिध बताई ॥ नित प्रति गौन स्वास सतहोई
यकइस सहस छसौ कहु सोई ॥ निरगम स्वास हँकार
विचारै। सहित बिन्दुकीजै निरधारै ॥ विसर्ग सहित स-
कार प्रवेशा। शुभग मंत्र यह अहै गनेशा ॥ यहि सम मंत्र
न जप नहिं ज्ञाना। तप न कर्म विद्या नहिं ध्याना ॥ सकल
मरमना है जग माहीं। जपत मंत्र ते सर्व बिलाहीं ॥ सो
वृत्तांत कहिहौं कछु आगे। सुनों तात ज्यहि चित अनुरा-
गे॥ इड़ा पिंगला सुखमन जोई। सकल सिद्धिदायक है
सोई ॥ दो० ॥ इड़ाबाम पिंगल दहिन नाशारंध्रनिवास।
दोनों सुर पूरण चलै तब सुखमना प्रकाश ॥ चौ० ॥ इड़ा
चन्द्र थिर कारण दायक। पिंगल रबिचरकारण लायक॥
सुखमन सकल काम की भंगिनि। केवल ईश भजन की
संगिनि ॥ जब सुखमना स्वास सम होई। तब न काम की-
जो जग कोई॥ सुखमन ध्यान अगिन चित रहई। कारण
थिर चर सब सो दहई ॥ इड़ा चन्द्र सम रूप बखानो।
पिंगल भानु बिषम पहिचानो ॥ इड़ा नारि पिंगला
पुमाना। सित शशि असित रूप सो भाना ॥ अब सुनु
इड़ा काज चितलाई। थिर कारण कीजिय सुख पाई ॥
आभूषण गढ गढ़ी बनावै। बाचा दान बिवाह करावै ॥
दो० ॥ अलंकार लखि बस्त्र को बनवाउब तन धार। दान
देन-प्रतिष्ठा करमकाष्ठकर्म निरधार ॥ चौ० ॥ स्वामि दरश
कीजिये मिताई। बणिज बित्त गृह प्रबिशिय भाई ॥ सेवा
कर्म छपी आरंभा। बीज बवन सपकार आरंभा ॥ दिक्षा
देई मंत्र काऊं जपई। विद्यारंभ गेह निज थपई ॥ दरश बंधु
अरु नारि बँधाउब। रस साधन शुभ बाग लगाउब ॥ बापी
कूप समंहल तडागा। वाल शशि चार सहित अनुरागा ॥
गीत बाद्य नृत्यादिक कीजै। निधि सहि थापि सकल सुख
लीजै ॥ भूमि लेब अरु नगर बसाउब। यज्ञप्रकार जग धर्म
चलाउब ॥ अपरौ काज करौ थिर जोई। चन्द्र प्रवाह

कीजिये सोई ॥ दो० ॥ इडाकाल वर्णन किये सुनु पिंगल के काम। दूरि होय भ्रम जगत हिय होवैज्ञान विराम ॥ चौ० ॥ शास्त्रार्थ पुनिकरिय विवादा। चोरीमल आखेटपरसादा ॥ गज वाजीरथ वाहन लीजै। दक्षिण वार प्रयोगहि कीजै ॥ पाट पाटांबर शस्त्र मँगावैं। भेषज करि विष भूत हटावैं ॥ युद्ध गमन दक्षिण सुर करई। निश्चय जीति शत्रु पद हरई ॥ त्रिय प्रसंग करु भानु प्रवाहा। सोवन भोजनादिसुख लाहा ॥ क्रिय विक्रिय सुपुण्य अस्नाना। भयमारग व्यौहार सुजाना ॥ मोहन उच्चाटन वशकर्मा। स्तंभन मारण जेधर्मा ॥ खरउष्ट्रादि महिषअसवारी। गज अश्वारोहण सुखकारी ॥ दो० ॥ तीरथ व्रत इत्यादि जे चर कारज जग माहिं। रवि नाड़ी महँ सिद्धि ते होवत संशय नाहिं ॥ सो० ॥ जब सुखमना प्रवाह होवै दोनों सुरनमहँ। तबन काज कछु जोह अर्थ हानि जिय हानि लखि ॥ चौ० ॥ शुभ अरुअशुभ चरस्थिर काजा। सुखदुखद दुहुंभांति समाजा ॥ काज न प्रश्न न गौनियभाई। जब सुखमना बाह दरशाई ॥ कहुंदक्षिणसुर वायों कबहीं। लखु सुखमना रूप यह तबही ॥ केवल कीजिय आतम ध्याना। उठि न यान ते करिय पयाना ॥ दूरिपन्थ स्वारथ अनुरागे। चन्द्र चार लखि चलौ सभागे ॥ होय सिद्धि सब विघ्न नशावै। अर्थ सहित निज गृह फिरि आवै ॥ वाम कि दक्षिण जो सुर चलई। ताहि विचारि विबुध मन गुणई ॥ वाम वाम पद दक्षिण दाहिन। देइ प्रथम सब दिशि दुख नाहिन ॥ दो० ॥ वाम चार समपद धरै जैसेई घर चारि। भान विषम जिमि तीनि शरयात्रा सिद्धि विचारि ॥ वाम कि दक्षिण जौन सर पूरण होवै तात। तौनी दिशि पूंछै चतुर काज सिद्धि ह्वै जात ॥ चौ० ॥ वाम अग्र ऊरध दिशि होई। बहै चन्द्र सुरपूछै कोई ॥ कारज सकल सिद्धि पहिंचानै। शुभकार्य्य शुभ ताहि बखानै ॥ पृष्टि ओर दक्षिण अध आशा। प्रश्न करै सर भान प्रकाशा ॥ सिद्धि

सर्व ता कहँ कहि दीजै। मंगल समुझि सुरोदय लीजै॥ चढ़ दिशि गौन करिय क्रम एही। योगिराज बरणत हैं तेही॥ पूरब उत्तर रबिकी नाड़ी। गमन करै ता होय सुखारी॥ पश्चिम दक्षिण शशि परवाहा। जाय पुरुष उपजै सुख लाहा॥ यहि विपरीत गमन जो करई। प्राणनाथ कै संकट परई॥ दो०॥ शशियें सम अचरकहै जिमि दश द्वादश बीश। वाही दिशि ह्वै प्रश्न ज्ञात होय काज कछ ईश॥ बिषमबरण मोलेचतुर ज्यों नवग्यारह सात। भानु उदय दक्षिण दिशा सकल सिद्धि कहु तात॥ उदय सुषुमना होय जब तब पूंछै जो कोय। अफल होय कारण सबै कह कवि ग्रन्थनि टोय॥ चौ०॥ अब तिथि आदि गगन ग्रह तारा। चन्द्र सुर सँग करौं बिचारा॥ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा जो पावै। तादिनते शशि उदय बतावै॥ तीनिदिवस शशि उदय प्रधाना। पुनि रवि बहुरिचन्द्र फिरि भाना॥ यहि बिधि कृष्ण पक्ष दिन तीनी। परिवा ते रबि तिथि जानि दीनी॥ फिरि चन्दा पुनि भानु प्रकाशा। समुझत योगिराज सुख बासा॥ परिवा शुक्लपक्ष शशि राजा। वहै चन्द्र उपजै सुख साजा॥ कृष्णपक्ष परिवा रबि वहई। सकलानँद दायक कबि कहई॥ शशितिथि रबि रबितिथि शशिवारा। अति कलेश तब चतुर बिचारा॥ दो०॥ बहै क्षपाकर द्वैज तिथि शुक्ल पक्ष भरि पूरि। मंगल मत सुर ज्ञानके सुख उपजै तन भूरि॥ चौ०॥ प्रातसमय शशि नाड़ि प्रकाशा।अरुसंध्याइनकु चन्द्रबिलाशा॥ संध्याकालं दिवाकर चारा। सब बिधि सुखद मिटै दुख भारा॥ रहै दिवस भरि शशि सुर माहीं। अन्यभाव होलै जबनाही॥ निशिभरि उदय भान कर होई। अल्प काल नाशक है सोई॥ यह संयोग जानिपरिहरई। सहि दुखअल्प काल नर मरई॥ पूरबवत शशि सुर चलावै। पूरण आयुहोय सुखपावै॥ पाँच तत्व पुरष जे गाये। जिनकरि सब जीवन तन पाये॥ क्रम क्रम बहत श्वास महं सोई। महिजलपवन

सिखी नभ जोई॥ दो०॥ अहि निशि द्वादश बार तन संक्रम होवत भाव। लगत काण हित हेत सब कहौं सबै समुझाय॥ चौ०॥ द्वादश राशि जगत सब जानै। उदित होत रवि चतुर बखानै॥ दृप घट कर्क कन्यका जोई। दृश्चिक मकर मीन युत सोई॥ इन पट लग्नन मह शशि बासा। करिय काज लखि लग्न प्रकाशा॥ मेषमिथुन हरि तुला बखानौ। धन घट राज भानु शिव आनौ॥ जो निर्णय आछी विधि करई। तौ ये राशि त्रिधा उच्चरई॥ मेषरु कर्क तुला खग जानौ। इनमहँ रविकर योग बखानौ॥ दृप केसरी कुम्भ अलि जोई। योग निशाकर शुभदा सोई॥ मीन मिथुन कन्या धनराशी। दुःखभाव सुखसना निवासी॥दो०॥ चन्द्रयोग थिरकाजकरुभानुयोगचरसाधु सुखमन से सबत्यागिकै निज आतम आराधु॥दिनकरनिशिकरयोगलखुशुभअरुअशुभविकार। काज भंगसुखमन चलत करियविबुधनिरधार॥चौ०॥गुरुशुक्रबुधअरुशशिवारा। बाम नाटिका योग बिचारा॥ भौम शनीचररविदिन जोई। सूरज योग दुखद कछु सोई॥ गुरु बुध भृगु शशि दिन सितपापा। चन्द्र उदय उपजै सुख लापा॥ असित पच्छ रवि शनिमहिबालक। डोलै भानु मनौं दुखघालक॥ यहि विधि लग्न बार तिथि जानी। रवि शशि योग सो कहौं बखानी॥ काज शुभाशुभ जगके जेते। पूरन योग जानिकरु तेते॥ होइ न हानि कालकछु भांती। स्वास निरत सो रह दिनराती॥ मूरखनरहि न यहमतदीजै। प्राणहानि धन हानि सहीजै॥ दो०॥ लघुशङ्काबासै सुरहि शंका दहिने माहिं। भोजन सुरपिंगल विषै कीजिय संशय नाहिं॥ बासे करवट शयननित कीजै चतुर बिचार। यहिविपरीत किये बिबुध होय रोग अधिकार॥ दश दिन कै विपरीत ते अधिक रोग तन होय। सो बिचार उर राखिये हानिलहै नहिंकोय॥ जौनराशिके होहिं रवि तासु उदय पहिचानि। लग्न बिचारै सहज मत संगत दास

बखानि॥ चौ०॥ अबसुनु तत्त्व बिचार रसाला। जाकोजौन विधिशंभु कृपाला॥ पांचौ तत्त्व स्वास संग बहई। सुखद दुखद दोनों विधिसहई॥ परखब कठिन योगबिनुजाने। सरलपरख जो कहत सयाने॥ सोऊ बदत सुनों चितलाई। तजिदुविधा देखौ सुख आई॥ द्वादश अंगुल जब सुर डोलै। तब महि तत्त्व भलो विधि बोलै॥ षोडश अंगुल होय प्रवाहा। स्वास तरंग जल बाह कनिजाहा॥ अंगुला-ष्ट बाहत निरधारा। चतुरांगुल सुर अग्नि बिचारा॥ परश होसुर बाहिर नाहीं॥ गगन तत्त्व बनिअंबत तहांहीं॥ दो०॥ अपरौ परख जो योग मत ताहि सुनों चित लाय। तत्त्वपरखि पुनिकाजकर हानिनहोवैभाय॥ चौ०॥ मध्यमगौन भूमिसुरबाही॥ अधो गौनसुरनीर लखाहीं॥ ऊरध गौन स्वास सिखि बाहा। तिरगनवायु अबसुन्य प्रकाशा॥ महि जल तत्त्व दुवौ शुभभाई। मध्यम पावक सिखि बाहरबताई॥ गगनमरुतअतिअशुभ बखाने। हानिक दुखदायक पहिंचाने॥ मध्य अचलसुखदा सुरजानौ। अध आनंद रूप अनुमानौ॥ ऊरध रास निधनको दाता। तिर्यंगमे उच्चाटकदाता॥ गगन सदा सब काज नशावत। कौनौ सिद्धि न जग लख पावत॥ यहिविधि जानि तत्त्व सतकाजा। ताके हानि कोउ रंक न राजा॥ दो०॥ शीश वास नभ बांध सिखि वायु नाभितहँ वास। जानु देश महँ भूमि जल पाद देश सविलास॥ सो०॥ गगनतत्त्व जनजानु सकल काज तब त्यागि बुध। मनथिर करि धरिध्यानु भजु परमातम परम निधि॥ दो०॥ मंगल सिखिमय रवि धरा शनि जल मय जल राहु। दच्छिण नाडी योगसुख कहत सर्व कवि नाहु॥ सोम नीर मय दूजा बुध गुरुमध पवन सुजान। शुक्र अग्नि मय कहत बुध वाम नाडिका जान॥ चौ०॥ तत्त्व परख अपरौ सुनुभाई। कहौं बहुतविधि तेहिं समुझाई॥ चहुकोणा डोलै रँगपीता। मधुर स्वाद भोगदा अभीता॥ यहगति धरा तत्त्व की होई। ...

कटु स्वाद बखानो । जल गौन अग्नि पहिचानो ॥ स्वे
वरण अवस्वाद सुभारा । दक्षिण गौन जासु जलधारा ॥ स्वे
सितासित असित सुस्वादा । तिर्यग गौन पौन सुरनादा ॥
नभकस स्वादरंग तसनाको । सर्वगौन सुरनभ कहवाको ॥
यहि प्रकार लखि तत्वन भाई । सर्वकाज तसु गगनहिं पाई ॥
दो० ॥ सहि शुभ गुरु जल धनि भगौ सिखि शुक्र रवि सहि
तात । पवन को गुरुबुध गगन के धनि अरु राहु कहात ॥
सूक्ष्म ते जानत चतुर समुझौ याहि बहोरि । पुनि कारण
कछु कीजिये मिटै विघ्न शतकोरि ॥ सो० ॥ आगमकहत वि-
चारि योगीजन जे योगवित । कहौं सकल निरधारि सुनौ
चतुर जन ग्रंथ लखि ॥ चौ० ॥ चैत शुक्ल परिवा जब आवै ॥
प्रात समय निजसुर चितलावै ॥ लगै मेष संक्रांती जबहीं ।
वेलाप्रात विचारै तबहीं ॥ संवत भरिकै कर्मफल पावै । बिना
योग लखि कोउ न पावै ॥ यहि प्रकार योगीजन जानत ।
ते निज स्वास निरत सुख मानत ॥ पृथ्वीतत्व जो बहै प्रभा-
ता । तौ यहि भांति चतुर कहु बाता ॥ जग सुभिक्ष वृष्टि
उप होई । अधिक वृष्टि सुख पूरण सोई ॥ उपजै अधिक
अन्न जग माहीं । सकल उपद्रव रहित तहांहीं ॥ वामे सुर
विशेष फलदायक । दक्षिण चार समासम लायक ॥ जो वा-
मग जलतत्व विलोकै । समय सुखद सुख उपजै लोकै ॥ होय
वृष्टि बहुविधि जगमाहीं । अन्न सुभिक्ष निरोगहि पाई ॥
दक्ष शुभ लंगन चार बतावै । सम जल तत्व चंद मग पावै ॥
मध्यम फलसुर भानु प्रवाहा । आपत सकल मिटुध कविना-
शा ॥ दो० ॥ डाभी स्वास जो अग्निलय राजभंग तब जानु ।
काल परै भयभीत जग रोग ग्रसित अनुमानु ॥ अल्प वृष्टि
अन्नादि कछु उपजै अल्प बखान । समय निषिद्ध विचारिये
गावत वानि सुजान ॥ चौ० ॥ होयप्रात सुर पवन प्रचारा ।
ईति भीति जानौ अल्प विचारा ॥ अति उत्पात जगत महँ
होई । समय दुखद कछु सुखद न सोई ॥ बहै मेष संक्रांति
प्रभाता । मध्य फलद अन्नादिक नाशा ॥ अतिहि कराल

समयँ तब जानिय। दुखद सकल भाँति अनुमानिय॥ नीर
सही सुखदायक होई। अन्य तत्व नहिं सुखकर कोई॥
यहसत कठिन न सपसन होई। चतुर सुजान जानत कोइ
कोई॥ अब आगे पुनि ज्ञान बिचारा। करिहौं निशमति
सरिस प्रकारा॥ जाकेमन भावैसो कीजो। योगकर्म करि
ताहि लखीजो॥ दो०॥ श्वास निरत यहि निशि रहै स-
मुझै सो सुरज्ञान। साधन बिन गुरु बिन चतुर जानौ स-
कल अज्ञान॥ संगजानत योगनहिं लोग कहतछहुबात।
भो मनमें विश्वास नहिं औरन के मन तात॥ चौ०॥ सुनो
जगत के काज अनेका। चित थिर करि पुनि सहित विवेका॥
जलमहि तत्व वासमुरपाई। थिरकारजहत सब सुखदाई॥
पावक पवन संग रविचारी। चरकारजकरि होइसुखारी॥
तत्वसार तिथिराशि गनाई। सुर अरुपक्ष होइ यकठाई॥
चन्द्र योग अथवा रवि योगा। थिर चर काजकरै जगलो-
गा॥ सिद्धि समस्त सर्वसुखहोई। हानि काजविधि लहै न
काई॥ जापर कृपाकरैं जग पालक। यहि विधि लखैयुवा
अरु बालक॥ तजि मान्यता बड़ाई होई। जो न जानि
सुरोदय कोई॥ दो०॥ जब जानौ विधि योग मत जानि
लेहु यहि भाय। तब चहु काहु चतुर को बुधजन देहु ब-
ताय॥ सकल सिद्धि की सिद्धि है सब योगन को योग
सुरूप त्यहि जानत नहीं लखत सकलजग लोग॥ चौ०॥ ब-
सत तत्व महँ गर्भ जो रहई। दुखी विदेशी उपजै कहई॥
वन्हि तत्व के योगहि पाई। श्रवै गर्भ सुत जियै न भाई।
धरा तत्व मधि गर्भ प्रवेशा। उपजै बालक सुखद धनेशा।
भोगवन्त सुन्दर तन छाई। प्रीतिकरै वासँग सब कोई॥
नीर मध्य भागी धनमाना। होवै बालक चतुर सुजाना।
प्रगट विनाशकव्योमबखानो। सुखजनको ससर्गहिजानो
आदितराजसुवनकरयोगा। खगपतिराजसुताकरलोगा।
सुखमन मध्य नपुंसक भाषत। जिनयोगधर्म अभिलाषत॥
दो०॥ यहि विधि भोगिय नारि निज तनया सुत हित

कागि। तत्र निशेपि विचारिये देखियहित निज लागि॥ मत्र गर्भ की कारै ग्रन्थ प्रथम स्वास निज देखु। ता पाछे उतर कहिय स्वरगधिष्ठान विशेषु॥ चौ०॥ पृथ्वी जल सुत योग प्रकाशै। अग्नि सुता सिखि गर्भ विनाशै॥ जीव गगन प्रथमा सुकुमारी। अन निर्णय सुनु चतुर अगारी॥ निज दच्छिण सुर चलत दाहिन। वृष सम सुत उपजै भ्रम नाहिन॥ अथवा चंद सूरचंद प्रधाना। कन्या विदित करौं बुधिवाना॥ निज सुर भूर निशाकर वाको। होय कुमार सहठ कहताको॥ वाकर भानु सुधाकर थापू। पतन जन्म ते गर्भ संतापू॥ निज वाको एकै सुर होई। सुखद विचार भनो बुध सोई॥ गुरु बिन कठिन जात नहिं जानो। गुरु गम सकल परत पहिंचानो॥ दो०॥ उरध समदरशी सखन धात जीव हिय हेर। अधोमुल इस्थिर मनी चतुर बखानत टेर॥ धरा मूल मधि उदक हरि जीवरूप पहिंचानु। तत्व धातु नभ चतुष्पद जानि स्वतत्त्व बखानु॥ चौ०॥ पूरण सुर पूछे नर कोई। शून्य ओर नहिं कारज होई॥ शून्य समय पूछे हितकारी। पुनि पूरण सुर सुखद बिचारी॥ कहै विदेश गया सतनेही। बहुत दिवस सुधि आई न तेही॥ दिशावार तिथि अचर जानो। सुर संयोगहि पाय बखानो॥ शुभग योग सयसुखद बताइय। यहि विपरीत अयोग लखाइय॥ सकल योग सूरज करहोई। प्राची दिशि उत्तर शुभ सोई॥ पश्चिम दच्छिणशशि संयोगा। आइहि सहित समाज सभोगा॥ यहि विपरीत दुखद बुध भाषत। जे निज सुर निज वश करि राखत॥ दो०॥ धरातत्त्व स्थिरसुमन आवन थोरे काल। पवन पयान हुतेसिखी गगननाश तन बाल॥ चौ०॥ गमन हेत पूछै कोउ आई। तिथि दिन सुर विचार चितलाई॥ दच्छिण पश्चिम शशि जल भूमै। फलदसुखद कोउ दुखद न दूमै॥ भान योग पूरब उत्तरदिशि। देइ बताइ विचारि दिवा निशि॥ अब आगे रणभूमि विचारा। कहि

हौ हौ निजमति अनुसारा ॥ चन्द्र योग सब विधि शुभ
होई । वरुण बार तिथि पचौ सोई ॥ ऐसे भानु योग जब
पाइय । जीति युद्ध महि सकल बताइय ॥ दोनों दिशि के
पूरब भाई । करैं प्रश्न इव युद्ध जताई ॥ पूरण सुर ज्यहि
दिशि निज होई । प्रथम प्रश्न तिहि दिशि जात जोई ॥
दो० ॥ समर भूमि सो जीतइ यामें संशयनाहिं । शून्य
स्थल के ओरही पूछन दुऊ जन जाहिं ॥ जो पाछेते पूछिहै
विजय तासु की होइ । यामें संशय नाहिनै कह हर निज
मुख सोइ ॥ चौ० ॥ बामे सम अचर जय कारक । दक्षिण
विषम वरण अरि जारक ॥ सुख मन अमित कष्ट रण दा-
यक । काहु विधि नहिं सो रण लायक ॥ दक्षिण वामजो
पूरण होई । त्यहि दिशि पूछै जीतै सोई ॥ जो आपुहिरण
काज पधारै । तौ दक्षिण सुर विजय विचारै ॥ शशि सु-
वाह प्रथम गह खेता । विजय लहै निज भूमि समेता ॥
अग्नि तत्व दिन तिथि रवि केरा । पाइ युद्ध गमनै कवि-
टेरा ॥ दैवयोग अस योगहि पावै । शत्रु जीति सहजै
घर आवै ॥ बाम दक्षिन ज्यहि दिशि कह कोई । बहै
न निज सुर तिहि दिशि सोई ॥ दो० ॥ मही तत्व जो
होइ तहँ उदर घात तब आपु । घात चरणजग अग्नि
उर त्यों समीर अभिलापु ॥ सो० ॥ गगन मांझ शिर घात
होवै कुछ संदेह नहिं । पाँच तत्व की बात सुर विचारि
रण भूमि कड ॥ चौ० ॥ बहै जौन सुर त्यहि दिशि आई ।
पूँछै समर वीर सुख पाई ॥ तब निज सुर महँ तत्व विचा-
रो । कहु सिद्धांत योग सुख कारी ॥ समता धरा विजय
जल देता । कहु रण भंग अग्नि हात खेता ॥ पवन मृत्युदा
अशुभ अकाशा । समर देह इव कारत विनाशा ॥ बामे
वासे सन्मुख धावै । दक्षिण पृष्ठि शूर लखि जावै ॥ जीतै
समर कुशल गृह आवै । योगिराज यह योग लखावै ॥
पूरब उत्तर बाम विशेषी । दायक विजय कहत सुरलेखी ॥
जबदाभानु दिशा द्वौ जोई । दक्षिणपश्चिम शानौं सोई ॥

दो० ॥ होइ दिवाकर उदय जब काम तन नारि प्रसंग। दुहुँ दिसि बाढ़ै नेहबल होवै प्रीति अभंग॥ चौ०॥ अर्द्ध रैनि तिय अँगलिपटाई। निज सुरज जिय चंद्र मिलाई॥ पिये पुरुष कंदर्प समाना। होवै तिय हिय सुख परमाना॥ नारि पवन शशि को निज मानै। करैं नारि स्ववश अनुमानै॥ जो यह योग सिद्ध नर करई। जपा अनिलथ गति रति अरई॥ एक जीव दूजहि धरि कापैं। जीव वश्य होवै अति दर्पै॥ भानु बार आलिंगत नारी। उपजत सुत सब बिधि सुखकारी॥ अब तिय वश्य जन्म जग होई। सकल भांति सुख नारिहि सोई॥ शशि में तनया रति सुख जानी। यहै जानि ज्ञत भोग न जानी॥ दो०॥ बार बार बर्जति अहैं जिय प्रसंग शशि बार। जो नेह करि है हठ सहित हानि विरुद्ध अपार॥ सो०॥ जो पूछै कोउ आय बरकन्याके व्याह को॥ दीजै चतुर बताय सुर तिथि बार सुलग्न गनि॥ चौ०॥ चंद्र योग सब बिधि भल पाइय। टीका लग्न प्रवीन पताइय॥ सागरी बिवाह की जोई। चंद्रयोग महँ कीजिय सोई॥ भानु योग व्याहन को जाई। भाईबन्धु जिमावै भाई॥ भाँवरि भानु मध्य शुभ डारै। जिमदृढ़ित निज सदन सिधारै॥ सो साधन यह चतुर बखानो। व्याह करत सब सुख पहिचानो॥ अन्य भांति उपजै दुख देहा। रंग भंग होवै न सँदेहा॥ जपा काल उदय बिपरीता। रवि ग्रह शशि शशि ग्रह तस जीता॥ यति अनीति बड़ दोषन लावै। अब कवि तिन कर नाम गनावै॥ छं०॥ सुनु प्रथम मन उद्वेगता अरु द्वितिय धन को नाश है। पुनि तृतिय गौनौं काऊ चतुर्थ दृष्टि सुभग बिनाश है॥ पंचम बिनाशक सुख सबै षष्ठम स्वपद्की हानि है। फिरि मृत्यु अष्टम होइ निश्चय कहत याग बखानिहै॥ दो०॥ सदा कठिन यह समुझिबो गुरु बिन सुनो सुजान। सिध होवै निज धर्म दृढ़ तब मिलवत गुरु ज्ञान॥ चौ०॥ दिन मेन रवि योगहि

कीजै। दीजै मक्त साझ ते लीजै॥ जो शशि योग लेइ व्हरा कोई। जन्मांतर लगि अस्थानशोई॥ ऐसे योग छपाकर लाही। देइ वक्तरि पावैसो नाही॥ देइ लेइ सुख भगमहँ कोई। दु महँ एक काल वश होई॥ योगतमारि कारौ व्यवहारा। यहिते शुभ नहिं श्रान विचारा॥ धनी मास जब जाइय भाई। बैठिय दाहिनओर अजाई॥ दाहिनसुर निज अर्थ उधारै। रवि संयोग धन लेइ उधारै॥ विनयत अनहरा होइ न्हटूटै। आनँद अमित बैठिशहलूटै॥ दो०॥ समाचार पुंछै काउ रोगी को तरहि आय। निजसुर भेद विचारि कै देवै ताहि बताय॥ चौ०॥ दिनकर योग दाहिनी ओरा। पूंछै जिये रोगिकहँ भोरा॥ बामअंगनिशि नाथ प्रकाशा। रोगी जिये मिटै दुखदाहा॥ चंद्र ओर पूछै रविवाहा। निश्चय मरण जीवका ताहा॥ जब शशि बहै दक्षिनि दिशि पूछै। रोगी मरै मनोरथछूंछै॥ शौन नाडिका बहै समीरा। पूंछै तौन ओर मतिधीरा॥ रोगी जीवन तुरत बतावै। उभ्मोनाथ यह उग्रहिंलखावै॥ ज्ञान योगसब शशिकरसाई। केवलसुरसूरज करहोई॥ कछुदिन वादि रागकर नाशा। शशिकसोइमि करिय प्रकाशा॥ दो०॥ दक्षिण दिशिते आइकरि वामेपूछै कोय। वामेसुर वायुर्वहै सुखद योग कछुतोय॥ चौ०॥ शशिदिशिते फिर रविदिशि आवै। रविन वहैरोगी दुखपावै॥ वाम ओर पूछै रविनाहा। काछुक कालरोगी दुखदाहा॥ जहांशून्य सुखमन करराहू। रागीनाशैहोइ अकाजू॥ कोटि उपाय रोगि नहिंधाई। काहाउसाप्रति शंभुगासाई॥ कालज्ञान आगे अब भाषौं। जगत काज निज गुप्त न राखौं॥ जोसुर ध्यान रैनिदिनधरई। कालज्ञान ताका लखिपरई॥ कर्त्ता सत्यनकर्त्ताभाई। वकै चर्चागतिजहै न सोई॥ चतुरसुजान प्रगट यहदेखौ। सुरते परैन जगकछु लेखौ॥ दो०॥ उदय होय विपरीत सुर एकापक्ष लगुतात। रोगग्रसेतन आयतन सुरसत भाषत बात॥ चौ०॥ एकमास इमि जब सुरजालै

तुह्ह्द बंधुको विपति अतोली ॥ पन्द्रतीनि में तनं नशिणाई ।
नगंट परत विपरीत लखाई ॥ कैचन्द्रा कैसूरज कोई ॥ वां
टैनिदिन पूरण जोई ॥ तीनवर्षलगकालनआवै । पाछूअंत
होय बुधगावै ॥ वहै पिंगला है दिन राती । युगुल वर्ष
पीछे मरिजाती ॥ तीनि दिवस निशिको सुर बहई । वर्ष
प्रयंत आप तन रहई ॥ षोडश घड़ि निशि सूरप्रवाहा ।
मास एकलखि जीवन लाहा ॥ मासप्रयंत चलै सुखमाना ।
दिवस होइ भरि जीवन जाना ॥ सुखमन उदय होय घटि
पांचा। छुटैशरीर जानियेसांचा ॥ चन्द्र सूरसुखमनानआई ।
आनन पवन बाहरदरशाई ॥ चारिदंड लगि काया रहई ।
पाछूप्राण गमन दरशहई ॥ तत्त्वआकाश निशादिनतीनो ।
मीचुवर्षपीछे कहिदीनो ॥ दो० ॥ दिनसूरज निशि चन्द्र-
मा एक मासहित गौन । जीवरहै षटमास लगि सत्यसत्य
लखुतौन ॥ जानिकाल योगीचतुर प्रथम शून्य ग्रह जाय ।
कालआइ फिरिजाइतब लेइसमाधिलगाय ॥ सो० ॥ कह्यो
सुरोदय ज्ञान जसकुछमैं समुझो हियै । अवसुनु सहित प्र-
मान अजपा को व्योहार कछु ॥ चौ० ॥ प्रथम मंत्र अजपा
जो आपो । वहै मंत्र हढ़ जिय अभिलापो ॥ आसन बहुत
योग बतलाये । तै सबै करि ध्यान लगाये ॥ तिनमहँ प्र-
द्मासिद्ध जोई । एक लगाय मंत्रजप सोई ॥ पद्मासन वि-
शेष फलदाता । शुचिह्वै मंत्रजपै उठि प्राता ॥ मौन जपै
ज्यहि सुनैन कोई । अतिफल प्रद जानिय बुधसोई ॥ दृष्टि
नासिका अग्र लगावै । सुमन उपैमन आनन आवै ॥ मज्जं
नमसौत क्रिया विनहोई । तदपिन तासन भाषिय सोई ॥
जन्मांतर लगिजो यहसाधै । जन्म मरण की मेटैबाधै ॥
दो० ॥ तीनिकाल तिहुंलोक में विदित मंत्रयह आहि ।
साधक याको कौन अस सुगतिमिलो नहिंजाहि ॥ चौ० ॥
शंकर विधि अवतार मुरारी । यहै मंत्रजपि भये सुखारी ।
अरु हनुमान परम पदगामी । जपियहमंत्रभये अधिनामी ॥
ध्रुवप्रह्लाद जप्य। चितलाई। शुभगति लह्योपुराननगाई ॥

नारद सनकादिक विज्ञानी। भये स्वेच्छाचार प्रमानी॥ ज्ञानीगुणी मुनी संन्यासी। जपत मंत्रयह परम उदासी॥ कलिमहँ बहुतजीव जपियेहो। पायसुगति से परमसनेही॥ रामानन्द कबीर गो.स.ई। शूर सघन मीरा गति पाई॥ और अनेक जपी यहि येरे। बसे पुरुष ते हरिके नेरे॥दो०॥ ताकारणअहि निशिचतुर एकवार नितसाधु। सुमनध्यान धरि दुचिततजि निजआतमआराधु॥ राजसुखमनाकोजहै निशानाथ रवि नांहि। कंजासन आरूढ़ ह्वै तब विशेप जपु यांहि॥ मोक्षद्वारो जीवकहँ सुखदसुखमना जानु। अपरनाटिका मोक्षदा मंगल हृदय न आनु॥ (मन उवाच) आतम वास शरीर महँ सो कैसोहै भाय। दासआपनो ाानिकै जनिदुरावकछु राखु॥ (बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ आामकर शरीर महँवासा। जिमा जिम दुहूं विधिभाषा॥ जेमि जनं जलघट अगणित भरई। सन्मुखदिन करिके सो ारई॥ पुनिसब घटनि बिलोकै जाई। रविवत रूप सबन रहँभाई॥ रवि समान सो रविते न्यारा। इमिशरीर आाम विस्तारा।अथवाजिमि दर्पण मुख देखै। दुविधा भाव ादन नहिं लेखै॥ ऐसेइआतम बसत शरीरा। लखत सुदृष्टी ामगँभीरा॥इंद्री सकल सोइ बौरावै। सुथिर आपु कछुं गाइ न आवै॥ नैना दृश्य श्रवण बिन सुनई। रसना रसन ाखि सुख गुनई॥ दो०॥ ज्ञानेंद्रियजे पांच हैं कर्मेन्द्रिय जे वाण। तिनकरि सोनहिं जानियत सुजुलन सहित प्रमाण। (मन उवाच)ज्ञानेंद्रिय कर्मेन्द्रि जे तिनकरि लखो नजाय। फिरि कैसोहै सोकहौभिगणा सकलनशाय॥ (बुद्धिरुवाच) चौ०॥सुनु प्रमाण तोहिं कहौं बुझाई। लखि आतम गति रहुअरगाई॥ रूपाच निरखै रवि कासा। ताबिन निशि बुधकरत प्रकाशा॥ सूझै कछुनहिं नैनपसारे। सबकछु लखै शूर बिनकारे॥ रवि देखन हित रविनहिं चाहिय। इमि आतम स्वभास तन आहिय॥ औरं वस्तुजोनै लगिभाई। दीप प्रकाश कीजियत धाई॥ प्रज्वलित दीप खोजिबे का-

नहि। को गया। स दायक सुख भाकहि॥ वस्तु सकल नै नाँहिदेखें। नैन लखनहित काहि अवरेखें॥ है प्रकाश निधि आतम ऐसो। दीपक अथ भानुभन जैसो॥ दो०॥ रवि ररि दीपक दीपसों नैन नैनसों देखु। औरवस्तु नहिं चाहिये हुधि आतम निज देखु॥ चौ०॥ जै तू चित अहँकार कहावे। चारों एक रूपको पावे॥ यक सति यक गतिको समझिहै। तब निरुपाधि लखै गति गूढै॥ इंद्री सर्व सो मन आधीना। मन सो बुद्धियाधीन प्रवीना॥ जीवाधीन बुद्धि दुख काहई। जिन सूक्ष्मधी अलखनागहई॥ तहि भमणा दुविधा संसारी। मारग ज्ञानलखै सुखकारी॥ उदयज्ञान होते तलमाहीं। दुःखदा सकल व्यकार नशाहीं॥ यावद भ्रमणा नशै न भाई। तावद्बोध प्रवीनन पाई॥ मोहनशं-बिन सुबुधि नहोई। बुधि बिन आतम लखेन कोई॥ दो०॥ आतम निज चीन्हेबिना जरा मरण न नशाय। जन्म मृत्यु के नाशबिनु लहै न ईश्वर भाय। (जनउवाच) ॥सो०॥ ब्रह्म सो कैसो आहि यह मोको समुझाय कहु। निरगुण गुण अवगाहि तू समर्थ सबभांति बुधि॥ (बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ कहौं कौनविधि ब्रह्म स्वरूपहि। कहत बनत नहि रंकन भूपहि॥ प्रजा कहौं तौ भूपति कोहै। भूप कहत पुनि प्रजा न सोहै॥ अलख कहौं तौ लख कोउ औरै। लखा किमि कहौ अलख शिरमौरै॥ जो अरूप भाषौ भगवानैं। रूप मान कोउदूसर जानै॥ गुणनिधि कहौं अगुण कहि लहूं। अगुण कहत फिरि गुणनहि लहऊं॥ करता कहौं कर्तादै सोई। तौ पुनि अहै अकर्त्ता कोई॥ अनभव अनत भेद संभव से। संभव बर्णत गुण अनभव सें॥ निराकार जो वाको भाषौ। तौ आकार ग्रह काहि अभिलाषौं॥ दो०॥ कहौं बसत बैकुंठ में अथवा श्वेतद्वीप। तौवहिं ज्ञानी मानिहै धरे हृदय बुधिदीप॥ चौ०॥ नारि कहौं तौ यवन महाना। पुरुष कहौतौ दुविधा साना॥ कहौं नपुंसक लिंग गवेशा। तौ फिरि ज्ञानी करिहि अँदेशा॥ सारय-

शास्त्रजो कर्म बतावै। प्रथम चतुर तिनमहँ मन लावै॥ योगशास्त्र पुनि खोजै कोई। समुझै हृदय रूप हरि सोई॥ कविका विद्याच अस न जहाना। परमातमाकार करै बखाना॥ वेदशास्त्र कहि नेति पुकारै। औरकहा जगजन अब भारै॥ ईश्वर सब जीवन तनवासी। विमल बुद्धि वह भगत उदासी॥ आपनपौ चीन्हैगो चातुर। समुझै ईश रूप वह सातुर॥ दो०॥ आतमहीं परमातमा याको जानैकोय। मिलै ईशह्वै ईशमें जलनिधि जल सम जोय॥ ज्ञान विना तिहुं लोकमें ताहिन जानै कोय। जो कउ ज्ञानी हिय लखै कहिन सकैगो सोय॥ द्वैतभाइते रहित है उपमा दीजिय कौन। उपमाविनसंसारमें समुझि सकै बुधतौन॥ चौ०॥ जब द्वउ सूक्ष्म थूल शरीरा। ह्वै चैतन्य गहैं सुख पीरा॥ अद्दश्यस्वप्नमांझ धरिआई। जनअलाय निजभ्रमआपाई॥ पुनि सुखोप्ति जबहोय जीवकहु। तीनि नरक्रिम करिविचार गहु॥ इन तीनौमहँ आपुहिमाहीं। मिथ्रहै सब भ्रम मिटिजाहीं॥ तबै होय तुरिय हरि लीना। जहां होय सब सुख दुख हीना॥ प्रथमअवस्था तीनि बताई। हरिमद प्रीति रहै लवलाई॥ जपैमंच पुरुष जो भाषो॥ सदृढ़ बुद्धिआतम अभिलाषो। तबमिटि जाय अवस्था भूरी। तुरियः पदहि रहैगति पूरी॥ दो०॥ कठिन ज्ञान मारगरहै विरलोकोउ ठहराय। जो समर्थ पूरबलपी गहैसोय चितलाय॥ जानब श्रीजगदीशको खोजबु मनोंअपान। कोऐसो समरथ जगत फिरिकै करै बखान॥ चौ०॥ जिमि पूतरी लौनकी भाई। नीरसिंधु महं जाय मिलाई॥ सोह्वैजाय मिलित कीलाला। कहो बहुरि को कहै हिवाला॥ जो कोउकहै विसेंतयहि देखा। सो मिथ्या पुतरी दधिलेखा॥ दूरिदरश करि बहुरि जो आवै। करि अनुमान सो रूपबतावै॥ कहि नहिं सकहि रूप सबताको। दशदिशि भेद लहो नहिंगाको॥ जोये पंथ जगत महं नाना। तिन सब कर मन सुनुआख्याना॥ जस

बहु अंध गहै गजधाई । भिन्न भिन्न तनको हरपाई ॥ कर
कहि गहे काँध कछु लागो । उदर तजेकोउ पद छूँभा
गो ॥ दो० ॥ कोऊ गये सु पूंछ त्यहि कोउपाँजर लाग
हाथी छूटे करपते लगे चित अनुराग ॥ चौ० ॥ यकठाभरे
वाद प्रतिवादा । लगोहोय तिन महँ संवादा ॥ जो करि
लगो सोकरिसम कहई । काँध गहो सो काँध सम लहई ।
उदरगहो सो कहै छति ऐसे । चरणस्परसस्तंभ सुजैसे
पूंछ गहे सो सर्पसम वादै । पाँजरपरसो भीति बिवादै ॥
काहू लखोन सोसब नागा । झूठ कहैं न सत्य अनुरागा ॥
माने कोउ न कहे काहूको । दृष्टा कहै देखि ताहूको ॥ कैसे
फिरि समुझेंगे अंधे । लगेनदेह नयनके धंधे ॥ निज निजसांचु
वाद सो भाषैं । रूप समस्त सोयों अभिलाषैं ॥ दो० ॥
तजि विवाद गजराज को बहुरि जाय लपिटाय । भिन्न भि-
न्न तन गहतही मन भ्रम उपजै भाय ॥ सो० ॥ तबसो शोचै
होय पूंछ गही तब पदहि अब । करि कर गह निज जीय
उदर दुहूंकरछुवतहीं ॥ चौ० ॥ इमि विपरीति ठास के प-
रसे । भ्रम भयकार उठै निज घरसे ॥ तब अस मत सबकरैं
विशाला । दृष्टा सों पूंछै गज हाला ॥ जानि भ्रमित दृष्टा
समुझावे । सहित सुनै मन भ्रम बहिरावे ॥ भ्रम बहिरात
होय समधीते । लहैं भले गुण सारगहीते ॥ पुनि बहोरि
भ्रमणा तिन पाहीं । चतुरसुजान जातु लखुनाहीं । समधी
होत ज्ञान भल पावैं । सख्या शास्त्र तब दृढ़ करि आवैं ॥
सांख्य योग एक मत हौ अहई । साधक दुयो सुक्ति पद
लहई ॥ अब दृष्टा के लच्छण कहऊं । भ्रमणा सकल तर्क
की दहऊं ॥ दो० ॥ ज्यहि सब विधि गजराज को परसो
होवै तात । आगे पाछे दशौ दिशि दृष्टा ताहि कहात ॥
चौ० ॥ अंध प्रबोध होय मन बूझै । ज्ञान नैन सों दृगन न
सूझै ॥ ऐसयह चतुर साधु जन जानौ । दृष्टा भेद गुरू कह
मानौ ॥ पारब्रह्म परखब कठिनाई । परखत ही गूंगा है
जाई ॥ बधिर होय ध्वनि सुनत अनाहत । समुझि सु-

भि निज मन अव गाहत ॥ नहिं समर्थ जो बरनि बतावै। यहि कारण गूंगा सम भावै ॥ मूकहि शाक्कर देइ खिठाई। किमि कहि सक मृदुता कटुताई ॥ जो माया क्षत होय न तिहुं पुर। उपमा योग ईशकी सो फुर ॥ माया क्षततिहुं लोक बतावत। वेद शास्त्र सब मतसमुझावत ॥दो०॥ माया पति के रूप को कहि न सकत यहि हेत। चतुर विबुध कवि कुशल जग अलख ताहि कहि देत ॥ होत अनाहत ध्वनि चतुर यक सुर राग छतीस। सातौ सुर वार्से उठत किमि कहि सकत गवीस ॥ राग द्वेष के सुनत को बधिर सो होत सुजान। निर्णय लख अरु अलख को सुनु मन सहित प्रमान ॥ चौ०॥ पाँच ज्ञान इन्द्रिय जो गाई। निर्णय करिके प्रथम बताई ॥ बाणी करि जो शब्द उचारा। सुनत श्रवण सों बैन पुकारा ॥ नैन ज्योति सों लखत जो भाई। घ्राणेंद्रिय सों गन्धि लखाई ॥ त्वच सों परश ज्ञान जो होता। सो सबु लख मायाकर द्योता ॥ अपर एक दृष्टांत महावर। कहत संत अरुवेद जानि फर ॥ मन करि जो समुझत बुधि सेती। मायाधर्म कहो लखि नेती॥ जो समस्त तिहुंपुरकरज्ञाना। सोलखरूपधरे भगवाना ॥ लखबिस्तारसो अपरम्पारा। धरे विराटरूप करतारा ॥ दो० ॥ कहौ अलख अब शाचि नहुग्रन्थ सांख्य अरु योग। समुझो चतुर न प्रथमही अब मुनि समुझै लोग ॥ चौ० ॥ माया यह अपार क्षत जाकी । समुझत हिय मेरी मति थाकी ॥ फिरि किमि कहौ अलख लख नाही। लख में अलख लखालख माही ॥ भूत समस्त आदि है माया। ज्यहि निज बल सब जग उपजाया ॥ वाके आदि रूप है जोई। वहै अलख लखि परतनसोई ॥ जोकोउ लखैरहधी ढूंढै। तौ समुझै शुभअलख अगूढै ॥ ज्ञान कर्म इन्द्रिय सो जोई ॥ परखि सकत अस भयो न कोई ॥ ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रियजो सों। परखि परैतोअलख नहीं सो ॥ अलखै लखत अलख यक आपू । जिमि जानत नभ निज पर

ताप्र।।दो०।।यहितेतोहिंकहालखिपरमातमयकभांति।सगुण अगुण दाउ अगखडै भनभिन हृदयसमाति॥ कहो योग सिद्धांतयह निगमतिसरस बिचारि। अबजोपूछैसोबकहुरि कहौं सहित विस्तारि (मनउवाच) कहौं बरणिनव भक्ति जे सतसंगादिक तात। अरु नवविधिको भजनजोसो कहिये विख्यात(बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ सुनु नवभक्तिकहौं मन तोहीं। पूछ्यो भल प्रिय लाग्यो मोहीं॥ जब सिद्धांत योग निपुण हूँ। होय न प्रथम करैयहभाई॥ नवधाभक्ति फलप्रद जोई। तिनके करत अचल मन होई॥ सतसंगति प्रात प्रथम सयाने। भली भक्ति निज जिय अनुमाने॥ द्वितिये हरि कीचर्चाकरही। अपनों आनधर्मनहिंधरही॥ तृतिये गुरु चरणन सों प्रीती। नेम सहित पूजत स्रुति रीती॥ हरि गुण गान अछल निर्मोहा। भक्ति चतुर्थ सुगत पर द्रोहा॥ वेद पाठ हरि मंत्र सुनामा। पंचम भजन भक्ति हरतामा॥ सज्जन धर्म निरंतर धारे। शीलवंत षष्टम हरि प्यारे॥ भूत समस्त ब्रह्ममय देखै। सप्तम संत ईशसम लेखै॥ लाभालाभ सोसम संतोषी। अष्टम होय न बुध पर दोषी॥ तजि प्रपंच श्रीहरि शरणाई। नवम गहै दुबिधाइ बहाई॥ दो०॥ यहि विधि करि नव भक्ति बुध लहै ज्ञान सिद्धांत। लहे ज्ञान सिद्धांत के पावै मोचनि तात॥ मोक्ष परे नहिं यान सुख जानत है बुधराज। सांख्य धर्म धरयोग रत चहत मोक्षको साज॥ चौ०॥ अब सुनु भजन भाव नव जोई। करि विस्तार कहौं हौं सोई॥ सुमिरण प्रात हरि यश हित सेती। प्रथम भजन यह भणत सनेती॥ पूजन क्रम वारी गन जोई। भाव द्वितीय लहै अघ खोई॥ करै वंदना प्रभु पद केरी। तीजो भजन भणत बुध टेरी॥ प्र।तम निजहरि कहँजे जानै। भाव चतुर्थ हृदे अनुमानै॥ अनय करै हरि यश छल हीना। पंचम भजन धर्म मतचीन।॥ जो दासत्व भाव हिय धरई। षष्टम भजन भाव भव तरई॥ निशिदिन हरि चरणन अनुरागी। सप्तम हरि

हित होय विरागी॥ दो०॥ जो रंतन इरियश करै दुबिधा भावहि त्यागि। अष्टमभजनअसिद्ध यह कहत बिबुध श्रुति पागि॥ चौ०॥आतम ध्यानकरै श्रुतिरीती। नवमभजन यह सदृढ सप्रीती॥ यहि ज्ञात जरा मरण की फाँसी। सुख होय यहमगत उदासी॥ भक्ति भजन द्वौभावबताये। कारि विवेक हौं तोहिं लखाये॥ दोनोंपद निर्वाणहिं दायक। दोनों पञ्ज आश्रमको लायक॥ प्रथमहिं ब्रह्माचार बखानो। द्वितियाश्रमसुगृहस्थी जानो॥ तृतियेवाणप्रस्थ बुधगावैं। चौथे सन्यासहिं समुझावै॥ अब चारोंको कर्मब-ताऊं। सुनु सचेत तोहिं सुमति लखाऊं॥ जब किशोर वय होवै भाई। ब्रह्माचार तवहिं बनजाई॥ दो०॥ समुझौ सब शुभ अशुभजे धर्मपाप जगमाहिं। त्यागीसब भवमें ऊलै तब निज धर्महिं नाहिं॥ चौ०॥ब्रह्मबिचार हृदय निज गुणई। आनधर्म सबहितसों सुनई॥ जब दुबिधा भ्रमराशिटिजाई। रहै आपुमें आपु समाई॥ पूरण प्रथमाश्रम इमिहोई द्वितियाश्रमहिं गहै बुधसोई॥ कहै पुराण वेदइतिहासा। कारै गृहस्थी धर्मप्रकासा॥ पुनतियापरिवारहिं मिलिकै। प्रीति रीति सह रहिये हिलिकै॥ एक परंतुकरैचतुराई। तिय सुत लखि न जाइ बौराई॥ प्रथम बिचार रैन दिन राखै। ग्रेहाश्रम अहि निशि अभिलाषै॥ वाणप्रस्थ फिरि होइ सयानो। तिय सँग रहै न तिय रत सानो॥ दो०॥ बहुरि धरै सन्यास को त्यागि सकल परिवार। ब्रह्मभजन में रतरहै ज्ञात आतमा बिचार॥ चौ०॥ बातऊंश अंतकाल ह्वैजाई। यमनचार सक निकट न आई॥ स्वर्ग नर्क दोनों ते छूटै। वह समर्थ हरि मिलि सुख लूटै॥ जुपै गृहस्थी मे सनिजाई। तौ वह ब्रह्मबिचार नशाई॥ ब्रह्मबिचार न यत सुनु ताता। इंद्रभुवन यमसदन सो जाता॥ जो दृढधर्म गृ-हस्थी रहेऊ। अन्तकाल सो सुरपुर गयेऊ॥ दृढता रहित ग्रेह आसक्ता। वाणप्रस्थ ह्वै भौन विरक्ता॥ रविसुत दूत बांधि त्यहि भाई। नर्कद्वार दीन्हों ठठिआई॥ ब्रह्माचार

प्रथम जो कीन्हा। ताते नर्कवास नहिं दीन्हा॥ दो०॥ बहुरि मनुष्यहि योनिमें जन्मत भो सहताप। आनयोनि ते रहित भो ब्रह्मविचार प्रताप॥ स्वर्गहु ते तपक्षीण भे पुनजन्म जगहोइ। उत्तम कुल आनंदमय ब्रह्मचार रतसोइ॥ तन पुनि द्वितिये जन्म ते भजन आत्मा ठानि। लहे साच हरिमें मिले पुनि नहिं जन्मै आनि॥(मनउवाच) जापै ब्रह्मचारमें गह धर्म सन्यास।तजै गृहस्थी ज्ञान बुध वाणप्रस्थ तजि त्रास॥ तौ पूरण गति योग ते प्राप्त होय की नाहिं। यह,सुसुझाओ मोहिं अब सब भ्रम दूरि निसाहिं॥(बुद्धिरुवाच) सो उत्तम सबते सन्यासी। ब्रह्मचर्य ते होय उदासी॥ धर्म गृहस्थी अति कठिनाई॥ जन,समर्थ का,उ पारहि जाई॥ ग्रेहाश्रम उत्तम सबतेहै। तजै न चतुर स्वधर्म सनेहै॥ जो गृह मध्य उदासी रहई। धर्म थापनो दृढ करि गहई॥ जीवनमुक्त ताहि पहिचानै। आन प्रकार न मन अनुमानै॥ योगीयतीमुनी सन्यासी। तपसी ज्ञानवान गुणरासी॥ ऊंच नीच मध्यम सबग्रानी। जन्मत सकल गृहस्थी आनी॥ जे सतसग सुष्ट महँ परही। सतसंगति प्रभाव भव तरही॥ दो०॥ नीचसंग परि नीच मति ग्राप्तभये सुनुतात। अंत समय यम चरित ह्वै यमपुर गहि लै जात॥ संगति ते बुध होत हे संगति ते तमवान। नीच कुकर्मी संगते बरणत वेद पुरान॥ (मन उवाच) प्रथमहिँ माया तुम कही अति कराल दुखरूप। निर्णय सोकिरिके कहौ जो मत राखो गूप॥(बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ माया हौं अपार कहिगाई। तामें कुछ भ्रम नाहिं गोसाई॥मायाब्रह्म रहत है नेरे। सो लखि परत ज्ञान दृढ हेरे॥ अंतर कतहुँ ब्रह्ममाया में। कहि न सकात जिमि वट छायामें॥ अग्नि उष्णताई किमिकहहूं। उष्माअग्नि एक सँग लहहूं॥ घाम दिवाकर दोइन भाई। ज्ञानचक्षु निरखत भ्रम धाई॥ जहाँ वृक्ष छाया तहँ होई। छाया बिन न निटपहै कोई॥ जहँ सिखि तहाँउष्णता जानिय।

उपमा जहाँ अगिन तहँ जानिय ॥ जहँ तमारि तहँ घामबिशेषी। देखत घाम परत रवि देखी ॥ दो० ॥ ब्रह्मतेज माया अहै यह जानत बुध सर्व। घपर एक गति प्रगट है वर्णत ज्ञानि अखर्व ॥ चौ० ॥ रविवत् ब्रह्म घामवत माया। यह दृतान्त हौं प्रथम सुनाया ॥ घाम अन्त नहिँ रवि लगुपाइय। योजन लच्छनहीं नभ जाइय ॥ मिलत दिवाकरघाम नशाई। बरणत प्रज्ञ सुमति चतुराई ॥ निरखत घाम लखत दिननाथा। बिन दिननाथ न घाम सनाथा ॥ जब बहु मेघ रहैं नभ छाई। तब न घाम रवि कोउ दिखाई ॥ मेघ रूप रजइयह भ्रम भाई। ज्ञानदृष्टि रोकत तमछाई ॥ भ्रमणा जलद हृदय नभ माहीं। होइ न तम हरि शूर लखाहीं ॥ माया पारब्रह्म अविनाशी। घाम पार जिमि रवि गुणराशी ॥ दो० ॥ जो कउ धावै घाम सँग रवि मिलाप चित धारि। घाम पार बिन रविहि नहिं लहैकहत निरधारि ॥ चौ० ॥ इमि माया जीते बिन ताता। कोउन ब्रह्म मण्डलहि जाता ॥ माया बिन नहिंब्रह्म लखाई। जिमि न घाम बिन सूरज भाई ॥ माया मध्य ठाढ़ह्वै हेरै। देखै ब्रह्म सुबुध निज नेरै ॥ नशतहिं यह माया गुणखानी। कहत बनत नहिं अकथ कहानी ॥ घाम नशत नहिं शूर दिखाई। निशा प्रवेश करत बुध आई ॥ तिमिमाया नाशत लय होई। रहै न चहुं खानि सहँ कोई ॥ ब्रह्म कौनु निरखै को जानै। सकल ब्रह्म ह्वै ब्रह्म समानै ॥ माया धन्य जगत उपजावनि। निज मारगसों ब्रह्म लखावनि ॥ दो० ॥ ब्रह्मतेज माया अहै शूरतेज जिमिघाम। माया चीन्है सत्य सो लहै ब्रह्म विश्राम (मनउवाच) निर्णयमाया ब्रह्मकी कहो सो समुझो नीक। अचर चर निर्णय करौ शोधि वेद मतठीक ॥ (बुद्धिरुवाच) यह निर्णय यद्यपि कठिन तदपि मतिअनुरूप। तोहिं सुनाऊंसथिर ह्वै सुनु इन्द्रिन के भूप ॥ चौ० ॥ अजर सूचम रूप बतावत। चरसो थूल विबुधजन गावत ॥ ओंकार सोइ चर कहिये। अमित क-

प्रथम जो कीन्हा। ताते नर्कवास नहिं दीन्हा॥ दो०॥ बहुरि मनुष्यहि योनिमें जन्मत भो सहताप। आनयोनि ते रहित भो ब्रह्मविचार प्रताप॥ स्वर्गहू ते तपलीण भे पुनजन्म जगहोइ। उत्तम कुल आनंदमय ब्रह्मचार रतसोइ॥ तब पुनि द्वितिये जन्म में भजन आत्मा ठानि। लहै मोक्ष हरिमें मिलै पुनि नहिं जन्मै आनि॥(मनउवाच) जांपै ब्रह्मचारमें गहै धर्म सन्यास। तजै गृहस्थी ज्ञान बुध वानप्रस्थ तजि ग्रास॥ तौ पूरण गति योग ते प्राप्त होय की नाहिं। यह समुझावो मोहिं अब सब भ्रम दूरि बिलाहिं॥(बुद्धिरुवाच) सो उत्तम सबते सन्यासी। ब्रह्मचर्य ते होय उदासी॥ धर्म गृहस्थी अति कठिनाई॥ जन समर्थ का उ पारहि जाई॥ ग्रेहाश्रम उत्तम सबतेहै। तजै न चतुर स्वधर्म सनेहै॥ जो गृह मध्य उदासी रहई। धर्म आपनो दृढ करि गहई॥ जीवनमुक्त ताहि पहिचानै। आन प्रकार न मन अनुमानै॥ योगीयतीमुनी सन्यासी। तपसी ज्ञानवान गुणरासी॥ ऊंच नीच मध्यम सबगानी। जन्मत सकल गृहस्थी आनी॥ जे सतसंग सुष्ट महँ परही। सतसंगति प्रभाव भव तरही॥ दो०॥ नीचसंग परि नीच मति प्राप्तभये सुनुतात। अंत समय यम चरित ह्वै यमपुर गहि लै जात॥ संगति ते बुध होत है संगति ते तपवान। नीच कुकर्मी संगते वरणत वेद पुरान॥ (मन उवाच) प्रथमहिं माया तुम कही अति कराल दुखरूप। निर्णय सोकिरिकै करौ जो मत राखो गूप॥(बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ माया ही अपार कहिगाई। तासें कुछ भ्रम नाहिं गोसाई॥मायाब्रह्म रहत है नेरे। सो लखि परत ज्ञान दृढ हेरे॥ अंतर वातऊ ब्रह्ममाया में। कहि न सकत गिमि वट छायामें॥ अग्नि उष्णताई किमिकहऊं। उपमाअग्नि एक सँग लहऊं॥ घाम दिवाकर दोइन भाई। ज्ञानचक्षु निरखत भ्रम जाई॥ जहँा वृक्ष छाया तहँ होई। छाया बिन न बिटपहै कोई॥ जहँ सिखि तहँाउष्णता जानिय।

उपमा जहँा अग्नि तहँ मानिय ॥ जहँ तमारि तहँघामवि-
शेषी। देखत घाम परत रवि देखी॥ दो० ॥ ब्रह्मतेज माया
अहै यह जानत बुध सर्ब। अपर एक गति प्रगट है वर्णत
ज्ञानि अखर्ब ॥ चौ० ॥ रविवत् ब्रह्म घामवत माया। यह
वृतान्त हौं प्रथम सुनाया ॥ घाम अन्त नहिँ रवि लखुपा-
इय। योजन लक्षनहीं नभ जाइय ॥ मिलत दिवाकरघाम
नशाई। बरणत मर्म सुमति चतुराई ॥ निरखत घाम ल-
खत दिननाथा। विन दिननाथ न घाम सनाथा ॥ जब
बहु मेघ रहैं नभ छाई। तब न घाम रवि कोउ दिखाई ॥
मेघ रूप स्वइयह भ्रम भाई। ज्ञानदृष्टि रोकत तमछाई ॥
भ्रमणा जलद हृदय नभ माहीं। छोइ न तब हरि शूर
लखाहीं ॥ माया पारब्रह्म अविनाशी। घाम पार जिमि
रवि गुणराशी ॥ दो० ॥ जो कोउ धावै घाम सँग रवि मि-
लाप चित धारि। घाम पार बिन रविहि नहिं लहैकहत
निरधारि ॥ चौ० ॥ इमि माया नीति विन ताता। कोउन
ब्रह्म मण्डलहि जाता ॥ माया विन नहिंब्रह्म जनाई।
जिमि न घाम बिन सूरज भाई ॥ माया मध्य ठाढ़ह्वै हेरै।
देखै ब्रह्म सुअव निज नेरै ॥ नशतहिं यह माया गुणखानी।
कहत बनत नहिं अकथ कहानी ॥ घाम नशत नहिं शूर
दिखाई। निशा प्रवेश करत बुध आई ॥ तिमिमाया नाशत
लय होई। रहै न कहुं खानि मह कोई ॥ ब्रह्म कौनु नि-
रखै को जानै। सकल ब्रह्म ह्वै ब्रह्म समानै ॥ माया धन्य
जगत उपजावनि। निज मारगसों ब्रह्म लखावनि ॥ दो० ॥
ब्रह्मतेज माया अहै शूरतेज जिमिघाम। माया चीन्है सत्य
सो लहै ब्रह्म विश्राम (मनउवाच) निर्णयमाया ब्रह्मकौ
कह्यो सो समुझ्यो नीक। अचर चर निर्णय करौं शोधि
वेद मतठीक॥ (बुद्धिरुवाच) यह निर्णय यद्यपि कठिन
तदपि मतिअनुरूप। तोहिं सुनाऊंसथिर ह्वै सुनु इन्द्रिन
के भूप ॥ चौ० ॥ अचर सूक्ष्म रूप बतावत। चरसो थूल
विबुधजन गावत ॥ ओंकार सोई चर कहिये। अमित क

धर्म नीक करि गहेऊ॥ तिन कर सुत मैं अवध मझाना॥ नाम सुमंगल मोर वखाना॥ सत संगति फल है यहभाई बरख्यो ज्ञान सुमति सब आई॥ जो लव चहै विवुध चतुराई। सो सतसंग करै चितलाई॥ शाहजहाँपुर नगरविशाला। जहँ द्वै सरिता बहै रसाला॥ दो०॥ ताके पूरब दिशि चतुर योजन एक प्रमान। सरही नाम सुग्राम तहँ मंगल को स्थान॥ विवुधन सों अरु कविन सों है विनती कर जोरि। जानि दास निज कृपाकरि सुमति सुधारयो खोरि॥ चौ०॥ जे हरि रूप साधु संसारा। जिनके वचन तिहूं पुरसारा॥ तिनके शुभसमाज कह भाई। जब यहग्रंथ वातऊं चलिजाई॥ तब सब संत जानि निज दासा। खोरि सुधारयो तजि सब आसा॥ संतन ते न बडो कछु अहई। मत प्रमार साधूजन गहई॥ हौ मति हीनगेह आगज्ञा। नहिं साधु नहिं अहौं विरज्ञा॥ तीछ्ण बुद्धि नहिं विद्यानीकी। केवल भजन भाव मति फीकी॥ साधु समाज योग हौं नाही। भाव भक्ति रस कविताभाही॥ आदर साधु देहिं जब जाही। फलित होइ कवि कविता ताही॥ दो०॥ यहि कारण विनती करौं संतनकी कर जोरि। शोधि सम्हारयो खोरि लखि सुधरि जाइ मति मोरि॥ थोरी मति थोरो कह्यो बहुत अर्थ अनुमानि। चतुरसाधु कछु समुझिहैं मूरख सकै न जानि॥ चौ०॥ सरस निंदक वादी जोई। गुरुनिंदक द्विजनिंदक होई॥ विवुध प्रवीण विनय मम मानी। यह मत ताहि न दीजो जानी॥ यह सिद्धांत योगकर भाखो। जानो सो न गुप्त करि राखो॥ द्वादशाब्दि लगि खोज्यो येही। प्राप्त भई सुमति तब देही॥ पुनि वर्णन पोथी यह कीन्ही। दुविधा भ्रमगा सब तजि दीन्ही॥ जे निज प्रीतम चतुर प्रवीना। तिनकह यह मत जिमि जल मीना॥ दीजो सुमति भूलि मति जाई। यह समुझति मन नाहिं भ्रमाई॥ तीरथ व्रत जप फलकी दायक। ज्ञान तरंग अहंमव लायक॥ दो०॥

जो कछु समुझै दुचित तजि ज्ञान तरंग प्रवीन। ज्ञानतरं-
गी होइसो ज्ञानतरंग अधीन॥ जड़ मनुख को यों अहै
मंजा जैसे मीन। तिनके आगे मति पढ़ै सुनि पैहै दुखपी-
न॥ अथवा नेक न समुझि हैं जड़ता विवश अचेत। जिमि
हरि कह अर्जुन गुणो खड़े सबै कुरुखेत॥ गुणी चतुर सं-
सार में निरगुण गुण खिलवार। तिनको निःसन्देह बुध
यह मत सुखद विचार॥ कहि औ जानि प्रवीन जन बिन-
वत मंगलदास। ग्रंथ अंत अब होतिहै पूरण पदकी आस॥

इतिश्रीअज्ञानतिमिरगुरुप्रकाशज्ञानतरंगमंगलदासविरचितेमनबुद्धि

संवादे अध्यात्मज्ञानसमाप्तम्॥

—+○+—

रहै जासु हीत न छिपे ॥ अजर सोहं अमृतसयाने । योगि-
राज जप जासु बखाने ॥ सकल भूत को पहिली सोई । ओं-
कार पदजानो लोई ॥ जोलख ओंकार नव गावै । ब्राह्मण
सोई चतुर कहावै ॥ सोहं में जो रहत रत होई । योगि-
राज कहियत है सोई ॥ सकल शरीर होति भयऊ । अब
सन सोहं पद दृढ़ गहेऊ ॥ लख लखब्रह्म सकल रहिगई ।
धरि त्यहि ध्यान मुक्ति पद पाई ॥ दो० ॥ अक्षर जर ते
रहित जो सो स्वासा निजजान । ताही में सोहं बसत, स-
मुझत चतुर सुजान ॥ स्वासा समुझौ आपनी करि सोहंको
ध्यान । लहै मुक्ति संदेह बिन गावत चतुर प्रमान ॥ चौ० ॥
जे षट चक्र कहे तिन लाही । देखे सकल शोच मिटि जाही ॥
योग धारणा बिन नहिं सोई । प्राप्त होत कहत बुध लो-
ई ॥ प्राणायाम करै नित जोई । कालजीति होलै जग सोई ॥
जब चाहै तब तजै शरीरा । जरा मरण की मेटै भीरा ॥ अ-
क्षर ध्यान ब्रह्मकर ध्याना । कहो तोहिं सिद्धांत महाना ॥
यह बिरलै लख जानत भाई । जरलाया सहँ रहे भुलाई ॥
जे अक्षरहिं ध्याइ नहिं सकहीं । तिनहिं पंथ न लखु बुध त-
कहीं ॥ सबते कठिन सहज सब होते । मन समुझे समुझे निज
होते ॥ दो० ॥ ब्रह्म निरूपण पुनि करत सुनौ ताहि चित
लाइ । असंशय त्यागि विचारि लेउ आपु आपु में आइ ॥ चौ० ॥
जासों कहत अरूप अनादी । सोहै ब्रह्म सकल आदि पादी ॥
जानब तासु कठिन ऐसो है । चहब अन्त नभ को जैसो है ॥
निराकार रहई अहै अकाशा । तासु मध्य प्रभु करत प्रका-
शा ॥ जो लख चहै खोज त्यहि केरा । सो निज तन हेरै बुध
टेरा ॥ त्रिकुटी ऊपर बास ताको है । रूप गेह कुछ नाहि
जाको है ॥ ध्वनि अनहद तहँ सुनिये भाई । निकटगये नहिं
परिछिन्नताई ॥ गुरपद ध्यान धरै दिनराती । सधै शरीर
सहद करि छाती ॥ जो अष्टांग योगमत भाषो । सनयसनव
त्यहि करि अभिलाषो ॥ दो० ॥ सिद्धि होत सिद्धान्त के
समुझि परैगो सोय । त्रिकुटी ऊपर जात मन भ्रमण रहै ना

होय ॥ पाँच पचीसौ जे कहे दोष व्यकार अनेक । ते सब
मन मोहि तोहि सह तहाँ छांड़ें एक ॥ चौ० ॥ एकहि तत
प्राणहि पहिंचानै । पुनि अमथा नहिं निज मन आनै ॥
पुनि यह सीख बोध मन भयऊ । प्राण बुद्धि की तन त्यहि
गयऊ ॥ बुद्धि प्राण मन इंद्रिय सेती । पकाठा भे तजि वि-
षयी केती ॥ ब्रह्म जोन महँ एकै रूपा । दुविधा गयी लखो
सत रूपा ॥ जब मन तजो संग विषयनको । तब बुधि सत
लखो स्वपयन को ॥ समुझो हृदय रूपनिज सोई । कहत
बनत नहिं परखो सोई ॥ जे मत जगत अहैं सुखदाई । ते
सबै देखे चितलाई ॥ एकहि बात सबन महँ पाई । नहिं
दुविधा कछु परी लखाई ॥ दो० ॥ ताते अब सुनु मीत जन
मंगल कहै बुझाय । यहि मतते नहिं अपर कछु बड़ोपरत
लखिभाय ॥ जेते मत संसार के वेद सबन शिरमौर । वेद
त्यागि औरै कहत तेनहिं पावत ठौर ॥ चौ० ॥ निज मति
सरिस ज्ञान यह कहऊं । जस कछु बुध समाज महँ लहऊं ॥
नहिं विद्या बल बुधि अति छोटी । रूहै मलीन कछी स-
सोटी ॥ चतुर सुजान जगत महँ जोई । खोरि सुधारि ली-
जिये सोई ॥ मैं बालक मति हीन अज्ञाना । निर्णय करौं
कौन विधि ज्ञाना ॥ जैसो है आकाश निरंता । तस यह
ज्ञान अहै नहिं अन्ता ॥ मेरी मति जिमि मसक समाना ।
पार लाक दुर्लभ अनुमाना ॥ पक्षिराज पण्डितगहँ हारैं ।
मसक अबुध तहँ कहा बिचारैं ॥ मंगल मति को मूढ़ स-
याना । अगम पन्थ किमि करै बखाना ॥ दो० ॥ निबुध
सुजान सज्ञान जे परखब सुनि हरषाहिं । तिनसों बिनती
करति हौं खोरि दीजिये नाहिं ॥ क्रोधी कुर दोषी अ-
बुध जे यहि मतनप्रवीन । तिनहूंसो विनती अहै दोषतज्यो
लखि दीन ॥ चौ० ॥ वर्ण अहै कायस्थ हमारा । बसतग्राम
सरहो सुखसारा ॥ राजा राम नाम सुखखानी । तिनके
सुत गणेश बड़ज्ञानी ॥ तनय तासु भैनामबिहारी । जेनिज
धर्म पर्म दृढ़धारी ॥ लक्ष्मीरामतासु सुत भयऊ । जिननिज

श्री गणेशाय नमः ॥

अथ मंगलविनोद सहस्रसाखी लिख्यते ॥
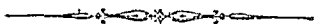
दो० ॥ जंगम थावर भूतमय ज्ञात प्रकाश प्रभु जौन ॥ मंगलभन विज्ञान के प्रथम वंदिये तौन १ पुनि वंदियता शक्ति को माया जाकर नाम ॥ सुखदायक ओंकार पद ताकहँ करिय प्रणाम २ ॥ इति वंदना ॥ अथ साखी ॥ सकल लोक महँ व्याप्त है जानत सब गुरु तासु ॥ तदपि न ध्यावत आतमहिं परिपूरण फल जासु १ पांच तत्त्व गुण तीनि जे धरे तीनि सुरदेव ॥ जाकी कृपा कटाक्ष ते ताकी कीजिय सेव २ बिनु मारग साचा गहे त्यागे बिनु दुबिधाय ॥ मुक्ति लहै नहिं कोटि बिधि वृथा जन्म शुभ जाय ३ तजि दुबिधा मन मूढतू भजिले आतम ज्ञान ॥ मोक्ष लहै संशय नहीं वदत शास्त्र पौरान ४ बिनु-ध्याये निज जीव के मन न लहै थिर ताहि ॥ थिरता बिनु शांतिहु नहीं वदत सुबुध अवगाहि ५ प्रथम चीन्हि निज रूप को पहिंचानै पुनि आप ॥ यहि साधन साधक चतुर मिटै सकल संताप ६ जगत रम्यो कज्जलभवन साधु परि-क्षा हेत ॥ अविद्या कलंक बिना बहुरि निकरत होइ सचेत ७ सनुभात जाग्यो कठिनयहबुद्धिअविक भ्रमजाति ॥ किमि कज्जलते दोपगत निकरै सुजन स्वभाति ८ जो कज्जल लागै चतुर जन तप धोवै ताहि ॥ पूर्ववत पुनि होइ बुध यामहँ संशय नाहिं ९ परम ज्ञान को प्राप्त भे अनुभव करत प्रकाश ॥ अनुभव उपजत मिटत भ्रम नाशत आशा पाश १० आशापाशो नशत हो दृष्य। माह बिलाति ॥ अंत समय तब जीव यह स्वयं ब्रह्म है जाति ११ मोक्ष माहिं

जो है दशा सो सखोभित गान॥ सुख दुख सुधि बुधि ज्ञान सब तहां सएक प्रमान ।१२ चाति उतरा सत मार्ग यह अध्यातम विस्तार॥ पूरण धीमर जिनकी कारत कर्म निरधार १३ संचित पातक नशत सन उपजत अनुभव ज्ञान॥ क्रोध मान निःकाम सब होत काहत गुणगान १४ पाप पुण्य आशा रहित योगी कर्म कलात॥ स्वर्ग नर्क अगपरि हरत अंत सुमस्म समात १५ फलित कर्म प्रारब्धिदत या भव दुख सुख रूप॥ समजातन संतोष मति ध्यावत पुरुष अनूप १६ कोटि भार हाटक दयो मोक्ष होन हितसा- ह॥ अंत वासना पाप की लैगइ नर्कनिमाह १७ किये जन्म भरि कर्म खल निंदनीय संसार॥ काल समय ध्यायो प्रभुहि पायो स्वर्ग विहार १८ स्वर्ग वसै निज सुकृत सम जन्म होइ परिणाम॥ मरा मरण नाश्यो नहीं यहिते स्वर्ग निकाम १९ निरैवास पापी लहत पाप तुल्य सुख सीत॥ नीच योनि महँ जन्म पुनि वदत वेद यह गीत २० स्वर्ग नर्क द्वउ समभये जन्म मरण के नाहिं॥ गर्भ क्लेश नाश्यो नहीं मृत्यु होत जनमाहिं २१ जब जरत वै वानि में जन्मतजीव अपार॥ शोक मोह ममता विषय कोघटि बढ़ि संसार २२ जाके ध्यावे लयक यक कालिमल संचित जात॥ देहनगर मन भूप तहँ पावन सुखहि दृढ़ात २३ मन इन्द्रिन को भूप है तथा कारण चपलाक॥ प्राणादिकजा- नत न कछु विषयमांस सनकाक २४ प्रथम रोकि निज वश करैपरमातमआराधि॥ मिटैसकलचिंता तिमिर ह्वानप्रभुर निर्व्याधि २५ योगबिना अनपाजपैमनवशआवतनाहिं॥ रागद्वेष त्यागेबिना मन नवसैमनमाहिं २६ दृढ़ बुधिज्ञान पसारिकैसनशिक्षादेत्यागि॥ शुद्धस्वल अनुभवउदयजाय शांति रंसपागि २७ अंधकूप परअंध जिमि काहू दिखायो दीप॥ पंथ न हेरो मूढ़मति जन लगि गो न समीप २८ जिमि पिपील मिष्टान में लपटी आशा पास॥ सुक्तनहिं अति यत्न करत तथा विषय दृढ़ वास २९ अनागा पक्षी

यथा परगो वधिक के जाल ॥ तिमि प्राणी भोगाश करि लायावश्य चैकाल ३० निद्रा क्षुधा तृषादि जे मैथुनादि ज्ञतवान ॥ नर पच्छी पशु कीटलूं जानत, सो मतिमान ३१ जडतावश इत्यादि जे रहैंथिरत्वहि पाय ॥ मनुज पाय चैतन्यता ता पदवी को जाय,३२ सिद्धांत को ग्रंतमें प्रापक सो क्रियकार ॥ निज वश जीवन मरण है जन्मत किमि संसार ३३ मानामान निरादरौ आदर समता भाव ॥ शुचि वासन आसन कुरुचि सुरुचिसो एक स्वभाव ३४ दूर्याभग की तीन तजि षटकर्मो अपनाय ॥ दोष शोक भय सब तजै ग्रंत ब्रह्मपद पाय ३५ जन्म मरण निर्द्वंद तजि जीवईश ह्वै जाय ॥ कर्माकार्य, दुवौ नशै आपुहि आपु नशाय ३६ अहं भावना परिहरै युक्तबंध कछु नाहिं ॥ अकाल अमेय अनीह अज निज उर ध्यावै ताहि ३७ अंक श्रंक संघात करि सिद्धि प्रथम इक श्रंक ॥ शेष वस्तु अनसिद्धि जो सोई रहत निशंक ३८ ऐसो पुरुष असिद्धि जो ता, जानन के हेत ॥ सतमारग ध्यावत नहीं साधत कर्म सुखेत ३९ मेघ सुधा वरषै विबुध कदलीफल न दुबार ॥ तथा मोक्षपदपायकिमि कर्म न भव संसार ४० अकर करयो संसार यह रचि नैवर सब जीव ॥ क्षीण दृष्टि प्रापक नही भयो धर्मकी सीव ४१ सिंधु प्रसादहि पाय जिमि होत मेघपय खानि ॥ तथा ब्रह्म ते जीव सब को पूरणता हानि ४२ अरु जिमि सरिता जगत की सिंधु न बढत जल राशि ॥ तिमि देही मिलि ब्रह्म नहिं बढत परत बुध भासि ४३ जाने बिन ता रूप के रूप न पावत जानि ॥ शुभातही निरवाणपद होतगुणनकी खानि ४४ सो निरगुण सरगुण कहा दुविधा भ्रमणा मूल ॥ निर्गुण आप माया सगुण यहै ज्ञानकोमूल४५ पावत जानत नहि परत जीव अकत्तोकार ॥ अलख यहै नहिं दूसरा लखु करि ज्ञान बिचार ४६ ज्ञान मूल सतसंग है समुझिपरत करतार ॥ अव्यय यह अविनाश प्रभुतासु अंश ग्रवतार ४७ ज्ञानी जो कर्मनि करै तजै सो फलको काम॥

सकामी फल आश करि लहत अंत फल वास ४८ ज्ञानवान को कर्म छव सिद्धक बंधक नाहिं॥ जगत धर्म दृढ़ता लहै करत हेत यहि आहिं ४९ कर्म सकल धार्मिक न के करै जगत हित लागि॥ सो ज्ञानी संसार में रहै अमी रस पागि ५० जजत देव करि लालसा देव तपस फल देत॥ याही जगमें दुःख सुख पुनि प्राणी गहिलेत ५१ आपनपौ भूलेफिरत तिमिर अरुउरछाय॥ ज्ञानदीपउदयत नहीं तजत न दुबिधा भाय ५२ जित जित जीवात्मा विवश जन्मत चैचर माहिं॥ कर्म लिंग तन सँग रहत या महँ संशयनाहिं ५३ तृष्णा क्षुधा राति सम ज्ञान प्रकाश विहीन॥ सत्य वस्तु बुधि चपन सों लखि किमि सकत प्रवीन ५४ चतुर्वर्ण पूरणहिये बाहिर मूढ़समान॥ डोलत मोह अनीरहत सबकी लखत प्रमान ५५ ऊपर से कछु काम नहिं अंतर प्रेम प्रकाश॥ इंद्रिय निग्रह शुद्ध मति करतअविद्यानाश ५६ संसारी प्यारीदया सबहिनकोजो सार॥सोजानवअति कठिनबुधजानतदृढसिंगार ५७आतम भेदभुलायके भयेयोगमेंलीन॥ सोपूरणपावतनहींअंतस्यान मलीन ५८ गुरुवाक्यपूरणदयोओंकारअनमोल॥ खोजत तापद कोनदृढ़ को ब्राह्मणको कोल ५९ ब्राह्मणकी पदवी अधिक चतुराश्रमके माहिं॥ बिनाधर्म ब्राह्मणके ब्राह्मण पदवी नाहिं ६० हंसवर्ण ब्राह्मण को वेदवाक्य परमान॥ ज्ञानमुकुट बाँधेबिना सोनहिं होतसुजान ६१ राग रहित छवि शोभिजै दृष्टिप्रेम पदलीन॥ हंस वरण नर नारि लत सुष्टकर्म छल चीन ६२ तत्व दरश पावत मिटत मोह क्रोध मद काम॥ आतमज्ञा होवत नहीं साधकबुद्धि ललाम ६३ भावशुद्ध प्रथमैं करै चिदानंद सिद्धांत॥ साधारण दुर्बुद्धि बिनु सेवत बैपुर कांत ६४ आतम में जो लिप्तहैं अंतरएकहिभाव॥ तिपूरणजीवत मुचे धारैसत्य स्वभाव६५ जानत आतम भावको पहिचानत निरवान॥ ता पद के संयोग ते रहतन जीव प्रमान ६६ अन्न भरयोहै कोटि

मन काहूं मंदिर बीच॥ एक निष्कामहि परखि गो भ्रम नहिं रहानगीच ६७ ब्रह्मकांति यह आतमा वदत वेद वेदान्त॥ कीन्हे निज आतम चतुर लहै ब्रह्म सिद्धांत ६८ सांभरि होन सुढेर है अद्रिमान धीमान॥ निज स्वारथ सों आइहै बुधव्यंजन परमान ६९ शालग्राम शिलालिये प्राण प्रतिष्ठा कीन्ह॥ वैष्णव सांचेभावसोंतापूजनमनदीन्ह ७० सो पषाण सर्वांगहै निष्टा शुद्ध प्रताप॥ स्वर्गवास दायकभयो अंत विवर्जित ताप ७१ सुखदाता निर्जीव सो जीव मुक्तिको दानि॥ जनक कह्यो शुकदेवसों यह बुध धर्म बखानि ७२ श्री राधापति अर्जुनै कीन्ह ज्ञान उपदेश॥ आतम पूजा कर्म बहु जो निःकाम निदेश ७३ तत्व वस्तु आतम कह्यो चर अचर विस्तारि॥ लिंग थूल वपु तत्त्व थिति बुधजन लेहिं विचारि ७४ चतुर्वेद वैष्णव चतुर वेदन न मायाईश॥ जे पूरण आयुष लहै लघत नेपुष विसबीस ७५ जन्मभयो ओंकार ते वदत वायु पौरान॥ जन्म जासुको सत्यत्यहि यहबुध विदितप्रमान ७६ पुनि वशिष्ट पूंछा जबै शंकर सों यह भेव। भाषो तही देवव्रतहीं नहि पूरणदेव ७७ ब्रह्म अन्यहौ आनहौ देखु साम श्रुति जाय। तत्वं असि वर्णन करो चिविधि जीव दुविधाय ७८ अखंड निरीह निरंध विभु निर्मलब्रह्म सुभाति॥ जाइच्छा ते देन नर त्रिपुर विभूति दिखाति ७९ चिदानंद पूणो चितहि बुद्धि आसुरी त्यागि॥ शुद्ध भाव ध्यावो विबुध निज आतम मतिपागि ८० पावनपद पावत चतुरआतम ज्ञान प्रताप॥ आन भांति युग चारि लगि नशतन जन्म संताप ८१ योग मार्ग अष्टांगहै साधक तीनि प्रकार॥ काम्य भाव खोजत फिरत कर्मन रहित प्रसार ८२ चकटक निरखै नासिका नाशा ध्यान लगाय॥ अश्रुपात परमाण बुधरहै अमीरस पाय८३ नित्यक्रिया साधनकरैदेहअनित्यविचारि॥आतमै घातीहोइनहिं स्वयंब्रह्मउरधारि८४ ब्रह्मा विष्णु महेशजो कर्तापालक हारि॥ तेसमाधिकरि ब्रह्मकोध्यावत कोनर

नारि ८५ युगानंत ना सगाह नहिं जासुन आयु प्रमान॥ ज्योतिनिरंजनब्रह्म है सदास्वतंत्र सुजान८६ भयो स्वतंत्रनप्रदि सकल वेद भेदको तात॥ अलख अगोचर ब्रह्म गुण जलबिलु द्धिसमात ८७ माया जासु अपार है पार लहत नहिं को- इ॥ प्रथमें माया भेद लखु पाछे आतम सोइ ८८ व्रत तीर्थ अर्चादि जे ते न मुक्तिपद दानि॥ स्वर्गादिक दायक अहैं दृढ़ता मूल बखानि ८९ ज्ञान दीप उर गृहधरै मोह तिमिर नशिजाय॥ सार वस्तु निज खोजिलें क्यों फिरि आवै जाय ९० निरगुण मत सरगुण सुमत आतम ज्ञान प्रधान॥ आतम बिनुजाने बिबुध मोक्ष न तीनि समान ९१ सांख्य जजत योगहि करत मोक्ष हेत सज्ञान॥ मोक्ष परे सुख अपर नहिं भोग योग कल्यान ९२ मनुज योनि सब योनि में उत्तम मोक्ष सुथान॥ याहि त्यागि पुनि कोटि विधि लहै न पद निरबान ९३ आपु आपुको भूलियो पद-वी पूरण रूप॥ क्योंचीन्हैं माया बिबश प्रगट न ज्ञान अनूप ९४ समता दृष्टि सुचेत बुधि मन वेगता मिटाय॥ पद आपन तापन बिना कस न चीन्ह सुदमाय ९५ शील क्षमा दाया धरै पर उपकार सुकाज॥ उचित गृहस्थी धर्म यह अतिथ तोष शुभसाज ९६ ब्रह्मा चार बिचार युत निराचार निर्द्वन्द। ध्यावत धर्म निरंतरै पुरुष पुराण स्वछन्द ९७ मन शिक्षा मग मानि नित तीरथ उरमें न्हाय॥ सत्यहि ज्ञान प्रतापते आशु मुक्त ह्वै जाय ९८ जो न त्यागिहै व्यग्रता तौ न पाइहै मोष॥ बोध बिना उतपति मरण लगा रहिहि नहिं तोष ९९ मंगल मनको बोध कृत ब्रह्मा बोद उरआ- नि॥ शिक्षा पद निर्वाणकी प्रथमहिं सर्ग बखानि १००॥

इति श्रीमत्सकलप्रधानकर्तायां सर्वाङ्गसुबुद्धिकतायां मंगलविनोदकायां मङ्गलदासविरचितायां निर्वाणपदवर्णनो नामप्रथमश्शतकः॥

दो०॥ परि पूरण धर्मज्ञता परि पूरण विज्ञान॥ परि पूरण कल्याण मय पारब्रह्म शुभध्यान १ ब्राह्मण होवै ब्रह्म विद समदर्शी ग्रहि साध॥ तजि मिटोय निज आत्मा

निज जीवै आराधु २ एकलोक है भूपहै सगुणसारंगिरू म। समता दोनों क्यों लहै लाभ हानिदा बाम ३ लोक आशा बंध्यो सुनिलो उत्तम ज्ञान ॥ याहि निवारं मति शांति सुरूप सुजान ४ उत्तम मति देखत फिरैं विकर्म समान ॥ निज मन कारतल निज किये यथा तिमिरांज ५ तोनि तीनिसें तीनि धरि काला अंशको हि ॥ पूरण पुरुष अनादिको आदिअंत बुध नाहि ६ क वासना वाम सग जीव चलत अनचेत ॥ नर्क बासना अं को अंतका वर बुध देत ७ क्रोधसंग अदयारत हिंसक सों नेह ॥ हिंसादायक अधोगति मूढ धर्म न सँदेह ८ म मदता संग्रह किये नीचऊंच नहिंजान ॥ अहंभावदानि मद बदत गूढ़ विज्ञान ९ लोभ संगबस लालसा होत सं पूरणनाहिं ॥ जीवन ध्यावत आतमाअंतबसत अथमाहिं १० सोह सहा बर्णित करत सतमारग ते बीर ॥ तामश मिथ्या नंद जो जीव सो होत अधीर ११ ये पांचो बटपार है सत मारग के तात ॥ तू प्रथमै इनते बचै काऊभूपतिसों बात १२ रचक याको आमु तट सुन्दर रूप बिराग ॥ भट निवेक संतोप अरु चमा दया अनुराग १३ जो शरीर धारी निपुर सो शरीर विनु होइ ॥ संशय याजें बुध काहा ध्याउ ब्रह्म पद सोइ १४ जोन भयो उत्पन्न है अरु न मरै गो अंत ॥ वाकी सुधि को को कहै अहै निरादि निरंत १५ निकार योनि चऊं खानि में आपुहि रहा समाय ॥ को द्वितीय ज्ञानी बदत मै नाही दरशाय १६ पयग कार संयोग घन बिन्दु धनुप बऊरंग ॥ उपजत तिमिसीयीश सों भये जीव चऊं संग १७ धनुन रंग ह्वौ झूठ है घनमाया नशि जात ॥ भानु उदय पूरण सदा तथा न ईशमपात १८ काल पाय नाशत नहीं जन्मतहू न अतन्त्र ॥ क्यों जानैं निज छंद को बाँधे माया यंत्र १९ इच्छाजाके टसकी बह्म सौख्य पद माहि ॥ सो चीन्है निज आतमा तासु अंगसों नाहि २० कमल बसत जलमध्य जिमि मात मिलित मय होत ॥

दित कोसऊ ताहि नहिं भीतर बाहिरपोत २१बञ्चरीक
मिन मऊत आवत काज सुगंधि ॥ प्रीति सत्य त्यागत
हीं जात रैनितहं बंधि २२ जलचर जीव अपार जल
सत मीन अहि भेक ॥ भेद न जानत गन्धि को क्योंकरि
हरै विवेक २३ जोकरीति ज्ञानीकरन धर्महै जगछाय ॥
तनहिं न बांधत कर्म ते जे निःकर्म सदाय २४ ज्योति नि-
रीह अमान है देखि परत भरि पूर ॥ ज्ञानी चारों दिशि
तखत देखि सकत नहिं क्रूर २५ को स्वारथ है दीप को
ारि कज्जल शीश ॥ टेक गही जग हेत हित तैसे कर्म कट-
ीश २६ मारगमें रज रजत निमि रहत निरादर नित्त ॥
तसंगति पवमानकी ऊंची चढ़य अनित्त २७ कोकविता
ानत सुजन जो सवितान प्रकाश ॥ निरालंब निरधार
गग चलतसदा दृग आश २८ दुविधा दोहाअर्थ की ज्ञान
बिना न नशाय ॥ सद्ज्ञानी दुविधा रहित कहत ज्ञानगुण
हाय २९ महापुरुष सो आपु है महत्तत्व नऊ भान ॥
महाशक्ति इच्छा कहतशब्दयों परमान ३० तजै शुभाशुभ
बासना रहै एक के पास ॥ द्वैतभाव बिनु जानि है शुद्ध
चितानन्द भास ३१ कर्म प्रधानी जगत यह कर्म न त्यागै
बुद्ध ॥ जासु कर्म लखि मनुज जग गहैं सकल मग शुद्ध ३२
चंचिल धर्म खोजै प्रथम तजि हठमत मतिमान ॥ सत्यगहै
तजि मृग भव ताहि कहत बिज्ञान ३३ निज धर्म न त्यागै
नहींजोश्रुतिवत कृत कर्म ॥ आनमनुज ज्ञातिज सकल ग-
हैं सत्य निज धर्म ३४ बड़ेकाम कर्ताभयेनामी कामीनाहिं॥
फलकी तृष्णा चित्त नहिंते ज्ञानी भवमाहिं ३५ सतमार-
ग वेदांतको ताहि निवाहै कोइ ॥ बंधनात संसारतेमोचि
जाय नर सोइ ३६ जीवन मूल स्वास है तृथा नहीं है
तौन ॥ को जानै सिद्धांत नित बदत सत्यहै जौन ३७ गमन
होत अघहर सुभगअबिशि पूरण बानि ॥ यह जानै जो जीव
तौ पहिचानैं अनुमानि ३८ जन्मसकल अर्चाकरी मूरति
मयी सुदेव ॥ स्वर्ग भोग फल तासु भो रहा मुक्ति को

भैव ३९ तीरथ ध्याये थायु भरिग्रन्तवस सुरलोक ॥ मोच पदारथ हाथ नहिं आयो भेन निमोक ४० विष्णु शंभु हित व्रतकिये रविमत साधि अपार ॥ दृढ़तावश्फललोकदा सोपन भो करतार ४१ काव्य वनाये जन्म भरि देव पचवक्कभांति ॥ देवलोकभो अंतमें मोचनहीं दरशाति४२ अतियतोप नितप्रतिकरै दया युक्त निरदोष ॥ आराधै निज आतमा अंत सुपावै मोष ४३ प्रीतिसत्य प्रतिपोलिये निरगुणमत उरधारि॥ वेद वाक्यसत्यांत सोजाय जन्मनिरवारि ४४ चौरासी लख योनि महँ चारिखानि के जीव ॥ तू भरमै सबमें सदा कहीं मुक्तिकी सींव४५ उद्भव भोनिज कर्मत्रय नदतभेद विज्ञान ॥ स्वर्ग नर्क कर्तव्यरत होत मोष भोमान ४६ ज्ञान बिना बूझत नहीं पूरण पदको भाव ॥ बूझेबिन सूझत नहीं मोच होनको दांव ४७ जगत प्रीति महँ बँधिगयो जीव ब्रह्मको अंश ॥ कठिनमुक्ति सतसंग बिनु पढत नहीं हरिवंश ४८ नित प्रति करत पुकार यह हौ परआतम आपु ॥ मानत नहिं शिक्षा बिना करत विपरीत अलापु ४९ राम राम ध्यावत सदा मर्म नामको आन ॥ सोजाने बिनु स्वर्गमग जात कहत बुधिवान ५० नाम भेद उर आनि कै जपै सदा चितलाय ॥ पूरण ज्ञान प्रताप सो आपु मोच ह्वै जाय ५१ जीव खोज मिटिजाय जब होइ ब्रह्मपद लीन ॥ जन्म मरणके दंडतेमोचि जायसु प्रवीन५२ कहैभेद नहिं काहु प्रति लीनरहै सबमाहिं ॥ आतम ही को ध्यानउर मुक्त होइ भ्रम नाहिं ५३ निरमोही जग तृण लखत सर्वासार प्रभुत्व ॥ लीन रहत निज आतमा प्रगटत अमी मदुत्व ५४ जिमि बिरला बामन लखत दाता धन नन्वहात ॥ तिमिज्ञानी त्रैलोकको लखिनिज माहिं समात ५५ कर्म शुभाशुभ बंधहै जबलगि फलसों हेत ॥ निरफल कीन्हे कर्म सब अंत मुक्ति लहि लेत ५६ संभव काको नामहै अनुभव को संसार ॥ जन्म मोचहू जानिये यह सर्वांग विचार ५७ यमआसन औ नियम कृत प्राणायाम

प्रवान॥ प्रत्याहार सुधारणा ध्यान समाधि अधीन ५८ यह अष्टांग योगहठ सिद्धि योग विज्ञान॥ जाके उपजत चित्त में जात अविद्या मान ५९ माया सांपिनि सर्वदा डसैजीव सबभाय॥ बिनगारुडिविज्ञानगुरुकोजगसकत जिवाय ६० मोल बिना मिलिजातहै वस्तु अमोल पुरान॥ या देही के भेदमें होत निर्द्वंद सुजान ६१ परम हंसपद पायमन वश्यो हृदयमहँ आय॥ अति अचरज की प्रश्नयह दुविधा कही न जाय ६२ संन्यासी मतिवान जो त्यागे भवकी भूल॥ लिप्त जगत नहिंहोत ते गहेज्ञान तरुमूल ६३ मारग पंथी भ्रमि गयो निज मति भ्रमसे तात॥ जब लगि मग दर्शक मिलै तबलगि मन भरमात ६४ सत्यसिंधु सर्वज्ञ शुचिपारब्रह्म सद्भाव॥ दोष शोकते रहित है पूरित त्रिपुर प्रभाव ६५ ज्ञानिन के तन नाश को भेदत काम प्रसून॥ मैन घाव घातक लगत जिमि नव कोन्हेदून ६६लोभक्रोध आवत हृदय करत निरादर तासु॥ सद्भावो संसार में मन दृढ़ होत निज रासु ६७ समदर्शी विज्ञानमय परम हंस सुखरूप॥ कोट ब्रह्म समकरि लखत ध्यावत तत्व अनूप ६८ किये तीनि गुणमय त्रिपुर तीनि देव परधान॥ अहंकार में अंतते नाश मिलत विज्ञान ६९ पंचतत्वमय जीव सब देहधरे तिहुं धाम॥ नाशवान ये सकल हैं तू भजु आतम राम ७० कल्याणी तिहुं काल में संत प्रतिष्ठा दानि॥ सगुण अगुण सभंग मत करत संत अनुमानि ७१ तप साबुन पट जन्म मलि पापमैल प्रक्षेत॥ धोय सांति जल स्वच्छ पुनि सकल भांति करि देत ७२ संत मंडली बोधदा सत मारग सोपान॥ संदय ज्ञानी कपट तजि पावय पद निर्वान ७३ इन्द्रीबिनु जीतेकबो द्रवतन अनभववस्त॥ अहंकारण भाव शुभलायक ज्ञान समस्त ७४ जीतियइंद्रीआपनी निज वशमन चलजाय॥ परमातम निजआतमा भजिये चित्तलगाय ७५ अजिती महाज्ञान रत मावत कोटअलेख॥ तत्वलखत नहिं कोटि विधि कृत बहु कर्मविशेष ७६ ...

भावना करि गह्यो ब्रह्मज्ञान सुपन्थ ॥ मनबश मोनेन्द्रिय सकल भामिकनाना ग्रन्थ ७७ एक परन्तु विशेषता ब्रह्म ज्ञान की आहि ॥ अन्त नर्क निबसत नहीं अगिती स्वर्ग बसाहि ७८ गुणवान धनवान शुचि सुकुल दृबुधि सुविचार ॥ ब्रह्मज्ञानी भ्रष्ट तप उरध तपअवतार ७९ ब्रह्मज्ञान समान तप जप विद्या कछु नाहिं ॥ मोक्ष दान घन नीर सम व्यापक सब घरमाहिं ८० विष्णु भक्ति साँची करैपूरुष वैष्णव कोइ ॥ तीनि जन्म के योग सों मुक्ति लहैगा सोइ ८१ निन्द्या दूसर धर्म की करत वैष्णव जौन ॥ सो तो कोटिहु जन्म लगि मोक्ष होत कबौन ८२ भक्ति भ्रष्ट नर्कौं लहै स्वर्गबास दृढ भक्ति ॥ सकल वैष्णव धर्म को सार भाव शुभशक्ति ८३ शिव विष्णु मय जानिके भक्ति सहढता साथ ॥ करत वैष्णव रैनि दिन तेनुध होत सनाथ ८४ शैवी ह्वया विधि करै शक्ति उपासक जौन ॥ सत्य भाव भवतितरै जन्म एक है तीन ८५ ब्रह्मज्ञान सुअग्नि है जरा जन्म तृण रूप ॥ भस्मत निकटहि जातहो यह सिद्धांतअनूप ८६ कोटि एक महँमनुज कछ उरधारत विज्ञान ॥ अनुभव दर्शन ब्रह्मलर आतम तत्र सुजान ८७ धिषणा दृढ करि आपनी कमठ तुल्यगोखोचि ॥ निज आतमको उद्दरै लखै न गति कनि नीचि ८८ पवन संधि में पात परि आपुहिँ पढ़त अकाश ॥ ब्रह्मज्ञान महँ जोय परि उरध करत प्रकाश ८९ आश भरोस बिहाय जग ब्रह्म ज्ञान विचार ॥ उदासीन पद सेइकै निज जन्मांत निवार ९० घट घटब्रह्म अव्यक्त है अव्यय प्रगट लखात ॥ ब्रह्मज्ञान सुदृष्टि मग दुष्ट प्रकृति नहिं तात ९१ जाके इच्छा मोक्ष की सो यह करै उपाय ॥ गृह कानन समता धरै मान-सनेह बिहाय ९२ कोटि जन्मधन धसिमरै अगिती श्रद्धा हीन ॥ आवागमन न परिहरै यह सिद्धांत प्रवीन ९३ बालक बाला बंधु युत बसै भवन मतिधीर ॥ उदासीन अन्तर भजै आतम मुक्ति सधीर ९४ जाकी माया अति प्रबल फिरडै चौदह धाम ॥

सो आतम तन ब्रह्मबिद योगगम्य परिणाम ९५ समुझात बनत अनेकबिधि कहतबनतनहिं सोइ॥ ब्रह्मज्ञान प्रसाद ते शुभसुख बूझै कोइ ९६ यथाभामिनी भोगसुख कैसेसकै बताय॥ करवावे बिनु कर्मसों योंसखुको चितचाय ९७ सोवत में जो है दशा ताहि कतानन्द काज॥ को सहाय करि सकत बुध सोयो बुद्धि समाज ९८ मोक्षदशाको सौख्ययह जानिय प्रगटन तात॥ यहि कारण कछु कोटि सबै या मगमहँ ठहरात ९९ मंगल साँचा आतमा जग अरन्न सा भांति॥ सत संगति जो नित करतसोइय ताकीपांति १००॥

इतिश्रीमत्सकलप्रजानदर्तीयासर्वाङ्गसुबुद्धिकर्तायामङ्गलविनोदकाया।
मङ्गलदासविरचितायानिर्वे णपदवर्णनो नामद्वितीयस्तरङ्गः॥

दो०॥ जोपै ब्रह्मज्ञान में बुधि न लगैभरिपूरि। तौ पुनि भक्तिसुसत्य करि गहै ज्ञान की मूरि १ सत्य सनेह लगाइ करि ध्यावै श्रीभगवान॥ आदिअंत यकरस रहै लहै परम बिज्ञान २ भक्तहोइ सद्भाविका छलछठ त्यागी सत्य॥ अंत बिष्णुपुर बास लहि मेटै भव आपत्य ३ आन और हेरै नहीं प्रीतम सांचा त्यागि॥ पूरणमये निबाह के रहै तासु तट लागि ४ यांची परिहरि कपटकी दम्भ भावना हीन॥ आराधै सारंगधर होइ न यम दुखदीन ५ किंकर लौंजो आवहै सोमन राखै नित्त॥ अहंकार ममता तजै सबदिन चिन्ता चित्त ६ मिचमानि सबनेह तजि वाहीसों करु नेह॥ अंत प्रीति वश बासना लैजैहै वा गेह ७ जाकोरूप अदृश्य है दृश्यमान किमि होइ॥ सत्य प्रीतिकी रीति यह अपनावे त्वहि सोइ ८ प्रीति प्रतीति सचित्त धरि ध्यावै शारँग पानि॥ मुक्तिपदारथ करलगै योंकवि कहत बखानि ९ करै प्रीति हठ भावतौं तजैन कोटि कलेश॥ नारायण की कृपाते बसै सो वाही देश १० विघ्न भयंकर देखि सम तजैन कर ग्रसि प्रीति॥ सारिखजै निज प्रेम पथ यहै सिद्ध की रीति ११ ऊपर ते हितकी वदत अंतरआन बिचार॥ सत्य प्रीति भासीन उर कौनु निबाहन हार १२ मंगल

प्रियतम सत्यनो गहै टेक सतभाय ॥ आदि अंत यक भाव
सों ताहि बिन दरसाय १३ मंगल कदली वृक्ष ज्यों हठ
तजि पालन दुवार॥ सत्यव्रतीत्यों साधुजन नाहिं धरत
अवतार १४ सहस कोटिभव पंथमें मृगवन सुन्यो अलापु
प्रीति बिवस आवत भयो प्रण बश नहिं संतापु १५ अहि
सुनि वाणी वेणुकी निकस्यो भवन बिहाय ॥ यद्यपि गरुड़
अहि वधिक त्यहि दये दंड समुदाय १६ दशन अंशि किय
बंध त्यहि बड़रि बनायो वेनु ॥ सुनै लव्यौसानंदसों प्रीतम
वाणि सुचैनु १७ कारा काना का करि सवात पूरण पुरुष
अनूप ॥ तासु प्रीतितें अभय मन पावैगो निज रूप १८ तन
तें पृथक देवता मनतें बिषयी ध्यान ॥ प्रीतिसत्यपावत नहीं
क्यों होवै कल्यान १९ एकादशी मतें रहै नारायण मत
जानि ॥ उर आशा भव भोगकी क्यों होवै फल दानि २०
जगन्नाथ को भातमें मन प्रिय तनय सनेह ॥ मन बिराग
आयो नहीं क्यों बसिहै सुरगेह २१ कांकर सेजदनाइ नित
सोवत दूषित शरीर ॥ लाभ लालसा उरबसै क्यों मिटिहै
भव भीर २२ अग्नि नारि दिशि ज्वलित मधि बैठि तपत
नित दंड ॥ भक्तिभावलव शुद्धनहिं क्योंसुखहोइ अखंड २३
निसुन्हाये जल पाननहिं निशुशिल भागन भोग ॥ तृषा
क्षुधा उर वासिनी कहांमुक्ति संयोग २४ कोमलवचन म-
धुर यत् निर्णय ज्ञान अनेक ॥ काम लोभ अंतर बसै कास
यह भक्ति बिवेक २५ शीशकेश अज लोरिकै भूतिमर्दि निज
अंग ॥ मौन गहै मग बासि नित निंदहि तारथ गंग २६
आपु बड़ाई नित चहत निंदतआन सुजान॥ आशा बासी
अनित मन कहांहोइ कल्यान २७ बड़त अहारी भक्तनहिं
निराहार नहिं संत ॥ सत्य प्रेमको मग गहै सुख समान
त्यहिअंत २८ जानत आनन आपुसम शुचिके मारगमाहिं॥
अहंभाव दुख दानि भव अंतज संशय नाहिं २९ प्रीति
रज्जु महँनाधि मनयतमग देइचलाय ॥ ज्यों नटवा शाखा-
मृगहि जहाँ चहै लैजाय ३० कामी सेवत नारि ज्यो थान .

प्रीतिको त्यागि॥ तू मंगल मनतौन विधि रङ्ग प्रीतम रस पागि ३१ दीन वस्तु बिन शिशिर महँ ज्यों दिनकरहि निहार॥ त्यों मंगलमन तू करैपूरणप्रीतिविचार ३२ मन ते तनते वचन ते क्रिया करै धन वास॥ सबविधि सेवै मीत पग जग सुख पुनि हरिधाम ३३ कोपंडित कविकौनहैको ज्ञानी गुणरूप॥ प्रीतिबिना निजनाथको पति बिननारि अनूप ३४ भूपप्रतापी प्रीतिमय चाहतसब जगलोग॥ छिन्न विभव पुनि ताहि सब चाहत नहीप अयोग ३५, सकल जगत स्वारथमयो अनस्वारथ हितुहोइ॥ मंगलमन संसार महँनेह निवाहक सोइ ३६ मृगवधि वधिक स्वहेतशिर मृतकमलोधरि तात॥ सुरख वनवासीकहैं सलुजशीश सग लात ३७ को कालको सुगम को बुधि समारक कौन॥ सत्य नेह शारंगधर,उरसावै बुधतौन ३८ जो सांचा सारग वदन ताहि चाहत हैदंभ॥ पूजत छलमय देवताकीन्हों कपटारंभ ३९ जबलगि आशाभोग की तवलगि मोच न होत॥ आश मिटे भजकामको अनुभव करत उदोत ४० मात पिता तिय सुत सखा तजिकै बने भिखारि॥ गृह गृह मान गमाइयो क्यां सोचै अविचारि ४१ कर्मीजर लोपत नही कोटि उपाय प्रवीन॥ आतम एक बिचार विन जन्म जन्म दुखपीन ४२ ज्यों स्वपने महँदीन नर नरपति पदवी पाय॥ जागे रंकसुख बिबुध तथा जगतको भाय ४३ चारि पांच गुणनीचमें विविध जन्म तूलेइ॥ विषय वासना प्रवल मन अमित दंड रवहिंदेइ ४४ माया मह्म अपारहै आतप पूपण देव॥ आतप बिन विहीन नहिंयहै द्विपदको भेव ४५ दान दिये धन लाभहै तृष्णा इहक तात॥ ज्ञान दीप प्रचरित नहीं व्यौपारीकी बात ४६ देशभेद कोजानि मन वणिक भार भरि वस्तु॥ वेच्यौ दूनेदाम लगि तैसे दाम समस्त ४७ नर मेधावी कर्मकृत लाभ हानि तजि दोइ॥ पाप पुण्य आशा तजे लहत मुक्ति पदसोइ ४८ गुरु सों पूंछौसत्य मत कह इन्द्री निज साध॥ पवन सांचे देश

को आतमको आराधु ४९ सूक्ष्म जड लौं है रहे जानत
ध्यान न भक्ति ॥ जागमनुष्य जिया सिद्धै अंतनकी बिनुभक्ति ५०
ज्यों सूचक निज उदरते तंतु समूह बनाय ॥ अध ऊरध
आधार सों जात अंत पुनि खाय ५१ ऐसे निज वश राखि
कै जो समस्त मन युक्त ॥ नाहिर भीतर कर्म छत जीवतसो
नर मुक्त ५२ कमठ आपु इन्द्री सकल जनम पसारत वीर ॥
पुनि कपेत निजअंगमें तया शांत लति धीर ५३ खोजा चा-
है महापद अनभा को शुभ देश ॥ तौ मत जारग चित्त धरु
सुनिसतगुरुउपदेश ५४ बिनासिद्धांतके कर्मकैसेचे बिनुगुण
पाव॥मुक्त होइ संगलनहोजन्म अनंतप्रभाव ५५ जानतआतम
अगम प्रतिजानेआपु नशाय॥ यथा दुग्धघटबिंदुजलमिलत
नरंगनजाय ५६ तीनिलोकव्यापकविदधदेखतसबकेकाज॥
चुनप्रगट सनठासप्रभुभअकिजलननिरलोभ ५७ नारिपुरुष
कहि सकतको ध्यगख अदृश्य अकाय॥ ज्ञान दृष्टिप्रभात च-
दृपि को बुध सकत बताय ५८ उपमा ताकी कौनहै जोन
त्रिलोकोमें देव ॥ अकल अभेद अद्वैत को क्यों करि भाषे
भेन ५९ ध्यान सूर उदयत हृदय बुद्धिनयन सों देखु ॥ परम
ज्योति अविनाश सो पूरण शब्द अलेखु ६० शब्द अनाहत
नित करत सोवत जागतएक ॥ सुनत होइ मतवार बुध ज-
नु मधुपिवे अनेक ६१ जो नोरव संसारकेसोसब तामेजानु ॥
संगलजन चित देत नहिं यह धौ कौन प्रमाणु ६२ सात
स्वर्ग वसि जन्म लहि पावै वर्ण विभाग ॥ सुख दुख मान
अमान भव बिनु आतम अनुराग ६३ कोटि भार हाटक
धरौ रती एकपरखाय ॥ जागो सबको मोल तिमि मह
जोग के भाय ६४ अचर ऐकै रूपहै नाना रूप अनेक ॥
सोनाया गुण तत्व बुध घचर महाविवेक ६५ बौरें मतीर-
य चढ़ि लरत पट पाछेनहिं देत ॥ तथा प्रश्न सर्वांग मत
दृढता करि गहि लेत ६६ निज पति मरण बिलोकि तिय
साह चिता सतिनेह ॥ सगुभायो मानत नहीं जारत प-
ति सँग देह ६७ ज्ञानवान गहि सत्य मत तैसे त्यागत

नाहिं॥ इह्नकरि ध्यावत आतमहिं पूरणपद हि समाहिं ६८ मेरे मत निरगुण सगुण दोनों आतम ध्यान॥ गुण न होत तौ निगुण को बूझो पूरण ज्ञान ६९ अज्ञानी को ज्ञान-विद विन आतम सुविचार॥ अनुभव सिद्धि स्वभाव है कर्ता कर्म विहार ७० जानि आतमा बोधदा वहुरि भुलावे अज्ञ॥ ताहि गवोध्यौ ज्ञानमत हौ अज्ञान अरमज्ञ ७१ इच वदरिफल कीरगहि काननगयो कुडाय॥ बीजगिरे जामत भयो भूर भूमिजलपाय ७२ जो पै अंग्रन बीजमें परमातमको तात॥ तौ कस वाढ्यो फलफस्यो यों सबजग दरशात ७३ मीनउदक तें रहित फिरि जियत न कोटि उपाय॥ मंगल नर जड़ता विवश हित तजि अहित भुलाय ७४ चुम्बक-देखे लाहकें करत चेष्टाभाव॥ मंगल सन लहि ज्ञान हितु तज्यो न नीच स्वभाव ७५ जड़तेज प्रीतम गुणत सुनत न देखत देह॥ शुचिइंद्री माये मनुज वसत शत्रुकेगेह ७६ काम क्रोध लोभादि को जानत सुखदा मित्र॥ क्यों समुझाऊं जीव कहँ यह विपरीत चरित्र ७७ मोह पिंजरा दुःखसुख द्वै कपाट भ्रम यंत्र॥ जीव सिंहता वश परयो तोरत होइ स्वतंत्र ७८ स्वाद विषयको विषसरस खात मीठ गुणकाल॥ जानि भवत तू जीव क्यों ध्याउ देव नैपाल ७९ विषयस्वाद भावत हृदय जबलगि जीवहि आहि॥ ब्रह्म सुखहि निरखत चतुर तब लगि कैसेहु नाहि ८० कोटि बानवे स्वांस की नर आयुष परमान॥ अधिक एक स्वासा मनुज जीवत नाहिं सुजान ८१ षट स्वासाको एकपल गुणी दिवसनिशि स्वास॥ षट शत सहस इक्कीस में गत स्वासा विश्वास ८२ अंत आदि याविधि वहै जीव तजै जो देह॥ जीवै यक शत वीसह्नो वर्ष चतुर न संदेह ८३ मन मधि व्यंग विचार ह्नत दूषत शास्त्र निदेश॥ मुक्ति चहत कर्तव्य विभु तन विभूति शिर केश ८४ पापीपाप न परि हरै धर्म संगको हेरि॥ तदपि दुचितई चित रहै चिंतत पापहि फेरि ८५ श्रद्धा विन पूजन नहीं जपन विना अनुराग॥ मोक्ष न आतम

ध्यान बिनु माया ईश बिभाग ८६ औरनको शिक्षा करत, निज करणी परित्यागि॥ शिक्षक अंध निहीन जप बाट बतावत लागि ८७ लघुता गुरुता कारणहुं एक शब्द की रीति॥ शब्द बिचारै ज्ञान मय पूरण ब्रह्म प्रतीति ८८ शब्द तुल्य नहिं मंत्र शुभ गायत्रीहढ़ नाहिं॥ पर्म बुद्धिमय शब्द सो ब्रह्मज्ञान के माहिं ८९ कलिमल तूल समान है शब्द धनंजय सिद्धि॥ ज्ञान वामतायन्द्में लवगाचेहितद्दढि ९० जोपै जन्म भरि कुगम में बिचरयो नर बपु पाय॥ तौ पशु ते जड मनुज सो कहा मोक्ष को भाय ९१ जुरै अंध द्वय पांच जहं तहां जाय यक नैन॥ मानत झूठहु सत्यवत् छल युत ताके बैन ९२ तिमि दंभी की बात सुनि भूलत विषयक प्रानि॥ जो सुभात बूझात तबै भ्रम छात सुद्_दुख जानि ९३ शंकर मनमें छोभ भौ काम बान को बीर॥ को बपुरे नर नारि भव कामी कुटिल अधीर ९४ संयम इंद्री वश करव यासम द्विति मन कोइ॥ जो साधक गत दंभ जग मोक्ष होइगो सोइ ९५ जीवनकी आशा न डर भय न कालको चित्त॥ सम्यक विधि निज आतमाज्ञतजारधमग नित्त ९६ जो योगी निज शब्दकी परखि रंग गति लेइ॥ भवावर्त्त महँ चतुर बुध सोन सत्य पग देइ ९७ ब्राह्मणक्षत्री वैश्य अरु शूद्र वरण ये चारि॥ द्वैकी दुविधा ज्ञान मत पंडित कहहिं बिचारि ९८ विष्णुमयी जग जानिकै गहै वैष्णव भाव॥ सत्य शब्द ध्यावन करै अंत खपट को भाव ९९ योगिद्धांत जानिकै मंगल मन भजु राम॥ इत उत दोनों ओर सुख परि पूरण विश्राम १००॥

इतिश्रीमत्कलप्रधान हर्त्तायामर्वांग सुबुद्धि कर्त्तायां मंगलविनोदवायां दासविरचितायामक्तिमार्ग निर्गाणपदर्शनोनामतृत यश्चाकं ॥ ३ ॥

दो०॥ कोटि जन्म तीरथ यतै लाखजन्मशिल ध्यान॥ मंगल नहिं विश्वास दृढ कहा लहै कल्यान १ बिन सति-भाव नसिद्धिकोउ पूजनजप जगहोत॥ सत्यभाव मंगलसदा मंगल करत उदोत-२ काठ मृत्तिका उपलकी मूरतिमह

नहिं देन॥ शुद्ध भाव विश्वास दृढ़ फलदा सद्गुरु भेव ३ दर्पण पूपर्ण दिशि लखत उगिलत उत्तालसमूह ॥ तिमिमन आदम और लखि त्याग न विषयका जूह ४ विषय वासना चंचला यथा स्वैरिणी वाम ॥ कोटि पतिव्रत धर्म सुनि पर-पति निरखि सकाम ५ छल प्रपंचजत शुभ्रहीप्रगटत काल्हि पाय ॥ प्रीति संग तव होति है विष्णु पौंडक भाय ६ काक बेष करणी सुकुल मावन यथा मराल॥ परमातम घर हंस फल पावन वायस वाल ७ जिमि किसान निजखेत में जो बोवतसोहोत॥ ऐसे कायाखेतमेंकरणीकरतउदोत ८ मित्र द्रोह परतिय रमण मिथ्या साखि अलाव॥ आन पाप बड़ वढ़ि करत ऊपर भक्ति समान ९ उर भुजादि माला धरे गल शिल शालिग्राम॥ मिथ्या छल निवसत हृदय चारि गये यकनाम १० अंतर बाहिर एक रस शत भावी शुचिसाध ॥ पर उपकारी ज्ञान मय तापद मन आराध ११ ज्यों उत्तारी निज दावँको करत चिंतमण सत्य ॥ औरन सों स्वारथ नहीं तस बुध आतम नित्य १२ घट के अंतर बाहिरे देखिय प्रगट अकाश॥ घट फूटे घटही नशै नाहीं गगन विनाश १३ तथा जीव अरु देहयह ज्ञान पंथ गहि देखु॥ अविनाशी अगअगुणहै निजआपापद लेखु १४ जाग्रत में ज्यौं व्याइयै त्यौं स्वप्ने करु नेह ॥ करिय सुखोपिकु में वहै जो कर्तव निजदेह १५ ईंधन काको जगत में सोचकौन को तात॥ अविनाशी अद्वैतको यह अचरज की बात १६ जरै अग्निसों यहनहीं जीवपर्म अविनाश॥ अस्त्रशस्त्र कटि कटत नहिँ सबदिन पूरण भास १७ गहा जात प्रतिबिंब नहिंजिमि करसौं गुणकोटि॥ त्यौंही यह शुचि आतमा क्यौंकाउ सकत अगोटि १८ मरत्रौन सरिहै अमर अग भयोन खोवन हार॥ आपुहि आपु प्रकाश छात हरि मत यहै बिचार १९ जाके रूप न रेखहै आवत जातन दीख॥ताहिस्वर्ग अरु नर्कपथयह कैसीमन सीख २० कवि पंडित कोउ सत्यमग पग धारै शुचि काम॥ तन

सर्वांग सत्यमत गहि पावै विश्राम २१ श्रीहरि अर्जुन को कियो कर्मयोग उपदेश ॥ सिद्धांत आतम वह्यौतज त्याग्यौ भस देश २२ जो आतम नहिं उद्धरत पाप पुण्यकी आश॥ ते पूरुष निज आश्रवश नारत द्विपद में वास २३ जीव कर्म वश विषय रत आसमास करकाल ॥ भरमाका सब योनि में जे कलेश के जाल २४ सारवस्तु सो खोजिये तजि असार निःकाज॥ मोल अधिक खाटौ अधिक शुचि सुगंधि शुचिसाज २५ मूढ कांचकर में गहत तजि पारस पाषाण॥ तैसे तु विषयो गहत त्यागत पद निर्वाण २६ व्याल चालि विकराल जग भवन सरल गति लेत ॥ त्यौं मंगल तू विषय रत हरिगुण चतु करि चेत २७ सब योगन को योगहै सकल मंत्रमय मूरि ॥ अचल प्रीति भगवान की जो दायक सुखभूरि २८ करमाला जापक लियेमन विषयन के ध्यान॥ मोक्ष लालसा ह्याशत अंत विषय सन्मान २९ यथा गंग जल घट भरा पावन पाप विनाश ॥ सुराबिंदु क्षत अशुचि तिमि जीव विषय संग भाश ३० मायाको परपंच है नीच ऊंच कुलवान ॥ ज्यौंभोजन गोमांसतेविप्र गवास समान३१ सुरुचि कुरुचि कोज करै आतम तत्व विचार॥ मंगल कृत सिद्धात के जहै मोक्ष करतार ३२ यम जबलगि करि सकत नर तब लगि हित सबकेर॥ शिथिल भये त्यागत सकल तू तनु तिनहिं सबेर ३३ जाकोशुद्धि प्रबोध मय ब्रह्मा पार सुलोक॥ ते बहुभोग अबंधभव बसै ज्ञानके थोक ३४ जो मारग भयकार मन सिंह रिछ अज शच ॥ जानि जात किन अपर पथ भूलिजात वास तच ३५ मैं स्वपने मह दीख यह जन्मालो गृह सून ॥ मोह लालसानंदमें जागि लखा सा कळून ३६ यहैमोह की नीद है ज्ञान दिवाकर नित्य॥ प्रगटत प्राची बुद्धिमय जागत पुरुष सत्य ३७ दशदिशि प्रगट प्रकाश है देखिलेह किन मीत ॥ अछत नैनकस अंधपन तूतोपर्म पुनीत ३८ पाप पुण्य सुख दुख तजी छद्म अछद्म समान ॥ जाहै सातौ धापुतू यौं जग भूल भुलान ३९ यथा

रुधिर सर्वांगमेंव्यापत तथा सुमुक्ति ॥ मनुज देहके संग सँग होवत हैं विनुयुक्ति ४० विषय ध्यान लागत सुमति जावतु कुमति शरीर ॥ जासु प्रबलता वश बसत अधो योनि मह पीर ४१ कर्म तीनि विधि जानिये सत रज तमके भाय ॥ दोयतजैं एकै गहै रहै सोचको पाय ४२ जिमि अकाश में नीलता दृष्टि सीवको लेखु ॥ त्यों असत्य संसार के सकल पदारथ देखु ४३ भानवान अनुमान करि वदत सकल बुधि वंत ॥ जानत पूरण ज्योतिमय ब्राह्मण सेवतसंत ४४ जीवन होत गुलाब में जासतअंग प्रताप ॥ जानु चतुरयों आतमा अंग अंगको व्याप ४५ अकर कहत दुविधा जगत है यसते जगरूप ॥ याहि बनायो जासुने सोप्रभु सत्य अनूप ४६ तीनि काल सबदिन रहै तिमि भवको भ्रम भूल ॥ द्वै पदतीसर जीवभ्रम को दायक दुखशूल ४७ बालका रवि के ख्याल सब अंत मिटावत सर्व ॥ तिमि परमातम धारि दग समय समय जिमि पर्व ४८ सूर ज्योति,जहं विदित नहिं नखत सयूपन भास ॥ तत्त्व वस्तु गुण काल नहिं जहवां मह्म बिनास ४९ जोका लोकान कहि सकल रूप अरूप नवोढ़ ॥ द्वैत न तहां प्रकाश जत जात एकहो छाढ़ ५० यथा अग्नि तृण काष्ठ सब जारिकरत निज अंग ॥ तिमि परमातम जीवकहं निजमय करतअभंग ५१ ज्ञानवानको जगत महं को मूरख मति हीन ॥ विषय भोग महँ सम दुखौ आपत निकार प्रवीन ५२ ताकी बुद्धि सतोगुणीसो ज्ञानी मतिधीर ॥ याजगचाहौ वसरहै अंत नयनको पीर ५३ सकल वस्तुको ज्ञान धरशीलवान शुचि काम ॥ माया जानत झूठणो सुगति लहत परिणाम ५४ लोभ सहित व्यौहार सब जानवडाई चाह ॥ ताकी बुद्धि रजोगुणी वदत अखिल कविनाह ५५ आपन पट चीन्हत नहीं जडलौ रहत सदाहि ॥ मूढभाव तमगुणविवश नहीं मुक्ति का चाहि ५६ बुध मंडली नजात खल विचरत सदा कुसंग ॥ ते पापी [illegible]

यतन करत सुर लोककी बिषय बासना लीन ॥ को पावत पद अमर बुध दुबिधा लगी मलीन ५८ जादिन जन्मे जीव सब तादिन तेन बिनान ॥ भयो पिता सँग यतनकरि अब कर मन पहिंचान ५९ बारिधयथा न बढत अरु घटत न काहू रीति ॥ तिमि परमातम अकल अज बदन वाक्य श्रुति नीति ६० इन्द्र बरुण यम धनप सिखि आदिक सब नशि जात ॥ इनके सेवन ते चतुर काहां मोक्ष कोंपात ६१ क्यों ध्यावत नरके चतुर ओधरोर तजि देह ॥ पकरि जन्म अवसें गहै सोनिश आतम सेह ६२ वाणी परिहरि मोक्षकी रह्ल आतम में लीन ॥ मह्ल ज्ञान प्रताप तेपावै मुक्ति अधीन ६३ माया सत्ता अपारहै जरवत् सोइ प्रमान ॥ अचर पुरुष ब्रह्महै यह सिद्धांत बखान ६४ ओंकार सोहंवदत प्रणव अजप द्वैभाव ॥ मंगलमनकी बोदते लक्ष्यक एक प्रभाव ६५ अकल कला बिनु क्यों काहत करत कोधा कतीर ॥ लिप्तहोत नहिं जलज जललखु करि ज्ञान बिचार ६६ मांगि खात महि सेज क्षत नग्न रहत तजि लाथ ॥ मुक्ति ह्वात मंगल नहीं बिन ध्याये तन राज ६७ प्रीति प्रतीति सनेम नित प्रीतम को लन ध्यान ॥ सोचि भावनाको मिलै तबपावै कल्यान ६८ काशीमगमेंभ्रम बडो कुल प्रेतहै सोइ ॥ सोजाने बिनुआतमा जानत साधु सोय ६९ जानत आतम भावजे परमातम कोभाय ॥ तेपावतनिर्बाण पद दुबिधा देतबहाय ७० बिना कर्म नहिंसिद्धि भय कर्म फलित दुख घोर ॥ परमहंस कर्मन करत जानत बिषय कठोर ७१ जीवनिधावै सहजही सोकर्तव नित साधु ॥ सत्यभाव श्रीरामपद जगण सदा आराधु ७२ स्वर्ग रचै निज पुण्य सन असरपदारथ भोग ॥ दुबिधा मिटी नजन्म की क्यों करि भयो बियोग ७३ उडत पछि आकाश कर ानत मनबुधि अनुसार ॥ पावत अंतनकोटिकतमाया तथा अपार ७४ जोजीते माया बिबुध होइ ब्रह्म सो आपु ॥ स्वर्ग नर्क व्यापैनहीं दुबिधा जन्म संताप ७५ मोह निद्रा

जो जसि चक्ष्यौ लखि रवि ब्रह्म प्रकाश ॥ कीन्ही आपनि वस्तु सब निकट दूरि मङ्गं आश ७६ जैसे मिहदी पानमें लाली लखी न जाय ॥ योग भये सतसंगके परत प्रसिद्ध लखाय ७७ अथवा तिल में तेल ज्यों निवसत गंधि प्रसून ॥ तथा निरंजन ब्रह्म प्रभु तन प्रति दीप बिहून ७८ याशरीर के मथन ते प्रगटत तासु प्रताप ॥ आतम ज्ञानी योग रत मेटत भव संताप ७९ वस्त्र रंगे तन भूति रँगि दुविधा धारि शरीर ॥ तत्पर ध्यान न आतमा क्योंकरि होइ सथीर ८० पांच प्राण वासी वपुप पांच तत्त्व निरमाण ॥ यक मारग मह सब चलैं तौ पावैं निरवाण ८१ कामलापति की चाह नहिं कमलाकी अति चाह ॥ मुख्य समुभ्कत अमर पद काल कौर वण गाह ८२ तीनि पांच पटलौ तजै भजै निरंजनदेव ॥ समजानै लघु जंच काइलहै मुक्तिको भेव ८३ पांच बीस को एक वारि मनको देइ भुलाइ ॥ समुझै आतम तत्त्व को आसुमुक्त ह्वैजाय ८४ गुरु वाणी प्राणी सुनै करै तासु अनुसार ॥ धर्म सकाम जग हेत हित करैस ब्रह्म विचार ८५ अपनी बुधि निर्मल करै वैरागी मनहोइ ॥ परवन रकै रस रहै ज्ञानी कहियै सोइ ८६ जो कुधार्म की चाह मनतौ अर्चा जपयाग ॥ सिद्धि लहत नहिंकोटि विधि वरणत नीति विभाग ८७ शास्त्र उपनिषद वेदलौ वरणत पुरुष ज्ञान ॥ सोमानत नहिं दंभिजन कल्पत ज्ञान पुरान ८८ दश ब्राह्मण के नाम हैं षटक्षत्री के नाम ॥ द्विविधिवैश्य यक शूद्रहै एकै पुनि परिणाम ८९ जिमि कंकण किंकिनि अपर नूपुर यक येनाम ॥ मिलत नाम अर्जुन भयो समुझत बुध गुणग्राम ९० पाट एकही भूमिहै खान पानसो एक ॥ द्विविधा पितुमें कुछ नहीं कल्पे वरण विवेक ९१ ब्रह्मा ते उपजे सकल ब्राह्मण वरणी सर्व ॥ करणी उत्तम अधम लघु वरणोत्तम हतगर्व ९२ नीच आतमा चढ़है ब्राह्मण पद में जाय ॥ ब्राह्मण षट कर्मन रहित कलित नर्क भरमाय ९३ यह नाम सुनि तन कँप्यो प्रजा

दण्डदाभूप ॥ क्यों चर्चा वासों कहत तन मन नीचस्वरूप ९४
तजि स्वधर्म रत अपरमत जिमि पतिव्रत रत आन ॥
मंगल तू सर्वांग तजि यारु धनि भान बखान ९५ सम्पूरण
सर्वांगमत यामें नहिं सन्देह ॥ श्री शुक,व्यास वशिष्ठ भृगु
मुनि यह गहे विदेह ९६ मान बड़ाई हेत ज्यों कर्म करत
जग भूरि ॥ आपुप लौं संगी गहो तजिदे दुखकी मूरि ९७
सात पांचके योगते निर्णय विपद अज्ञान ॥ मूल गहे शाखा
तजै सो साधू परमान ९८ मंगल मंगल चारि दिशि पर-
मातम परसाद ॥ जापक ध्यानते कृपानिधि मेटत विविधि
विषाद ९९ मंगल मनहिं प्रबोधनहिं कारि उपायन होइ ॥
बिनु बिराग मारग गहे करणी पूरण सोइ ॥ १०० ॥

इतिश्री मत्सकलश्रुतिमहर्षिसर्वांगसुबुद्धिकर्तायांमंगलविनोदकायां
मंगलदासविरचितायां विविधज्ञानवर्णनोनामचतुर्थस्तरंगः ॥

दो० ॥ कर्म पाप घटि बढ़ि नहीं कर्म प्रधान सदाहि ॥
शुभ कर्मी ऊरध बसत अशुभ अधोगति जाहि १ लोभ
विवश मिथन करत करि प्रपंच बहु भांति ॥ अन्त समय
पातक भसहि अधगति बसि पछिताति २ कामवश्य पर-
तिय रमण वेश्यारत नर जोइ ॥ दण्ड पाइके यमन पुर
नर्कनि बसिहै सोइ ३ साका वणिक पै रत्न जिमि जानत
गुण नहिं तासु ॥ पारख कर परि रत्न लइ निज गुण करत
प्रकासु ४ तथा जीव माया विवश जानत सो न स्वतंत्र ॥
पारख अनभन कुनतहों प्रगट्यो पूरण मंत्र ५ बिनु खाये
इन्द्री शिथिल यथा विदित बुधिवन्त ॥ तिमि ज्ञानी सत-
संगबिनु पावत क्लेश अनन्त ६ कहा चहत निरगुण पदहिं
सरगुण जानत कोइ ॥ मंगल ज्ञानी मौन भल ध्यान बढ़ै
श्रमसोइ ७ पण्डित पाठ पुराण कियमूरख मण्डलनाय ॥
को हेतक चेतक भनै वाहै बडो बकवाय ८ कुजन मण्डली
सुजन बसि पंथ न पावत मीत ॥ दुखित रहत जो निकर
गति यहै बात विपरीत ९ चारि खानि अव भूत सब ब्रह्म
अंग निरनाश ॥ जन हरि हर तत्पद बढ़ै ध्वंसि रद सो

बिनु माग १० आवहमस उरमें वसै मोह लालसा साथ॥ तब लगि मोच न जीव कहँ जन्मै मरै अनाथ ११ जानो चाहत ब्रह्मगति अज अनवद अनकाय॥ चीन्हत नाहीं आपुको कहा ज्ञान को भाय १२ वेद नेति भाखत सदा हरिहर सकत न जानि॥ लघु धीनरता खोजमें सहत अ-नेक गलानि १३ बालभाव धारैसदा छल प्रपंच तजिदेइ॥ लिप्त रहै आतम बिषै अगो पदारथ लेइ १४ योग भोगमें कठिन पद पूरणताको तात॥ लघु मति कहु गुण कर्म बिनु दुई ओर भ्रम खात १५ धृक वैपानस विषय रत धृक तप-सी अविचार॥ बिनु परमातम भजन बुध धृक नरकाय अगार १६ गर्भवासकी सुधिनहीं निज निबन्धगे भूलि॥ अबको रचक छोड़गो का विहँसत मन फूलि १७ समन-धारमें दृश्य ते मल तजिहौ अकुलाय॥ वैतरणी महँ वि-विधि बिधि मन हिलोर तुलाय १८ सीख सुधासम सुनत नहिं गुणत नसति उपदेश॥ सुधि आवैगो मन तबहिं जब यम देहैं क्लेश १९ मितपुत्र रक्तोभये जग अनित्य महँआय॥ ऊंचे मन्दिरकाय नर चढ़ि पुनि गिर भहराय २० जाकी बुधि प्रज्ञा गही विषय धरत नहिं ताहि॥ ज्यों महीम को सीतको प्रजा न सकत सराहि २१ कोल भील कानन बसत कवि गुण जानन योग॥ विद्यमान ज्ञानीनको कब अपनाइत भोग २२ यथाअगर बनमहँ जरत गंधिन जानत कोल॥ तथा ज्ञान निरवाण मत मूरख जनको भोल २३ जे शैवी मति धीर हैं शुद्ध चित्त विज्ञानि॥ ते उत्तम अस हीन जग दूमि शिवलिंग बखानि २४ व्यास देव सब वेद मत आनि सिखायो शुक॥ सिद्धान्त मत तिन गह्यो मति महँ परी न चूक २५ जनकराज गृह बासि भे विदित बिदेह जहान॥ यज्ञ अमित बलि भूप किय भो नहिं मन अनुमान २६ नारद घूमत तीनिपुर करतपिशुनता काज॥ दोषनलागत ब्रह्मपद लीला ग्रतसुखसाज २७ बावनतनह-रिधरिछल्यो बलिनरपतिकोजाय॥ दोप प्रपंचनकछुभगो

रहे सहायक भाय २८ परम सनेही राम के लक्ष्मण बन सँगकीन्ह ॥ काल माय पद प्रीतिको तुरत राम तजि दीन्ह २९ कुटी अपबिन कर बिना ध्यानी इन्द्री हीन॥ आतम ध्याये मोक्ष को पावै बदत प्रवीन ३० धाय किये मत आसुरी पूजे तिन के पीर॥ क्षिप्र सत्यो निज अंगश्रुति व्यथा न मिटो शरीर ३१ जोन बेदपौरानमें काव्यबतावै नाहिं॥ तहां वैष्णव शैव क्यों शाक्तमत्त बिद नाहिं ३२ पुलिय वेप प्रताप सों धूर्त प्रपंचि छलोग॥ प्रगटै छल परिणाम में सब बिधि ज्ञात अयोग ३३ तन धन अर्पै मित्र हित जीव लोभ तजि देइ॥ सो प्रीतम संसार में बिपति सहाय करेइ ३४ जग नर प्रीति प्रतीति असि प्रभु पद प्रीतिअलेख॥ जोपुरुषै नरनारिसा मेटै कलुष बिशेप ३५ जन्मभयो सामान्य पदकरणी कर्मद्वितीय॥ सेवतपतिमत कांपभइ बिन सेवा कुधितीय ३६ कल्प कल्पकल्पित रहत ज्ञानी कर्म नसाहि॥ बुधि बिनु नर रत बिपय सहँ पुनि मुनि आवहि नाहि ३७ कूकुर ज्यों भूकत वृथा दर्पण बिम्ब खखेरि॥ त्यों मति बिनु बिपयक मनुज दुखपावत बहुफेरि ३८ सिंह निरखि प्रतिबिम्ब निज मरो कूप परि मूढ॥ तथा जीवमाया बिबश लखत न तत्वअगूढ ३९ काक अस्थि लै भगि चल्यो देखि पच्छि मति तात॥ तैसेलखि हरि भक्तको बिपयक नर पछितात ४० छर्दिरोग बशभो जनै वमन करत नर नारि॥ स्वान स्वाद सों भपतहै निज मन महा सुखारि ४१ तिमि संसारी संत जन परि हरि हरि रस लीन॥ मूरख भोगत स्वाद सों पाप मूल का लीन ४२ व्यास वंश शुकदेव ज्यों दैत्य वंश प्रह्लाद॥ पूज-नीय पावन भये सुजुमन भजन प्रसाद ४३ क्षुद्रनदी पावस समय चली कुमगहि तुराय॥ तिमि मूरख लहि संपदा हित अरि लखत सहाय ४४ कोहौं अस आयो कहां अंत कहां बिश्राम॥ निज पद खोजै बुद्धि शुचि तासु बिचारी नाम४५ लघु दीरघ एकै लखै निज आतम में लीन॥

ताहि कहत सुभाव बुधकरै न कर्मनलीन ४६ दान दया उपवास मन निग्रह इन्द्रिन युक्त ॥ इन साधन को सिद्धि फलको न होत जग मुक्त ४७ सो व्यकार व्यापै न उरको अलोकहा लोक ॥ चीन्हैं पूरण ज्योतिकरबिम्बजीव बिनु शोक ४८ अकाल कालासौं जग रच्यो गहा काला अवतार निगम संत पण्डित बदत सो प्रभु महा अपार ४९ नारायण जन्म्यो जौ ब्रह्मबाक्य ते तात ॥ चतुराननतानाभि ते ताते सब जग जात ५० माया ब्रह्म अपार द्वौ काया कर्म त्रिईन ॥ माया चीन्हैं ब्रह्म को जानै मर्म प्रबीन ५१ मनुभवतहि जीव नहिं ब्रह्म लीन ह्वै जाय ॥ को बरणै अद्वैत ा भेद बुद्धि भ्रम साथ ५२ जाके जानतही मिटत जीव ाव भव भेद ॥ बिन जाने भ्रम बश फिरै यह मत अगम ाखेद ५३ यथा काष्ठके अंतरहि निवसत सिखिन प्रकाश ॥ बिट ते प्रगटत तुरत तिमि तन ब्रह्म बिलाश ५४ इंद्र ाल वश पंथते होत-परेवा रूप ॥ यदपि असत्यन लखि ाकात तथा जगत भ्रम कूप ५५ नट सांचाआंठो कला सुनत भ्रमन नसात ॥ तिमि माया परमात्मा पै नहिं बुद्धि ाात ५६ दीप प्रकाशित बहिगयो खोजत लोचनहीन ॥ तिमि अज्ञानी ब्रह्म को क्यों लखिपरै अचीन ५७ अपनी करणीते भयोचौरबन्दि कहतात ॥ दोष लगावति बिधि लिखनि यह सुनि मन पछितात ५८ सात दिवस जाने किये सप्त स्वर्ग फलवान ॥ एक रहै सत्यौद जग सब जग यहै प्रमान ५९ आपर बिरचे गुणिन जेतिनमें शब्द प्रमान ॥ तासों भव सब जीव मन पावत मोक्ष महान ६० ओंकार पद जौ यहै अक्षर मारग जेइ ॥ आगमअरणनधाय पुनि जानै आपन भेद ६१ भेद लखे बिनु आपनो लहै न ब्रह्म ज्ञान ॥ ताबिन मोक्ष न जीवको भाषत बेद प्रमान ६२ बारम्बार न मनुज वपु पावत जीव सुजान ॥ अब कौ चूके युगनि लगि भ्रमै योनि सबान ६३ दुविधा दोष मिटायके सत्य प्रीति करु तात ॥ मंगल नेहप्रताप ते निजधाम

लगि जात ६४ मित्र मिले आनन्दको तू प्रापति मन होइ॥ सम्यक मनकी कामना काऊ पीतम सों सोइ ६५ कपट कत-रनी कांखमें काटत प्रीति पटान॥ अंत खुलें मित्रनमध कहा मित्र सन्मान ६६ वङ्कय।मन पक्षीछहत संध्या आवत धाम॥ त्यों सब देखी वक्ष में मित्र होत परिणाम ६७ मित्र कारणी गरणी भये मित्रद्वार विन छद्म॥ प्रीतिमानि आपन करत नाम देत निजसद्म ६८ धर्म कर्मकी सिद्धि है चह्राहीके साथ॥ श्रद्धा सात्विक विन चतुर धर्म सैन विन नाथ ६९ विद्या पढ़ि पंडित भये सब काउ छात सन्मान॥ ईश भजन विन सर्वथा दुखरूपी अज्ञान ७० पढ़ि पिंगल संगल रचे छन्द कवित्त अनेक॥ मनवश आपन विषय रत भूंकात श्वान कितेक ७१ तू मंगलमन अंतरहि पूरणराखु प्रतीति॥ बाहिर सों कछु काज नहिं यहै ज्ञानकी रीति ७२ न्हाये धोये वपुष के जापै होत्यउ मुक्त॥ तौ पाठीन सुजन्म भरि जल मधि रहत प्रयुक्त ७३ जो माला वांधे तरत जन्म मरण हरि कोइ॥ वमत कीटतौ काष्टनितपरम हंसहै सोइ ७४ पूजे मूरति मुक्तिको पावत कोउ संसार॥ तौ वह नग नग वासिनी करत अमित व्यवहार ७५ सत्य प्रीति विनु मूढ़मन सुज्ञान होवैजीव॥ दंभकपट भवकोटि कर भरमिहि हिपुर सदीव ७६ अछत अचगे मतन के वकलगि विगन दि-खात॥ दूध पियावत परि हरत उपजत दुखकी वात ७७ जानि करत दुकोसिको मानिन मानत ज्ञान॥ मंगल तू स-वांग ते पावैशुभ निजथान ७८ निंद्या औरनकोकरत आपु घशुचि वपुधारि॥ सिखि बोलो भोजन छरग विषय ते वुध नर नारि ७९ घाटा लटा तन मलित अति मौन साधना कीन॥ को उपदेश न करि सकत शिष्य समान प्रवीन ८० भीख काम उरमाल सिर भूति जटा रचि कोपि॥ ठगत अपूभान वृथामति संत कहावत सोपि ८१ अहंकार वशमित्र मन भूणगहि छलरस कीन॥ को ज्ञानी वासों कारन चलचर त्यहि दुखदीन ८२ पापी मातोस्वर्ग वसि अधो गिरत विन

चूक ॥ पाप वासना उरबसी ज्यों चातककीचूक ८३ तजतें न कपटी कपट को सतसंगतिहु पाय ॥ यथा नीम तरु मलय संग कटुता नाहिं नशाय ८४ लोह संग काटक यथा खोयेनिज मदलोल ॥ नीचसंग त्यों सुजन परि बाढ़त सत अडोल ८५ अ.तम आपु अदृश्य है दृश्यमान प्रतिबिंब ॥ यह सुजानजाने लहत बुधिजारग नबिलंब८६ लोकालोक अदृश्य दृश्य है वेदबचनकी तात ॥ मूरखसो जानत नहीं कहा सोच दरशात ८७ कठिन कठोर बानीसुनै नीचन की कुजबान ॥ तिमि ज्ञानी पापंड मत सन सन कृत अनुमान ८८ जिमि लोहे का ताउहै तिमि जीवन तू जानु ॥ परिहरि मान अरोसभजु प्रभुस्वरूप बिज्ञानु ८९ नभशिर हरिमणि चष उभय भुजहरिहर घनबीशु ॥ उरबिधि उदर सुलोक यह देह बिराट लहीशु ९० विश्वरूप आपुन बन्यो बिश्वंभर पुनि आपु ॥ मंगल दूसर कौनहै जासु जपत तू जापु९१ ज्ञानिन सोंही प्रश्नकिय एका दोइकीतीनि ॥ कहा मिलै पट एकारस दूसर परत न चीनि ९२ तब मंगल यों फिरि कहा नाजमयोंरसकौन ॥ आहानासमैंगकोमरणैसूरखतौन९३ या जगमें बिनुनालके बस्तुन जानीजात ॥ यातेसबते अधिक कहिं नाल प्रताप दिखात ९४ कामठमीठि जामेंकबौं केशन मम अनहोइ ॥ सुधिमदारयभजनबिनु पावैअदरजलोइ९५ कोप समय बुधिधिर नहीं रहत सत्यहै बात ॥ जैसेरिंदक वाद ते ब्राह्मण आपु पलात ९६ सतिदृढ़ आपनि कीजियै परमारथकोसेइ ॥ शुक्लनीपोन्नतमें शुभगतिजीव छिदेइ९७ अमितपाप कारक सदा संगत गत चांडाल ॥ किमि लागै सत पंथमें व्यहात रहत चैताल ९८ बीस बिसे गति शुक्लहै यातस आवै कोइ ॥ मूरखकला प्रकाशमय कहीन लीन मन होइ ९९ मंगल बार अपार हरहिं सलुआयो मन नीच ॥ तदपि न मान्यौ दुष्टतू फिरिगा बिषय नगीच १०० ॥

इतिश्री मत्समस्तब्राह्मणहरजौया सर्वांगसुबुद्धिकर्ना ग्रामगलधिनोटकाया मंगलदास विरचिताया ज्ञानोपदेश निर्धारपद वर्णनोनाम प्रथमशतक ॥ १ ॥

दो०॥ वारिओर अघ जर्वलौं नाम प्रकाश दिखात। सोणाने बिनु मूढ़मन क्यों दुर्भाव नशात १ नामभेद जानत नहीं काम कल्पना कोटि॥ तिन प्राणिन की जगतमें मेघ उत्तम खोटि २ बिनु जाने हरि नामके किये बिना गुण गान। सत मारग सूझत नहीं जीव भ्रमतहै धान ३ जबलगि नाम प्रताप उरप्रगटतआइन तात। तबलगि मग विवरण करव महाकठिन दुखगात ४ कालकराल सचेतको निशवश करत अचेत॥ भव सागरमें जीवकह विविधिहिलोरै देत। जानत नामन जासुको वपुनिरख्यो भरिनैन॥ जगतमांझ फिरिआनसों बरणत चतुरबनैन ६ नाम अधारी कपटगत भ्रमतारहितसधर्म॥ विचरत या संसारमें बधतनकर्मी कर्म ७ जपो नाम जपपा सहढ़ भुव लंहचतुल स्थान॥ यौप्रह्लाद सुनाम बल कियो विष्णु सन्मान ८ टेका न त्यागे यह्य मत नाम जपै चितलाय॥ परम प्रीति प्रतीति सों हरिपुर सो मिलि जाय ९ जहां गये बहुरै नहीं पुण्य क्षीण नहिं होइ॥ शुभकारी सर्वांग गति पावतहैं पुर सोइ १० रामनामको बल बड़ो विदित वेद विज्ञान॥ ज्ञान दीप उर प्रज्वलित करि कीजिय ताको ध्यान ११ राम नाम प्रह्लाद भुव जप्यौ सधीर सज्ञान॥ भक्त शिरोमणिहोत भेक्यों गुणकरिय बखान १२ महाबली गुणवान कवि सतमारग के दास॥ योग क्रिया करि नामको सबदिन उरदिय बास १३ बाल्मीकि गति नामकी जानी ज्ञान प्रयुक्त॥ तीनिकाल दर्शक भये आगम कीन्हों उक्त १४ राम नाम तव वारि दिशि रसणा सकल तन कीन्ह॥ पाप पुण्यकी तुल्यही सब जीवन फल दीन्ह १५ रमत कोटिते ईश्वलगि राम परम शुचिवस्त॥ भाव वश्य सब ठाम है देत मुक्तिजन हस्त १६ रामनामबिन कोटि विधि बुध न गहै विज्ञान॥ विदित ज्ञान बिन मोक्ष पद मिलत न कोटि उड़ान १७ राम कर्मको दाम है राम सुध्यान समाधि॥ निश्चय वश मुक्तिहि गहै बुध देखै आराधि १८ नाम मात्र जे तीनि पुर लखि वपु जाने जात॥

मानत कौनु अनामको यद्यपि हृदय समात १९ अलख कहा जो लख नहीं अमल कहा मैल राखि॥ सुमति कहा बिन कुमति यों देत चतुर कवि साखि २० रूप कौनु अनरूपको जो नहिं जानन हार॥ अकल विचारत कला सों जिनके विमल विचार २१ ब्रह्म नाम उर धारिये मंगल सरलस्वभाय॥ द्विविधा दोष विहाय नित परम तत्त्व लै ध्याय २२ जासु नाम अघहर रटत योग समाधि लगाय॥ ताहि ध्याउ तजि दुष्ट मति अंत मोक्ष ह्वैजाय २३ बाल कलाबिनु लखि परत नारायण को भाव॥ कुत्सित दृष्टि न दीसही बदत षट्पद शुचि ठाव २४ ऊपर रटना नाम की अंतर समता सोइ॥ बिचरै निज इच्छा सरस नाहिंन व्यापत मोह २५ थान नीच अरु ऊंच की निन्दा तजै सुजान॥ जवनीं है तव आपको सो नर ज्ञान निधान २६ आपन करणी शुद्ध नहिं कहा दैव को दोष॥ खीभत भांति अनेक नर क्यों पावैं संतोष २७ कोउ कहत सुरपुर सुलभ कोउकहत सुरधाम॥ मंगलमत निरबुद्धि के नर्क सुलभ परिणाम २८ देव यजै अन्नाहि करै व्रत तीरथ वरिजाय॥ स्वर्ग लोकको बुधवरत नर्क बिनाश्रम भाय २९ दंड जानि भोगी तजत नर्कपंथकी बाट॥ करत क्रिया सों हेत ज्यहि बिलसै सुरपुर हाट ३० सन्यासी स्वर्गहि डरत पुनर्जन्म अनुमानि॥ आतम ध्यावत कर्म बिनु फल आशा कत जानि ३१ जासु पुण्य पूरण उदय अब में परत लखाय॥ जीवत ताको स्वर्गफल मंगल मत दरशाय ३२ पापी जनको जीवतहि नर्कजगत सहं होइ॥ ज्ञानवान तू देखिले पुनि लखिके तजु सोइ ३३ एक दोउ पुरकी क्रिया निजकर लेत सम्हारि॥ जीवत भोगतबिबिधि सुख जात अंत पुर धारि ३४ एक इहां अति दुखलहत तपसा कर मनमाहिं॥ लीन होत पद आपने दुखसुख व्यापत नाहिं ३५ एक प्रथम संचित बिवश अव भोगत कृत पाप॥ अंत नर्कवासै लहत अति कलेश संताप ३६ एक न संचित कर्म करिभोग लहत यहि लोक॥ [illegible]

देखि कै भूप रचायो संत ॥ त्यों ज्ञानी पथ धर्ममें धर्म सेत बचदेत ५६ बला जाय लघु ग्रथुल काउ तामारग भ्रम हैन ॥ पछें ई इच्छा धास लखि अघ ग्रसि ईरोवि सकौन ५७ विपति देखि अकुलाय नहिं संपति जेन भुलाय ॥ कर्स वग्य जानै सबै आतम रहै समाय ५८ जोव इक्ति दाता अहै नेपुर पावन हार ॥ ज्यों संगल मनतूअमतदेइतोहिं समिचार ५९ नृपति प्रजा किय आपुहीं सबलें रह्यौ सुपूरि ॥ ज्यों उर जानत आनवो भजु किन जीवनमूरि ६० सबके शिर पर आपुही सदा बिराजत आहि ॥ सो तेरी गति पालनां करिहि भजहि किन ताहि ६१ बीति गई तासों कहा आवन सों वोकाम ॥ जोहै सोई धन्यहै भजु हरि तजि संभ्रास ६२ बाल अवस्था मोह मय खेलत गई सिराय ॥ काम बाला कामिनि विवश ईश्वर भज्यो न भाय ६३ जठर ये टला वढ़ी इटियको मत थोर ॥ ध्यावत नहिं परमातमें हित अखिल जगमोर ६४ बाणी वदिनहिं सकतहैं महिं- ानतनसखान ॥ तदपिन ध्यावत ब्रह्मको आइ काल नियमान ६५ किये जन्म भरि पापहीं धर्म रहित सब भांति ॥ मन चार हनि सुन्न जीवहि बाँधेजाति ६६ की बाँधा मपास में मारगयो कोभुज ॥ जानि बूझि संगल चतुर इत भूल तरु मूल ६७ इच्छा चारो जीवको यमचर कर्म प्रताप ॥ दंड देतहैं अंतमें बड़ अचरज संताप ६८ या जगमें दुख हैवड़ो चिंता को जन मीत ॥ जाके वश दुविधा रहत सोतन विपति अतीत ६९ जाकी माया अति बड़ी त्यहि किमि जानै कोइ ॥ आपन गति जानतनहीं क्योंसख पुरण होइ ७० खोजत जगको वस्तु को जन्म सिरानो सर्व ॥ भज्यो न श्रीभगवान को अंत जीव को पर्व ७१ जाकी बुधि निर्मल सदा ताकी मुक्ति सदाहि ॥ मायावश कामी रहत भ्रम परित्यागत नाहि ७२ अंधकारमें अंधको एक दशाहै काग ॥ दृष्टाको भ्रम अंध सम तिमि मूरख गुणपाल ७३ सात स्वर्ग सुखकोलहै चण सतसंग प्रसाद ॥ यथा त्रिवेणी

न्हाइ नर मेटत पाप विषाद ७४ चातकज्यौं लवसौं रटै
निज प्रीतम कोनाम ॥ सिंधु गंग जलसौं विबुधतासु नहीं
कछुकाम ७५ पाप दृष्टि सोंदेखिहै क्योंतू पुण्यरूप ॥ पाप
पुण्य कोभाव नहिंसो प्रभु अकल अनूप ७६ पुण्य पापसबके
लखत अंतर बाहिर सोइ ॥ कोटि छुपावैकपट करि आपु
विदित जगहोइ ७७ जौकरणीपूरीकरै सोपावै सुरधाम ॥
मंगल जग करणी बँध्यो आदि मध्य परिणाम ७८ कर्मवान
क्योंभूलिहै निज करणी कोकाज ॥ ज्ञानवान ज्योंज्ञान को
खोजत तीनि समाज ७९ मातपितातिय बंधुसुत स्वारथरत
सब जानु ॥ बिनु स्वारथपरमातमातासु भजनमनआनु ८०
चिंतारूप भुअंगनी नरतनबिलसैंबास ॥ अमृतविवर्द्धकचारि
विधि क्यों लखुमहा प्रकास ८१ शांतिबिना श्रद्धानहीं बिन
श्रद्धानहिंमुक्ति ॥ सुभकारी आतम क्रिया यहैज्ञानकीयुक्ति
८२ समुझायो समुझै नही कासौं रक्ति तमाम ॥ ज्ञान गणी
बिचरत न खल क्योंआनँद परिणाम ८३ सांचशोया जगतमें
तेप्रवीणता रक्त ॥ आतम शोधत ज्ञानमग निसु दिन त्यहि
आसक्त ८४ शक्ति बिना विज्ञानकी भक्ति सिद्धि नहिंतात ॥
भक्ति बिना आतम सुखहि निरखत नहिं विख्यात ८५
श्रुकुरकी जोदयाहै चिँया प्रसंगत काल ॥ सोइदया यहि
जीवकीसँग आशा चांडाल ८६ ज्ञानकातरनी मोहपटकाटत
विविधि प्रकार ॥ आतम शोधत तीनि विधि तजि दुविधा
व्यवहार ८७ यथा अम्बको भिटपहै तिमिहरिजन संसार ॥
फले परारे हेतहै सबके सहत प्रहार ८८ जानि बतावै भेद
नहिं बिन जिज्ञासिहि ज्ञान ॥ तजै आशिषा आप हो
सेवै पद निरवान ८९ आपन पद आपुहि लखै आनहिं
क्यों तू भाखु ॥ तजि छलुकाई जीव कीशुरता सो हिवु
राखु ९० वाको माया का करै जाके पुण्य न पाप ॥ स्वर्ग
नर्क चाहत नही शुद्धचित्त गत ताप ९१ जावद्बोह विलाश
होत तावद्भोग कि चाह ॥ याहि त्यागि फिरि जीव यह
पकरत आपनि राह ९२ यथा गहि तजै न कोटि होत को

कुलीन शुचि सन्त॥ ज्यों चकोर पावक भषत कौन खाद बुधिवन्त ९३ जो मत अर्जुनको दियो श्रीयदुनाथ दयाल॥ ताहि निबाहै जगत कुड मोच्छ लहै यमकाल ९४ बालक तोतर बातको बूझत चतुर समाज॥ त्यों मंगलकी बारता साधनके शुभ साज ९५ जानिन रहत न छपाक यक तागुण दोष न लेत॥ यथा मीन जलको चतुर तजि फिरि प्राणहिं देत ९६ जो प्राणी लहसुन भषत आवत गन्धि न ताहि॥ त्यों अपकारी अपयशी मंगल कहा लखाहि ९७ वाकी समता को करै जो नहिं मानत वेद॥ बुद्धि आसुरी यवन ज्यों क्यों जानै हरि भेद ९८ बीज बोइयो शालिको उपजत भो गोधूम॥ याहि निवारत बुद्धि किमि अचरज भूलन भूम ९९ मंगल हरिके नामबल सोवत नींद अघाय॥ स्वर्ग नर्क हरि जो चहै करैको अब पछिताय १००॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायांमर्यादामुबुद्धिकर्तायांमंगलविनोदकायां मंगलदासविरचितायांज्ञानोपदेशनिर्वाणपदवर्णनोनाम

पञ्चमश्शतकः॥ ६॥

दो०॥ मीठी बाणी शत्रु की दुखदायक सब भांति॥ जिमि मीठा विष काल कर ज्ञान नैन दरशाति १ मित्र हेत श्रीरामजी बालि बध्यो निःपाप॥ मंगल तू निज मित्र हित कस न हरत सन्ताप २ धर्म प्रीतिकी भावना व्यापत मित्रहियाहि॥ जानत पूरणधर्मसो श्रुतिवतकर्म कमाहि ३ विद्याजाको सत्य है सो वैरी भल होइ॥ मूरख मीत कलेशकर ज्ञान मान लखु सोइ ४ भक्ति बिनाशन दुष्ट बड़ कामादिक निज संग॥ ज्यों जल क्षीरहि अमिल चाउ करति भिन्न हित संग ५ जो नहिं जानत सत्य पद मोह मानमें लीन॥ चीन्हत नहिं थिरताल निज यद्यपि जगत प्रवीन ६ कोटि चतुरता जगतकी भजन बिना निःकाम॥ जिमि बिनु अन्न अनेक धन क्षुधा सकात नहिं (क) धाम ७ रूप भारतें बिपुल विधि सुन्दर आनन चन्द्र/

नशाइ नर मेटत पाप बिषाद ७४ चातकज्यों लवसों रटै
निज प्रीतम कोनाम ॥ सिंधु गंग जलसों बिबुधतासु नही
कछुकाम ७५ पाप दृष्टि सोंदेखिहै क्योंतू पूरणरूप ॥ पाप
पुण्य कोभाव नहिंसो प्रभु अकाल अनूप ७६ पुण्य पापसबके
लखत अंतर बाहिर सोइ ॥ कोटि छुपावैकपट करि आपु
विदित जगहोइ ७७ जोकरणी पूरीकरै सोपावै सुरधाम ॥
संगल जग करणी बँध्यो आदि मध्य परिणाम ७८ कर्मवान
क्योंभूलिहै निज करणी कोकाज ॥ ज्ञानवान ज्योंज्ञान को
खोजत तीनि समाज ७९ मातपिताप्रिय बंधुसुत स्वारथरत
सब जानु ॥ बिनु स्वारथपरमातमातासु भजनमनआनु ८०
चिंतारूप भुजंगनी नरतनबिलमेंबास ॥ अमृतबिवर्द्धकचारि
बिधि क्यों लघुगह्ल प्रकास ८१ शांतिबिना श्रद्धानही बिन
श्रद्धानहिंमुक्ति ॥ सुभकारी आतम क्रिया यहैज्ञानकीयुक्ति
८२ समुझायो समुझै नहीं कामी रक्तितमाम ॥ ज्ञान गली
बिचरत न खल क्योंआनंद परिणाम८३ सांचेजोया जगतमें
तेप्रवीणता रक्त ॥ आतम शोधत ज्ञानमग निशु दिन त्यहि
आशक्त ८४ शक्ति बिना बिज्ञानकी भक्ति सिद्धि नहिंतात ॥
भक्ति बिना आतम सुखहि निरखत नहिं बिख्यात ८५
कुकुरकी जोदशाहै त्रिया प्रसंगत काल ॥ सोइदशा यहि
जीवकीसँग आशा चांडाल८६ज्ञानकतरनी मोहपटकाटत
बिबिधि प्रकार ॥ आतम शोधत तीनि बिधि तजि दुबिधा
व्यवहार ८७ यथा अम्बको बिटपहै तिमिहरिजन संसार॥
फले परारे हेतहै सबके सहत प्रहार ८८ जानि बतावै भेद
नहिं बिन जिज्ञासिहि ज्ञान ॥ तजै आशिषा आप ह्वै
सेवै पद निरबान ८९ आपन पद आपुहि लखै आनहिं
क्यों तू भाखु ॥ तजि हलुकाई जीव की गुरुता सों हितु
राखु ९० वाको माया का करै जाके पुण्य न पाप ॥ स्वर्ग
नर्क चाहत नही शुद्धचित्त गत ताप ९१ जावशोह त्रिताप
हत तावश्लोग दिा चाह ॥ याहि त्यागि फिरि जीव यह
पकरत आपनि राह ९२ प्रण गहि तजै न कोटि धात को

पावत मुक्तिहि सोइ २६ चिय लग नर मग मिलि जन्यौ मायाछत भैदेह ॥ मज्जाअंग वारणी विवश निवसत भोन संदे- ह २७ जठरानलकी ज्वालसों विकल होतनव प्राण ॥ गर्भ मूत्र मलगंधिसों तब ध्यावत भगवान २८ जोपैया घाति दंडते चापुरुष जगदीश ॥ जन्म पाय तुव भजन तजि करौंन काहु विसवीस २९ हरि रक्षा सबविधि करी मुनि निबंध सति- भाय ॥ जन्म काल लगि क्लेश हर जन्मत दयो भुलाय ३० उपजत घटके पेटसें दुविधा मोह प्रताप ॥ कीटादिक कबहूं डसत तबबहु करत विलाप ३१ बालदशा गई खेलसँग आई तन तरुणाय ॥ काम क्रोधमद उर बढ्यौ नहिं हरि भजन सुहाय ३२ आभूषण पट वाहिये भोग ऐत भल नारि॥ निजकर मंगल अधमनर देवत धर्महिं टारि ३३ जरा व्यव- स्था में भयो मोह बास उरआइ ॥ जावश नारायण भजन मंगल दयो नशाइ ३४ कोटि भांति गुरशिष दई ज्ञानिन कहा बुझाय ॥ तदपिन त्यागी दुष्टता गई आयु नियराय ३५ यमन धारकर पासलै आये ताकेपास ॥ देखि भयानक वेषको मल तजि जीव उसास ३६ मारि मुद्गरन बाँधि पग दक्षिण चले घसीटि ॥ व्याकुल कीन्हे विविधि विधि लोह मोंगरन पीटि ३७ डारयौ कुम्भी नरक भरयौ पीववत् नीर ॥ कीटकाग अध ऊर्द्ध में गहत लहत बढ़िपीर ३८ सूकर कूकुर योनिसें नर्क भोग अवतार ॥ जानिन ध्यावत आतमा होय जन्म निरधार ३९ ब्रह्मचार जोनर करैं तजि दुविधा को खेल ॥ सोप्राणी उत्तम महा करत मुक्ति पदमेल ४० जो गृहस्थ हरि भजनमें निरतरहै दिनराति॥ दया धर्म युत हरिभजै आसु मुक्ति ह्वैजाति ४१ वाणप्रस्थ कर्तव कठिन साधि जो पावै कोइ ॥ नारायण की कृपाते पावै मुक्तिहि सोइ ४२ सन्यासी की मति सुगति जीवन मुक्ति सदाहिं ॥ को जानैता जीवको जन्म मरण है नाहिं ४३ चरौ आश्रम भूषित अति साधै कोउ साध॥ पावै मोक्ष प्रयास बिनु शुद्धचित्त अनबाध ४४ या भवमें भयजाल

भजन विना टेसू यथा विन सुगन्धि द्युति मन्द ८ अमर पदारथ कौन भव समर कहा यहि लाक॥ भजन भाग्यशुभ अशुभ द्वौ दायक सुख अरु शोक ९ ज्ञाताको दाता कहा को विद्याधर तात॥ निशु जानै दाया हृदय ईश गुणनकी बात १० ठगन ठगत जाने नरहि भयमानत पहिंचानि॥ तिमि माया हरिदासको मंगल मन अनुमानि ११ कारण हीन बैनन सुनत नयनहीन नहिं दीख॥ योंमंगल अज्ञान तू गहत न मेरी सीख १२ वासी कासी याग वड दासी सामी नाहिं॥ हिय अनुराग न मुक्ति को मंगल सन्त सदाहिं १३ ज्यों निज गृहको नेह है त्यों हरि पद किन लाउ॥ मंगल भव पद प्रीति वश अन्त मुक्ति पद पाउ १४ होनहार सो होइगी मिटै न कोटि उपाय॥ मंगल मन ज्यों शोच कत भज आतम चितलाय १५ ज्यों कारीप पट में धरे बचन कलङ्क विहीन॥ त्यों कुसंगसे नीच अति होत कहत परवीन १६ बारंबार सिखवत अहो मन त्वहिं उत्तम ज्ञान॥ तूनतजत प्रारब्धि वशयद्यपि महासुजान १७ लोभ वास उरमें करत अपकोरति वड़ पास॥ मंगल देख्यो नयनयह तदपि नतजभिनयास १८ ज्ञान नयनदेखे मनुज चारि ओर प्रभु रूप॥ अज्ञानी मंगल सरस परे विषय के कूप १९ सात स्वर्ग अपवर्ग को सुखन मोच्छ सम नाहिं॥ मनुज महाविद सो कहत यामहँ संशय नाहिं २० या तनमें अति शार है पापिन को मन मूढ॥ सुप कावत किन तिनहिं तू है मन ज्ञान अगूढ २१ शत्रुमित्र द्वौअंग मे मंगल करत विनाश॥ जानि हित सतसंग कर करहि न अहित प्रकाश २२ वैरीके सतसंग में को पावत सुख देखु॥ ताते मंगल अरिन दिग्गिनेक हटि अनुलेखु २३ पांच यता-यतसातहै सात थामते नासि॥ ज्ञानवंत जानतअहै तू दुबि-धा देनाशि २४ काम पासमें जगअव्यौ आवतजात यपोर॥ काहि ज्ञान मंगल वदत मन संसार सपोर २५ ज्ञान मुनै चित लाय के ध्यान न्यायुक्तर कोइ॥ बिनुश्रम मंगल अंतजहँ

कुलवान ६३ मिचन कुसमय होत कोउ दधि अगस्त्य तें जानु॥ मंगल तजि परमातमा तू कारु ताकार ध्यानु ६४ समय समय की मित्रता बिनु स्वारथ जग नाहिं॥ तज्यो विभीषण बंधुहित राम हितहिं चित चाहि ६५ मातपिता की प्रीति अति निज बालक से सत्य॥ भगिनी सुत तजि भगि गई:इक लखि मानि विपत्य ६६ सब युत अमजन होत जग कौनौ वस्तु प्रवीन॥ तिमि अनुभव विपयीविवश होत उदय कमहीन ६७ यथा अगर की गंधि को जान न भील किरात॥ तिमि मूरखकेसंगते गुण सागर पछितात ६८ हठ मत ले जिन उर धरे पाषंडी छल कारि॥ तिन लखत सर्वांग खत मंगल दीख विचारि ६९ प्रीति सत्य पारस विमल हा-टक करती लोह॥ नास रूपभेदसोन्धप शीशनसोसोह ७० समर साधना अत कठिन करव सहज मत सार॥ प्रीतिएक रस अंतलगि मारव निबाह कठोर ७१ मोल विना बिकि जाय जो जिन हाथ-नर कोइ॥ ऊंच नीच दूलो तजै प्रीति निभाएदा सोइ ७२ प्रेम निबाहव प्रण कठिन भाषतकविता सर्व॥ आदि अंत जो नर धरै यक रस धनि बिनु गर्व ७३ नोरज प्रीति बधाय निज मित्रध्यान में लीन॥ सो नर मंगल धन्यहै भाषत सकल प्रवीन ७४ राधा पति के नेह में लीन रहैदिन राति॥ मंगल प्रीतिप्रतापसों भक्तिसुकहै जाति ७५ या जगमें लखि परत नहिं सुपुरुप खल सब आहि॥ तूमंगल सिनु सबनको आपु आपु दरशाहि ७६ निज सकता जनि जानु लाउ लगहि जानु पद जान॥ अहंकार को भावतजि भजिले हरि विज्ञान ७७ बार न कीजै हरि भजन इंद्रीवश में लाउ॥ या जग मंगल बक्करि तू कहां पाउ अस दाउ७८ करणी सोदाता विदित सुख दुखदायहि लोक॥ अघजरघ निज कर्म वश भ्रमत सशोक अशोक ७९ जिमि दीपक को पवन अरि तस ज्ञानहि है सोह॥ इंद्री निग्रह ओट पट कर प्रकाश विनु खोह ८० जल बैरी जिमि अग्नि को यद्यपि तामितु सोइ॥ तिमि बैरी विज्ञान मल यद्यपि ताते

है भानु मीत तू वेगि ॥ नातरु पावै दंड अति और अपत्य अनेगि ४५ पापाणी भाजन यथा टूटत मृतिका तूल ॥ बुद्धि आसुरी में चतुर तैसे परत समूल ४६ बालक लोजो भावहै ताहि गहे शुचि बुद्धि ॥ रद्देलीन पै नहिंमिलै सोपावै मति शुद्धि ४७ बावर ज्यों कहि सकत नहिं स्वाद भाव विधि कोटि ॥ त्यों योगी हरि गति कहै वरणत सो बुधि छोटि ४८ ब्रह्म लखै वाल नैनसों देखत आपु नशाय ॥ यथा लौन पयमें मिलै फिरिनाहीं दरशाय ४९ चारि करतहैं चारि जन शुचि त्यागत हैं चारि ॥ मंगल ज्ञान प्रताप सों जात जन्म निरधारि ५० सत्य प्रीति बश सर्वदा नारायण मन मीत ॥ घ्यानभाव तजि नेहहठ राखु सधर्म अभीत ५१ बिनु ध्यावे पैपाल पदकमनिहै जन्म अनेक ॥ गर्भदंड अतिशयलहै छोड़न वरण विवेक ५२ बसतनसो वैकुण्ठमें नहीं छीरदधि वीच ॥ मंगल वाणी सत्यवद रह विश्वास नगीच ५३ खर्व खर्व धनहै वृथा प्रिय अप्रिय मृतु काल ॥ तू मंगल तजि भूल भव भजिले मदन गोपाल ५४ अर्थ न जाके नामको वरण मध्य नहिं थाहि ॥ आदि कहत पुनि मध्यमम अंत कौन दरशाहि ५५ अलख भणतलख कौनहै अकरन कर्ता सोइ॥ अगुण वदत गुण कौनहै दुविधा देमन खोइ ५६ अनुभव पाको नामहै संभव सब संसार ॥ नारि पुरुष क्यों जानियै परि पूरण करतार ५७ कोउ दंभी यों वदत जग छलिबे के हेत ॥ नयनन निरखत ब्रह्महम जानतसदाअचेत ५८ जोमैं निरखे अज सों तोन अगोचर नाम ॥ मूरख सुनि पतियात यह बुध त्यागत सन भ्राम ५९ यती सती मानत नहीं यो दंभीकोंमान ॥ मंगलतूभजु नेहकरि हरिपददा कल्यान ६० तीनि काल बिनु व्याप्त है कौन न मथा होत ॥ यों जानै भवसरि तरै चढ़ै ज्ञानकी पोत ६१ कृपण कहा जो धन नहीं दाता का बिनु दान ॥ सत्य कहा जो मृषा नहिं को पंडित बिनु ज्ञान ६२ कुसमय में हित शत्रु सम अंशुन नागत भानु ॥ जब यन ग्रीषम काल में सर त्यागत

कुलवान ६३ मिचन कुसमय होत कोउ दधि धगस्त्य ते भानु॥ मंगल तजि परमातमा तू करु ताकर ध्यानु ६४ समय समय की मित्रता बिनु स्वारथ जग नाहिं॥ तज्यो बिभीषण बंधुहित रान हितहिं चित चाहि ६५ मातपिता की प्रीति अति निज बालक से सत्य॥ भगिनी सुत तजि भगि गई ध्यान लखि जानि निपत्य ६६ सत युत असजन होत जग कौनौ वस्तु प्रवीन॥ तिमि अनुभव विपरीतिवश होत उदय कामहीन ६७ यथा अगर की गंधि को ज्ञान न भीख किरात॥ तिमि मूरखकेसंगते गुण सागर पछितात ६८ शठ मत से निज उर धरे पाषंडी छल कारि॥ तेन लखत सर्बांग मत मंगल दीख बिचारि ६९ प्रीति सत्य पारस विमल हाटक कर्ता लोह॥ नाम रूपसेभेदभेोदप शीघ्रनसोसोह ७० सनर साधना मत कठिन करब सहज मत सोर॥ प्रीतिएक रस अंतलगि चारब निबाह काठोर ७१ मोल विना विकि जाय जो मित्र हाथ-नर सोइ॥ ऊंच नीच दूनो तजै प्रीति निबाहक सोइ ७२ प्रेम निवाहब सब कठिन आयतकविता सर्ब॥ आदि अंत जो नर धारै यथा रस धनि बिनु गर्ब ७३ जोरब प्रीति नबाय निज मित्रध्यान में लीन॥ सो नर मंगल धन्यहै भाषत सकल प्रवीन ७४ राधा पति के नेह में लीन रहैदिन राति॥ मंगल प्रीतिप्रतापसों भक्तिमुक्तहै जाति ७५ या जगमें लखि परत नहिं सुमुक्षु खल सत नाहि॥ तूमंगल मिलु सबनको आपु आपु दरशाहि ७६ निज सजता जनि मालु काउ सबहि लालु पद पान॥ अहंकार को भावतजि भनिले हरि विज्ञान ७७ बार न कीजै हरि भजन इंद्रीवश में लाउ॥ या जग मंगल वड़रि तू काहां पाउ अस दाउ७८ करणी सोदाता विदित सुष दुखदायकि लोक॥ अघजरष निज कर्म पश स्वसत समाधा अशाक ७९ जिमि दीपक को पवन अरि तस ज्ञानहि है सोइ॥ इंद्री निग्रह ओट पट कर प्रकाश बिनु खोइ ८० जल बैरी जिमि अग्नि को यद्यपि तामितु सोइ॥ तिमि बैरी विज्ञान मन यद्यपि ताते

छोइ ८१ जिमि अकाश में भास हत दिन मणि देवसनेम॥ तथा ज्ञान उर गभ उदय होत जीव काइ हेस ८२ वामन मानत वास मत योग सिद्धि करि दीन॥ को कवि मंगल भणि सकत खल मति सदा नवीन ८३ मूढ कहत चलि दिवस काछु हरि भणिहै वितजाय॥ को जानै मंगल चतुर काल बीचही खाय ८४ नरण गर्व विद्या गरव उर भासीभा जासु॥ धर्मकर्म खोवत सकल देतनर्कमेंवासु ८५ निरतदिवस निशि विषय हित हरि हित घटी न एक॥ क्यों सुख मंगल पाइहै गहे विषय की टेक ८६ वाल दशामें शुद्धि करि मनहिं भजन में लाउ॥ निश्चै तीनों कालके पद निर्वाणहि पाउ ८७ जे भूलेनिज आतमा और धर्म को भाव॥ ते नहिं जन्म सहस्र लगि मुक्त होत श्रुति गाव ८८ अध्यातम विद्या सुणै साधारण मत साधि॥ जगमें कैसिद्ध विधि रहै ताहि न यमकी व्याधि ८९ मंगल धनत न कर्मशुभ तृष्णा पै मर कोय॥ समुझावै गुरु कोटि विधि तदपि न मानै सोय ९० पीछे दिन खोये घने आगे देहै खोय॥ मंगल मनकी चालि लखि मनसें दीन्हो रोय ९१ कोटि भांति शिक्षा दई मन पापीकोसांसु॥ तदपिदुष्टअखालसा नाचतविषयीनाचु९२ ज्यों नहिं भेदत कंज दल कौनौ विधिकी लाल॥ त्यों मिथ मेरी दुष्टमन तू न गह्यो किछु काल ९३ अबतै मेरी कह्यो सुनि तजि यिषयन को बाद॥ गाउ सुकीरति श्यामकी उर धरि सुंदर पाद ९४ जासु नामके भेद ते नर तरि जात अभेद॥ मंगलमन निज ध्यानधरु तजिदे सब जगखेद ९५ सत मारग सतसंग करु आतम को अमनाथ॥ क्यों शोचत मन मूढ तू आशु मुक्त ह्वै जाय ९६ मंगल मन नहिं मानिहै बिनु बांधे रज ज्ञान॥ वह उपदेश प्रमाणिका सो किन करै सुजान ९७ दश द्वारे जो प्रगट है तिनहिं बंद करि देह॥ मन मारग पावै नहीं तब सत करै सनेह ९८ इड़ा पिंगला सुखमना या शरीर कुतवार॥ सबहि त्यागि कर प्रीतिदृढ तिनसों ज्ञान विचार ९९ जोच दुवारो जीवको सुख मन

उदय प्रधान॥ मंगलकैमतपायलखि भनिलैश्रीभगवान १००

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्त्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्त्तायांमंगलविनोदकायां मंगलदासविरचितायाज्ञानोपदेशनिर्णयपदवर्णनोनामसप्तमशतकः॥ ७॥

दो०॥ गगन अनिलजल अनलमहि पंच तत्त्वकृतलोक॥ सोव्यापतयह आसमहँज्ञानतशोचविशोक १ जानेतैदृढ़ता लहतसुने बोधनहिंज्ञान॥ भोजनबिन खाये मिटतक्षुधा न कोटिसयान२ खासाकोसवख्यालहैतीनिलोकतिहुंकाल॥ ताहिलखैबुध दृष्टिसोंल हैमोचनरवाल३गुरुकीर्ती सतसंग ते मोच लहत बिनु भेद॥ यथा धापु उष्णता बश तनते चलत प्रसेद ४ कर्म किये ते कामना को न करै बुधिवान॥ इच्छावत फल को लहै परिपूरण कल्यान ५ आसनअमित कहै अहै शंकर सारग योग॥ मन्त्रसिद्धि उत्तम दुवौ करत शरीरनिरोग ६ प्रणव मंत्र को जानि कर प्राणायाम सदाहि॥ आयुबढै अघगणनशै अंत बसै पद माहिं ७ आशा राखै मोचकी विषय बासना त्यागि॥ सुख मन मारग हरि भजै रहै मान तट लागि ८ बामन तन नभ ज्यों छुवै अंध लखै सुख रूप॥ तूनौं आतम ध्यान बश यह सिद्धान्त अनूप ९ पंगु चढ़ो आकाश लौं अति अचरण की बात॥ जाने ते कछु भ्रम नहीं मूरख मन पछितात १० बातन सों सुनि सम बने दंभ गलित मन जासु॥ ते पापखंडी कौन बिधि पावैं गे कल्यान ११ दीन बसन बिन शिशिर सें ज्यों निरखत दिननाथ॥ त्यों आशा करि ब्रह्म की जग नर होय सनाथ १२ तृषावन्त जस बिकल मन खोजत कूप त-ड़ाग॥ त्योंमंगल खोजहिहरिहि उदय होय तबभाग १३ समर भूमि जिमि नृपति मन निज जयकी अभिलाष॥ तैसे मंगल मन बसै हरिपद प्रीतिप्रकाश १४ बोहित बूड़त जीव ज्यों भवावर्त बिन जान॥ मंगल अमतौ कठिन अति राखिहि श्रीभगवान १५ मधु माखी मधु छतअमित भखन कृपणतावश्य॥ कोल छीनि लिय दुख भयो तस धन

होइ ८१ जिमि अकाश में भास सत दिन मणि देनसनेन ॥ तथा ध्यान उर नभ उदय होत जीव कह छेम ८२ बामन मानत बाम मत योग सिद्धि करि दीन ॥ को कवि मंगल भणि सकत खल मति सदा नवीन ८३ मूढ कहत चलि दिवस कछु हरि भजिहै चितलाय ॥ को जानै मंगल बहर काल बीचही खाय ८४ नरण गर्व विद्या गरव उर बासीभा णासु ॥ धर्मकर्म खोवत सकल देतनर्कमेंबासु ८५ निरतदिवा निशि विषय हित हरि हित घटी न एक ॥ क्यों सुख मंग पाइहै गहे विषय की टेक ८६ बाल दशामें शुद्धि करि मन हिं भजन से लाउ ॥ नियहि तीनों कालके पद निर्वाणहि पाउ ८७ जो भूलेनिज आतमा और धर्म को भाव ॥ ते नहि जन्म सहस्र लगि मुक्त होत श्रुति गाव ८८ अध्यातम विद्य गुणै साधारण मत साधि ॥ जगमें कैसिक्क विधि रहै ताहि न यमकी व्याधि ८९ मंगल मनत न कर्मशुभ तृष्णा के बश कोय ॥ समुझावे गुरु कोटि विधि तदपि न मानै सोय ९० पीछे दिन खोवे घने आगे देहै खोय ॥ मंगल मनकी मारि लखि मनसे दीन्हो रोय ९१ कोटि भांति शिक्षा दई मन पापीकोसांचु ॥ तदपिदुष्टबश्लालसा नाचतविषयीनाचु९२ ज्यो नहिं भेदत कंध दल कौनौ विधिकी लाल ॥ त्यो शिष मेरी दुष्टमन तू न गही बिझ काल ९३ अबतो मेरी कही सुनि तजि विषयन को बाद ॥ गाउ सुकीरति श्यामकी उर धरि सुंदर पाद ९४ जासु नामके भेद ते नर तरि जात अभेद ॥ मंगलमन निज ध्यानधर तजिदे सब जगखेद ९५ सत मारग सतसंग कर आतम को अपनाय ॥ क्यो शोचत मन मूढ तू आशु मुक्त ह्वै जाय ९६ मंगल मन नहिं मानिहै बिनु बांधि रण ज्ञान ॥ वह उपदेश प्रमाणिका सो किन वारै सुजान ९७ दश द्वारे जो प्रगट है तिनहिं बंद करि देह ॥ मन मारग पावै नही तब सत करै सनेह ९८ इडा पिंगला सुखमना या शरीर कुतवार ॥ सबहि त्यागि कर प्रीतिदृढ तिनसो ध्यान विचार ९९ मोच दुयारो जीवको मुख मन

उदय प्रधान॥ मंगलकेमतपायत्यहि भनिलेश्रीभगवान १००

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्त्तायांसर्वागमबुद्धिकर्त्तायांमंगलविनोदकायां
मंगलदासविरचितायांज्ञानोपदेशनिर्णयपदवर्णनोनामसप्तमस्थलकः ॥ ७ ॥

दो० ॥ गगन अनिलजल अनलमहि पंच तत्त्वकृतलोक॥
सोऽव्यापतयह आसमहँजानतहोयविशोक १ जानेतेदृढ़ता
लहतसुने बोधनहिंज्ञान॥ भोजनबिन खाये मिटतक्षुधा न
कोटिसयान२ खासाकोसबुख्यालहैतौनिलोकतिङ्काल॥
ताहिलखैबुध दृष्टिसोंल हैमोक्षनरवाल३शुरुकर्ता सतसंग
ते मोक्ष लहत बिनु भेद॥ यथा आयु उष्णता बश तनते
चलत प्रसेद ४ कर्म किये ते कामना को न करै बुधिवान॥
इच्छावत फल को लहै परिपूरण कल्यान ५ आसनअमित
कहे अहैं शंकर मारग योग॥ पद्मसिद्धि उत्तम दुवौ करत
शरीरनिरोग ६ प्रणव मंत्र को जानि कर प्राणायाम
सदाहि॥ आयुनटै अवगणनशै अंत बसै पद माहिं ७ आ-
शा राखै मोक्षकी विषय वासना त्यागि॥ सुख सन मारग
हरि भजै रहै साधु तट लागि ८ बासन तन नभ ज्यों छुवै
अंध लखै सुख रूप॥ दूनौं आतम ध्यान बश यह सिद्धान्त
अनूप ९ पंगु चढ्यो आकाश लौं अति अचरज की बात॥
जाने ते ताकु भ्रम नहीं मूरख मन पछितात १० बातन से
सुनि सम बने दंभ गलित मन जानु॥ ते पाखण्डी कौन
विधि पावैंगे कल्यान ११ दीन बसन बिन शिशिर सें ज्यों
निरखत दिननाथ॥ त्यों आशा करि ब्रह्म की जग नर
होय सनाथ १२ तृषावन्त जस बिकल मन खोजत कूप त-
ड़ाग॥ त्योंमंगल खोजहिहरिहि उदय होय तवभाग १३
समर भूमि जिमि नृपति मन निज जयकी अभिलाष॥
तैसे मंगल मन बसे हरिपद प्रीतिअमाप १४ बोहित बूड़त
जीव ज्यों भवावर्त बिन ज्ञान॥ मंगल अबतौ कठिन
अति राखिहि श्रीभगवान १५ मधु माखी मधु हतअसित
भखन कृपणतावश्य॥ कोल छीनि लिय दुख भयो तस धन

लोभि अवश्य १६ यह सम्पति तुव संग नहिं जन्म। सुउ मन मूढ़॥ अंत संगिनी होत नहिं कत दुख करत अगूढ़ १७ पर वश बन्दी भवन नर यथा रहत सकलेश॥ तिमि इंद्री वश जीव यह भरमत देश विदेश १८ ज्यों कुलाल भाजन रचै ऊँच नीच न विचारि॥ संगति वश शुभअशुभ भो तथा जीव निर धारि १९ साध संग साधै जनहिं नीच संग भ्रम खाय॥ शुभकारी कोउ जन्म नहिं संगति मूल बताय २० संग पाय चेतन नहो ऐस्यउसहा अचेत॥ अहि मलयज वासी कहा अमृत वुद्धि तजि देत २१ सरिता सर बापी कहौं कूपादिक जल धारि॥ काम आपनोवउर जन सब ते लेत निकारि २२ कहा करैलै सम्पदा जो नहिं जीवन आप॥ मरणसमय रावणकुरुप धनहितकीन्ह बिलाप २३ जिमि निपंग में शर भरे यक यक करि घटि जात॥ तथा स्वास निज जात है चेत आयु नियरात २४ कामी क्योंकर चेति है चढ़ेउ उभयनिर्बुद्धि॥ चन्द्रइन्द्र दुख अति लह्यो काम विवश नहिं शुद्ध २५ कहा न वश में आपने विनु परमातम एक॥ जन्म मरण निज वश सदा कहनिज चित्त विवेक २६ पापराशि यमराजपुर कोटि भांतिपछिताय॥ धर्मात्मा प्रियासविनुहरिपुरकोपजिजाय२७चर अचर को एक सम ज्ञानी करै विचार॥ नित्य अनित्य विवेक उर भव मग करै विचार २८ गंग जल पावन परम वदत बेद पौरान॥ पै नहिं मानत निकट बसि जाहि कहत अ-ज्ञान २९ अछत नयन मे अंध वत निकट वस्तु नहिं,सूभा॥ नानामत खोजत फिरै सत मारग नहिं बूझ ३० जामेंमा शोभित त्रिपुर जा आभा भव भूत॥ मगन मन बुझात नहीं जगहिं छूलत जिमि घूत ३१ आधा पूरण होइ सब,याइया पनै धाम॥ परमातमा विज्ञानमयजन्ममरण निःकाम ३२ जिमि अनबाध जानाइ गृह ताहि चरावत घास॥ का लन जानत मुग्ध मति तिमि नर तृष्णा पास ३३ पढ़े बेद बेदांत को विषय लीन नर कोय॥ ताहि नहा बाहुल क-

हिय दादुर बक्ता सोइ ३४ खग निज सुख गावो बदत नित्त प्रात हरि नाम॥ नर मलीन भिनसारसे विषय भजत मति वाम ३५ मेरी बुधि अति बोधिनी मन चंचल चांडाल॥ तासु मरण हित यतनबड़ काह्योन नाय्यो काल ३६ मन जो माने मत सुमति तौ मन चीता होय॥ सत्व प्रीति यश ईश भव बदत सयाने लोय ३७ सात सात को घात करि गुणसोंदीजिय बांटि॥ शेषवस्तुको खोजिलेसन मलीन को छांटि ३८ जिमि अकार बिनु व्यंजनहि बोलि सकत नहिं कोय॥ तिमि हरि तजि प्राचीन की मुक्ति न कैसेड होय ३९ मारि आपने मतिहि जिमि सेवति नेहसमेति॥ अंत प्रसन्नता प्रीतिमय होति परमगत लेति ४० ऐसी सांची प्रीति सँग प्रीतम के निरबाह। करे साधु सों दृढ हती मिलि प्रीतम सुखलाह ४१ लोह लालसा त्यागि मन ध्याउ प्रेम दृढ़लाय॥ हर्ता कर्ताआपुही त्यों मन रहा समाय ४२ मांगत लागत लाज नहिं औरन सों मन तोहिं॥ यांचत सांचे मित्रसों क्यों लजात कछु मोहिं ४३ जन्मनभो प्रथमैं रच्यो नाता बुध पयजासु॥ मंगल पालक सत्य हरि सबैं विधि अनुमासु ४४ खोभात तैलो तेलको सुधावन्त चह मीन॥ कोकालो वाणी सुने निज स्वारथ लवलीन ४५ यथा अन्ध द्वै चारि मिलि गज चीन्हन मन कीन्ह॥ कारपद पूछरु उदरछ्वै ताहीसम कहिदीन्ह ४६ तथा पंथ संसारके नयन हीन अनुमान॥ दृष्टामत सबीगहै सो हाथी पहिचान ४७ ज्यों कबीर निज ग्रंथ में बरन्यो पूरण ज्ञान॥ नानकगोरख भरतरी सबींगी भगवान ४८ परख्यो पूरण तीनि विधि अपर धारि यह ज्ञान॥ यथा गोसाईं जी भये हरि प्रताप भगवान ४९ माणिकको जो प्रकाश है त्यहि न डुलावत वात॥ तथा बचन सर्वांग को कुलि न सकत विख्यात ५० मंगल श्रुति मत तीनि पुर है परमातम वास॥ चन्द्र सूर आदिक उडप तासु तेज पर-काश ५१ जिमि होत नहिं गॅगनजिमि मिला अ[illegible]

ऐसे तन तन ब्रह्म बुध ज्ञान चक्षु उर खेचु ५२ शाखा दल फल फूल अरु मूल विदित तरु नाम ॥ तिमि जल थल नभ-चर अखिल कहिय ब्रह्म परिणाम ५३ कौन विचारत ब्रह्म पद पै नहिं पावत जानि ॥ जिमि पक्षी नभ अन्त हित चढ़त स्ववल अनुमानि ५४ सिन्धु पिपील न गाह्यो कीनो काल सुजान ॥ तिमिनब्रह्म के भेद को जानत जीव प्रमान ५५ वाकी उपमा कौन जग जो अद्वैत स्वरूप ॥ उपमा बिनु बूझब कठिन कहत कबिनकेभूप५६ कवि पुंगव व्यासादि जे आगम भाखी ग्रान ॥ सोपि ब्रह्म के भावको भेद न करो बखान ५७ पांचतत्त्व करि सूक्ष्मन यह शरीर रचि दीन ॥ तासेंआमनविश्वको वासक्षमानिधि कीन५८ तू उपज्यो सर्वांग मन पंच तत्त्व को जानु ॥ आन पंच अरु बीस गति सोपि करो निरमानु५९ अस्थि मांस त्वक रोम अरु नाडी प्रकृति ये पांच ॥ धरा तत्त्वके योग तें तन उपजी यह सांच ६० रेत पित्त अरु स्वेद पुनि रुधिर लार शर भाव ॥ नीरतत्त्व करि प्रगटभे जानत ज्ञान स्वभाव६१ क्षुधा तृषा सुख क्रान्ति पुनि आलस निद्रा जोय ॥ मंगल अध्यातम वदत सिखि तें प्रगटी सोय ६२ धावनि कूदनि चलनि पुनि जानु पसार सकोच ॥ सतमारग ज्ञाता वदत पवन तत्त्वको सोच ६३ शीश कण्ठ उर उदर कटि ये नभ जात विचारि॥पंचविंश येप्रकृतिहैंकह मंगल निरधारि६४ ये सिगरी एकत्र करि मनहिं बुद्धि सँग डारु ॥ मंगल जग सामर्थ्य तू वृथा जन्म यह हारु ६५ जाके नयनन में लगे शीतल नयनके बान ॥ ताहि न भावत मीत,तजि कहत ज्ञान विज्ञान ६६ मन में ध्यावत इष्ट प्रिय तनते विनवत ताहि ॥ सत्य प्रीतिकी रीतियह कहतनीति अवगाहि ६७ सत मत सों ध्यावै हरिहि परिहरि कपट समाज ॥ मंगल मत सिद्धान्तके लहै सम्पद को राज ६८ वसत सदा वैकुण्ठमें नारायण पद ध्यानि ॥ दोष शोक ते रहित सुख, तजत गुणागुण खानि ६९ अपर भावना त्यागि मन अणु

श्रीराम कृपाल ॥ जीवत सुखपावै घने अन्तमिटै जंजाल ७०
जाने बिनु हरि नाम सत कत अर्थी फल कौन ॥ संगम
अन्ध न कूप लखु रहत संग नित जौन ७१ बावर मतिको
होसि कहि सुनु प्रवीन मति बोरि ॥ अपकी फूटी होहि
नहिं जग अंजन कर कोरि ७२ यथा मोतियाबिन्द जग
नयन अछत न लखात ॥ तिमि घेरे माया मनहिं कहांब्रह्म
दरसात ७३ माया बिन परमातमहिं जानि सकत नहिं
कोइ ॥ ज्यों बिन आतप धूपमहिं ज्यों दरशै नव कोइ ७४
माया नाशत जगतजग रहत न खानि अपार ॥ पांचतोनि
बिन जीवको ब्रह्महिं जानन हार ७५ मोह पाट बुधि चप
दये जोव भ्रमत चहुंखानि ॥ यथा वृषभ कोल्हूचलत पूरब
मग नहिं जानि ७६ कूकुर को शतबार जो हरिआवै अप
दानि ॥ तदपि न त्यागै द्वार त्यहि देखु चित्त अनुमानि ७७
नारायण त्यहिं पालियो आदि अन्त लगि जानु ॥ तूनहिं
सेवत द्वार त्यहि यहि तें उत्तम श्वान ७८ कूकुर नरतें पूतहै
जोन भजै भगवान ॥ जन्मो सूप प्रतापसों ता कुगन्धि दश
जान ७९ नाणी जानी वेदको प्राणी नर तन पाय ॥ तदपि
कुकर्महिं नित चहत ज्यों कहिये समुभाय ८० ज्ञान बता-
वत आनको आपु विषयमें लीन ॥ दीपक कर सूझत नहीं
पावत बाट प्रवीन ८१ तीनि काल तजि दुचितई मन धरि
ले मम ध्यान ॥ आन कर्म सों काज नहिं यह अति
उत्तम ज्ञान ८२ बालक से अति अन्न है मसले रेत
महान ॥ एकबात से हो बडे त्यों सुजान अज्ञान ८३
नीम कीटतरु इक्षुकटु भाषत प्रकृति प्रताप ॥ तिमि पापी
शुभ कर्मको कहत कुटिल सहदाप ८४ नारि बिन नर गुण
बिन चतुर साधु बिना संतोष ॥ ज्ञानी बिनु आतम भजन
जनु दीतोकपकोप ८५ जोन बिचारत सुकृत अवलीन आर्त-
मा नित्त ॥ परमातम कोकर्म निज अर्पत नेम निमित्त ८६
मानी मानन परि हरत ज्ञानी ज्ञानन त्याग ॥ दुर्यो-
धन सुत धर्मसो नीके लखौ विभाग ८७ नील बरणधोने—

कैसेहु नहिं विधि कोटि ॥ तथा प्रकृति यह जीवकी गई छोटि मतिमोटि ८८ यथास्वेत मणि रंगबिनु सोहत रंग-हि पाय ॥ तथा जीवकी है दशा सोहत संग प्रभाय ८९ भाषित नृप भूपण नहीं दीननरन संसार ॥ तिमिअज्ञानी के हृदय ज्ञानन शोभा कार ९० व्यापि रहा भरि पूर है चौदह लोकन आपु ॥ मंगल मन चेतत नहीं महिदिपि प्र-गट प्रतापु ९१ डर जानत जग नरन को न नहिं जीवन हानि ॥ अभय हूँढ़ते भजन बिनु कारत मूलकी हानि ९२ वादि गमावत आपु निज चिंता विषय शरीर ॥ कै आत-म भज मोह तोण कै भक्ति ले यदुबीर ९३ सगुण सुलभ निर्गुण सुगम सत्य प्रीति ते जान ॥ दुविधा में दूनो कठिन यह मन ज्ञान प्रमान ९४ मैं आपनि दिश वीस विधि समुझायो मनज्ञान ॥ तुम्हो च्यों फिरि मायमग अति मूरख अज्ञान ९५ जो तुमम कहनी करे तजिदे आन विचार ॥ भजिले निजआतम सदा सोहं पदहि पुकार ९६ ओंकार लव लायकरि प्राणायाम सनेम ॥ क्यों भरमै भव की गली छाय रहै पुर प्रेम ९७ पूरक कुंभक रेचके नित जिन साधत तात ॥ अजपा जप निशदिन गुणै मुक्ति द्वार विख्यात ९८ योगी सन्यासी गुणी मुनि सुजान हतएह ॥ जीवत पावत मोद भल हरि पुर त्यागत देह ९९ अनहद ध्वनि बाजा बजत गगन गुफा में हेर ॥ मंगल जाके सुनत ही मिटै जन्मकोफेर १०० ॥

पद छोड़पर्म गति तोर २ कास्यप अदिति सुगभमको तप कीन्हो प्रभुजानि ॥ बरमांग्यो तपसिद्धि भे होहुपुत्र मम थानि ३ निज निबंध ते देत धनुमुनि सुर विनय समाज ॥

जन्मेउ मथुरा में स्ववश प्रभु तापद पैकाज ४ जासु कृपा
बंधन छुट्यो सब पहरि गे सोय ॥ तू मंगलता कमल पद भजु
सब दुविधा खोय ५ यमुना थाह पयाव भो हुंकृ सुनत
तत्काल ॥ गयेपार वसुदेव लै नंदालय उत्ताल ६ जानभेद
नर नारि नहिं प्रभुमाया वश तात ॥ मंगल विनु ध्याये
हरिहि यमपुर गइँपछितात ७ जन्मकालते अल्पदिन बीत
पूतना नाशि ॥ जानि श्वसत मंगल कहा ता यश रहा
प्रकाशि ८ शकटासुर कागासुरहि वध्यो जानि खल आपु ॥
मंगल भजि श्रीकृष्ण पद मेटु तीनि विधि ताप ९ दधि
माखन भक्षण कियो कौतुक निधि परधाम ॥ तासु चरण
ध्यावत मिटत जरा जन्म परिणाम १० यमलार्जुन मोचन
कियो नारद श्राप विचारि ॥ मंगल ध्यावत तासुपद जात
यमपुरहि हारि ११ नंदग्राम बसि अघासुर वध्यो बकादि
कराल ॥ निज दासन हित विहित भव मंगल भजु नँद-
लाल १२ गोवरधन पूजन कियो सुरपति मान निहान ॥
कौतुक निधि राधारमण अति उतलताध्यान १३ काली
मद मर्दन कर्यौ रमणक द्वीप पठाव ॥ मंगल कऊता चरण
भजि कहिन जांच पदपात्र १४ रासकियो नारिन सहित
अकथ कृपानिधि श्याम ॥ रसिक नाथके भजनते मुक्तिलहै
परिणाम १५ केशी व्योमादिक वधेनिज जनके दुखदानि ॥
साभु सहाचरि पदभजे मंगल भूलें हानि १६ मधुरागे अक्रूर
सँगरजक दुष्टवधकीन्ह ॥ मंगल हरि अतिसरल गतिनीचहि
निज पुर दीन्ह १७ कूली कुबरी नेह करि चंदन अरप्यौ
आनि ॥ कीन्हो शुद्ध स्वरूपप्रभु प्रीतिसत्य पहिंचानि १८
धनुभंज्यौ गजबल मर्द्यौ मार्यो प्रबल चणूर ॥ परमातलखी
श्याममूशासुअंश शशिमूर १९ कंस दुष्ट दुखदानि जगमध्यौ
सकर कृपाल ॥ मंगल मोहनदासहितुपरिपूरणचैकाल २०
सत्रह बार जरानिधिहि कीन्ह पराजय श्याम ॥ भार
उतार्यो भूमि को यश पूर्यो चैधाम २१ कालयवन को
मार्यो सोवत भूप जगाय ॥ मुक्ति दई मुचकुंदको भजहि

न त्यहि चितलाय २२ मथुरा तजि द्वारावती बसि कीन्हे
बहु ख्याल ॥ सो भरखत पांथीबढैभजुलन मदनगोपाल २३
निसि विधवा करि कुशल पुनि गर्भ रहे पछिताय ॥ तिमि
संगत तू विषय रत अंत तोहिं दुखदाय २४ नाम प्रकाश
तजि श्याम अनु काम कला विनु सत्य ॥ मुक्ति होइ संग
नही नाशै जगत विपत्य २५ राधा वरको भजनसम मान
नर चंडाल ॥ ते पछितैहैं समन पुर यथा नीचशिशुपाल २६
निष्ठा शुद्ध लगाय करि मन विशिष्ठ करि ध्याउ ॥ संगर
हरि पद प्रीति सों अंत मुक्ति पद पाउ २७ श्याम श्याम
हरि राम कछु भाय कुभाय विहाय ॥ कोटियज्ञ फलको
लहै संगण कहत बुझाय २८ श्री हरि नाम प्रतापते मिटत
पाप की खानि ॥ यथा काष्ठ दव व्यूह की रंचक सिखि
करत हानि २९ आनआश तजि प्रीतमन आतम श्यामहि
ध्याउ ॥ ज्यों यहि झूठे स्वांग में आयु अमोल गमाउ ३०
कोटि जन्म जप तप किये छल प्रपंच युत दंभ ॥ सिद्धि लहै
नहिं सोच की बारु भीति करत थंभ ३१ मानि प्रतीति स-
प्रीति मन वासुदेव गुण गाउ ॥ प्रीति विवश हरि सर्वदा
भगत विबुध कमिराउ ३२ दुख सुख काल अकाल में नेह
एक रस राखु ॥ भक्ति विवश श्री श्याम जू ता दाया भव
नासु ३३ कपट छुरी कर में लिये छेदत अर्जनिज्ञान ॥ संगल
जपर साधुवत क्यों पावै कल्यान ३४, प्रात समय निर्व्याण
मनव्याउ रमाकोकांत ॥ जीवतसुखसंपति अमित लहै मोक्ष
पद अंत ३५ चनव आलसरु खोजि अरु रीझि भजै घन-
श्याम ॥ संगल अ।पक मुक्तिको जापक संयुत नाम ३६ आन
ओर हेरै नही तजि निज मीत सुजान ॥ जिमि चकोर
शशिको जपत मो पावन गुणगान ३७ रटै निरंतर श्याम
पट ध्यान सनेहुर राखि ॥ मुक्ति मुक्ति दोनौ लहै देत उप-
निषद साखि ३८ काल सुचक्र कुलाल को घट सम जीव
अपार ॥ भरमावत विधि कोटि पुनि उपजावत संसार ३९
जा नरकी सेवा करत वेतन सो दे देत ॥ नारायण पदध्यान

सों कोय अथिर किन लेत ४० जिमि पषाण की थान चढ़ि पार सरित को जाय॥ तिमि नर की सेवा निफल मंगल कहत बुझाय ४१ जोन सम्हारत आपुकहँ भारसों थांभ कि आन॥ मंगल वारणी नर्क की तू हात आनहिं ग्यान ४२ प्रथम आपुको सिद्ध करु तब औरन शिखदेह॥ जगत बड़ाई सुनिद्रा नहिं हरि पद भजि लेह ४३ कालकूट कारणी अमृत क्यों करिहै अज्ञान॥ तिमि पापीकिमि सुक्रत को निज उर लावै ध्यान ४४ तेल सनेही तिलन को तेली पेरि निकार॥ देखु मित्रता कठिन प्रण जीवत संगन हार ४५ लाली नेही सिहदि दल काढ़इ परी न देखि॥ बांटि निकारी कोटि विधि तदपि परी नहिं पेखि ४६ मित्रमृतक के संगही नर तन लीन्हो लेखि॥ मित्र द्रोह उर धारि ल्यहि तनमें गई प्रवेसि ४७ प्रीति यथा शशि सिंधुकी पूरण लखि उमड़ात॥ मंगल ऐसी प्रीति दृढ़ कार क्यों मन पछितात ४८ जानि श्याम पद नहिं भजत वृथा दादुरी वाद॥ मंगल यमपुर विविधि बिधि जीवहि होइ विषाद ४९ कहा सुदामा ने कियो मायो हाटक धाम॥ प्रीति प्रताप विदित भव हरि प्रभु ननवस्तुनाम ५० अर्जुन कोसारथ कियो।को सारथ यदुनाथ॥ प्रीति इष्ट वैवाख प्रभु यहै ज्ञान की गाथ ५१ द्रुपदीको कतिव करयो वाको बसन अनंत॥ मंगल महिमा प्रीति की जानत कोविद संत ५२ को पौरुष किय भारही गिरयो घंट हहराय॥ बचे तनय दल अमित ते सत्य प्रीति के भाय ५३ दंभीपापी अपकती अज्ञानी चंडाल॥ नाम लेत बिन भाव दृढ़ नहिं रीझत गोपाल ५४ को पांडव के वस रहै तज निकेत कु-ठाम॥ प्रीति विवशभ्यरेसकलसिधिभपि गेघनश्याम ५५ विकल रुक्मिणी ब्याह दिन लै भाये जग जान॥ प्रीति सत्य अनुमानि हरि खल दल बधि मन मान ५६ बाणा-सुरको मान मथि लीन्हो अनिरुध ब्याहि॥ मान हरत संसार को तू मन मानहिं काहि ५७ दुर्योधन आज्ञा तजी

दीन्हो वंश नशाय ॥ सूकर हरि आयसु तजत पूजत प्रेत नशाय ५८ श्वास श्वास पुनि श्याम काहू राम राम काहू रास ॥ भटकत क्यों भ्रमसे फिरत बिन मांगे नहु दाम ५९ पेट खलावे जग फिरत मति हीनो नहिं बूझ ॥ राधा वल्लभ भजन सों मिटै विपति म्वहिं सूझ ६० काल कर्म कोनाश करदाता जन आनंद ॥ कोइ सर मत धर्मके त्यागि भजत यदुचंद,६१ कोटि आपदा नाम सुनि मंगल जात पराय ॥ यथा केहरी नाम सुनि गजवर व्यूह लुकाय ६२ सहस भांति के विघ्न अघ हरि यश सुनि नशि जात ॥ जिमि दिन मणिके उदयते नभद्युतिमान छपात ६३ श्याम शब्द सुनिकंपि उठै मृत्युकाल यमदूत ॥ पुंडरीक मुनि करि विपुल जिमि शंकत जिपुदूत ६४ श्रीराधा वरनाम कोजपत जो हित चितलाय ॥ शिव आदिक सुरगण वदतता नर कोसुरपाय ६५ अमर सराहत मनुज वपु श्याम भक्ति दृढ ज्ञान ॥ मंगल तू नर तनलह्यो भजु हरि धरि शुभ ध्यान ६६ उडत श्याम कहतहि अमित दोष कुकर्म सशंक ॥ शब्द भुसुंडी सुनि यथा भाजत काकभशंक ६७ गेह तजत पापड भ्रम श्याम शब्द सुनि तात ॥ चंड पवन टण उडत जिमि निज घर पुनिन लखात ६८ वारवार शिक्षा करत ज्ञानी ध्यानी साधु ॥ अपर मूल तजि सर्वथा श्रीहरि पद आराधु ६९ बढत सकल आनंद सुख भजत श्याम भव माहिं ॥ जिमि राका शशि सिंधु लखि छतप्रवाह भ्रम नाहिं ७० संपति तरुजल भक्तिजग नारायणकी प्रीत ॥ शाखा बाढत नित्त नित भजु हरि सदा अभीत ७१ सकल सिद्धि ताढिग बसै जोध्यावै नंदलाल ॥ जिमि सब पावसकालको मिलत सिंधु कोजाल ७२ आदर बडपद मानता चेरी ह्वै जात ॥ कुकुरज्यों निज स्वामिसँग जो ध्यावै यदुजात ७३ सबके उरमें प्रीति तेहि यशत जो ध्यावत श्याम ॥ पूपण कैसे शरद यठ सब चाहत निजधाम ७४ बालक की बानी यथा मीठी कहवति लागि ॥ श्याम भक्त कीशारता सुनत

विबुध अनुरागि ७५ जापै आनैतौ कह्यो जो अंगक गुन
मान॥ जानि दुष्ट पुनिमीत ममजाह न तेहि अस्थान ७६
मेरो भाई होतनहिं नत त्यागत मन मोह॥ श्याम श्याम
श्यामाकहत त्यागि अखिल छलछोह ७७ कोतजिश्यामो
श्याम पद पूजै भूतन जाय॥ नर्क बासको भ्रम हृदय अंतक
पुरपछिताय ७८ मेरे मतश्रीश्यामपद पारसकै पितु आहि॥
अंत आपु समही करत बदत बेद भ्रम नाहि ७९ हाक
सुनत हनुमानकी कम्पत ज्यों खलजाल॥ राधा मोहन
नामसुनि तिमिकप पापकराल ८० बामावाम बिचारियै
धामाधाम सराहि॥ नामानाम प्रबीण कोयह शोचिय
जिय माँहि ८१ पाठक मूरख मौनको कष्टानंद समान॥
काठ वृच्छ कोभेदहै जानत पर्म सुजान ८२ ज्ञाताज्ञाता
जानियै दातादातासोइ॥ स्वामिक मत क्योंबूझियै परि-
पूरण हरि होइ ८३ प्रभुआज्ञा शिर मानिकै अर्जुन संड्यो
युद्ध॥ नृपपाई आनंद भयो सुन्यौ सुमारग शुद्ध ८४
आनओरते भूल तजि शत्रुसंग देत्यागि॥ मित्र घातमात्रा-
पनी ताहीसों रङ्क लागि ८५ बिष्णु लोकमें अंतभो जन्मत
श्रीयदुराय॥ परिपूरण अवतार शुचि बद्यो व्यास मुनि
राय ८६ सगुण रूप सुंदर वपुष सुख दायक तिहुंकाल॥
श्याम कृपानिधि दासहित नाशक जगजंजाल ८७ मारू
मारू लावत भगत दल बिबेक बिनु बान॥ धर्मश्याम को
नाम कहकाम प्रबलता भान ८८ गज बाहन रथद्रव्य गृह
संपति लखि मन भूल॥ ध्यावत नहिंयदुनाथ पद अंत शमन
कर शूल ८९ मात पिता त्रियबंधु सुतसखासुसेनक कोटि॥
अन्त संग नहिं देहहू समुझत नहिं बुधि छोटि ९०
नीच न त्यागत नीचता कोटि भांति सिख दीन्ह॥ यथा
न कटुता नीम तजि चंदन कोसँगकीन्ह ९१ जाकी ग्रहति
प्रदीप मयमोन चहत हरिज्ञान॥ जिमि उलूक भासत
विकल उदय होतही भान ९२ मनप्रबोध आवतनहीं बिनु
जाने गुण श्याम॥ मंगल सांची मनकही व्याउ ग्राम

राम ९३ कौडीकी दानी नहीं निंदत बलि कारयाहि॥ मंगल तू सुनि सीख मम भजु हरि निज चित चाहि ९४ जयजय ध्वनि चहुंओरहै सतमारग कोसीत॥ ताहि त्यागि क्यों दुष्ट मनतू भरमत विपरीत ९५ पारावारन वारि दिशि आतम अकल प्रकाश॥ प्रफुलित मनभा ताहिलखि पाया शुद्ध विलाश ९६ दिवस निशा कछु है नहीं नहिं अकाशकेबीच॥ आदिअंतथकाराशि मयकोभ्रम रहा नगीच ९७ अवतौ पूरण मति भई पूरण पदको जानि॥ क्यों भूलै मंगल चतुर कारणो तरणो सानि ९८ कोटि जन्मको फल मिल्यौ राधावल्लभ नेह॥ अब न चाह कोउ मन रही मुक्तिकहूं तजिदेह ९९ मुक्ति पदारथ कारलगै मुक्ति ध्यान निर्व्याज॥ मंगल की शिक्षा सुधा सुनि भजु मनहठराज १००॥

इतिश्रीमत्सकलजनअज्ञानहर्तायाम् गमुबुद्धिकर्तायामंगल विनोदभाषायामंगलदासविरचितायां सगुणब्रह्मनिर्वाण वर्णनोनामनवमश्शतकः॥ ९॥

दो०॥ सब सिद्धिमय सिद्धि यह मंगल दीख बिचारि॥ भगवद्भजन विहीन मन अमित जन्मको हारि १ सब धर्मन को धर्म यह अखिल तत्त्वको सार॥ आराधन भगवद्भजन दया सहित व्योहार २ मदिरा पान अजान ज्यों त्यों कुलीन धनवान॥ मद्य मूढ़ चेतत नहीं करत न भगवत ध्यान ३ ओंकाराक्षर रूप है विरचे त्रिपुर स्वअंग॥ को कुलीन कुलहीन कहि थकारस वदत अभंग ४ जो विभूति चौदह भुवन सबतै परक्षर रूप॥ जापक नीच सो ब्रह्मपद ब्राह्मण भया स्वरूप ५ प्रणव मंत्रको पाठकृत नाशा लग सविवेक॥ पूरण प्राणायाम कृत जनु कृत यज्ञ अनेक ६ ध्यावत जाके मन तजत चंचलता सब भांति॥ सो पद प्रणव भये जगत वेदमात दिनराति ७ अजपाको कारण कठिन ग्रे हिनको दुख नित्त॥ पाठक जापक प्रणव के पावत सदा सुचित्त ८ जास अर्थ तै जानि हैं मर्म तत्त्व को भेद॥ श्रम दूषिकै आयुर्वे वदत वेद पिद वेद ९ चारि और हैं सिद्धि

मन जब लगि राम दयाल ॥ जिम विटि दिगभ्रम खग दक्षिन होत तत्काल १० मूल वहै शाखा सकल बीज ईश संसार॥ उपजावक नाशक वहै एक आपु करतार ११ तूही मंगल भील भट समर काल विकराल ॥ ज्ञान मान अज्ञान तू दूसर नहिं वैकाल १२ दया आपु हिंसा तुहै निराचार आचार ॥ ज्ञान श्रवण सुनि वाक्य मम लखु आपन व्यवहार १३ धर्माधर्म तुही चतुर मूरख पण्डित मूढ़ ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य तू शूद्र तरुण सुत बूढ़ १४ गज वाहनको भेद है जन्म शरीर प्रसाद ॥ तूही पूरण एक है नहिं द्वितीय मर्य्याद १५ जीव ईश तूही अहै माया छाया तूल. ॥ अपनावत भागी फिरत ज्यों सरिता के कूल १६ माया ब्रह्म अहंब्रह्म ही एक न आन प्रकार ॥ जल बीची छाया विटप भूषण स्वर्ण विचार १७ मायाशक्ति सुहावनी कीन्हें जीव बनाय ॥ बहुरि आपने पंथ करि ब्रह्महिं दियो लखाय १८ माया के नाशे चतुर बाधा कधी नहिं जाय ॥ छाया जस मध्याह्न की इत उत नहिं दरशाय १९ जब मायाको अन्त है तब दुबिधाको जान ॥ छाया नाशत वृक्ष की को धौं चतुर प्रमान २० ब्रह्मज्ञान गुड़ जानिये सेवक गुंगसमान ॥ कहिनसकततास्वादको त्यौंवर्णन निर्बान २१ ज्यों रहटामें शब्द है पै नाहीं लखजात॥ जीवभाव भासत हृदय कहत बनत नहिं बात २२ कारण सूक्ष्म थूल त्रै बपुधारी प्रभु सोइ ॥ जानत अध्यातम चतुर त्रैपद लेत विलोइ २३ तीनिबपुष ज्यों ईशके सोहत है विज्ञान ॥ तिमि चैतन या जीवके शततम भेद सुजान २४ ईश सतोगुण पूर है जीव तमोगुण लीन ॥ उतपति लाया कर्म में समता यहै प्रबीन २५ ब्रह्मजीव एकै दुवौ नयन दृष्टि नहिं दोय ॥ दृष्टि होत है नेत्र ते ता बिन लखत न कोय २६ शूर देव भाषित जगत अन्ध निरन्ध प्रमाण ॥ व्यापक अव्यय अज प्रभू ईश जीव है यान २७ जीव अहै परमातमा जानत वेद विचार॥ बुन्द सिन्धु में भ्रम कहा जग एकै निरधार २८ खोजत

ऐसी वस्तुको दीपक तमहिं प्रकाशि ॥ जोपै दृष्टिहि जोइ
नहिं को रवि दीपक राशि २८ आवा वन भटकत फिरत
अन्ध स्वयचिन ज्ञान ॥ जोपै चीन्हे आपुपद फिरि न भ्रमै
बुधिवान ३० प्रीति एकरस खास सखि राखै ज्ञानीकोय।
तत्व दरस पावैलखौ नवलनील पुनिहोइ ३१ भेद न जानौ
आपनो सुनखु कहै न जाय ॥ जानो चाहत ईश्वरहि अन्ध
दृष्टि अभिलाष ३२ पूजत आपन देवता सुधि आई जग
काज ॥ विकल सीच पूजनकारत कहरीझै सुरराज ३३ जब
लगि पूजन करि सकौ तब लगि पावनतीर ॥ त्यप्र लालसा
उरलगी पूजन दृथा अधीर ३४ तुलसी तनमाला गले बांधि
शालिग्राम ॥ कपटहृदय पर तिय रखत भक्त कहावत
नाम ३५ नीचप यज्ञलिखापुको कहतकुलीनसनेम ॥ मंगल
त चुप साधु किन कारि घर हरिपद नेम ३६ जिनहिं नहीं
अधिकार है यज्ञसूत्र धर कान्ध ॥ मंगल मग सद्यदि को
ग्रन्थावेलुप्रबन्ध ३७ चन्दन तिलक हियेफिरतकोलभील
कलवार ॥ तेली धोबी जीनहा पहिनैं बघहार ३८ गेरु
धर्मसहँवोग्रिवेत्यागिधर्म छलत्यागि ॥ कुलवारणी छोडत
चतुर चलत भगाई भागि ३९ बुधि वादुजो भातमा तौ
नात्मण हैगाय ॥ पुनि नहिं पूछै जातिको संत समाव सो-
हाय ४० मह्म ज्ञानको प्रासभै नीचन जंच लखाय ॥ समता
को उरवास शुचि सन जानित अपराह ४१ दंभ कपटयुत
गेह रत तदपि धार कुलकानि ॥ जन विवेक समता लिये
तब न रहौं कुलकानि ४२ व्यास देदृचयि हितहीं कीन्हें द-
रस विभाग ॥ संत वरण दृसर रखा परमहंस अनुराग ४३
विद्या चोदृच ग्यानिके रतसो निचय विलास ॥ ताते मंगल
ही भलो जोग धर्म नग पास ४४ ज्ञानि धौहरी परिहरै
हीरा कानन बीच ॥ ताहिं नहिंच लखको वणिक परजन
तासु नगीच ४५ जैसपूत जाने जगत गहे वेद मर्याद ॥ जै
घाटत कत तुरिगन से मूलचतंग विपाद ४६ कागकांचको
पालियो सुंदर भोजन भुजाय ॥ तदपि लालसा मांसकी

तिमि नरनीचं सदाय ४७ शिक्षा कीन्ही ज्ञानकी दिक्षा प्रणव सुध्यान ॥ तदपि नीच निज बरण सम मोन ऊंच पद मान ४८ अहंकार धोरे करत नंगलनर कुलहीन ॥ आवैट के नारे यथा बाट न देतप्रवीन ४९ ज्ञानवान लहि ब्रह्ममत आपुहि देत दुराय ॥ चलत चालि पूरब सरस ज्यों समुद्र को भाय ५० आवन आपन सगबदत शिष्य समाज अपार ॥ तै चाहत निज मान्यता सोनहिं हरि दरबार ५१ ब्रह्म धामको ऊंसलख भजना भजन प्रधान ॥ करखीही कुलवान है कारणीवत प्रस्थान ५२ या पुरमें ब्राह्मण बनै चवी पाये राज ॥ भजिउन परख ब्रह्मपद धापुर नीच समाज ५३ पढ़ि लिखी पंडित भये लिखि पोथी बहुजोरि ॥ रामजन बिनु नीचजन कहां सुहि दे तोरि ५४ अवत बेरी सालि शिपं लखुतनैन पसारि॥ पूरण जोति प्रकाश के नाथ जरथ दिशि चारि ५५ जानिन मानत नीच मन बिपद वासना ध्यान ॥ आतम को नित ध्याउजपि सोऽहंसः प्राण ५६ ज्यों अहिं जागत चरण निज लखत न कोऊ नैन ॥ त्यों जानत यह आतमा आतम भाव सचैन ५७ बिपुल विहंग बनमें बसत डरत श्येनको देखि ॥ तिमिलखि महाज्ञान को इंद्री व्यूह विशेषि ५८ ब्रह्मवेत्ता चतुर सो जो रत महाज्ञान ॥ यो जानत ता बिन हरिहि जिमि रबि बिन न निशान ५९ काल व्याल के मुख परो जीव भेकके तूल ॥ विषय भोग सार्जी चहत यह पापी बडि भूल ६० इन्द्रिक सुत ज्यों मातनिश भखि उदर बहिराति ॥ तथा जीवबधि वासना ग्रह लीन हैजाति ६१ करीयथा लखि सिंहको तजत जीयकी आश॥ तिमि देखतही ज्ञानकेसोह हृदय सर्वनाश६२ तीनिभांति की कामना सब देहिन के गात ॥ दुविधि लागि यह पंथ जगु यहै ज्ञानकी बात ६३ गायत्रो ज्यों छंदमें सुर बधि यथा महेश ॥ सर्वज्ञान मे आतमा शोधव तथा विशेश ६४ ज्यों भारत पौरान में गंगनदिन के माहिं ॥ महाज्ञान सब पंथमें त्यों शिरताज सदाहिं ६५ [illegible] पात सीमत फिरत

मूग न डारत नीर ॥ डार मातयक बारही प्रफुलित होहि शरीर ६६ सुक्षत पाप दोनौ तजै सो ज्ञानी परमान ॥ बिननाशै सुरपुर नरक लहैन पदनिर्वान ६७ अपनी प्रीति प्रतीति कम सावमित्र के सांचु ॥ ध्याउ शुद्धमति आतमहिं आन रंग जनि रांचु ६८ ऐसी प्रीति सराहिये ज्यो पय पानीकेरि ॥ मिलतएकही होतही दुवरण परतन हेरि ६९ शब्द होत आकाश में ब्रह्म वाक्य शुभकारि ॥ ज्ञान श्रवण मंगल सुनत जात दोष सबहारि ७० बीते बाजा जगत के बजत एक सुरसंग ॥ सुनत बनत बरणत नही अद्भुत शुभग प्रसंग ७१ इह होत सब बस्तुकी अनहद सोन नशात ॥ मंगल यह जाने बिना यमपुर नर पछितात ७२ मारग के सरिता सरन रूप छत सेत सुकाल ॥ तिमि ज्ञानी शिक्षा चदत अपर हेत निजठाल ७३ उदय अस्त नहिं ज्योतिको आदिमध्य अवसान ॥ देखत ज्ञानी नैनबुधि दशदिशि एक समान ७४ मंगल अबकी कपटतजि करुहरि ध्यान सचेत॥ मुक्ति लहै नत जन्म बहु उपजिहि कायाखेत ७५ घेचदेह यह जानियै आतन सो चेचह ॥ द्वितियन बूझत मूढमति को अबूझ को अह ७६ हरि मायामें जीव को नाधिकार कछु आहि ॥ जिमिन भूपकी काममें कछु अधिकार प्रजाहि ७७ बलभिन उद्यमहोतनहिंपूछतकोउन बात ॥ इहापनकी यहदशा मंगलग्न पछितात ७८ सत्यसिंधु अव्यक्त अजअव्ययअकलअमान ॥ ज्योतिनिरीह निरंजनहिंकसन करतमन ध्यान ७९ समुद बढत राका तिथिहिसोन बढत बहुकाल ॥ घटतनकौनेभातिप्रभु दाससुखदगोपाल ८० अबकी निबहै एकरस मम प्रण कौनिय सोइ ॥ बारंबार न भव भवर मम भरमब प्रभुहोइ ८१ परमहंस मंडल जुरे बहुज्ञानी बहुखानि ॥ मै मंगल पूंछत भयो पूरणपद अनुमानि ८२ समुझायो नव भजनवदि नवम गह्यो मनमोर॥ अबतौ आशा सबतजी है भरोस प्रभुतोर ८३ जिमि चढि यान पपील को सूझत आनन थान् ॥ तिमितुव शरणागत

परो संगल जय भगवान ८४ सोहत कुलटा काम नहिं प-
तिव्रता को जैस ॥ जगमंगल को ग्रास तजि सनकोउ दी-
सत तैस ८५ जय मायापति श्यामकी जयजय पालन हार॥
दुख हरियै जनजानि प्रभु जयजय जग कर्तार ८६ जय सत
वादी पापहा जय सुखदायक दास ॥ जयअनीह अजकाल
बिनु देखहिं निज बलवास ८७ जय निरगुण जय सगुण
की जय अज हर हरि रूप ॥ जय विश्वंभर बिश्व वपु जय
जन पाल अनूप ८८ जय अरूप जय रूपधर जय अनेक-जय
एक॥ जय नरतिय जय पशु बिहँग जयजय प्रभु सबिवेक ८९
जय अनाथपति नाथप्रभु जय प्रबीण त्रैकाल ॥ जय गायत्री
मंत्रशुचि जय वैश्यक जयवान ९० जय अहिमहि जय पवन
सिखि नभ जयजय अहंकार ॥ संगल के दुख शोकसब हरौ
स्वकर करतार ९१ जयअदेव जय देवपत जय सर्वाग बि-
राज ॥ थावर चरप्रभु एकतू जय जय जय द्विजराज ९२ गुरु
प्रताप निर्बाण पद बरणयो मंगलमूढ़ ॥ यथाबुद्धि बिनुबकात
कोउ तिमिर इव अगूढ़ ९३ धीरज धरि मनमें सदा जो
ध्यावे सर्वांग ॥ ताके कुशल चेमनित छोड़न प्रणको अंग ९४
साधारण कविता करी मत बिवरन निर्वान ॥ कवि पंडित
हरिजन चम्यौ खोरिजानि अज्ञान ॥ ९५ दासन को हौं
दासहौं अति पामी छलकारि ॥ मंगल मनको मूढ़ अति
कहौं सत्य निरधारि ९६ संत जानि निज सेवकरि दीजो
आशिर्वाद ॥ जीवत पावौं सौख्यरस अंतमुक्ति मरयाद ९७
मांगत मंगल जोरि कर नारायण सों दान ॥ भक्ति मुक्ति
आनन्द पद परिपूरण बिज्ञान ९८ दासजानि राधारमण
हरौ विपति को जाल ॥ मंगल को निज भक्तिदे कृपासिंधु
गोपाल ९९ उनइस सौ तेइस गये संवत पौष सुमास ॥
कृष्ण चतुर्दशि मनौ किय पूरण पुस्तक खास १००॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायासर्वांगसुबुद्धिकर्तायामंगलविनोदकाया
मंगलदासविरचितायांसगुणपदनिर्वाणशिक्षामार्गवर्णनोनाम
दशमश्शतकः ॥ १०॥

दो०॥

पाठक श्रोता ग्रंथ के गुण विज्ञान सुजान।
दोनोंदिशि आनँद लहैं मिटै भल परिमान॥१॥
रामराम पुनि रामकहि रामराम कहि राम।
संगल तीनोंकाल यह राखु ध्यान सुख धाम॥२॥

श्री गणेशायनमः ॥

सर्वसिद्धांत सप्तसतिका ॥
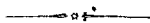
॥ षटपद ॥ एक दशन वरवसन सिंधु नाशन मन्मथ हर। मदन कदन सुत बदन नाग सेनापति सोदर ॥ इन्द्रजाल गुणपाल यूथनायक शुभकारी। सिद्धिधाम सुखग्राम सदा मंगल अधिकारी ॥ भणि है शाहुर हेरम्ब पुनि बन्दि विनायक कंज चरण। मंगल समोद तन मन वचन ध्यान कथा चाहत करण १ आसन कुवलय लसत भारती सुमति प्रचारिनि। हंस वाहिनी शुभग शारदा कुमति निवारिनि ॥ वाग्देवता सोय विधाता वाम विलासिनि। सरस्वती शुचि शक्ति वाणिकवि वाणि प्रकाशिनि ॥ पुनि बन्दि वाक शुचि वाक बुध ध्याय गिरा अघ हर चरण। मंगल समोद तन मन वचन ध्यान काय चाहत शरण २ ॥ कवित्त ॥ गातको विलोकि लहि जात नाक दास कीन्ह बाल रवि जोतिकौ छिटायो अभिमान है। सिन्दुर लुकान नारि भाल तिय त्याग जानि विद्रुम समुद्र सांझ अंबिका लजान है ॥ आकर कृपान लालजाकर प्रकाशदेखि कपिजियदयाल तु प्रसिद्ध खल भान है। मंगल भरोसे कविराजहीको हरि यश गावत सहायकार एक हनुमानहै ३ ॥ सवैया ॥ आदि अनादि कहै श्रुति सज्जन पूरणरूप अरूप प्रकाशा। धाम अधाम विराजत आपु स्वतंत्र अकथ्य अनीह अनासा ॥ चौदह लोक प्रकाशित जो बहुभांति गुणी अगुणी अभिरामा। मंगल दीनदयाल वहै कर जोरि करै पद कंज प्रणामा ४ दीन दयानिधि तू परमातम वेद पुराण कहै

काहुनामहिंकेवल नामबिनाकछुमूढ़नस्यानो।नामबिहाय भ्रमायदशौदिशि धामनधावत ज्ञानहिरानो। मंगलनाम बड़ोतिहुंलोकन नामलखावत आपबिरानो १२ब्रह्मप्रकारण नाम बतावत ज्योति निरीह जोरामहिं माया। ईश अनीश कहावत नामहिं आतम भूत सुरारि अमाया॥ शंकर शेषसुरेश गणेशहु है सबके तन नामसमाया। मंगल कारण सूक्षम थूलहु नामते तीनि प्रकार कहाया १३ सांचुबखानत निन्दक बाजत झूठबखान कियो नहिंगाई। तत्वमसी श्रुति सामबतावतको ततृत्वंअसि तीनिसभाई॥ संतमहन्त कवीशहु कोविद त्वंपद औतत ईशलखाई। मंगल ब्रह्म यदैं असितौ पुनि द्वैतरुचान अद्वैत गनाई १४ सांख्य विचार कह्यो मुनिआदि पचीसप्रकार विधानहिं गायो। कर्मप्रधानप्रमाण वद्यो भवजीवअपार घनादि घनायो॥ ईश्वर मय जगभासि रह्यो बिनुईश चराचर नाहिं लखायो। मंगल योग समाधि बिहाय कहांलखि कारण तारण पायो १५ आदि नहीं भवको अरु अंतन नाहिं बनावन हार बताइय। पुरुष औप्रकृतीहि सँयोग ते होत समस्त निरस्थिर गाइय॥ भूतलनाक पतालनिवासहि देत नहो यक कर्म प्रभाइय। मंगल कर्म अकारण होत नकारण ते किमि मुक्ति दृढ़ाइय १६ पूजतदेवनकारण पाइकै ध्यावत देवन कारण लागी। तीरथ धौवत कारण होन न पन्थ अपन्थ जुतापत आगी॥ देहरँगै नर कारण लागि चढ़ावत नीर सुकारण पागी। मंगल संस्कृत कारण देखत मोच न कारण को अनुरागी १७ कोउधनो सुखिया इतडोलत कोउ सदा विपदा अधिकारी। भूपति कोउ प्रधान पसूपति रंकअनाथ बनो पदधारी॥ पंडित कोउ विमूढ़कुलीन मलीन कहाव प्रवीन अनारी। मंगल मोह ग्रस्यो निज आतम जानत नाहिं सदा अविचारी १८ आतप शीतपन्यापत काहुको शीत सतावतहै दुखभारी॥ भीजत पावस में बिनुकारण ग्राम्य सुनावत लोग॥पुकारी

आनँदसों नितकाल वितावत एककहावतदीन भिखारी। मंगल मोह ग्रस्यो निजआतम जानत नाहिं महा अविचारी॥ १९ बांभनको यकचून बनावत एकमुये तनदेत जिवाई। एक करामत आप दिखावत भूत पुजावत देव विहाई॥ एक प्रबोध करावत ब्रह्मको आपनहीं मतिकी दुचिताई। मंगल संत समर्थ सदा जोकरैंसो सहीमन क्यों भ्रमखाई २० वस्तु अनादि सबैजन खोजत चित्तन सूझत आपु अनादी। शुद्धस्वरूप अनूप अकाय सोतोयक तूनहिं दूसर वादी॥ भूलमिटाय गहैं गरपायसों देय लखाय न छोहि विवादी। मंगल हैतमिटायनदूसर भाषतहैं सुनिहु सनकादी २१ तीरथ के वशमूरति केवश हैं मतके वश में अति भूखे। पूजनकेवश पाठनकेवश जापन के वशबोलत रूखे॥ ज्ञानहिंकेवश ध्यानहिंकेवश स्यानहिं के वश वेदहि दूखे। मंगल सम्पति के वशमें नित आतम के धनते अति खूखे २२ ऊरधबाहु करैतपएकखड़े मदएकरहै दिनराती। एकअवो मुखझूलन झूलत छीरपिये तजि अन्न अभाती॥ कांकर सेजरहैनित एक जुकाटत आयु विछावत पाती। मंगलआतमज्ञान बिनाअपने मनतेयह स्वांगदिखाती २३ चाम कुरंग बिछाय रहै यक झारि महीपग देत सदा है। प्रात उठैं निज देव लजाय चढ़ावत पावक ध्यान कदा है॥ मौन रहै यक सैन सुझावत औघड़ वास सुराश्रियदा है। मंगलजानतआतमानो नहिंतोयऊ सांचऊस्वांगवदाहै २४ जागत में जस चेतन चेतन सोवत में तस जागि रहा है। इन्द्रिनके विवहार अनेकनसों न लखे शुचि रूप महाहै॥ आपहिजानत आप बखानत दूसर कौ न विवेक लहाहै। मंगल जाने बिना भ्रम लागत जानत ज्ञान अज्ञान कहा है २५ [illegible]धनसु प्रभापसरीहै। [illegible] में अहि ज्यों रसरी [illegible] छोड़त सोन न पोट है। मंगल संत समाज बिना कोउ काटि सकै न गले

फसरी है २६ शक्ति पिपील के अंग बढ़े गज ते तन में भरि पुरि रही है। देव अदेवन में पुनि सोय मनुष्य पतंग की शक्ति यही है॥ नाग बनस्पति में फिरि देखिय पै दुविधा यक चित्त सही है। मंगल डावर ताल नदी यक नीर न रूप है भेद यही है २७ या तन में यक नित्य निरंजन सत्य अहै मुनिसंत बखानै। बोलत डोलत सोवत रोवत जेंवतऊ निज ध्यान प्रमानैं॥ बुद्धि नही जु बडो गुण खानि नहीं मन चंचलकी गति सानैं। मंगल आपुहि आपु विराजतहू दशहू दिशिमें क्रमठानै २८ कौन बतावत काहि बतावत कानलगाय सुनै पुनि कोरे। काहि चितावत कौनु भ्रमावत ज्ञान न आवत ज्ञान बटोरै॥ जो प्रभु आपु प्रकाशि रहा न द्वितीय कहावकि बेसन तोरै। मंगल कौन गही अपने घर जो अपने सबके घर सोरै २९ काम वशीभव भूत किते अरु केतन के मन क्रोध प्रजारै। लोभ लियेसन काहु को डोलत मोह कि रज्ज बँधो न सम्हारै॥मानप्रमान हिये वश काहु को कोउ सहामद को मतवारै। मंगल क्यों निबहै यह बुद्धि बिवेक विना नितहीदुख मारै ३० मंत्रन के वश तंत्रनके वश यन्त्रनके वश में यक फूले। भूतन के वश मूढ पिशाचन के वश में भ्रम पेलन भूले॥ पौरुष के वश पालन के वश लालन के वश बैठ अलूले। मंगल भांड सो स्वांगन के वश आतम आपन आपुहि भूले ३१ ग्रंथनके वश पन्थन के वश संथन के वश पाठक हूले। योगन के वश भोगनके वश रोगनके वशमें सह झूले॥ शोधनके वश शोधन के वश बोधन के वश ज्ञान असूले। मंगल पण्डित वेदन के वश आतम आपन आपुहि भूले ३२ बाहिरमें मन संत सों लागत अन्तर आन विचार बिचारै। ज्ञानकथै निशि बासर तुरुख काम कला कुमिके अनुसारै॥ बातबिबेक कि गावत है नित मोह भई मदिरा चित धारै। मंगल स्वांगनसों न सरै हरिकर्म कुकर्म समस्त निहारै ३३ क्योनभजै हरित्यागिविषयरसनीरसलौकिनतूबनिजावै। जन्मभ्रमो-

लगभावत क्योंसमुझायकहैसमुझो नवतावै॥ जानतहैपुनि मानतनाहिं सहा खलथौं अपनी मति भावै। मंगल ध्याउ मनोहरमूरतिअन्तरबाहिरजोश्रुतिगावै ३४ कानथथात नहीं सुनिनादतें नैन जुड़ातन रूप विलोकी। ज्योंरसना न थकैशुचिस्वादतें नाकसुवासतें नाहिं सशोकी॥औन त्वचा परसैसन थाकत अद्भुतशक्ति सुपावकुरोकी।मंगल पांचथके मनथाकत नातरु कौनुसकै गसुरोकी ३५ वोअसभूत भयो जगमें जिहिये मनमें न लगी विषयाशा। कामकि लोभकि क्रोधकि मोहकि द्रोहकि छोहकि मोद विनाशा॥ खानकि पानकि आवन जानकि स्वर्ग अवाणकि मुक्ति प्रकाशा।मंगल इन्द्रिय स्योमन जो लखुसो विषयी अटक्यो भ्रमपाशा ३६॥ दंडक॥ अलख कि बात समुझावै न गुनावै भ्रम दृयहि लखावै नाहि लखत न कोई है। अगम बतावै जो पलाय मान बुद्धि वदै दुविधा दुराशा वश सुमति विगोई है॥ अगुणा सुनावै जोगुणानिकरि भांतिभांतिदंभ छत बात कैसे सुधि बुधि होईहै। मंगल जो अकर बताय कहै कीन्हे लोक तौ तौ हैत भाववश आपु रहा सोईहै ३७॥ झूलना॥ माला गलेडारे फिरै रँग भालतन छाले धरै बैठे तहां बानी ररै जाने नही निजु घातको। आचारके बादी बडे प्रतिहारका धन को खड़े लै भागवत पोथी अड़े भाषैं सोहावन बातको॥ एकादशम अर्थावहीं विज्ञान योग लखावहीं औरोंको सो समुझावाहीं झूठे पिता हितु तातको। मंगल भुलाने लोभमें माया महामद छोभमें आकाश साधैं थोभमें काऊ मुक्तिको दरशात को ३८ उठि प्रात झाड़ै गेहको पुनि धोय बैठेदेहको पूजैं विद्योता नेहको दुविधाको हीसैवास है॥ पावैं मनोरथ नाहिनें धावैंजो बायें दाहिनें तीरथ शिवालय माहिनें पर ब्रह्मको न प्रकाश है। विद्या विधान बखानहीं विज्ञान मारग जानहीं दृढ़ता नहीं उर आनहीं पंडित मोहा अनयाशहैं। मंगल बिचारै योगको आशा लगीउर

भोगकोचाहै नहीं भवरोगको बंधन सहाश्रम मासहै ३९ गुणज्ञान को उर लेसना विज्ञान को उपदेशना बैराग को तन भेसना धारण किये सन्यास हैं। जानैननेती धोतिको अष्टांग साधन होतिको भाषैं निरंजन जोति को कारण लिये अभ्यास है॥ स्वासा न रोकी एक है योगी बनो अविवेकहै शब्दै अनाहत टेक है पंचकादिये जपन्यास है। मंगल न ध्यावै रामको पावै न सोभन कामको ठगता फिरै नर बाम को परिणाम यमकी त्रास है॥ ४० नवतत्व को उपचारना तिहुंलोक को विस्तारना करणी करम कर तारना सविता न तारा नाथ हो। अहंकार पूरुषप्रकृतिना सितकंठपूरण शक्तिना कछुयोग भगता भगतिना आनन्द दुबाहि साथ हो॥ मन बुद्धिकोनिरधारना अधिआतमा व्यवहारना बैकुंठ नर्क विचारना पूरणकला शुचि गाथ हो। मंगल कहां तबतू रहै अब सत्य क्योंनाहीं कहै सन्देह किन मेरोदहै भूपति कि नावत माथहो ४१ सवैया॥ जीव अनन्त रचे तिहुं लोक में एकसों दूसर नाहिँ बनोहै। एकसि बुद्धिन एकसि शुद्धिनएकसो ज्ञान नचित्तसनोहै॥ एकसो शब्दन एकसो तैनन एकसिशक्तिन भक्ति मनोहै। मंगल धन्यबनावनहार जहांतहँ एकहिरूप गनोहै ४२ एकस्वरूपतिहूं पुरडोलत रूपअनेक धरेबहु खानी। ज्योंबहुरूपिय रूपबनावत आनहिं आन प्रकार प्रमानी॥ आपनमे कछुभेदनलागत खाँगदिखाय प्रसन्नत प्रानी। मंगलत्यो प्रभु रूपकिये बहु एक प्रभा सब अंग समानी४३ ऊपर को सब खाँग विलोकत अंतर कौन कथा अनुमानै। साधुनहीं बकरूप प्रपंचित भूति निचोल रंगेतन आनै॥ एकन छाप विभूतिविमर्दित जानत पै मन में शुचिज्ञानैं। मंगल अंत द्विभाति बतावत साधन को गतिको पहिचानैं ४४ शीशजटा तनछार विमर्दित हस्त कमंडल सेनकुठामा। भालत्रिपुंड गलेबहुमाल भुजानदिये भलछाप सुपामा॥ चाम कुरंग बिछाय रहै नित ज्ञान

कथै सुकथा अभिरामा। मंगल जो निज भाव नहीं दृढ तौ यह साधु किधौं छल सामा ४५ ज्ञान जडाउ विराजत शीशहि भालविचार की सोहत रोरी। तोप निचोल रँगे दृढ़ता निधि धीरज के सँगप्रीति न थोरी॥ दीठि विवेक विलोकत मारग राग विहीन कि घूमत खोरी। मंगलआतम बोधगुरू असलाधु मही तलमुक्ति की घोरी४६ पैठऊ मैं न खरीदत तू मनकौनु अनेठ की बात चलावै। दामलिये कर कासन आवत बातन कै मनमोद बढ़ावै॥ जानिलियो पहिँचानि भलीविधि क्यों अबझूंठ हमैं भटकावै। मंगलज्ञान विवेक विचारसों आपुहुही कस आन बतावै ४७॥ कवित्त॥ काहूथल पंडित स्वरूप धारि वेद पढै काहूथल कवितन करत कविताई है। काहूथल साधु तन साधना अनेक करत काहूथल मौनी मनि बैठो मौन लाई है॥ काहूथल चातुरी सिखावै काहूं सीखै आप काहू थल विपुल करत निपुनाई है। काहूथल मंगल दुखित्तो काहूं एक चित्त ऐसो प्रभु अलख अलख प्रभुताई है ४८ सवैया॥ जोदुख औ सुख या भवजीवहि एक अदिष्टहि सोकहि दीजिय। ताबिनआनन होतमहीतल जो निर्वाण को मारग लीजिय॥ तौ दुखको सुख एक समानहिं मानि स्वआतम के रसभीजिय। मंगल ज्ञान गलीसकरी प्रविशै मति पूजन कोटिक कीजिय ४९ ऊसर में न उगै तृणकैसहू वारिद जो बरषै सुरपाना। ठूंठर हूं न पात विलोकिय कोटि उपाय न सौं गुणवाना॥ ब्रह्म विचार निरूपण ज्ञानकी त्यों करत जो निज सत्य समाना। मंगल जन्म जरापुनि ताहिन ग्रासत है यहसाधु सुजाना ५० जो यहजीव निराकृत नाहिन हैतन लिंगहिका अधिकारी। क्रांति नहीं गुविद्यातम देनकी हैप्रगटो कछुपिंड मिकारी॥ तौंहूं विचारत आतम ज्ञान सम्हारत आतम ध्यान धकारी। मंगलनकौन स्वर्गहि धावत जादू निवासत धाम मुरारी ५१ सूरजतै प्रगटै जिनि आतपाप्य प्रदोष मिलै

रविजाई। कोटि उपाय बिधान करै बिनुभानु न आतप देतदिखाई॥ त्यों सचराचर प्राण त्रिलोकिय ज्योतिअपूरब ब्रह्म लखाई। मंगल अंतमिलै निज नाथहि कौन अधोरध की गतिपाई ५२ तीनिङ्कालयुगान सुचारिङ्वेद पुराण कथा सरसाई।जेतिक जाहि समर्थ कर्णै तसदेव अदेवन की प्रभुताई॥ धर्म अधर्म क्रिया पुनि कर्म भैने सब भांतिन नेक दुराई। मंगल संत महातम भाषत बैठिरहे सबलाजि चुपाई ५३ संतकहे हरि मानुष भो अरु संतकहे लवणोद सुखानो। संतकहे पदमूल भयो अरु संतकहे नभगंग स-मानो॥ संतकहे ऋषि चीर परयो पुनि संतकहे विधि पूजन हानो। मंगल संतकहे नरके हरि पाहन ते प्रगटो जगजानो ५४ ज्यों रवि पाय दिवान्ध न देखत दीप प्रभा करकौंकि बिहायस। न्हातहि गंगधने मल छूटत होतन उज्ज्वल धोवत वायस॥ मूढ मनोगति होतनहींतिमिधर्म तुनेरत इंद्रिय आयस। मंगल को उपदेश मनोहर मूढन वेतत कोटि उपायस ५५ ब्रह्म सनातन वेद बखानत कोविद औ कविता सब गावैं। आदि अनादि अकारण कारण सत्य असत्यन सोउ लखावैं॥ बुद्धि समान प्रमान विधान करै निरधारि निगूढ़ गुनावैं। मंगल तू थिरता बिनु क्यों कहहै जु सँदिग्ध नहीं बिधि भावैं ५६ जोपै सुपूर्व स्वरूप कृपानिधि तौ सुर तेरह भांतिन चीन्हे। जोप्रभु मानुष आकृति गाइयतौ फिरिको मत धारण कीन्हे॥ क्यों पशु कीटकहौं मन मूरखहै खगमीन अकाशहि लीन्हे। मंगल भूत पिशाचन आसर दृष्टिपरै नहिं दृष्टिहि दीन्हे ५७ तत्व कहै मृतिका जल पावक वायु सनाकन है प्रभु सोई। जो गुणतौ सत राजस तामस पूरुष औ प्रकृती नहिं होई॥ वैसुरतौ बिधिविष्णु महेशन आयुविती ततकालक होई। मंगलशक्ति अशक्तिन भास्कर दृष्टिदिये नहिंसूझि परोई५८ दृश खजूरि लगे फल दूरि कियें बल भूरिन पाय रजाई। मूलबिना किमिधन्य चढ़ैसहि टूटिगरे नहिंदेत दिखाई॥

तातत पात समीर कि संधिमें ग्रमतहै नहिँ होत गहाई। मंगल सोजड़ चेतनहै फल संतलहैं बिन पच्छ उड़ाई ५९ साधुकहा मन शोधन जाकर ध्यानकहा चितचेतन कीनो। ज्ञान कहा मति गोचिर नाहिंन भक्त कहा शुचि त्यागन लीनो॥ कौनु विवेक जो इंद्रियके वश छेस कहा वध मोहन कीनो। मंगल ब्रह्म विचार कहा जोपै आतम आपुन आपुहि चीनो ६० स्वर्ग निवास कहा मन तोषित नर्क कहा वड़ आधि सतावे। भोग कहा सुरवासनको सँग सुन्दर बुद्धि समाधि लगावे॥ नर्क कलेश महा कमि चाटत भामिक लौवड़ पंथन धावे। मंगल भूल दुबौ दिवि नर्क जो आतम ध्यान गहै सुदपावे ६१ आतम ब्रह्म निरंजन भापत आतम देव अदेव भुलानो। आतम लोक अलोक अधोरज जंगम थावर रूप समानो॥ तत्व अहंकृत है गुण आतम बुद्धि विधान समान बखानो। मंगल ध्यान सदा क्रत आतम संत समागम सो पहिंचानो ६२ विष्णु भजे नरजन्म दुतीनिकु मुक्तिलहै जब मोहन जागै। शक्ति अनादि निरूपण जोक्षत सोभन जन्म अदृष्टहि त्यागै॥ शंकर ध्यावतहै शिव लोकहि अंतक जन्म पदारथ लागै। मंगल ब्रह्म विचारि कहै उर आवत मोचहि सौ अनुरागै ६३ एक भयेफल इच्छ न जानत कौनदिशा क्यहि देशहि लागो। एकलिये फलखोजत पादप खातनहीं गुण औगुण पागो॥ एकते जानत पेड़ भली विधि खात महा[illegible] जो अनुरागो। मंगल एकन खातन जानतको तरुको फलमूल को सागो ६४ वालक रूपमहा शुचि सुन्दर देखनहार को चित्तहि भावत। अंध असंगित रूपन देखत टोवन को निज हाथ पढ़ावत॥ सूक्ष्म थूल न गंध न चाकरा ढांचन [illegible]ोहाथहि आवत। मंगलवज्रौसमुझै पुनिसूक्ष्म मापता [illegible]करज्ञान गहावत ६५ इष्टिन आवत रूप मनोहर शब्द अनूपन देत सुनाई। भापिन आवत अक्षत ग्रंथहै गुह सुगंधिन वासरू आई॥ शष्ट पदारथ है मन भावन कोटिक

भांतिन होत गहाई। संगल है नटवा कासमोहर देखेबने नहिँ जात बलाई ६६.मेघचलैं शशि मूढ़ बखानत नावचलें तरु जात लखाई। बालक ज्यों बहुवारन घूमत बैठि लखै निजदृष्टि उठाई॥ देख भले गृह बाहिर भीतर भू नभ घूमंत देखत भाई। मंगल त्यों मनकी भ्रमता विपरीत लखे भ्रमजात नसाई ६७ बालकता तरुणाई गई विरधापन भौसहु सेत बिराजै। आनन दन्तविहीन सुनैंनहिँ दृष्टिपरै जगधुंध समाजै॥ कंपत हैं कर इंद्रिय चानहुं कोटि किये नहिँ आवत काजै। मंगल मृत्यु समीप डरैनहिँ राम कहैन कुकर्महिं लाजै ६८ क्यों मन ढूंढ़त है दिशि चारिहु स्वर्ग चढ़े अपवर्गहि धावै। तीरथ मूरति जापन पाठन पूजन भोजन में दुखितावै॥ संतन पूंछि महंतन बूझि सबै उपदेश मुनीश्वर गावै। मंगल सत्य गुरू निज आतम आपन भेद जो आपु बतावै ६९ आठहु याम प्रसिद्धपुकारत शब्द मनोहर हंस कि बानी। मूरख जो दशहू दिशि भासिका अच्छर खोजत आपर दानी॥ जेति अजौं अपने घर बैठिय भूलिगये धन मूल कि हानी। मंगल जो तिहुंलोक में पाइय सो अपने घरहै न भुलानी ७० पांचहि तत्त्वगते पुर तीनहुं हैं बिरचे करतार सुजाना। आपन अंश प्रवेशित कौ सचराचर जीव किये बिधि नाना॥ तोर शरीर सोपंच प्रभूतते हैं लघु दीरघ केरि प्रमाना। जोगुण सिंधु में सोगुण बिंदुमें मंगल भाव द्वितीयन जाना ७१॥ कवित्त॥ अलख कहत लख धौर कछु जानो जात बदत अरूप रूपवाल फिरि कौन है। अगुण बखान कत गुणहीं को लोपहोत अजर बताये जरा ग्रसितन तौनहै॥ कहत अनादि आदि द्वितिय विचार होत भणत अखण्ड खण्ड दूसर न जौन है। पुरुष पुराण सबठाजनजेएकभावमंगलन जानि परै द्वितिय को गौन है ७२ पुरुष बखान कत नारि को विभेद होत अबला बताये नररूपी कोउ आनहै। क्लीबत न गाये बुध कवि साधु मानै नाहिं मति तन वास भाये

माया को मिलान है॥ जरथ निवास कहौं प्रभु अधराजै कौनु श्वेतदीपसोहै श्यानद्दीपका कोयानहै। मंगल अपार किसि वरणि बतावै ताहि अधिक नही न हरि सदृहि समानहै १३ कीट औ पतंग पशु खग नर नाग मुनि देवता अदेव जेते चिपुर विचारियै। सब में विराजै एक भाव सब ठाम प्रभु सबन ते न्यारो करि ज्ञान निरधारियै॥ जैसे घट मठ धाम सबन में नाक मिलो वुद्धि चप देखे न्यारो चतर सम्हारियै। वुद्धि में न आवै न विवेक ज्ञान गावै कैसे मंगल बतावै ताते चुप्प चित्त धारियै १४॥ सवैया॥ ज्ञान गली चलि सूझिपरै कछु सोज बने कहते न अनूपा। वुद्धि अचंभित मोहितहै मन शुद्धि अशुद्धिपरै भव कूपा॥ लोक मे नाहिं अलोक में नाहिन थोक में नाहिन रैयत भूपा। मंगलहै तुवरूप वहै बिन ज्ञान गुरूलखि जातन गूपा १५ दास अदासन दास कुदास बिचारत हैं प्रभुब्रह्मसनातन। पालत एकहि भाव चराचर मोहन रूप बसें सब गातन॥ नीच कुलीन सुखी असुखी महि देव गवाश को भेदन जातन। मंगल तासु प्रभा लखि नैनन लागत संत विषय विष पातन १६ आपन को सब ज्ञानिय जानत आपन को सब ध्यानिय लेखैं। आपन को सब भक्त प्रमाणत आपन को शुचिही नरवेखै॥ आपन को सब संत बखानत आपन को तपसी सम पेखे। मंगल मान यहै कहियै भव आपनि सूरति आपु न देखै १७ जो विधि है करता भव को पत वर्ष विती ततकाल नशावै। शंकर देव सुरेशहु को तनु नाश करै यह वेद बतावै॥ स्वर्ग निवास सु पर्व तजै तन काल जितो कि न धीरज आवै। मंगल भूलरहा जगजालमें कौन सपारथिहै पदव्याधै १८ काश्यप गे कहि धाम अरे सनते रर नारिन ते जग पूरो। औ मनुराज कहां अवतात रचे बहु ग्रन्थ प्रबंध अधूरो॥ मच्छ कहां पुनि कच्छ कहां मुनि दच्छ कहां किय बास समूरो। मंगल तू मनमें नहिं सोचत त्वत्तु प्रताप सुनै सुख भूरो १९ त्यागत देह अधी

सुद्यती सब औसर पाय भयो बलु हाको। जानि न जात कहां चलि जातन बूझि कहै सुबुधी निज माको॥ कौन दिशा कबहि देश बसै तुर कौनके रूप अरूप अथाको। मंगल मानि लयो जनते नत काकह मोष अधोगति काको ८० केतिक काल व्यतीत भये सन जीतु गयो रथ लौटि नहाको। आनि बखान करयो न दृशानिज नर्क गिरयो किधौं स्वर्गहि ताको॥ भोग करयो कि मरयोनिज भूखहि रोग ग्रस्यो कि अरोगहि छाको। मंगल लोग कहैं सो सही कबहि मोष कहैं औ अधोगति काको ८१ आव कहाते न आपुहि जानत लोगनकेमुखसों सुनि मानी। नभ्रते कर्मते खानि निगोध ते आदमके तन रूह समानी॥ पुत्र पिताते पवित्र सु जीवहै पूरुष औ प्रकृतीहि प्रमानी। मंगलपै न पता कछु लागत खोजत आंधर बस्तु हिरानी ८२॥ यथाकवित्त॥ कोरीकोजमाई एक मूढ चल्यो सासु घर चीन्हत न सासु न ससुर निज सारेको। गांवके निकट जात नामह्लंको भूलिगयो चकित भ्रमात पुर सकल दुवारेको॥ कोऊ चाहि चानैनाहिं यहै पछितानै नाहिं विकल महान मन कीधौं मतवारेको। मंगल सकोचि सन लोगनसों पूंछैलाग जानत सुजानकोऊ ससुर हमारेको ८३॥ सवैया॥ मातु कहै सुत मोर अहै अरु तातकहै सुतसों निजपूता। नारि कहै पति पुत्र पिता

अन्तर बाहिर आवत जावत आपन भेदसो आपु पुकारा।
मंगलपै नहिं मानत तू गुणत्यागत औगुण होत पसारा८६
कश्यपकी दश तीनि तिया तिनके सुत तीनिहुं लोक भरे
है। स्वेदज अंडज योनिज उद्भिज चारिहु खानिनमें पसरे
है॥ एकते रूप अनेक भये बिनु कश्यप कों कहिये बगरेहै।
मंगल कश्यपको लोपै हूंढियतौ नहिंकाहूके धामपरेहै८७
जागृत में दुखनी दुख देहिय है सपने महँ दण्ड करा-
ला। इन्द्रिय थूल सो जागृत में अरु सूक्षम सो सपने द्रुत
घाला॥ कारण रूप सुषुप्तिहु में चकि चौंकि उठै पछिरै
भ्रम साला। मंगल क्यों निरधार लहै दुबिधा तन तीनिहुं
में बिकराला ८८ कारण देह मिटै सुनु रे मन का कहिये
बुधिमें न समाई। ज्यों कहुं फल फूल सुगन्धि जो औषधि
खानिपरै अजताई॥ पांचहि तत्त्वन ते तिहुंलोक जो तत्त्व
बिनाश तौ लोक न भाई। मंगल कारण आदि बखानिय
वादि समस्त अहै निपुनाई ८९ यौ परमातम पूरण रूप
जो अंतर बाहिर आपु बिराजै। ज्ञान नवान अबोध समूढ
न पावत आकार शुद्ध समाजै॥ सो जगदीश बतावत पावहि
सन्त असन्त कबीश अकाजै। मंगल अन्ध अज्ञान बिना
गुरु पंथ न हेरत धावतपाजै ९० बालक तासहँ मोहनको
बड़ि भूल कि भूख लगी सबमें है। प्रौढ भये कछु मोह
बढ़ाय इतैउतहेरत भूलनमें है॥ वृद्ध दशामहँ मोह बढ़ो उर
ज्ञान कहा प्रभुता धनमें है। मंगल अंतक अंत ग्रस्यो सब
छोडि गयो भवही छणमें है ९१ तीरथ को पग देत मिटै
अघ यों कबि पंडित लोग बखानै। स्वर्ग बसै मतवारो फल
पाय बिलास करै नपसों सुर पावै॥ जो अघभोग दुधौ
परित्यागत सोवत तीरथ औ ब्रत ठानै। मंगलमोद समेत
भवै हरि मुक्ति पदारथ करतल आनै ९२ काम सतावत
क्रोध जरावत लोभ भ्रमावत है चहुंघाई। गर्ब गिरावत दंभ
रिझावत संतन भावत है जड़ताई॥ मोह नशावत ज्ञान न
आवत चित्त चितावत ध्यान उपाई। मंगल भक्त कहावत

ऐसङ्ग एकङ्ग भाव न भक्ति लखाई ९३ सत्य न जानुतझूंठ बखानत मानहि मानत है दुचिताई। मूरति पूजत भोजन भूजत हैं अङ्ग कूजतं खाइ अघाई॥ धर्म दुरावत कर्म करावत चित्तन भावत ध्यान बड़ाई। संगल भक्त कहावत ऐसङ्ग एकङ्ग अंक न भक्ति लखाई ९४ जानत आपन को शुचि आतम आननको अपवित्र विचारैं। आपनधर्म मनोहर है यह नाहिं भलो दृढ़ ज्ञान प्रचारैं॥ काठ गढ़ाय गले गहि बाँधिकै मूरति पूजि गुमानहिं धारैं। संगल नेक दयाउर मैं नहिं भक्त कहावत ज्ञान बिसारैं ९५ आतम बास शरीर बतावत लोगन को मन भक्ति ते टारैं। देवन नीदि करैं बकवादुन स्वादलगै सुख जीभ चचारैं॥ बात न मानत संतन की न कबीश कि बानि हिये कछु धारैं। संगल जो हठि आतन पूछिय तौ फिर बत्तिस दांत निकारैं ९६ ब्रह्म निरंजन ज्योति बतावत कोउ कहै निरबाण बिलासी। स्वेत सुद्दीप बखानत कौनहुं शेष के शीश कहै मन भासी॥ कोउ कहै हरि धाम सुथानहिं जानत है मुनिज्ञान प्रकासी। संगल के उरमैं दुविधा फिरि है सम ठामहिं कौनु बिला- सी ९७ ब्रह्मजो है नरकाय बिराजत तौ पशु कीट बिहाय सको है। देवन मैं नित संतनमें प्रभुबास करै गुणि पंडित सो है॥ दैत्य असंतनमें पुनि कौनु बिराजि रहा गुणऔगुण जो है। संगल मूलकी बात कहौ नद्वितीय कहौं एक आपुहि दो है ९८ एकबखानत है दुविधा अहि भाषि कहै बकता पुनि कोरे। बाहि पुमानभनै यहि नारिन नारि पुमान गुमानके भोरे॥ एक अपार द्वितीय अनादि बखानत केतिक हैं मति थोरे। संगल सूरजधूप हि भांतिन ध्यान बिना सबके करजोरे ९९ ॥कवित्त॥ ब्रह्म हीं ते माया ताते तीनि गुण पांच तत्व सूक्षम सथूल कवि दुविधि लखावै है। तत्त्वनते सातनाक देव बास देखियत सकल पताल श्रुति तत्त्वकारि गावै है॥ आदि औ अनादि जग द्विविधि बखानै लोग संगलके चित्त एक सांचीबात आवै है। मेरी जानि बिश्वनाथ बालक स्वभाव

जैसे रचिकै घेरौंदा पुनि आपुहि मिटावैहै १०० जम
मिटि गंधिहोत गंधिनीर योगलेतआपरसरूपपावरहत
लेषहै। पुनि रस पावक शरीर यिनि जात पुनि पावकउ
रूपहोत कहत सुदेषहै॥ रूप पवमान होत कहत समीर
पुनि परस में लीन सोतौ नभहि प्रवेशहै। नाक पुनि शब्द
सोतौ होत अहँकार पुनि प्रकृति पुरुष हरिमंगल हमेश
हैं १०१ ॥ सवैया ॥ कोतिक पण्डित औ कवि चातुर देव
अदेव मुनीश सुजाना। गावत जाकर कीरति रैमन पावत
पारन वेद बखाना॥ तासुकथा किमि जानि सकै वकवादु
करै कि चुपाय अयाना। मंगल गूढ़ कहा कहिये करिये
मनहीं मन ताकर ध्याना १०२ शेष महेश विरंचि सुरेशहु
जाहिभजैं कछु भेदन पावैं। देव अदेव कवीश मुनीश जना
धर कोविद आनन गावैं॥ जाकर भेद न भापतसंतन पीर
गुरू कथि अंत बतावैं। मंगल सो परमातम अव्यय धूर्त्त
प्रत्यक्ष वदैं औ लखावैं १०३ काकर ध्यान करै वुधि तू
अबहीं तुव रूपहिसौं मनमाना। रूप नरेख अनीह अना-
कृति सेतन पीतन श्याम प्रमाना॥ आदि न मध्य न अंत न
तत्त्वन मात पिता गुरु बंधु न गाना। मंगल आपुहि आपु
विचारत जानत आपुन जानत आना १०४ एकहि पाट
विछाय मही रचि ब्राह्मण शूद्र कुलीन रु नीचा। तापर बैठि
बनावत जेंवत खोवत ज्ञान विनीत नगीचा॥ जो समुझै
मनमें गुण धारि तौ दूसर मानतहीं मनहीचा। मंगल तू
मन शूकर लौं जलपान करै प्रथमैं करि कीचा १०५ एक
ऋचानिमुनीकवहूंकहै वेदनकी हमजानत बानी। आगम
को नहिं अक्षर जानतभेदतहै अथरूपअज्ञानी॥पाठकरो
न सलोक कवौं कहै भाषि पुराण महत्त्व कहानी। मंगल
क्यों समुझै जड़ मूरख आपनहीं मत मानत मानी १०६
सूरकही सव श्यामकथा तुलसी रघुनायक गाथ बखानी।
दास कवीर वहौसति रामहिं नानक नाम भयो रुचि
मानी॥ दादू मलूक धना सदना अरु गोरख वाणि भली

पहिंचाना। मंगल मूढ़कहैं इनते हमहैं अधिकै जो भयैं निजवानी १०७ लेखन खोजत हैं धनको तनको रँगिकै कर बेत लगाये। लोगन सों जगनाथ पुरी कर पंथ बताइ चहैं भटकाये॥ ज्ञान कथैं बदिवाद बड़ा सुनि साधु लखैं जनु आनँद पाये। मंगलते ठगि जातसही न कही न कही अ-पनी अनखाये १०८ वामन सों नित प्रेम बढ़ावत वासनसों अनखाय न वासी। दास गुलाम जो सेवक पेट के मांगत द्वारन वामन धासी॥ राम रहीम करीम न केशव बाद विवाद करैं मतिखासी। मंगल तू चुप क्यों न गहै अस संग किये जग में बदनामी १०९ शब्द अनाहत होतसही जब मूंदि सुनै दशक्ष तन द्वारा। वायु निरोधत शब्द उठै यह ज्ञान अखंड प्रवीण विचारा॥ जो समुझौ मन जानि परै तस झालरि शंखमृदंग उचारा। मंगल प्राण अयामकिये अलपायुनशै सुख सों करतारा ११० शून्य समाधि लगाय विलोकत धूमिलधूसर रंगपसारा। जो त्रिकुटीतटलौचढ़ि जाय लखै सुत्रिवेणि किमावन धारा॥ अग्र बढ़ेकछु होत प्रकाश है भाषत योग प्रचारन हारा। मंगल खोजत ब्रह्म तहांनहिं ध्यान स्वरूपको ध्यान प्रकारा १११ ढूंढिफिरौं बहु तीरथ मूरति बूझिफिरौं बहु पंथ अघाई। खोजि फिरौं बहु शैव सशायख सोधि फिरौं कितनी गुरु वाई॥ बाद विवाद अनेक किये काऊं लाजि गयो काऊं ध्यान लगाई। मंगल सांचु कहावत है यह छूंछ पछोरत जात उड़ाई ११२ काऊ कह्यो उठि प्रातहिं न्हाइयपू-जिय देव सुध्यान लगाई। काऊकह्यो कलिमाबिन सोपशै काऊ बढ़ो निरवाण गुणाई॥ काऊभन्यो गुरुविप्र प्रतारत काऊ बखान स्वग्रंथ कथाई। मंगलको नहिं बोध भयो नस छूंछ पछोरत जात उड़ाई ११३ योग वसिष्ठ पढ्यो कछु सादर दास कबीर के ग्रंथ संगाई॥ जीवन के कछु पंचकभाषि सुनी कछु सुन्दरकी कविताई। बादकरैं कवि पंडित सों अरु नीदत है मुनिदेव अघाई॥ मंगल सांचु

कहावत है कुम्हड़ा मुखमें न अजाके समाई ११४ देवन को नित है परि देवन सेवन को किमि बात चलाई। आतम भूत कुलाल समान है पालक विष्णु न ठीक लगाई शंकरकोपि सँघारतहैं यक ब्रह्मनहीं बहुठाम दिखाई मंगलसांचु कहावतहै कुम्हड़ा मुखमेंन अजाकेसमाई ११ आपनकर्म कियोनकबौं कहैं कर्मकिये कछुहोत नभाई दासकबीर मलूक धना तुलसीगुरु नानक बाणि सुनाई॥ यों शुकदेव भन्यो गुरु गोरख कर्म बधीजन मुक्ति नपाई। मंगल युद्ध पठान विजय बेहना निज अंगन फूलि समाई ११६ श्रीगुरु नानक दास कबीर के आनहुं पंथमें लीन्ह मुड़ाई। मानत हैं फिरि वेद पुराणन तीरथ औ व्रत देत उड़ाई॥ वाद विवाद विशेष करैं अरु भाषि कहैं गुरुग्रंथ गुढ़ाई। मंगल पै निज भेद न जानत खांड़ बँधावत जग पराई ११७ वेदको अच्छर कान सुन्यो नहिं वादि कहै श्रुतिसार असारा। आगम को कछुं रूप न देख भनैं भि-गड़ा बड़शास्त्र विचारा॥ वादि कहैं हम ब्रह्म बखानत देत लखाय अखंड अपारा। मंगल आपन भेद न जानत भीति उठावत ईंट न गारा ११८ ज्यों पवमान प्रसून के बागां आवत शुद्ध सुगंधि लखाई। सोई समीर कुगंधिनिकेत ते बाहिर होत कुवास बसाई॥ योरकुवाइ सुगंधि कुगंधि नि शुद्ध स्वरूप सदा सुखदाई। मंगल त्यों यह जीव अदो-खित पापरु पुण्य ग्रसो नहिंगाई ११९ लोचन हीन न अंध बखानिय नैन समेत न देखन हारा। पंगुनहीं पगही-नचलै नितपंगु अहैपग नाहिं विकारा॥ गुंगरहै रसनाशुचि सोहर बोलत है नहिं जीभ सहारा। मंगल है यह अद्भुत कारण जीवहि को करि देखु विचारा १२० दंड महंदि-खितेनहिं रोवत रोवतहै सुखके अधिकारा। सोवत हैं अरु जागत देखिय जागत सोवत के अनुसारा॥ गावत हैं नवि-वाह में गीत अरुआरथ ताल मृदंग पसारा। मंगल है यह अद्भुत कारण जीवहि को करि देखु विचारा १२१ मृदंग

के सतसंग विहारत साधन संगति ते कडुं न्यारा। ज्ञानिन में नितवास करै कडुं ध्यान लगावत पार अपारा॥ न्हात जन्हात खवावत खातन पाठक पाठित शुद्ध प्रसारा। मंगल है यह अद्भुत कारण जीवहि को करि देखु विचारा १२२ चेतन वस्तु सही तनमें बिन चेतन चेत न दृष्टिन आवै। अंधहि दीप दिखावत सूझ न खोजन को निजहाथ बढ़ावै॥ जोग सबै हठिवाद् वदैं परजातलहै तनमें न लखावै। मंगल मूल कि बात यहै ज्यहि रूपनहीं त्यहि देखन धावै १२३ औघड़ मंत्र लिये यक डोलत आमिष भोजि सुराहत गाना। बातन जानत आननकी एकनाम कि सेवतहीं वध ठाना॥ एक तजै मदिरा अरु आमिष दच्छिण भाग लिये अभिमाना। मंगलहै रुचि आपनि आपनि जोपै करै परमातम ध्याना १२४ काकर पाप ग्रसै क्यहि कारण काकर पाप सुपुण्य प्रकाशै। काकर पाप निवासत नर्कन काकर पाप जो स्वर्गविलाशै॥ काकर पाप भ्रमावत जन्मन काकर पाप सुमुक्ति प्रभाशै। मंगल काकर पाप मिलावत ब्रह्म निरंजनमें अनयाशै १२५ या तन मे एक चेतनहै ज्यहियहि सबै तन इंद्रिय डोलै। चित्त अहंकृत है मन बुद्धिन सूछम थूलन कारण खोलै॥ सोवत जागत जागत सोवत आपु बखान करै अनमोलै। मंगल शक्ति अनंत वहै बिन ज्ञान ते पारस पाथर तोलै १२६ जाहि नहींदुख औ सुख व्यापत नेह न नातन पासन दूरी। जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीय रहै यक भाव न अल्पन भूरी॥ जीवत है नप्तै मृतु अंतक रूप अरूप रहातन पूरी। मंगल सो यह जीव कहावत आदि अनादि कि जीवन मूरी १२७ छूति औपाक कछू नहिं मानत नीच कुलीन दुओ यकसारा। खात अघाइ उठावत पेटहि रामभजैं नहितत्व बिचारा॥ ऊपर हंस स्वरूप बने, मति भीतर वायस रूप अपारा। मंगल नावत भेषहि माथ भजो रजतै करि सांप पसारा १२८ श्रीगुरु की कथनी निज भावत पाप छिपावत दादे कि लागत। पंथ कि

कहावत है कुम्हडा मुखमें न अजाके समाई ११४ दे
को नित है परि देवन सेवन की किमि बात चलाई।
तम भूत कुलाल समान है पालक विप्र न टीक लगाई
शंकरकोपि सँघारतहै यक मह्मनही बड़ठाम दिखाई
मंगलसाधु कहावतहै कुम्हडा मुखमेंन अजाकेसमाई ११
आपुनकर्म कियोनकबौं कहै कर्मकिये कछुहोत नभाई
दासकवीर मलूक धना तुलसीगुरु नानक साखि सुनाई
यों शुकदेव भन्यो गुरु गोरख कर्म बचीजन मुक्ति नपाई
मंगल शुद्ध यठान विजय बेहना निज आंगन फूलि समा
११६ श्रीगुरु नानक दास कबीर के आनउं पंथमें लीन
मुडाई। मानत है फिरि वेद पुराणन तीरथ औ व्रत दे
उडाई॥ वाद विवाद विशेष करें अरु भापि कहै गुरुग्रं
गुढाई। मंगल पै निज भेद न जानत खांड बँधावत क
पराई ११७ वेदको अच्छर कान सुन्यो नहिं यादि कहै
श्रुतिसार असारा। आगम को कछु रूप न देख भनैं भि
गडा बडशास्त्र विचारा॥ बादि कहैं हस ब्रह्म बखानत देत
लखाय अखंड अपारा। मंगल आपन भेद न जानत भीति
उठावत ईंट न गारा ११८ ज्यो पवमान प्रसून के बागते
आवत शुद्ध सुगंधि लखाई। सोई समीर कुगंधिनिकेत ते
बाहिर होत कुवास बसाई॥ योरकुभाद सुगंधि कुगंधि-
नि शुद्ध स्वरूप सदा सुखदाई। मंगल त्यों यह जीव अदो-
खित मापरु पुण्य असो नहिंनाई ११९ लोचन हीन न
अंध बखानिय नैन समेत न देखन हारा। पंगुनही पगही-
नचलै नितपंगु अहैपग नाहिं सिकारा॥ गुंगरहै रसनायुचि
सोहर बोलत है नहिं जीभ सहारा। मंगल है यह अद्भुत
कारज जीवहि को करि देखु बिचारा १२० दुंद चतुंटि-
थितिनहिं रोनत रोवतहै सुखको अधिकारा। सोवत ह्मसहँ
जागत देखिय जागत सोवत के अनुसारा॥ गावत है नवि-
वाद में गीत अस्वारथ ताल मृदंग पसारा। मंगल है यह
अद्भुत कारज जीवहि को करि देखु विचारा १२१ सूदन

कै सतसंग विहारत साधन संगति ते कडं न्यारा। ज्ञानिन में नितबास करै कडं ध्यान लगावत पार अपारा ॥ न्हात नम्हात खवावत खातन पाठक पाठित गुद्ध प्रचारा। मंगल है यह अद्भुत कारण जीवहि को करि देखु विचारा १२२ चेतन वस्तु रहो तनमें बिन चेतन चेत न दृष्टिन आवै। अंधहि दीप दिखावत सूक्ष न खोजन को निजहाथ बढ़ावै॥ लोग सबै हठिवाद् बढ़ें परमातमहै तनमें न लखावै। मंगल भूल कि बात यहै ज्यहि रूपनहीं त्यहि देखन भावै १२३ औघड़ मंत्र लिये यक डोलत आमिष भोजि सुराहत पाना। बातन मानत आननको एकवास कि सेवतहीं बध ठाना॥ एक तजै मदिरा अरु आमिष दक्षिण भाग लिये अभिमाना। मंगलहै रुचि आपनि आपनि जोपै करै पर-मातम ध्याना १२४ काकर पाप ग्रसै ज्यहि कारण काकर पाप सुपुण्य प्रकाशै। काकर पाप निवासत नर्कन काकर पाप जो स्वर्गविलासै॥ काकर पाप भ्रमावत जन्मन काकर पाप सुमुक्ति प्रभासै। मंगल काकर पाप मिलावत ब्रह्म निरंजनमें अनयासै १२५ या तन मे एक चेतनहै ज्यहिशक्ति सबै तन इंद्रिय डोलै। चित्त अहंकृत है मन बुद्धि न सूक्ष्म थूलन कारण खोलै॥ सोवत जागत जागत सोवत आपु बखान करै अनमोलै। मंगल शक्ति अनंत वहै बिन जान तैं पारस पाथर तोलै १२६ जाहि नहींदुख औ सुख व्यापत नेरु न नातन पासन दूरी। जागृत स्वप्न सुषुप्ति तुरीय रहै यक भाव न अल्पन भूरी॥ जीवत है नयसै मृतु अंतक रूप अरूप रहातन पूरी। मंगल सो यह जीव कहावत आदि अनादि कि जीवन मूरी १२७ छूति औपाक कछू नहिं मानत नीच कुलीन दुऔ यकसारा। खात अघाइ उठावत पेटहि रामभजें नहितत्त्व विचारा॥ ऊपर हंस स्वरूप बने सति भीतर वायस रूप अपारा। मंगल नावत भेषहि माथ भलो रगते करि साम पसारा १२८ सौगुरु की कथनी निज भाखत पाप छिपावत दादे कि लागत ।.पंथ कि

आवत ग्रंथसुनावत ज्ञानिकहावत वेदमिटावत॥ कर्मनशावत धर्म भ्रमावत आन बतावत आन करावत। मंगल घो अपनी कछु पूंछिय तो जसुहात यथा सुखचावत १२९ ऊरध बाहु बने तन पीडत पांवबँधे नर भूल भुलावै। भूतिबने अभूति बने बिन जूतिचले पग कांटक धावै॥ भूमि गडे तन आगि जरे बिन अन्न मरे निज जीव सतावै। मंगल कर्म अखारध है नहिँ खोजन हार के हाथन आवै १३० ब्रह्म कि वाणि भरी सब वेद कलाम खुदाको कुरान कहावै। आगम वाणि मुनीशन की हुक्दीस रसूलकि वाणि बतावै॥ वाणि पुराण महामुनि व्यास कि ब्रह्म निरूपण ज्ञान जतावै। पुस्तक जैनसो पारसवाणि चहूंदिशि मंगल वाणि जनावै १३१ जेतिक पंथ महीतल है सबमें यकवाणि नवीन भरीहै। एक मिलोकि द्वितीय बनावत सो उपमा ममचित्त अरीहै॥ ज्यों एक राग अलाप कियो सुनि आनन्द तासु कि कूक करी है। मंगल वाणि विवाद चहूं दिशि ब्रह्म बखानत वाणि डरी है १३२ वाणि कहै यक सर्गुण नि र्गुण वाणि कहै यक ब्रह्म अमाया। वाणि बहै सब ठाम छमानिधि वाणिभनै प्रभु है यहि काया॥ वाणि कथै यक सिर्जन हार है वाणिकहै यक पालक पाया। मंगल वाणि गुणै यक हंतक आदि अनादि बतावत माया १३३ एक कि वाणि द्वितीय न जानत एक कि वाणि अनेक लरैजू। कूकर भूं कि उठो भ्रम खाय सुने त्यहि आनन्द भूं कि परैजू॥ वाजिमि बोलि स्टगालउठो सुनते:इता संगही फिकरैजू। मंगल वाणि अजीत महा कछु नीट कहौ तौ बिमूढ जरैजू १३४ सूरज अस्त समय दिन है कि धौं राति कहौ कवि पण्डित ज्ञानी। छांह औ धूप के मध्य कहा किधौ धूप कि छांह महौ गुणखानी॥ पूंछत मंगलसों बहु लोग बतावन में अति होत गलानी। ईश्वर जीव के मध्य तथाबिधि सन्धिपडी नहिंजात बखानी १३५ चिन्ततचित्त गहै अहँकार गुणानि करै मन बुद्धि दृढावै। पाप अपमा

ग्रसे यहि जीवहि क्यों दुविधा अपने मन आवै॥ मोहन खाय अघाय सुभोजन सुंदर आपन पेट ठठावै। मंगल भूल बड़ी भव में तजि साहिब सेवक रान बतावै १३६ चित्त कहा भव आप कहौ अहँकार कहा दुविधा तन तापै। कौनु अहै मनहै भ्रमणा बुधि रूपकहा थिरता तन आपै॥ चित्त नहीं अहंकार नहीं मन बुद्धि नहीं यदि ज्ञान प्रलापै। मंगल है यक तू विधि चारि विचारि हिये किन दोषन दापै १३७ कारण देहरहै जब तोरिनहीं तब ज्ञान अज्ञान बखाना। इंद्रिय ज्ञान न कर्म रहै मन बुद्धि नहीं शुचिब्रह्म सयाना॥ सूक्षम तत्त्व न देखि परै नहिं मातपिता गुरु नामहिं जाना। मंगल सो कि अचेतकिचेतन ब्रह्म कि जीवकहै बुधिवाना १३८ लिंग शरीर लिये नव तत्त्व कहौं किमि सवह थूल प्रमाना। इन्द्रिय कर्म सज्ञान अहैं दश बुद्धिहियो मन पंचक प्राना॥ कर्म प्रताप विलाश भया लहि थूल शरीर भरयो अभिमाना। मंगल कौन कहै मन की गति सत्य असत्य बिबेक अयाना १३९ थूल शरीर सो जाग्रतहै ज्यहिके द्वत सानत देव अदेवा। लिंग विभेद जो स्वप्न कथा जहँ सत्य असत्य लखै बहुभेवा॥ कारण रूप सुषुप्ति विचारिय सत्यअसत्यदुवौ मिटितेवा। मंगल कारण के परकी गति सोइ तुरीय विलक्षण एवा १४० बालक तामें सतोगुण व्यापत शुद्धअशुद्ध कछूनहिं जानैं। प्रौढ़ भये तरुणाईगहे उरव्याप तमोगुण क्रोध समानैं॥ छद्धहिकाल होत रजोगुण ज्ञान अज्ञान दुवौ भ्रम तानैं। मंगल अंत त्रिदोष मिले यहजीव प्रबुद्धलहै परधानैं १४१ जो अजसो किमि जन्म धरै अरु जो जनयोनि सो योनिन पावै। जो बिभुसो किमिहोतप्रजा अरुजौलु अनीह सोदेहनपावै॥ अद्भुतशक्तिभयोकविपण्डित ताकरकीरति क्योंकरि गावै। मंगलशोचिरहौसनहींमननामप्रभावहिवाणिबतावै १४२ कवित्त॥ आशावश तीरथ फिरत दिशि चारिहूमें आशा वश करत सुव्रत मन मूढ़है। आशावश जोरपान आशावश

नीर न्हान आशावश देत दान ढूंढ़त अढूंढ़ है॥ आशावश ठाढ़ रहै आशावश देहदहै आशावश बालक बिलोवै ज्वान बूढ़ है। आशावश मंगल कवित्त छन्द दोहा करै आशा परे जीवपावै बड़ोज्ञान गूढ़है १४३ आशावश पाठ जाप आशावश ज्ञान ध्यान आशावश विपुल करत रण धावैहै। आशावश मोह द्रोह आशावश कामकोह आशा वश राम राम रटत सभावै है॥ आशावश नात गोत आशावश वास होत आशावश देवजन कीरति सुगावै है। आशावश मंगल दुचित्तो नित भूमि तज आशा परे जीव बड़ो गूढ़ ज्ञान पावै है १४४ आशावश विकल नरकवास पावै आपु आशावश सुर पुर लहत निवास है। आशावश उपजि मरत बार बार देखु आशावश मोचि जात प्रभुपद पासहै॥ आशावश पाप लागै आशावश पुण्य जागै आशा वश सम्पदाको अधिक विलास है। आशावश मंगल सुजानता दिखावै निज आशा परे गूढ़ गति ज्ञानको विभास है १४५ आशावश भूतनको देत बलि भाग देखु आशावश देवलमें देव पूजै धाइहै। आशावश कवि गुण आदर विचारै चित्त आशावश कुवच वदत भ्रम पाइहै॥ आशावश याग दान होम संयमादि व्रत आशावश जरत पवन ठहराइहै। मंगल निराश होत पूजै सनकादिनाद भटकाति आशावश दुविधाको भाइहै १४६ अटवी निवास जो विलोकै रास सत्यभाव तौतौ कैते वनवासि वनहीमें वासैहैं। जोपै जलशायी भगवान भेटै सत्य तात तौतौ जल जाजुप को जगमें विलासै है॥ जोपै निरवास न मिलत प्रभु धाय आय तौतो बाग कोटिन नगन घनचासैहै। मंगल विवेकी साधु मुनि मन ज्ञान मान तिन्है न भ्रहादू दम्भ प्रगट निरासै हैं १४७॥ सवैया॥ चन्दन भाल दिये यक चन्दन एक चिपुण्ड चढ़ावत माटी। काष्ठ बँधी यक माल सु काट कि गोल रची तुलसीतरु काटी॥ रंगि भुजा उर डारि सुपोलन को चरहैं लपसी मुखचाटी। मंगल ज्ञान उदोत

भयेयह दम्भ लखाय महा खटपाटी १४८ पावकपूजतईश्वर जानि कोई व्रतसागर पूजनधाई। पूजत भूमि समीर गही घर सूरज चांदहि जानि भलाई॥ मूरति तावुत साहिब मानतपूजन में रुचि होत सदाई। मंगल ज्ञानउदोत भये उरभ्रामिक है यह दम्भ लखाई १४९ जानि सकै हरिकी गति तौ भ्रम जानें विना ते महाभ्रम लागै। गाय कहै जो अकत्थ बडो भ्रमगाये विनाउर प्रेम नजागै॥ ज्योति निरञ्जन नयन लखै भ्रम देखे विना कब तारस पागै। मंगल तू इतही उतही भ्रमहै इतही उतहीकिन खागै १५० देखत नयनन आपन रूप अनेक द्वितीय स्वरूप निहारै। कान सुनै निज नाद नहीं जग वाद सुनै उर प्रेम प्रचारै॥ आपनि गंधिन सूंघत घ्राण अनेकन गंधि कुगंधि विचारै। मंगलज्योंतु विलोवत नीरमहै घृत आपुनआपु उचारै १५१ आदि कहोतो अनादि कहां अरु मध्य कहा पुनि अंत कहाहै। जोमै अनादि कहौ परमातम तौफिरि कौनु प्रकाशि रहाहै॥ जो अनुमान कहौतो बड़ोभ्रम आन प्रत्यक्षन रूप महाहै। मंगलज्यों निरधार लहै भ्रमज्ञान गुरू गुरुज्ञान लहाहै १५२ वेदवदैं उपवेद वदैसब आगम और पुराण बतावैं। सन्तवदैं जुमहंत वदैं मुनिराज वदैं कवि पण्डित गावैं॥ धूत वदैं अवधूत वदैं बुधजैन वदैं अनुमान लखावैं। मंगल मूरखवदैं विपरीतहि पूरमरै नमनैं पछितावैं १५३॥ कवित्त॥ कहत जबूरहै किताबभगवानही किलाइको दाऊद सब लोगन सुनाई है। अपर भनत तौरेत भगवान भाषी सोई लाइ मूसा जोतीकीन्ही चतुराईहै॥ ईसा कि इंजीलसुनी कहत महम्मद कि बडी फ़ुरकान जोखोदाई कि बनाई है। मंगल किताब चारि एकही को हाल कहै एकमत नाही यातेबडी भ्रमताई है १५४ ज्ञानसमुभावै कोई वेदन कि गाथभाषि आगम पुराणआदि संवाल दृढाइकै। चातुरी बतावै विषयानकी अनेकभांति चातुरी लखावै रणकाज भक्तिभाइकै॥ राजकाज बातनमें भेदभाव

भाषि कहै यवनादि विज्ञता सुनावै सोद पाइकै। मंगल सुजान होत दुविधा लखात चित्त सुमति विहून मूढ़ रहत भुमाइकै १५५। कोऊ कहै मक्के औ मदीने में निजात होत कोऊ कहै काशी किधौं गयामें निजात है। कोऊ कहै रोजा औ नमाज विन पार कहां कोऊ कहै पूजापाठ सुमति द-ढ़ात है॥ कोऊ कहै दाढ़ी मेरी नूर है खोदाई यार कोऊ कहै शिखा कीधौं धरम विभात है। मंगल कहत कोऊ सु-न्नति ईमान दारी कहत घनेऊ कोऊ भसही कि बात है १५६ कोऊ पट ओट करि भोजन बनाइ खात कोऊ खाइ अचवत चौका हीमें तात है। कोऊ तन भूतिलाइ वसन विहीन डोलै कोऊ माला तिलक रँगत निजगात है॥ कोऊ मारि पच्छी पशु कहत विहिश्त जात कोऊ बडो जैनी मांस मदिरा न खात है। हिन्दू औ मुसल्मान आपु आपु पाक जानै मंगल कहत सब भसही कि बात है १५७ वेद वेद अंग इतिहास के विवाद सुनै गुनै चित्त आपने. कथानके विधानको। सारासार बूझि मन बोधै बहु भांति नित्य सत्य ज्ञान आसवास रहत सुजान को॥ वेद को बनायो औ चलायो कासु द्वार तात चलत को ताकी चाखि मानत प्रमान को। मंगल महान भूल कौनी भांति टरि होइ गुरू सत्यवादी कौनु शिष्य ज्ञान मानको १५८ परम प्रधान वेद गावत कितेब जाहि काहै गिरताल सब लोगन में एक है। रविशशि भानु जहां करत प्रकाश नाही रोशन सो आपुकीधौं सूरज अनेक है॥ अजशिव आदि काल होत जाके चरणहिं में ऐसा करतार सदा आ-नन्द्यति रेक है। सोक ओट मंगल पहाड जैसे भाषियत तैसे जीव पारब्रह्म विबुध विवेक है १५९ सात सुरवास सातनाग लोक आदि धाम काल वश सकल नशात स्रुति साखी है। नभ पन मान सिखि नीर भूमि लोप होत माया अलगाय कीधौं कौने थल राखी है॥ जीवन के पाप हात दंड दानि कहां रहै ज्ञानिन के ज्ञान जानै कौनी गती नाखी है।

मंगल त्रिदेव गुण तीन एक भाव होवैं दुविधा दुराशा को विवेक अभिलाषी है १६० पुनि उपजावै चारि खानि जीव देवासुर जहां तहां वास देत ऊँच नीच धाम है। काने पाप कीन्हो काने सुकृत कमायो तब जाके फलभोग रोग सोग आप काम है॥ असुर बराक द्विज सुपच कहायो काहे करम प्रताप जोपै जाना अभिराम है। मेरे मन मंगल न भूलै तू विवेक पाय कोधौं नाशि जात होत काको धौं विराम है १६१ तारागण दीप कहै नभ के प्रवीण कोउ कोउ कहै लोकनको होवत प्रकाश है। कोउ कहै अचल चलायमान सुर चाँद कोउ वदै देवता प्रतापी तेज भाश है॥ जाहि चष देखै ताकी बात नाही लेखै फिरि कैसे अवरेखै हरि अनन अवाश है। मंगल विवेक सौं बिचारि देखु आपु मांझ इत उत चारि ओर माया को विलाश है १६२ मात पितु सोदर कलत्र सुत मोह कूप डारत समुद्र विषया न नेह नाते है। आगे त्यागि जात कोउ पाछे को विचार चित्त सकल समाज हितकारी न दिखाते है॥ काया आपु प्यारी जाहि पालत सुभोज भोजि संग तासु अंतकाल कौन जीव पाते है। मंगल समस्त झूठकारो बार तीनलोक आपुसाथ नेह जोर नाते सब जाते है १६३ येरे मनमूढ़ तोहिं अधिक उराति रहौं जानि कै प्रधान देह ग्राम का सदाही हौ। सोतौ भाव तेरे नेक पायो न परीक्षा काल घेट की चटोर नीच जानौं सब साहीहौं॥ अब नम्रभावै बात अखिल अबूझ भाषि शंकसानु मेरो भूप तेरो दास नाहीहौं। नातो पछिताय मन मंगल अपार भांति जबै शुद्ध भावकहौ श्याम श्याम पाहीहौ १६४ मनुज शरीर दीन्हो सुख भोग हेत नाथ सकल विभूति ताके संग उपजाई है। जग दुखरूपी सब भांतिन बिचारि चित्त परम सुजान प्रभु कीन्ही निपुनाई है॥ भोग भाग याग याग लोगन के राग लाग भूलो मूल बात दूत प्रेरणा प्रभाई है। मंगल सुजानजन मायामद ज्ञानहीन [illegible]

सवैया ॥ शैवि कहै शिव बोध कहै वुध जैनि कहै प्रभुपारस
नाथै। विष्णु कहै कोउ शक्ति वदै गणनाथ पुरातन भाषत
गाथै ॥ ईसा कहै कोउ मूसा भनै कोउ फौहरसूल मुहम्मद
साथै। मंगल सांचु सबै जन गावत पोषनहार के लाग
न हाथै १६६ तीरथ न्हान करै व्रत संयम दान अनेकन दै
जो अनाथै। औघड ध्यान पियो मदिरा शुचि दूरि करै
रुचिपाय अपाथै ॥ मूरति पूजि बजावत घंट न दीप दिखाय
सुनावत गाथै। मंगल कर्म अकारथ है नहिं पोषन हार
के लागन हाथै १६७ ठाढ़ रहै तन दण्ड सहै मुख मौनरहै
पशुलौं बनि जावै। दूध पियै तजि अन्न भखै तृण धूम घटै
जलवासलो आवै ॥ नग्न रहै बहु ज्ञान कथै नित ध्यान धरै
न सुनै न सुनावै। मंगल कर्म अकारथ है नहिं पोषनहार
के हाथ न आवै १६८ कीजिय वेगि दया जनपै हरियेदुख
रोग सबै यदुनायक। औषधि मूल प्रताप तुम्हार धन्वंतर
रूप धरे गदघायक ॥ शूलसमूल नसाय कृपानिधि राखिय
दास कहौ सब लायक। मंगल टेक तुम्हारि गहे नित
आनके द्वार सोहात न पायक १६९ सूर गभस्ति नशावत
नीरन जो हपकी तपता तन तापै। जाग्य प्रकाश बुझाय
समीरन जो प्रगटावत झंझ प्रतापै ॥ कादर युद्ध डरावत
वीरन जो बहु संगरकी गुण थापै। मंगल धर्म मिटावत धी-
रन जो प्रभु दण्ड प्रसिद्ध प्रदापै १७० दारिद निन्दत है
धनवरनको जानतये अदया जगमाही। दीननको धनमान
कहै लघु तुच्छ कुवर्ण सदा भ्रम नाही ॥ एक भुलान महा-
मद लोभमें दूसरके दिन धावत जाही। मंगल सोइ बडा
दुऊ भांतिन जासु हिये हरि भक्ति लखाहीं १७१ ॥दंडका॥
मनवश कीन्हे भाग चाहत न चित्त नेक पाटुरस अरस कि
नाही पहिंचान है। भोगन कि बात सुनि जिय अकुलात
तात मात सुरमाता मात काग बीट मान है ॥ शीतकाल
ग्रीषम समान भाव धारे रहै अमित घटाम रूप हरिरस
मान है। मंगल सुजान वदै सोई भूमि भागवान सुकृति

विराग जाके ऐसो ज्ञान गानहै १७२ विषयो समान विष
रूपो जानि भागै दूरि हाटकादि सम्पति विचारै मोह
दानी है। नारी जग अखिल समान मातु जाके चित्त अ-
रिता छिताई दूरि आई द्रोह सानीहै॥ देखत तमासे
सो धरातल असोह रूप हँसत ठठाइ काऊं रोवत अमानी
है। मंगल बिरागी सोई वेदभाव भाखियत रहत उदासी
ज्ञान धाम अनुमानी है १७३ बासना न व्यापै जाके जीव
काहू भांति और कामना सतावै नाहिं कानन में जाही
है। बसन विहीन जैसे बासित जहान तैसे सेज अनसेज
सोवै शोक ताप दाही है॥ दीन हितकारी धनवान को
न नेह चित्त जोई भाव जानै ताकी सुमति सराही है।
मंगल महीप कौंधु दीन भूमि हीन राव वाके एक भाव
राग त्यागी निरिधाही है १७४ काम व्याल दाह तन
शुद्ध चित्त शीतलको क्रोध नाग काटत न बेकामन वाको
है। मदकी मदाई तट जात न सजाग जानि लोभ सिन्धु
बोहित बिचारो ज्ञान वाको है॥ मोह तम बुद्धि लखि
रूपी देखि नाशि जात माया दाया हेरि जासु द्वारहू न
झाको है। मंगल बिरागी ऐसो विदित त्रिलोक सत्य
गावत प्रमाण साधु वेद जाको साको है १७५ गुफा को
निवासी बनवासी कहै पर्णकुटी नातो नेह सांचो जाके
नामको अधार है। काहूसों न नेह बैर जात काहू द्वार
नाहिं राति दिन भास किधौं एकही प्रकार है॥
देवता सिहात रागहीन देह धारि देखि यम अकुलात
वाके नाम की पुकार है। मंगल विराग रूप गावत सुजान
ऐसे।नातो दंभमाया मोह प्रेरेरागकारहै १७६॥ सवैया॥
वा प्रभु के कछु जाति न पांति न आश्रम वर्ण बिचार न
कोई। देव अदेवन मानुष नाग बिहायस औ पशु कीटन
सोई॥ पांचहु तत्त्व परे गुण तीनिते चौदह लोक निवास
करोई। मंगल बुद्धि वितर्क नते पर सो परमातम वेद बदो
ई १७७ जीवन में नित आयु बिराजत जीव सबै तन तासु

समाहो । आपत यों सुनि पण्डित आगम है अनकाय अ-
लिप्त सदाहो ॥ द्वादिसहो समतेअति पासहिद्वैप्रतिठामन
औपुनि नाहो । संगल के दुविधा सुनि लागत द्वैत अद्वैत
दुवौ यक ठाहो १७८ वासर मे निशि देखि परै नहिं
औ रजनी महँ द्यौसन भाई । आगम एक निरागम दूसर
वर्ण अवर्ण अकथ्य कथाई ॥ चेतन औजड एक स्वरूप न है
थिर अस्थिर की निपुनाई । संगल को न सँदेह रहा गहि
एक द्वितीय काया बिसराई १७९ जो गुणखानि तो है
करि कोविद जो गुणहीन तो मूढ महाना । औ तनहीन
तौ शून्य बताइय जो तनधारि तो घून समाना ॥ जो
विधि और निषेध बतावत तौवपु सत्य धरे अस ज्ञाना
संगल देखु विचारि सबै विधि सत्य असत्य न जात बखाना
१८० ॥ छन्द ॥ सात द्वीप नव खण्ड धरातल भरयो जीव
बहु काया है । सात पताल जीव बहु वासी स्मृति वेद
लखाया है ॥ सातहु स्वर्गबसत सरजीवहि आगम ज्ञानिन
गाया है । संगल पांच तत्त्वहु जीवहि जीव विना भ्रम
माया है १८१ बाण और निरबाण बखानैराम धाम दर-
शाया है । उत्तम पुरुष प्रकृति अत तिहुं पुर प्रगट जीव
पद पाया है ॥ जीव विहाय मृतक जडरूपी को धौं काहि
बनाया है । संगल जीव प्रसर अबिनाशी जल थल आपु
समाया है १८२ जीव ईश युत ब्रह्म बखानै सामवेद गुचि
बानी है । आनहु बेद अर्थ यह जीवहि पूरण पुरुष अमा-
नी है ॥ जोकोइ जीव आपको जानै सो परि पूरण ज्ञानी
है । संगल जिन आतम निज खोज्यो माया तिनहिं डेरा-
नी है १८३ दाता मुक्ति बसत को का धन मुक्ति देत मुनि
काको है । फूटो पत्तन गन्द पर बंधन जीव अलख जग गा-
को है ॥ दुखी सुखी नहिं अंधनाधिरो चन्दन अचला थाको
है । संगलस्वयं सिद्ध नितआतम बंधन मोचन जाको है १८४
जितै देखिये तित भरिपूरो कोई दिशान खाली है । लीला
आपु लखैया आपुहिं बातहु पुरुष काहु आली है ॥ जह

चैतन्य भाव भव भारी भाखा को ज्ञात साखी है। मंगल माल धारिकै साखी कर्त्ताकर्म सख्यारी है १८५॥ सवैया॥ संपति के हित दंभ दिखावत संपति के हित जीव सतावै। संपति कारण भेद बनावत संपति कारण देह गरावै॥ संपति कारण सेवक साहिब संपति कारण मौन लखावै। मंगल संपति के बश डोलत बोलत शब्द मनोहर भावै १८६ आपनहीं मग शुद्ध प्रचारत आपनही मग वक्र सिधारै। आपनहीं उपदेश बतावत आपनही उपदेश निवारै॥ आपनही अधि आतम ध्यावत आपनहीं गतिहीन पुकारै। मंगल आपनही गजानन आपुतो दूसर कौन पसारै १८७ आपन जानत ब्रह्म बखानत आगम वेद पुराण विचारी। भूलबड़ी भवजाल भ्रमैनित दंभ कि पद्धति दीन्ह प्रचारी॥ सत्य असत्य न मानत तूलन अघन आजन जात पछारी। मंगल शुद्ध स्वरूप न ध्यावत वंधन मुक्ति कि वाणि नियारी १८८ वंधन है सुख इंद्रिनको भव सोपहै नीरस गोकुल जोई। भाव स्वभाव प्रभावन जानत सेवत देवनखारथहोई॥ जो दुविधा अपनी विभयी खहि त्यागत जीव कृतारथ कोई। मंगल ब्रह्म विचार न भाषिय आपत दूसर रूप कथोई १८९ जोप्रभुज्योति स्वरूपअरैमन तौनहिं तत्त्वसिखी करि मानिय। शक्ति अनंत नजानि सकै बुधि ज्ञान विवेक विधान प्रमानिय॥ संतकहैं प्रभदृष्टि न आवत मूढन के सँग रचक गानिय। मंगलभूल मिटै न विनागुरु कोटिक ग्रंथ सुनो जो बखानिय १९० देह धरै मनुजादि विषय रस देह धरै मनमोह दुरावै। देह धरै दुविधा बश भासिक देहधरै शुचि आतम पावै॥ देहधरै खलरूप कहावत देहधरै मुनि पद्धति भावै। मंगल देहविना सिगरो भ्रम वंधन सोपन सो मन आवै १९१ सार असार विचार न आवत त्यागत देह किधौ अनुमानी। जानत जीवन जानत है मन यातन हीन दुविधि सुजानी॥ काल कलेवर लोक हटावत हीन शरीर न जानत प्रानी। मंगल जीवन धन्य धरातल वंधन मुक्ति द-

तावत वानी १९२ आपन बोध प्रयोग करै मन औरन को कमज्ञान सिखावै। गाठरिया तक की उर मंदिर बाहिर उज्ज्वलवस्त्र दिखावै॥ ज्ञानविवेक के रंगरँगोनहिं कातन में रज चन्दन लावै। मंगल सत्य वचैन सुनै दान ऐसे नहीं अपनो पद पावै १९३ आयुघटै अति श्वासन शोचत नोह मयी सतवार लगाहै। कोटिन मारग या भवलें मन क्यों तिनको सत तू अवगाहै॥ अन्ध कि दीपक राखि बिलोकत नैनन वार हिये उसगा है। मंगल यों सब आतम ज्ञान है जानत सन्त असंत खगाहै १९४ पूरव के हालदंड सभोग वतावत हैं सबलोग सुजाना। ब्रह्म प्रभा किधौं ब्रह्म बिभाग को जन्म सबै छल नाहिं बखाना॥ जो प्रभु चाहत सोछत जीवहि लागत है यह अद्भुत ज्ञाना। मंगल पूरव पश्चिम को तजि कौशिय ध्यान सदा भगवाना १९५ राम कथा सुनि नींद सतावत वाम कथा श्रुति देत अभागा। पारस को तजि पाथरमानि गहैकर कांच सचिक्कनलागा॥ ज्ञानिन के ढिग सूल बतावत है व्यसनी सँगही अनुरागा। मंगल जाति कुजाति सुनानिय ऊपर हंस जो अंतर कागा १९६ मान महाधन रूप सुमानं सुवर्ण महाजद जीव समानो। पौरुष सोहनो आत्मलगर्व स्वपंथ को पक्ष अहंकृत भानो॥ फूलो फिरै खल लोभन वीथिन ज्ञानिन के तट जात लजानो।मंगल रामन ध्यावत जोनर सोइ महा जड़ जी अनुसानो १९७॥ झूलना॥ जर रूपको विस्तार है सो पुरुषप्रकृति विचार है नमतत्व को पुनि सार है जानै जो सज्जन साय है। माया जो अगम अपार है बहु भांति त्रिगुर विहार है करनी करम करतार है सोई जो पूरण भाय है। दशतीनि सुर अधिकार है नर नाग पशु नभचार है कमि अमित रूप व्यकार है भय सकल तन सो नशाय है। मंगल बखानत सार है अचर सबन के पार है सो आतमा नरिधार है यकभाव जोन द्विभाव है १९८ जो घान अचर वाम को रसना बिना गुण गाय सो आतम प्रगट दरशाय

जो दृढ़ सुमति के आधीन है। भूले न माया जाल सो देखै सबी जग ख्याल सो करि योग विधि कछु काल सो निज आतमामें लीनहै॥ सबकोन यहउपदेशियै उरज्ञान दीपक लेसियै चौन्द्रिय जिदेशी देशियै तप जाप रत कि मलीन है। मंगल चुपकि घर बैठियै शुचि ज्ञान मंदिर पैठियै मति शुद्ध बिनु नहिं होत यह व्रत परमहंस प्रवीन है १९९ सवैया॥ श्रीमुनि व्यास पुराण किये सब द्वापरमें कबिकोविद गावैं। सत्ययुगादिकमेन पुराण कथा इतिहास मनुष्य बतावैं॥ तौ द्विजराज पुराण बिनामृत कर्म कहौ किमि लोग करावैं। मंगल अद्भुत दंत कथा नहिं बूझनहार के बैनन भावैं २०० देखिय दृष्टि पसारि दशौ दिशि नश्वर ही सबु देत दिखाई। जो अबिनाश स्वरूप न ताकरहै सब में गति शब्द सुनाई॥ मौन रहौ अब और कहौ जनि ठौरन ठौरबड़ीप्रभुताई। मंगलआपन आपु न जानतसोजत ईश्वर है अधमाई २०१ ब्रह्म विहाय न देखिय कारण कारण रूप बिचारिय माया। माया बिहीन न ब्रह्म बिचारक जानत ज्ञान धनी शुचि काया॥ दोउन में नहिं अन्तर भाषत कोविद ज्यों तरु औ तरु छाया। मंगल बूझि परै न बिना गुरु सोउ मिलै न दुराय दुराया २०२ कैतिक कल्प गये भव भ्रामिक आपन धाम न पाव सुखासन। योनि कुयोनि सुयोनि फिरयो अब ऊरध कौ पकरै मन आसन॥ जानि न जात गली निज ग्राम कि सत्य असत्य कि वाणि दुरासन। मंगल राम कथा कछु जानत मानत हैं नहिं पूरण वासन २०३ पाषँडको तन भेष बनावत बातन में निज बोध करावै। आपनि बुद्धि भयो न कभौं गुरु आननको नित सीख सिखावै॥ मोह भयी मतिहै अपनी बहु लोगनको निरमोह बनावै। मंगल ढोल समान कहौ तेहि शब्द बड़ो उरखोल लखावै २०४ जाकहँ नेकहुज्ञान प्रबोधहै सो न मिलै हित सों हितकारी। द्वैतकि बुद्धि लगी मन मूरखको निरवाण बिनास बिचारी॥ संभ्रम बोध दुवौ उरमें अपने चित कीन

कहैबिधिचारी। मंगल भोरन साधुबखानियजे नहिं जीवन लेत उभारी २०५ रामनहो तब रामनपैं सबहैप्रहलादकथा परमाना। जानियराम अनादि कृपानिधि वेदपुराणविवेक बखाना॥ रामसुये नित रामरहै अब लोगनके शुचि आवत ध्याना। मंगल बृक्ष बडी लघुनाहिन आगिल पाछिल होत समाना २०६ विष्णु सतोगुण रूप वखानत होय चिविक्रम यज्ञ नशायो। नाहिं सतोगुण में छल चाहिय नारद को कपिरूप बनायो॥ वाम जलंधर को हत घालि वधो सुर भानु सुधा जब पायो। मंगल का कहिये रचिये नृप सत्य असत्य न जात गनायो २०७ शंकर रूप तमोगुण गावत योग समाधि बसै बकलाला। ध्यानत ज्ञानसुधी समता अरु भेघ विवेक धरै गलमाला॥ देत अभिप्रियदान सबै भवदान दया विधुको प्रतिपाला। मंगल कौन रहो दुविधा यह सत्यक तामस में छलख्याला २०८ जो पुरुषोत्तम सो बसुभानु है घाम समान गुणौ त्यहि माया। घाम विपर्ययि देखि परै बिनु घास न पूषण को लखिपाया॥ सूरज हीन न घाम विलोकिय जो घन मध्य तौ दोउ छपाया। मंगल सो भ्रम मोह कहौ ज्यहिजीव सदृष्टि निरच्छ बनाया २०९ ज्यों जलमें चिकनाहट देखिय कोटि मये नहिं आवत हाथै। त्यौं यहजीव विहाय शरीरन नैन विलोकिय ज्ञान कि गाथै॥ ब्रह्म अपूरब वस्तु न भाषिय मानिय सांचुन झूठन साथै। मंगलतुकि विमूढ बडो बदहिनाथ बखानत जानि अनाथै २१० ज्ञान कहै सबमें हरि भापत ज्ञान कहै सबही विधि न्यारा। शून्य समान दई उपमा अबबोध भया कि अबोध विचारा॥ नाक अहै जड चेतन नाहिन ह्वांवह ते तन चेतन धारा। मंगलज्ञान गुणे उरमें भ्रम ज्ञान विहीन महा अँधियारा २११ ॥ कवित्त ॥ मुसल्मान मे चून बतावै हिन्दूकहै अनूपा है। दोनौं थके गोपते भाई काया किसी न निरूपा है॥ चित्र विचित्र कहै गुनागुं मध्यमें छांह कि धूपा है। मंगल है कहने की नाही

रूपविना बहुरूपा है २१२ वर्दे कबीर कमल में संपुट सत्य पुरुष अनमाया है। सो विज्ञान रूपधौं तत्पद चतुर महा मति गाया है॥ सत्य लोकमें शुद्ध सतोगुण असिपद सोन कहाया है। जहँ लघु रूपहोय नहिं असिपद संगल रूप न आया है २१३ त्यहि थल बसत हंस बहुतेरे दरशि परसि सुख पातेहैं। अमृत भये पुरुष अरु नारी उर अनुराग बढ़ाते हैं॥ सत्यनाम माठक तहँसोहै पापरूप नहिँ जातेहैं। संगल तीन होय बहु असिपद पचा पचा लखाते हैं २१४ हंस हंसिनी द्विविधि बतावें निज निज सुख आनन्दे हैं। भिन्न भिन्न गृह सकल विलासी पुरुष चरण नित वन्देहैं॥ क्षुधा विवश अमृत आहारी माया मोह निकन्दे है। संगल अभय वपुष जीवन को क्योंकरि कहत स्वछन्दे हैं २१५ कहत कबीर पाय अनुशासन हम जगजीव चिताते हैं। पलटि जाय भव पथा मनोहर ताकहँ सुरुचि सुनाते हैं॥ विधि निषेध को दाता ठहरा सुखसागर सब माते हैं। संगल तत्पदहीयह कहिये असिपद कहां लखाते हैं २१६ जहँ लगि सुख दुख रूप अरूपा ज्ञान विवेक बतावे जू। लोक अलोक हंस और हंसिनि अमृत विपद दशावेजू॥ तईलघु माया मोह बखानिय क्यों अपनेमन भावेजू। संगल समुझि बूझि गहु सांची द्विविधा ध्यान न आवेजू २१७ सत्य असत्य लोक दोउ कहिये दुविधा भ्रम विज्ञानी है। सत्य लोक में बसत हंस सब काग असत्य प्रमानी है॥ जीवहि खात काल यमरूपी जो पुरुषोत्तम ज्ञानी है। संगल सदा दुचित की बातनी अपनी अपनी मानी है २१८ शब्द मृदंग बांधि यमराना तुरत नरक में डारा है। रोवत शब्द नर्क में बहुविधि पुरुष कुसुम शिर धारा है॥ तब कबीर करि महा परिश्रम शब्दहि जाय उबारा है। संगलसुजन विवेकीदेखें सत्यअसत्य विचाराहै २१९ एक नसत रजतमके आगे शुद्ध सतोगुण जानाहै। एकन जोति आदि करि गाई एकान मर्णवबखा-

ना है ॥ एकन बद्यो पुरुष अविनाशी द्वियाजीव- परवाना है। मंगल एक शून्य मद अटके सत्य असत्य गुमाना है २२० सवैया ॥ एक विराट स्वरूप बदै यक अक्षर में लव लाय रहे हैं। एक निरक्षर रूप बखानत एक समाधि समान गहे हैं ॥ शक्ति हि एक बदैं शिव रूपहि विष्णुमयी यक योग दृहे हैं। मंगल एक बदैं दश रूपहि सत्य असत्य दुवौ निवहे हैं २२१ एक कहैं जगदादि अनादि महा भ्रम में यक चौविस गावैं। एक लगे सर्वांग विचारहि एक सुरोदय ज्ञान बतावैं ॥ ज्योतिषको यक सार बतावत एक, ते जीवनि रूप लखावैं। मंगल एक कहै सब ठामन आपुन आपन में चित लावैं २२२ एकभनै हरि रूप मनोहर एक अरूप गुणौंचित माहीं। एक अकथ्य बताय कहैं फिरएक कहैं अज जन्मत आहीं ॥ एक बदैं हमहीं परमातम एकते आपहि जानत नाहीं। मंगल नाहिन जानि सकै बुधता कहँ खोजत मूरख जाहीं २२३ नाकार रूप अरूप बदै मुनि धाम अधामकहैं कवि ज्ञानी। द्वैतअहै सब ठामन ठामहिं, देत अदेत किये रचिमानी ॥ पण्डित नाहिन मूरख निर्गुण औनहिं सगुण मानअसानी। मंगलदेखु विचारि हृदय निजता कहु लोग कथैं अनुमानी २२४ जायत बास करै परमातम वायल भानु निशाकर नाहीं। वाणि विधानन वेदकितेबन ज्ञान विवेकन हंस लखाहीं॥चेतन बुद्धिनद्वैमन चित्त अहंकृत औ अनुमान न ताही। मंगल वाधुल जाइ न आवत वुन्दसमुद्रहि जाइ समाहीं २२५ देवन को न स्वभाव लिये प्रभु दैत्यन की नहिं पद्धति लेखी। नाग मनुष्यन कीट पतंगनहीं खग खेचर वानि विशेखी ॥ तत्वविवेक नहीं गुण तीनिहु ना अजपा सजपाप्रतिदेखी। मंगल के बल आप न दूसर सो किमि गावत भूतल रेखी २२६ योग किये सु वियोगहि आवत राग विहीन सुरागहि सोहै। कर्म प्रचारक कर्मन बंधित धर्मनते अनुप्रास विमोहै ॥ ज्ञानिन के अनुमान लगै अरु ध्यानिन के उर मूरति,

जो है। मंगल यज्ञ सिखी सुख सोहत सत्य असत्यदुवौयका कोहै २२७ ज्यों वलया छत में नहिं आदि न अंत बखानि सकै कवि कोई। उत्तर दच्छिणता सधि नाहिंन क्यों भुव धाम कहेदृढ़ होई॥ कोटिन बारभ्रमै चहुं ओर निसीम-न पाय सकै दुख जोई। मंगल बैठि रह्यौ अपने घर आदि अनादिन जातकयोई २२८ रामनहैं बिनु राम रमैं नहिं कामन सो बिनु काम न जावै। रूप नहीं बिनु रूप को गावत भूपन है ता गजा को कहावै॥सिद्धिनहै बिनु सिद्धि कि साधक छ्द्धिन है तन क्यों बढ़िजावै। मंगल ज्ञान गहै दृढ़ कै फिरि पूछि बताइ चुपाइ चुपावै २२९ ज्यों यक नाक कटाय बनैमुनि बह्मकि मूरति नैन लखावै। आनन्द सूदन कै गुरुता कह सोह भयो मन में पछितावैं॥ सत्य असत्य न भाषि सकैं नभ की दिष्षि तर्जनि आपु उठावैं। मंगल त्यों अब आपन हाल जो लोग कहै सो कथैं औ कथावैं २३० मच्छ कहे भ्रम कच्छ कहे दुख सूकर औ नरसिंह न भावैं। वामनमैंछल क्यों भृगुनन्दन क्रोध सुराम अगम्य गनावैं॥ श्याम बदे रस बौध भगे चस काल्कि कथे दुबिधा न दुरावैं। मंगल सत्य दशौ अवतार सु सून्यते हैं किन वांक भ्रमावैं २३१ देखि विपरीत निकेत कमाल को आपन चित्त करै अनुमाना। कोअसजीव जो याहि बना-वत आपुहि आपुभयो निरमाना॥ भूमि अकाश बिलोकि तथा बुध जैन बदैं कि अनादि अजाना। मंगल क्यों उनको समुझावत अंध सुरंगति क्यों पहिचाना २३२ कर्मन को फलदायक नाहिंन तौ फिरि कर्म वृथा जगमाहीं। जोपै कहौ फल कर्मको कर्महिं देव तणीवहिहैं सब ठाहीं॥ तौ नहिंज्ञान अज्ञानबदैंव्यभिचारि न आपनिनाक कटाहीं। मंगल जौन मही पति तौ किमि इंतक फांसि चढ़ै मरि जाहीं २३३ आपन धर्म जो त्यागि गहै परताकर बात न मानिय भाई। ज्यों तजि आपन थान गड़ा तिमि सो परित्यागि के आन गहाई॥ नारि पतिटत त्यागि

यथारत ज्ञानहिं तो फिरि सत्य गमाई। मंगल आपन धर्म सुधन्य अपार विधान गहे ममताई २३४ सार असार विचार भली विधि कीजिय कर्म सुकर्म विकर्मैं। सज्जन सम्पति ज्ञान विवेक गहै शुचि धर्म स्वधर्म विधर्मैं॥ मूढ़ मतान सुनैं कबहूं न कुपंथ कुघात मे मानिय मर्मैं। मंगल संत समाज विना बुधि उत्तम होत न कोटिन भर्मै २३५ सूरख को नहिं बीज गहाइय पात दिखाय के फूल लखाइय। शाख चिन्हाय बतावै फलै त्यहि को पुनि स्वाद अस्वाद चखाइय॥ मूल सुभाइ के बीज कथा कहि ऊपर के सब अंग दुराइय। केवल बीज दृढ़ाइय मंगल तौलनु उत्तम ज्ञान गुनाइय २३६ तीरथ औ व्रत नेम अचार सबै करि के जब थाक गुमानी। ढूंढत है तवसार असारहि ध्यावत राम सदा रतिमानी॥ मोह दुराय भली गहि ज्ञान कि मुक्ति पदारथ वांचत ज्ञानी। मंगल मुक्ति अमुक्ति दुऔ तजि आपन को तब बूझत प्रानी २३७ जासन इंद्रिन को सुख होवत तासन प्रीति भली मन जोरै। जानन या सम आनन दूसर प्रेम भली मिलि ज्ञानहिं तोरै॥ जाअभु ने तन यो मन बुद्धि दियो त्यहिके सँग लावत खोरै। मंगल ताहिते अन्त समय दुख मध्य महा अघमें चित चोरै २३८ काम विहारमें भो मन लज्जित केतिक बार अजौं न तजै रे। सादक तामदकी उतरे पछिताय बहोरि सुराहि सजै रे॥ चन्द्र कुबेर सुरर्षि सकौशिक औ न कथा ते लजै रे। मंगल का कहिये मन तोसन भोग कि चाह न राम भजै रे २३९ क्रोध कि आगि जरो बहुधा पुनि ताहितमें अनहेत न ठानै। राम महेश धनुर्धरकी गति जानि न तू उर ज्ञानहिं आनै॥ या खलके सँग होत अधोगति लांछनतो न बचै अनुमानै। मंगल शोचि अजौं तजि क्रोधहि ध्यान स्वरूपहिको कर ध्यानैं २४० त्यागिके लोभ दुरास दुधा भजि ले निज आतम आनँद खानी। वालि सुयोधन औ नगकी गति बूझि परै न गहै कछु हानी॥ पण्डित

ज्ञान निधान तपेश्वर लोभहि छेरिहरैं सब प्रानी। मंगल
क्यों सशुभैंश्रपनीमति अस्थिकि सुख चचोरत स्वानी२४१
मोहमहा रिपु या तनमें निवसै न बिलोकत मोमनकूरा।
आपनि आपनि भाखतहै सुत नारि सबै भवधाम अधूरा॥
अन्त न आपनि देह बिचारिय संगिनि तौं यह झूठ गरू-
रा। मंगल चेति अजौं भजु आतम राम प्रताप सदा भरि
पूरा २४२ एकहि ईश्वर सब जग देखिय एकहि शक्ति ब-
नावन हारी। एकहि सूर प्रकाश करै दिन एक निशा
कर रैनि उज्यारी॥ एकहि काल भरा सब ठामन एकहि
नाम कि पद्धति प्यारी। एकहि रूप अरूप सो एकहि
मंगल दूसर कौन प्रचारी२४३ ॥ कुण्डलिया॥ मायाब्रह्म
बिचारिये ईश्वर जीव प्रमान। चन्द्र सूर दिन रैनि बुध
अबुध अचेत न ज्ञान॥ अबुध अचेतन ज्ञान पाप अरु पुण्य
कहावै॥ आयागमन बिवेक मोह जीवन मृतु भावै॥ मंगल
सेवक साह निधन धनवन्त बनाया। देव दैत्य गुरु शिष्य
दुबिधि रचि राखे माया २४४ कीन्हें त्रैगुण देव श्रुति
तीनि काल गदमान। त्रैसन्ध्या त्रैलोक पुनि तत्त्वमसी त्रै-
ज्ञान॥ तत्त्वजसी त्रैज्ञान रामत्रैरूप लखावा। तीनिवरण
ओंकार तीनि तापन तन तावा॥ मंगल त्रैसिद्धान्त तीनि
करि काव्यहि लीन्हें। तीनि देह करि जीव बिनाशत
आतम कीन्हें २४५ ॥ षटपद॥ चारि दश विस्तार चारि
आश्रम श्रुति चारी। चारि किये उपवेद तत्त्व चारिय
निरधारी॥ चारि परण शुभ धर्म चारि युग मुक्ति बखानी
साधन चारि बिचारि अवस्था दिशि हरि मानी॥ अरु
बिरञ्चिके चारि मुख मुनि सनकादिक चारि गुन। शुचि
मंगल मनगति चारिकहि चारि चतुर ब्रजअध्य भजु२४६
पांच तत्त्व निरधार कोप पुनि पांच गनाये। ज्ञानेन्द्रिय
बदु पांच प्राण कर्मेन्द्रिय गाये॥ सोहादिक पुनि पांच
अवस्था पांच बखानी। वर्ण वर्ग लखु पांच ध्याय सुर रास
सुमानी॥ पुनि पंच बदन शिव रूप कहि जो शैवी ध्यावत

सहित। मंगल विचारु सब पंच मति माया मोह समान चित २४७ शिव सुतमुख पटलोक राग पटमासु व्यकारा वेद अंग पट होत सरस पट आगम धारा॥ पटपद शब्द अभंग यथा पटदर्शी जानिय। त्रिम वारहिं पटकर्म दिशा पट सुमति वखानिय॥ मदु प्रीति भांति पट सुकुल पट पट समाधि सूना जगत। पुनि पट चक्रनको मांहि परिजरधको अधको उगत २४८ सप्तद्वीप विस्तार स्वर्गलखु सप्त सुहाये। सप्त सिन्धुआवर्त सप्त पाताल वनाये॥ सप्तक्षपय परिवार सप्त दिन भूमि कहैं सन। सप्तपुरी विख्यात सप्तरामायण है अत्र॥ अरु राज्य अंग सुर युद्ध भगि सप्त वायु सुर पुर कहिय। सब ईति भीति अरु अप्सरा सप्तावर्णन सुख लहिय २४९ अष्टकुरी पन्ननारि अष्टवसु कहिय सुजाना। अष्ट दिशा गृह होत अष्ट भैरव अनुमाना॥ अष्ट प्रहर दिन रैनि धात पुनि अष्ट वतावै। व्रत गणाम अष्टांग अष्ट सिधि वारतम लावै॥ अरु साधि योग अष्टांग बुध वैठि रहत समधीय ह्वै। कव सधिर होत मनमोद ते मङ्गलति गावत नहै २५० देह द्वार नव जानु भूमि नवखण्ड विचारिय। नव नाडी विख्यात रत्न नव गृह नव धारिय॥ नव रस विदित जहान काव्य कवि जाहिं भुलाने। निधि नव वस्य कुवेर सन्त जन त्यहि न लुभाने॥ करि भक्ति भांति नव भगनुध निज आतमको उद्धरत। बिनु बोध भये मंगल सुमति अध उरध डगमग फिरत २५१ दशम शून्य विस्तार अङ्कयुत दशगुण होई। अङ्क रहित भ्रम रूप वरणि सक विबुध न कोई॥ तहां पुरुष सिद्धान्त कहत अविचल निर्वानी। यों मोधै मन बुद्धि एक नहिं शून्य प्रमानी॥ अरु तजि नवाङ्क भ्रमजाल सन शून्य स्वपद हेरै चतुर। ह्वै जाय शून्य मंगल कहौ पलटि कहेको भूंट फुर २५२ एकादश पुनि किये एक धरि शून्य सुधामा। द्वादशादि अधिकार यथाक्रम रचि अभिरामा॥ शत सहस्र लक्षादि किये विस्तृत संसारी। है सबको सिद्धान्त एक इत शून्य

सम्हारी॥ सो जानि चतुर तजि भूल भ्रम प्रथम शून्य पुनि एक गहि। द्वै तीनि चारि शर षट दिवस गज नव मंगल सुगम लहि २५३॥ सवैया॥ कोउ कहै नव भांति भजौ अब योग करौ गज अंग सोहावा। सातङ्ग स्वर्गके पार वदैं षटराग वदै शर तत्त्व लखावा॥ चारि सुयुक्ति दृढावत एक भयो गुण तीनि दुपच सुनावा। एक सनातन ब्रह्म बतावत मंगल शून्य कथा लव गावा २५४ शून्यबिना दृगगुणयन अङ्कन अङ्क बिना कछु शून्य प्रमाना। दोउन मे निरधार न देखिय क्यों अब भाखिय ज्ञान अजाना॥ शून्य विचारत नास्तिक होवत एक सुनावतद्वैत महाना। मंगल काहि बुझाइकहै अपनेसनको मनमेंअनुमाना २५५ पांचउ तत्त्व नशै गुण तीनिउं शब्द स्वरूप मिलैसो मकारा। नाशि मकार उकार मिलै नशि अर्द्ध उकार अकार विहारा॥ अर्द्ध अकार भयो पुनि शून्य सो पूरुष के तन वास विचारा। मंगल सो प्रभु आदि अनादि है दूसर ताहि न जाननहारा २५६ संत सबै अनुमानि वदैं अरुवेद कितेत्र थके गुणगाई। सो किमि जानि सकै खल तू मन भाखिअनेकन पंथकथाई॥ सत्यसबै न असत्य वखानियआपन आपहिते गति पाई। मंगल दूसर नेह अस्वारथ अद्भुत ज्ञानकथा सरसाई२५७ ज्ञानगुणो निरधारनहो अरुध्यान धरे नहिं देत दिखाई। पूजन में नहिं रूप विलोकिय तीरथमेंजलहीजलभाई॥ पाठनसे कविबाणि शरीरहितनाहिं सताव छुधा दुखदाई। मंगल मौनरहौ कृपने घर नामकहौ जो चहौ दृढताई २५८ जापि थके अज पा कितनेभङ्ग पूरक कुंभक रेचकथाके। शून्यबताइ थके खल केतिक एक बखानि थके श्रुतिशाके॥ ज्योति विचारिथके यकहै विधि शंभु गिरापति कतरमाके। मंगल थाक बाधाकथि केतिक अग्रन पाछे गहौ पदका के २५९ अग्रनहै जो विलोकु पछारिय आपु वहै नत भल काहाहै। देखत जोन स्वरूप न आंधर ज्ञान गुणौ अगुणोऽ

है अरु नाहिं के मध्य रहाहै। मंगल रूप अनूप अलौनहि है अरु नाहिं दुवौ न गहाहै २६० सिद्ध समाधि लगाइ रहे चुपि योगयती करि योग चुपाने। देव अदेव विचारि थके मुनि कोविद वेद विधान बखाने॥ गाइ चुपे कितने कवि उत्तम जंगम से बड बौध थकाने। मंगल जाहिन भाषिसके शिव ताहि लखावत पाषँड साने २६१ दृष्टि उठाय बिलोकिय जाहिशि ताहिशि में भरि पूरि रहाहै। रूप अनेक अपार स्वभाव न आनहिं आन विचार गहाहै॥ नाम चराचर भेदन भावत द्वैत अद्वैत विहाय कहा है। मंगल द्वैत अद्वैत कि आपु करावत है निज तंत्र लहाहै २६२ आपु बहै कमलासन औ शिव विष्णु बहै न द्वितीय विचारिय। सर्ग सहस्थिति नाश करै गुण तीनि बनाइ त्रिदेव प्रकारिय॥ आपु गुणै तर सत्य प्रकाशक दूसर कौन विनाश निहारिय। मंगल सो पुरुषोत्तम अद्भुत आपन चित्त स्वरूप सम्हारिय २६३ आपु बनावत पालत मारत दोषन है जिमि होत किसाना। खेतहिं जोति दिया शुचि बोवत जामत सोचि निकावत स्याना॥ पाकत काटत पीसत खावत दोष नहीं कछु वेद बखाना। मंगल जो नर काटि द्वितीयसु चोर सहाजनि मारिय प्राना २६४ एककहै जल पै महि ज्यौं बुध चोर के ऊपर होत सजाई। कोउ भणै ध्रुव अंड समान है घूमत है गणना ठहराई॥ एक कहै धनु पाट बिछी यक बादतहै अवनी दृढताई। मंगल गो अहि शीश धरे यक वायु गहे दुविधा न मिटाई २६५ एकन के मत भानु निशाकर देवबडे नित पूजन ठानें। एकन के चित लोक प्रकाशित रविर पूरण ज्ञान बखानें॥ टीम कहैं यक है नभ के यक अद्भुत कारण को अनुमाने। मंगल नैन बिलोकि न धानत ईश्वर की गति क्यों पहिचानें २६६ जाय छपै अस्ताचल सूर उदय उदया गिरिहोत प्रभातें। ५ गुणै महि उत्तर जाइ के प्रान्ति प्रकाशत आइ सो प्राते घूमत है महि सूरज डोलत होत दिवानिशि एक कै रातें

मगल भूल लखैउर आवत जानत को परमातम वातैं २६७। एकगुणो ग्रशि राज्ञग्रसैं सवदेव सहाय करैं तवग्राई। एक कहैं नहि मध्य दिनेश निशापति के रवि की परछाई॥ एक कुमाइ रहै अपने घर भापिकहैं हरिकी प्रभुताई। मंगलदेखत सोनहिं जानत क्यौं परमातम देतलखाई २६८ सत्य दयानिधि दृष्टिसमान विलोकत पालत साधु असाधु। कर्मवशी भव जीवन चेतत ऊपरभूमि अगम्य अगाधू॥ मेघ दियो जल ऊपरमें उपजाउ नहीं यक को अपराधू। मंगल कर्म स्वभावन कोफल दुःखग्रदुःख तरीनअगाधू२६९ राम वडे सव ठामवडे गुणग्राम वडेअगुणी पुनि सोई। लोक वडे शुभलोकवडे निरवाण वडे मुनिवाण कथोई॥ तत्ववडे सत सत्यवडे शुरुतत्ववडे लघतान वडोई। मंगल जो कछु भापि कहो यकआपु रम्यौ नहिं दूसर कोई २७० कोटिन आ-कृति भांडधरैरवि सन्मुख धूप परै तिन माहो। जो जसि आकृतितामधि सोतिमि भिन्न अभिन्न मिलै अरु नाहीं॥ त्योंगसमूरति है तसजीवउटेढ़ कुडौल सुडौल लखाहीं। मंगलअंतटरै भउनायक रूपन दूसरकी परछाहीं२७१ जेति कभांडधरै भरि नीरविभाकर सन्मुख जाइनिहारै। गोल त्रिकोण चतुर्भुज टेढ़में विंब प्रभानिधि एक प्रकारै॥ त्यौं चउखानि विराजत जीवसो एकहि भावक वीश पुकारै। मंगल अंतन द्वैत कछू इत विप्र चंडार क्रिया गुण धारै २७२ ब्राह्मण शूद्र इतैं निज भाव उतैकछु जातिन पांति अहैरै। वर्ण गुमान वृथा उरमें लघुता गुरुता शुभकर्म दहैरै॥ दोप कलेवरको नहिं जीवहि क्यौं भ्रम रूप अपार सहैरै। मंग-ल नीच कुलीन तुहीं वड़ सूरखसो जोद्वितीय कहैरै २७३ सूनु विरंचि के चारि भये यक ब्राह्मण क्षत्रिय दूसर गावैं। तीसर वैश्य शुशूद्र चतुर्थ महा अनुमान सुनैमन आवैं॥ ज्ञान विवेकके चक्षुविलोकत चारिउएकहि पिंड दृढ़ावैं। मंगल लोगन मानि लियो नत वर्ण सुएकहि अंत कहावैं २७४कर्म महीसुर कर्महिंक्षत्रियवैश्यउशूद्रजोकर्मप्रभाउ।

कर्म परित्यागि ज्ञान विवर्द्धत चारिक्रमें यक दुइ स्वभाज॥ बूझत शुद्ध स्वभाव हिये बस वर्ण विवेक नजानत काजा, मंगल आपनि भूल भ्रमावत नातर ब्राह्मण शूद्र अभाजा २७५ योगिवर्ने यक जंगम दूसर सेवड़ तीसर चौथ सन्यासी। पंचमहैं दुरवेश कहावत प्रथम ब्राह्मण शुद्धउदासी॥ आपन सारगकी मति भावत आपनहीं रसमें चित भासी। मंगल ओपटहू यकाठा रसहोइ अनूप अकथ्य प्रवासी २७६ कामिनि खानि समुद्रकि लोभके मोहकी धामबसैं मन सोई। क्रोधकि मूरति सूरतिद्रोहकिचौ ममता मद पूरण जोई॥ अंगविभूति जटा शिरपै मृगछाल कमंडल हस्तधरोई। मंगल साधुकि भीषम जानिय नाम पितामह पूतन कोई २७७ शिष्य करैं धन आशलगी मनमानकि पद्धतिचित्त निवासैं। पंथ चलावत वेद विवर्जित ज्ञान सुनावतहैं अनयासैं॥ मद्ध लखावत नैनसदा ज्यहिहेरि फिरै सुनि संत उदासैं। मंगल लाख लखै इनको घर भूठनके मुखमें किधौं भासैं २७८ बोहित पंथ भवार्णवमें बहु शिष्य चढ़ाय लिये सुखमानी। आपु नहींक निहार सखा भ्रम पंथ प्रभूत भरयो अभिमानी॥ दारुहै किधिं सध्यहि बूड़त सोइ बयारि उछालत पानी। मंगल भूल जहाज चढ़ी धनि बैठि रही अपने घरआनी २७९ लोकनि हारमिलैयुत बोहित तौ न लगी करिकै चतुराई। धाइन जाइ चढ़ा चिनबूझ जो पारते आवत लोग लुगाई॥ पूँछि तिन्हैं पुनि खेवकयांनि के हेरि सबै तन बोहित भाई। मंगल शुद्ध समाज चढ़ी गुरुदेव प्रताप लगी उहि घाई २८० शुद्ध अशुद्ध नरनारि नेवाज अंतर में अपने भ्रमभारी। आसनहूं उपदेशत हैं जनुधर्म विनाश कि मूरति धारी॥ एक सनातन ईश्वर मानत सो न मिलै अपने मतचारी। मंगल भा कहिये हरिदासन दंडप्रणाम करी सुखकारी २८१ वेद सदारि कहैं ऋग औ यजु साम अथर्वण धर्म पुराना। शारि किताब जबर इँजील कुरीतम रेतमु है फुरकाना॥ ब्राह्मण धा

वैश्य जु शूद्रऊ चारिहि वर्णकिये निरमाना। सैय्यद शेख जु मुगल पठान सो एकते चारि कि भूल कि ज्ञाना २८२ जातिन पांतिन वेद कितेबन पीरगुरू न मुरीद न चेला। होत भये मनुषौ किधौं आतम तादिन को मन अद्भुत खेला॥ जाबिधि बाढि गये नर भूतल ताबिधि बंधन मोघ प्रहेला। मंगल जाति किताब भये सबयुत्थ अनेक कि ठेल मठेला २८३ ज्योति दिखायके मोच्छ दृढ़ावत पावक तत्त्व न ब्रह्म अनादी। रेत पियाय बदैं गति एक सो वारि को तत्त्वकि मोच्छ प्रसादी॥ पंचजपाय के मुक्ति बतावत अच्छर रूपन सो अविवादी। मंगल मौन भली नबकौ अब वस्तु अकथ्य न दूसर बादी २८४ जो श्रुतिके विपरीत भयो कछु बौध स्वरूप गया अवतारी। विप्रन निंदक कीन्ह अपूजित को पुरुषोत्तम नाथि निहारी॥ थी जगनाथ सबै यक ठामहिं भोज जिमावत वेद बिसारी। मंगल निंदक कोउन भाषत एकादशी जहँ ठाढि पछारी २८५॥छंद॥ सेतबंध शिव दर्शन कीन्हे देह द्वारिका जारी है। बद्री उदर कुंडजल पीकर सकल व्याधि निरवारीहै॥ पुरुषोत्तम पुर भातखाइ के काशी करवा धारी है। मंगल मुंडप्रयाग मुडाया तदपिन आशा हारी है २८६ मक्के जाय करी हज अकबर सब गुनाह बखशाये हैं। करी जियारत जाइ मदीने करबला फिरि आयेहै॥ दबी क़ुरान बगल में भैया हाफ़िज बडे कहाये है। मंगल कबनि जात जो दिलमें हिरसौ हवा कुपायेहै २८७॥सवैया॥ श्रीजगदीश्वर तोहिं कोजानत आपनही गति जानिन पाई। आव कहां कहिंग्राम निकेत को जावकहां तजि काय सभाई॥ क्यों ठहरे इतको ठहराइसि ज्ञान अज्ञान कि बाणि सुनाई। मंगल जानिसकै अपनी गतितौ जनआपन धामहिं जाई २८८ मारग भूलिगयो मतिमें भ्रमपंथि भ्रमाय महा विकलाई। क्यों अपनो शुचि मारग पावत जाननहार मिले बिनु भाई॥ त्यों यहजीव विषयरस लंपट जात जिते

तितकी भ्रमताई। संगत संत सुजान सुमारग जानत हैं अरु देत बताई २८९ ॥ विष्णुपद ॥ हरि गति जानि सकत को भारी। माया पति अज अकर अनामय अलख देव असुरारी। नर तन धरै स्ववश करुणा कर लखत न विधि त्रिपुरारी ॥ मन भावित छल करत जगत प्रभु श्रुति मर्याद विचारी। धर्म सेतु जनहेतु चारि फल देनित करत सुखारी ॥ सुर मणि सुवन काक काया धरि सिय पग चोंच प्रहारी। कीन्ह महा अगमहा प्रभु नत बाधित ज्यों भौसारी ॥ बालि वध्यो परनारि निरत लखि भरो इन्द्र अकवारी। संगल कोजानत प्रभुकी गति तूभजु श्याम मुरारी २९० मन भूल्यो तबहिं कौन वितावै। प्रथम तोहिं इन्द्रीपति कहियत सेवक सम तू धावै। विषय भोग विष तुल्य बदत श्रुति सोअमृत करि पावै ॥ कुकुरलौं इत उत धावत है लाजनहीं उरआवै। मम कहनी सुख खानि सकल विधि सोतरहिं नेकन भावै ॥ कामादिक सुततोर प्रगट यह तिनकी संगनजावै। लखि अनीति पथ तजत सुमति मति अबुध कियौं मुद छावै ॥ लोकरीति परलोक मनोरथ दूनौ स्वकर नशावै। संगल अवते जानि सीप मम हरि आतम किन ध्यावै २९१ मन अपने मनदेखु विचारी। तजिवेगता व्यंगता गतिकी बैठीसथिर सुगधारी। जेखल सदा प्रभुसन बर्तत तिनहिं काहत हितकारी ॥ प्रीतम सुमति सुगति मुक्ति दायक त्यागत विषय प्रचारी। सुरत नात धाल अंतक पग जाइहि देखु निहारी ॥ तहँ तम हितुयहु गति दाता साखी होइ अगारी। सहा मोह सबजानि धर्म बिनु यमचर गहि कलवारी ॥ नर्कमेलि बाधिहहिं ताडन कोउन तहँ रखवारी। संगल शोचि यहै भजिलेकिन श्रीराधिका बिहारी २९२ यह संसार लखात असारा। केतिक धनी निधन सम विचरत अवन धनिक व्यवहारा। या संपति अधिकार दुख दारिद्र कितगा करिय विचारा ॥ महाराज गहि राज बंदिकिय दीनराज बैठारा। तास विभव दीनता यासकी

कोहि दिशिकरत बिहारा॥ पंडित शिर पिशाचिका लागी मूढ़पढ़ो गुणसारा। वामांडिल्ल बूढ़ता याकी मिटी न लेस प्रचारा॥ सतन अतन बिनुधाम श्रेय्युत होत सहज बहुहारा। मंगल भजु श्रीश्वास रास पदपावै सब सुख न्यारा २९३ आपु आपनो भूलभुलाना। ज्योंशाखामृगअन्न गहेकर बंदिमरो अनुमाना। तणत ताहि सोचैसो बँदिते नहिं आवत असज्ञाना॥ अरुजिमि श्वान दर्पणी मंदिर निजप्रति विंवभ्रमाना। भूंकिमरो हरिगिरो कूपनिमि गजरद मिनु पछिताना॥ तिमि यह जीव विषय माया वश मृपासत्य नहिंजाना। सर्वस खोइदयो बैरिनकर अंतसमय दुखसाना॥ अबहि सबेर चेति लखु आपुहिं मिटै सकल विष ठाना। मंगल सुमति सतोगुण प्रगटै जहि मगलक्ष भगवाना २९४ लोग कहत मनतू बड़ज्ञानी। मेरी जानि सहा मूरख तु बिषयक खल अभिमानी। बेद पुराण विवर्जित आमय ताहि चलत रुचिमानी॥ गुरुपंडित कवि संत बखानत काम क्रोध दुखदानी। तू तिनको संसर्ग समोदित करत सुखद चित आनी॥ क्षण क्षण भ्रमत फिरत भववीथिन जिमि भृंगी अज्ञानी। थिरन होत पल एक नीच तू विषय विवश छल सानी॥ करत विचार नीचवत हूत उत लखि तुहि लाज लजानी। मंगल बार बार कहतोसन भजु किन ब्रह्म अमानी २९५ मन सुनु सीख मनोहर मेरी। भ्रमत किमर्थ अनित्य जगत मह तजि दुविधा मति केरी। भजिले रामचरण सुखदायक होइ सुगति सुनु तेरी॥ अंत समय नातरु पछितैहै पाय त्रास यम केरी। मात पिता प्रिय तात मीत हित सकै न कोउ निबेरी॥ ज्ञानी गुणी मूढ़ पशु पक्षी देव दनुज बहु फेरी। काल वशी सबहीको भपिटै बदतबेद बुधटेरी॥ काम क्रोध मद लोभ मोह अरि रहे चहूं दिशि घेरी। मंगल ज्ञान खड़्गसों बधु किन करत कासु हित देरी २९६ सुनु मन तोहिं कहौं समुझाई। जो पूरण पदकी अभिलाषा तो भजिले सुर राई। सुनि लई

तिनकी भ्रमताई। मंगल संत सुजान सुमारग जानत हैं अरु देत बताई २८९ ॥ विष्णुपद ॥ हरि गति जानि सकत को भारी। माया पति अज अकर अनामय अलख देव असुरारी। नर तन धरै स्ववश करुणा कर लखत न विधि त्रिपुरारी ॥ मन भावित हित करत भगत प्रभु श्रुति मर्याद बिचारी। धर्म सेतु लगहेतु धारि फल दैनित करत सुखारी॥ सुर भयि सुवन काक माया धरि सिय पग चोंच प्रहारी। कीन्ह सहा अगमहा प्रभुवत बाधित ज्यौं भौसारी॥ बालि वध्यो परनारि निरत लखि भग्यो इन्द्र अकवारी। मंगल कोजानत प्रभुकी गति तू भजु श्याम सुरारी २९० मन भूल्यो त्वहिं कौन चितावै। प्रथम तोहिं इन्द्रीपति कहियत सेवक सम तू धावै। विषय भोग विष तुल्य बदत श्रुति सो अमृत करि पावै॥ कूकुरलौं इत उत धावत है लाजनहीं उरआवै। मम कहनी सुख खानि सकल विधि सो तनहिं नेकहु भावै॥ कामादिक सुततोर प्रगट यह तिनके संगलजावै। लखि अनीति पथ तजत सुमति नति अबुध किधौं सुद छावै॥ लोकरीति परलोक मनोरथ दूनौ स्वकर नशावै। मंगल अवते मानि सीप मम हरि आतम किन ध्यावै २९१ मन अपने मनदेखु बिचारी। तजिवेगत व्यंगता गतिकी बैठीसथिर गुणधारी। निखल सखा प्रभुसन वर्तत तिनहिं कहत हितकारी॥ प्रीतम सुमति सुगति शुचि दायक त्यागत विषय प्रचारी। सरज जात धाम अंतक वश जाइहि देखु निहारी॥ तहँ तुव हितू अरु गति दाता साखी होई अगारी। सहा मोह सबजानि धर्म बिनु यमचर गहि लखवारी॥ नर्कमेलि बाधिहि देताडन कोउन तहं रखवारी। मंगल शोचि यहै भजिलेकिन श्रीराधिका बिहारी २९२ यह संसार लखात असारा। केतिक धनी निधन सम बिचरत अधन धनिक व्यवहारा। या संपति यहिकार दुख दारिद कितगा करिय बिचारा॥ महाराज गहि राउ बंदिकिय दीनराज बैठारा। तासु विभव दीनता यासकौं

कोहि दिशिकरत विहारा॥ पंडित शिर पिशाचिका लागी सढ़पढ़ो गुणसारा। वापांडित्य मूढ़ता याकी मिटी न लेस प्रचारा॥ सतन अतन मिनुवाम ग्रहयुत होत सहज चढ़हारा। संगल भजु श्रीश्याम राम पदपावै सब सुखन्वारा २९३ आपु आपनी भूलभुलाना। ज्यौंशाखानंगअन्न गहिकर बंदियरो अनुमाना। तणत ताहि सोवैसो बंदितें नहिं आवत असज्ञाना॥ अरुजिमि श्वान दर्पणी मंदिर निजप्रति बिंबभ्रमाना। भुंकिमरो हरिगिरो कूपजिमि गजरद बिनु पछिताना॥ तिमि यह जीव विषय माया बश मृषासत्य नहिंजाना। सर्बस खोइदयो बैरिनकर अंतसमय दुखसाना॥ अबहि सबेर चेति लखु आपुहिं मिटै सकल बिष ठाना। संगल सुमति सतोगुण प्रगटै जेहि मगलक्ष भगवाना २९४ लोग कहत सनतू बड़ज्ञानी। मेरी जानि भक्षा मूरख तु विषयक खल अभिमानी। वेद पुराण विवर्जित ओपथ ताहि चलत रुचिमानी॥ गुरुपंडित कवि संत बखानत काम क्रोध दुखदानी। तू तिनको संसर्ग समोदित करत सुखद चित आनी॥ चण चण भ्रमत फिरत भववीथिन जिमि भंगी अज्ञानी। थिरन होत पल एक नीच तू विषय विवश कुल सानी॥ करत विचार नीचवत दूत उत लखि तुहि लाज लजानी। संगल बार बार कहतोमन भजु किन ब्रह्म अमानी २९५ मन सुनु सीख मनोहर मेरी। भ्रमत किमर्थ अनित्य जगत महं तजि दुविधा मति केरी। भजिले रामचरण सुखदायक होइ सुगति सुनु तेरी॥ अंत समय नातरु पछितैहै पाय चास यम केरा। मात पिता त्रिय तात मीत हितु सकै न कोउ निबेरी॥ ज्ञानी गुणी मूढ़ पशु पक्षी देव दनुज यहुं फेरी। काल बली सबहीको भषिहै बदतबेद बुधटेरी॥ काम क्रोध मद लोभ मोहअरि रहे चहुं दिशि घेरी। संगल ज्ञान खड़्गसों बधु किन करत कासु हित देरी २९६ सुनु मन तोहिं कहौं समुझाई। जो पूरण पदकी अभिलाषा तो भजिले सुरराई। शुलि लहै

अनयास वेद बुध बदत न आन उपाई ॥ चारि खानि था-
वर चर प्राणी रचि बिधि सृष्टि बनाई। तिनमहँ अति उ
त्तम नर देही सो लहि बार्स कदराई ॥ वै भव सुख समाज
जग जेतो अन्त संग नहिं जाई। कपट कि प्रीति प्रतीति
करतहै यह तेरी जड़ताई ॥ ताते तजि दुबिधा भ्रम सिगरे
अनभव शुभ उर लाई। मंगल ध्याउ युगुल पद हरिके जो
तिहुं काल सहाई २९७ हरि तजि फिरि पाछे पछितैहै।
काम क्रोध मद लोभ मोह वश तू कुपंथ चलि जैहै। अन्त
समय रवि पूत दूत सुनु अतिही त्रास दिखैहै॥ सुत दारा
आदिक सम्पति सब कोउ काम न ऐहै। तजि सुर धाम
कर्मवश अपने बास नर्कमें पैहै॥ ताते मानु सीष शुभ मेरी
जो हरिपद चित लैहै। सुयश ससौख्य रहै जीवन भरि
यमको दण्ड नसैहै॥ सोति हितू अपर को तेरो जो त्यहिं
सुमग चलैहै। मंगल सुधा सीख पीजे तू पीवत मृत्यु मिलै
है २९८ यक दिन मरण अहै तन जिनको। हरणाकुश हि-
रण्याच प्रबल जग है प्रसिद्ध छत तिनको। शूकर नरवे-
हरि शरीर धरि कीन्ह नाश पापिनको॥ रावण कुम्भक-
रण कंसादिक आन असुर कोटिनको। राम लक्ष्य तन
धरिचि छपानिधि हर्यो भार सापिनको॥ राम लषण
बलराम श्याम ज सुयश ख्याल भव इनको। ते तन त्यागि
गये निज धामहिं गनैको नर नारिनको॥ भीषम पाण्डव
प्रबल धनुर्द्धर अमरौ अन्य बलिनको। रहा न तन मंगल
भजिले हरि जीवन केतिक दिनको २९९ अलखगतिलखि
न परै भाई। अज अन्स्यो अनभव सम्भव भो अतन शरीर
रचाई॥ अमर मर्यो कर्तार अकर्ता ...
एक अनेक रूपसों देखा जल पय मांझ समाई। कारणही
जग बिनय सुनत है अचर हित हटाई॥ चरण हीन ते
पुर नापै कर बिनु सृष्टि उपाई। जिंग रहित सब लिंग
बनाये काल बिना वय पाई॥ सकल भांति बिपरीत देखि
यत पै बरणी नहिं जाई। मंगल नर्क स्वर्ग देहीको ।

दूनों ठाई ३०० तजुमन बिषय प्रसंग असारा। दुबिधाको मार्ग्गे यहि जगमें छल प्रपंच व्यवहारा। को सुख तोहिं मिलै इनके सँग मूरख बुधि न बिचारा॥ अबकों चूके छूक उर उठिहै पहुँचत यम दरबारा। करणी फल तोहिं नर्क मिलैगो बिनु आतम निरधारा॥ जे सांचे मगके पग धारी करत ज्ञान व्यापारा॥ तिनसों प्रीति रीति करु सांची वारै सुमति बिसारा। नीच छली सतसंग बिवर्जित परिहरु तिनको द्वारा। मंगल भजु आतम परमात्मा भुक्ति मुक्ति हौवारा ३०१ सुनुमनतू बिपरीत बिचारी। जो बिपताहि कहत जीवनदा अरिहितु देखु निहारी। काक बुद्धि बह बिषय बिष्ट नित मति बिनु होत दुखारी॥ ज्ञान पंथ जग जन्म नशावत तुही निरै अधिकारी। दिन मणि उदय लखत जग रथ्या जान उलूक अँध्यारी॥ गौरी सकल भूत सुख सोवत चंकद हि पति दुख भारी। धारि प्रकार चारि बिधिजानै चतुराश्रम नरनारी॥ प्रगट प्रताप दिखात ब्रह्म को चहुँदिशि ज्योति पसारी। मंगल मन तजि चाखि बिषय लखु ज्योतिहुं होइ सुखारी ३०२ कहत मनत नहिंकाल कहानी। यकसँग जन्म मरणमें दुबिधा बदत वेद बुधबानी। जासु प्रबलता बश पुर तीनों बुध अज गिरा भवानी॥ शोक सौख्य संयोग बियोगहि देत सबहि अनुमानी। को नर मूढ़ राम बन सेयो कृष्ण तजी रजधानी॥ वायु अग्नि यम इन्द्र मरुत शशि बन्दि परे जग जानी। जगजित शुम्भ निशुम्भ बधे रण श्री दुर्गा महरानी॥ मंगल दुख सुख काल बिवश ह्वै पावत भव सब प्रानी। तू मन त्यागि भूल भजिले हरि जो कृत काल किहानी ३०३ कैसी रे मति है मन तेरी। बिनु स्वारथ भरमत भव बीथिन कुपथ चलत मग हेरी। को सुख अन्त बन्त जगमें मन तजि दुबिधा बुधि केरी॥ मात तात प्रिय बन्धु तनय युत काल न सकत निबेरी। यमपुर कष्ट पाय पछितैहै मानु सीख शुचि मेरी॥ राम श्वास पद नलिन छोड़, अलि दिन निशि भूल गहेरी। मुक्ति पदा-

रघ शुभ पराग लह्यो कुसति कुगन्धि मिटेरी॥ आन उपाय जन्म कोटिक्रं लगि कर जग फेरा फेरी। मंगल सोच छोड़ नहिं कैसेउ बदत वेद बुधटेरी ३०४ ऐसोइ मह्म जीन भ्रम भाई। ज्यों शशिबिम्ब परो जल भीतर जल हलहलत लखाई। सूरज्योति जहँतहँ शिखरन महँ पैन गही करजाई। घटबहि रन्तर गँगन बिराजत कुम्भन शैन नसाई। जल तरंग बिवरण किमि कीजिय अद्भुत कथा सुनाई॥ परिपूरण पुराण पुरुषोत्तम तन प्रति रहा समाई। दरपण यथा बिम्ब परिपूरित तूरत रूप हेराई॥ तजि शरीर तिमिजीरन देखिय वा दूसर दोउ ठाई। मंगल प्रभु आतम सुखदायक तजि सुर ध्यान लगाई ३०५ राम नाम तजि काम न कोई। भूप रङ्कको हरिपुर सुनु मन कर्ता स्वर्ग बसोई। जे मद द्रव्य करत परपीडा दया शीलता खोई॥ ते यहि लोक सुखी बुध चाहिये नर्कबास ह्वां होई। पछितैहै पापी अन्यायी तजैं वेद मग सोई॥ कवि कोविद मुनिवर यह भाखत वेद पुराण लिखोई। राम भजे बिन पूत न ह्वै है बुध मूरख चित्त लोई॥ जिमि बिन जल न जीव जीवन जल यह संक्षिप्त कहोई। मंगल तजि भ्रम भूल ध्याव हरि लेहु मुक्ति मग टोई ३०६ तजि छल राम नाम भजिले मन। राम भजे पूरण सुख पावै नाश लहै सब पापनको गन। बिनु ध्याये हरिनाम मूढ़ सुनु को कहिहै यमके दूतन सन॥ कामी कुटिल दुष्ट दुर्जन जे धर्म रहित छल कुछात अपारन, तिन कर संग त्यागि गहि सुमतिहि कर जिन राम भजन साधारन॥ सकल पसार असार न भूलिय को रघ विकल फिरत निसिबासरन। कर्ता अरु दाता पालक हर सो प्रभु एक मोह निरवारन॥ जिमि कारण परिहरत मिटत जग सकल सदोष अदोष अमारन। मंगल त्यों ध्यावत जनपालक मिटत कलुष दुख सब बिस्तारन ३०७ जो मन राम भजन तू त्यागत विषय वासना जोरत है। ते स्वारथ परमारथ दोनों दोनों की गति खोवत है।

तोते अधम अपर को जगमें मोहनीद सुख सोवत हैरे॥ निज पद निज कर कुमति खड्ग हनि काटत पुनि कस रोवत हैरे। जानि बूझि मूरख अन्यायी क्यों विष सुधा मिलोवत हैरे॥ सब उपदेश मानु हित कारक आन पंथ कस टोवत हैरे। मन मालक शालक खल परि हरि विषयनिरत जड़ होवत हैरे॥ दुविधा दंभ त्यागि पांचौ जड क्योंन शरीर बिलोवत हैरे। मंगल मुक्ति पाव नहिं कर तव नर्क बीज क्यों बोवत हैरे ३०८ सनतू कर सिनकहनि हमारी। जेहि भेषज शरीर रुज बाढ़त पुनि त्यहि भष कुविचारी। पंडित चतुर साधु कवि सात्विक तजत जानि दुखकारी॥ चप नाशत जो अंजन लावत फिरि अंजत मति हारी। जाकर दण्ड अमित नित पावत ताहि बदत हितकारी॥ परिहरि कुटिल कुमग चलु शुभ मग पांच पचीस निहारी। गुरु ज्ञानी उपदेश श्रवणधरु सुनु यह सीख हमारी॥ विनशय पाप औघ यश जग महँ लहै प्रतिष्ठा भारी। मंगल अंत पाव निज पद को करि स्वासा रखवारी ३०९ तुम प्रभु सदा दीन सुखदाई। को दूसर ध्याइय विपदामें जो प्रभु होइ सहाई। प्रतिपालक दासन के श्रीहरि श्रुति पुराण यह गाई॥ मैं अति दीन मीन जल बिनु जिमि करिय कृपा सुरसाई। चिन्ता मोह छोह सब नाशै नहै बुद्धि थिरताई॥ तुव यश विशद रैनि दिन गावौं सब भ्रम तर्क बहाई। मिटै क्लेश अघ पुंजनशै ज्यहि पुनि न लहौं तन आई॥ प्रतिक्षण तुव पद ध्यान करत प्रभु मन महँ प्रीति दृढाई। मंगलपै दयालह्वै हरि गहौ सत्य शरणाई ३१० बिनु हरि भजन नमिटै व्यकारा। कोटि उपाय करै विपयक नर नानाग्रन्थ बिचारा। व्रत तीरथ संयमबहु कीन्हे होइ नहीं निरुवारा॥ यक त्रिपुण्ड शिर जटा बढाये बपप लगायँ छारा। विषयवासना नाशलहत नहिं अधिक अधिक विस्तारा॥ तू तजि के मन निज चतुराई ध्याउ सहि सातौरा। जाय व्यकार नशै भव सब पा——

को जानतमन मानत मूरखकरत विबुध निरधारा। मंगल तजि आपनि जड़ताई कच नित ज्ञान पसारा २११ वृथा जन्म खोवत वहि कामै। मिथ्या वकत फिरत बहु वीथिन बैठत दुष्ट समाजै। दोष लहत संसर्ग विवश ह्वै कसन मूढ़ तजि भाजै॥ सत्यसिन्धु करुणा निधि भजि किन ज्ञानगली नित गाजै। कपिपति तातपुत्र घर जहिते तोहिं बिलोकत लाजै॥ कर्म पास बंधन भव सुख दुख दोनों भांति अमाजै। मम उपदेश चलत मन मूरख सुखदुख संग विराजै॥ उत्तम धाम लहै परिपूरण मुक्ति निसान सुवाजै। मंगल के मन सत्य ज्ञान गहि पुनि न लोक यहि राजै २१२ कर्म प्रधान जगत सब कर्मी। कर्म प्रताप सुखत अपछत नर कर्म रहित को धर्मी। कोटि उपाय गहै दृढ़ता नहिं बदत धीर मति पर्मी॥ चतुर सुजान कर्मवश जग लखि त्यागत धर्म अधर्मी। परमातम पूरण अविनाशी त्यहि ध्यावत तजि भर्मी॥ जब विपरीत होत करणी तब होत न उद्यम वर्मी। राम बसे बन समरतज्यो हरि जानत बुध यह मर्मी॥ काल कर्म वश असि नर घातत ज्ञान बिना को चर्मी। मंगल तजि दुबिधा भजिले हरि जाकत कर्म कुकर्मी २१३ ऐसा जबलगि जाय सनेहा। जिमि कामिहि न नारि तजि भावत भवन रवन निज देहा। अरु जिमि दुखित चहत सम्पति नित खोजत गेह कुगेहा॥ चातक यथा चहत जल स्वातिहि पियत न बहु जल मेहा। अचिज पच्छि रैनि जिमि हेरत मित्र मानि मतएहा॥ इमि हरिभजन करिय निशि बासर भव भूल्यो हित केहा। निबहत परिपूरण हित प्रण मन सुयश दास भव तेहा॥ छल प्रपंच तजि प्रीति लगावै पावै पदन सँदेहा। मंगल मोह निशाकिन जगि भजु अज अव्यक्त निरेहा २१४ सत संगति सेइय चितलाई। संकट कोटिपरे नहिँ त्यागिय यहबुध युक्ति बताई। मति कीरति पावै या जगमें अंतदेश पुरनाई। लपण मूढ़ कुलहीन क्रोधमय कुबुधि होय नर भाई॥ सत संगति [illegible]

सकाल कुरताई ॥ विदित प्रसंग सदन वत या जग शुचि अरु अशुचि लखाई। तिमिग्राही शुभसंग कुसंगति पावत मति कुटिलाई ॥ चतुर सुजान त्यागि खल संगति सर्वनिज करत जलाई । मंगल भणत आदि अविनाशी दुविधा दोष वहाई ३१५ क्यों भूल्यो जगखेल असारा। जो देखत कालपत जो मन सहँ जहँ लगि विश्व पसारा । सो सब नाशवान सुनु शिषसम काम किन ज्ञान विचारा ॥ कूकुर लौं धावत दिशि चारौ भूकत द्वथा अगारा । राम भजन तजि सुगति न लहतुव खोजतपंथ अपारा ॥ सुनिवर कवि कोविद जो-वत सब हरिपद रज चैवारा । ताहि त्यागि भव सुख किमिलहरे यह मत मूढ़ हमारा ॥ आठ याम अंतर निज हेरत तजि द्वितीय आधारा । मंगल जुक्ति युक्तियह सहजे पाय होइ निरवारा ३१६ काल गति अगम अपार ल-खाय। जब त्रिलोक उपजे नहिँ सन्तौ नहिँ त्रिदेव सुख-दाय। तबहूं काल शून्यवत वर्तत देखौ ज्ञान हढ़ाय॥ महा प्रलय के पीछे बुधजन काल रूप रहिजाय। सुर नरनाग चराचर जेते कोउन सकत बताय ॥ काल कलेवा सब तन धारी वदत वेद समुदाय। जानि न जात काल को ईश्वर जानि सकत बुधगाय॥ त्यागि भूल दुविधा दुरारा सब भजु हरि नाम सभाय। मंगल काल रूप ते उबरै रहै अमीरस पाय ३१७ जीवहि अलख अनादि कहावै। जहँ देखौ तहँ जीव निवासी नहिँ द्वितीय चित आवै। पै नहिँ दृष्टि परत कौनहूं हात गयो न जाय न आवै॥ अध ऊरध दिशि विदिशि विराजै एक रूप छवि छावै। चारिखानि मधि आपु वसत है कोउ नही लखि पावै॥ मरै न जरै कटै नहिँ सूखै वृद्धि हानि को गावै। पूरण रूप काल गत नाहिन नर्क स्वर्ग को जावै॥ जो कदाचि बुधिनिर्मल साधू रंचक निगहि हढ़ावै। मंगल तौ सच्चिदानन्द सुख निज घर पाय लुभावै ३१८॥ सवैयाछंद ॥ या भवकी प्रभुता दुखदाबढ़ि जातकबौघटिजात सदाहै। दारुण क्रोधमबोध

को जानतमन मानत मूरखकरत विबुध निरधारा। मंगल तजि आपनि जड़ताई करु नित ज्ञान पसारा ३११ हथा जन्म खोवत क्यहि काजै। मिथ्या बकत फिरत बहु भीपिन बैठत दुष्ट समाजै। दोष लहत संसर्ग विवश ह्वै कसन मूढ़ तजि भाजै॥ सत्यसिन्धु करुणानिधि भजि किन ज्ञानगली नित गाजै। कपिपति तातपुत्र चर जिहिते तोहिं बिलोकत लाजै॥ कर्म पास बंधन अब सुख दुख दोनों भांति असाजै। मम उपदेश चलत मन मूरख सुखतुव संग विराजै॥ उत्तम धाम लहै परिपूरण मुक्ति निसान सुबाजै। मंगल के मन सत्य ज्ञान गहि पुनि न लोक यहि राजै ३१२ कर्म प्रधान जगत सब कर्मी। कर्म प्रताप सुकृत अघकृत नर कर्म रहित को धर्मी। कोटि उपाय गहै दृढ़ता नहिं बदत धीर मति मर्मी॥ चतुर सुजान कर्मवश जग लखि त्यागत धर्म अधर्मी। परमातम पूरण अविनाशी त्यहि ध्यावत तजि भर्मी॥ जब विपरीत होत करणी तब होत न उद्यम वर्मी। राम बसे बन समरतज्यो हरि जानत बुध यह मर्मी॥ काल कर्म वश असि धर घातत ज्ञान बिना को चर्मी। मंगल तजि दुविधा भजिले हरि जाहत कर्म कुकर्मी ३१३ ऐसा जबलगि जाय सनेहा। जिमि कामिहि न नारि तजि भावत भवन रवन निज देहा। अरु जिमि दुखित चहत संपति नित खोजत गेह कुगेहा॥ चातक यथा चहत जल स्वातिहि पियत न बहु जल मेहा। अचिर पक्षि रैनि जिमि हेरत मित्र मानि मतएहा॥ इमि हरिभजन करिय निशि बासर भव भूल्यो हित केहा। निबहत परिपूरण हित प्रण मन सुयश दास भव तेहा॥ छल प्रपंच तजि प्रीति लगावै पावै पदन सँदेहा। मंगल मोह निशाकिन जगि भज अन अव्यक्त निरेहा ३१४ सत संगति उद्दय चितलाई। संकट कोटिपरै नहिँ त्यागिय यहबुध युक्ति बताई। मति कीरति पावै या जगमें अंतदेव पुरजाई। कृपण मूढ़ कुलहीन क्रोधमय कुबुधि होय नर भाई॥ सत संगति परसत सत मगगहि तजत

सकल कुरताई ॥ विदित प्रसंग सदन वत या जग शुचि अरु अशुचि लखाई। तिमिग्राणी शुभसंग कुसंगति पावत मति कुटिलाई ॥ चतुर सुजान त्यागि खल संगति सर्वनिज करत लखाई। मंगल भनत आदि अविनाशी दुविधा दोष वहाई ३१५ क्यों भूल्यो जगतेल असारा। जो देखत काल्पत जो मन जहँ जहँ लगि विश्व पसारा। सो सब नाशवान सुनु शिपमस कारु किन ज्ञान बिचारा॥ कूकुर लौं धावत दिशि चारौ भूकत वृथा अगारा। राम भजन तजि सुगति न जइहव खोजतपंथ अपारा॥ मुनिवर कवि कोविद जोवत सब हरिपद रज नैनारा। ताहि त्यागि भव सुख किमिलह्हरे यह मत मूढ़ हमारा॥आठ याम आतम निज हेरत तजि द्वितीय आधारा। मंगल मुक्ति चुनियह सहजै पाय होइ निरवारा ३१६ काल गति अगम अपार लखाय। जब त्रिलोक उपजै नहिँ सन्तौ नहिँ त्रिदेव सुखदाय। तबहूं काल शून्यथल वर्तत देखौ ज्ञान दृढ़ाय॥ महा प्रलय के पीछे बुधजन काल रूप रहिजाय। सुर नरनाग चराचर जेते कोउन सकत बताय॥ काल कलेवा सब तन धारी वदत वेद समुदाय। जानि न जात काल को ईश्वर जानि सकत बुधगाय॥ त्यागि भूल दुविधा दुरास सब भजु हरि नाम सुभाय। मंगल काल रूप ते उबरै रहै अमीरस पाय ३१७ जीवहि अलख अनादि कहावै। जहँ देखौ तहँ जीव निवासी नहिँ द्वितीय चित भावै। पै नहिँ दृष्टि परत कौनहूं थल गयो न जाय न आवै॥ अध उरध दिशि विदिशि बिराजै एक रूप छबि छावै। चारिखानि मधि आपु बसत है कोउ नहीं लखि पावै॥ मरै न जरै कटै नहिँ सूखै वृद्धि हानि को गावै। पूरण रूप काल गत नाहिन नर्क स्वर्ग को जावै॥ जो कदाचि बुधिनिर्मल साधू रंचक निजहि दृढ़ावै। मंगल तौ सच्चिदानन्द सुख निज घर पाय लुभावै ३१८॥ सवैयाछंद ॥ या भवकी प्रभुता दुखदायदि जातकबौघटिजात सदाहै। दारुण क्रोधप्रबोध

न सीतको संपतिको मद मोह यदाहै॥ ज्ञान सुधर्म सु-
कारग आदर कोविद औ कवि कोहु तदा है। मंगल,
देखु बिचारिहिये सब देवत जानत वेदवदाहै ३१९ आयु
अमाल गमावत तू भड ब्यावतहै नहिं राम कृपाला।
कोटिऊद्रव्यदिये जणएकरहै नहिंजीव न आवत काला॥
यों दिन रैन वृथा बकवाद सें खोवतहै विषयी मतवाला।
मंगल चेत बितीतत आयुष को हितु संग चलै भ्रमजाला
३२० त्यागि सबै पितु मातु सहोदर पुत्र कलत्र सुखासन
बासा। मुण्ड मुडाय बिराग लियो चलि संत समागम
कीन्ह निवासा॥ तीरथ औ व्रत आसन साधन आतप
शीत सहो गत त्रासा। मंगल लोभ न जीत सकोधन धाम
नसाय सही परिहासा ३२१ पुत्र कलत्र सबै परिवार जो
देखतहै निसि लोग बनाहू। आपन/आपन काम लगे सब
को हितुता रिपुता निरधारू॥ फूटि चलै निज स्वारथ
पायन संग करैं फिरि को दुख भारू। मंगल धाम उदास
बसै युचि साधुअहै न द्वितीयबिचारू ३२२॥ गोपाल ०॥
साधुदरश खलभेक भुयंग। साधु दरश अघमल कह गंग॥
दर्शन साधु मुक्ति जनदानि। बंदिय साधु चरण रुचिमानि
३२३ तन मन वचन तजे बिषयान। कौनित कतऊं कथा
हरि गान॥ उदासीन मति तीनऊं काल। साधुन ते तन
धरे गोपाल ३२४ माया ब्रह्मकरै निरधार। सतरज तम
गुण तीनिप्रकार॥ जीवोद्धारण ग्रन्थ बनाव। साधु धन्य
अस श्रुति मत गाव ३२५ जीवन मरण उभय रुचि एक।
शीत उष्ण कर चितनविवेक॥ उद्यम एक निरूपण ज्ञान।
धन्य साधु भव वेद बखान ३२६ दंभ लियेनो धर्म प्रसिद्ध।
ताहि न साधत जानि निषिद्ध॥ सेज भूमि सोवै यकभाय
भोजन धन्यरूपदरशाय ३२७ मूढ जानि उपदेशै ज्ञान।
ज्ञानीको सिखवै विज्ञान॥ बिज्ञानिहि आतमा दृढाव।
धन्य साधु जाके अस भाव ३२८ पण्डित मूरख जानै एक।
जाके चित नहिं ब्रह्म विवेक॥ सारा सार बिचारी जोय।

साधु धन्य भाषिय जग सोय ३२९ एक अनादि पुरुष अविनाश। गहे सदा ताही की आश॥ विषयक नरन न सार बुझाव। साधु चतुर भवधन्य स्वभाव ३३० वार्ण और निर्माण निरूप। युक्ति सुक्ति की कार्यै अनूप॥ आगम निगम धर्म बिस्तार। धन्य पुरुष बिरचै करतार ३३१ निन्दा स्तुति नाना मान। सम जानत आनंद निधान॥ भोजन चारि मिलै सो खाय। मंगल धन्य पुरुष यहि भाय ३३२ आवत संतन ऐहिन के ढिग कानन भूधर खोह निवासी। पंच प्रभूत व्यथा तन नाहिन प्यास क्षुधादिक की गति नाशी॥ शुद्ध समाधि बिलोकत ईश्वर सात्विक दृष्टि लखै चतुराशी। मंगल दर्शन पावत सो जन जाहि सुदृष्टि करै अविनाशी ३३३ तीरथ में नित न्हान करैं अरु देवल में नित पूजत देवा। ज्ञानकथे परिणाम अकारथ उत्तम बस्तु बतावत सेवा॥ कोटि बटोहि जहाज चढ़े बिनु खेवक पार कि लागत खेवा। मंगल भूलि न जावउतै जहँ दम्भसमाज न वेद कितेवा ३३४ तूमन भूल बिषय रस भोगहि मृत्यु कथा चितते बिसराई। आकस्मात् ग्रसै न बनै तब जाहू दृथा जडतोर उपाई॥ न्याय ससय पछिताय भलीबिधि मात पिता हितहू न सहाई। मंगल तोहिँ जो ग्लानि गहै त्यहिते भजि ले हरि हेत बढ़ाई ३३५ संतन के मन शुद्ध सतोगुण व्यापत है न तमोरज आवै। जानत तुरय ब्रह्म बिभासहि आन प्रकार न बुद्धि दृढ़ावै॥ त्यागि सबै सत दण्ड अकारण आपन दोष समस्त मिटावै। मंगल चित्तन हैय बिमोह सदा सत संगति में हरषावै ३३६॥ दण्डक॥ सत्ययुगयोग साधिसुमति समाधिव्याधि बिबिधिबिज्ञान आदि व्याधि नाशि सोवही। त्रेता जप अमित बिधान युत दानमान करत सज्ञान मोष पायमन रोवही॥ पूजन अपार ठानि प्रभुपद द्वापरऊतरत आसानिन दुभाँति चित्त शोचही। धन्य कलिभाव औ अभाव नाम लेतहरि मंगल सुमुक्त होत पाप पुंज नोचही ३३७ माया लोक

व्यापै गन साधु ताको भेष तन बोलत न काहू सन मौन व्रतिधारै है। क्षुधा औ पियास लागै चित्त क्रोध लोभ लागै लोभ मान प्राण लागै बोलत पुकारै है॥ पढ़ति लखावैं आपु ज्ञान ध्यान पाठ जाप पद्धतिपग्ग बोलनिमें करतविचारै हैं। काहू को बुझायें न चितायें गुरु ध्यान तात जात क्यों सुरुच तहां पाप को पसारै है ३३८॥ सवैया॥तोहिं दई दश ना करतार गिर्रा कि वाणि सदा ज्यहि गावे। मूढन को उपदेश करै सुकिधौं पशु लौं अपनैबनिजावे॥ सैनबुझावत आंखिन हाथनहूपत को उनगो अनखावे। मंगल भूल कि ध्यानगहै मुनि संत विवेक हसै समुझावै३३९ध्यानभये अरुणा नशिजात विवेक विचार स्वरूप सोहावै। आपु न बूझि बुझावत आनन भूल मिटाय भले पथ लावे॥ दंभअहं-कृत स्वांग दुराय सुमंगल मूरतिध्यान बतावे। नातरु ज्ञानि विमूढ कहा छलिजात जगैन जगैन जगावे ३४०॥कवित्त॥ कोउकहै मृतक जलाय आगि पिंडपारि कीजै दशगात तिल,जल स्नान सोपहै। गाडि भूमि तीजा करै दशमाच-लीसीकहै न्याय दिन उठै जाति सहित सँतोपहै॥ कोउ कहै जारै न मृतक भूमि गाडै गुध पेट फारि खड़ाकरै भवन अदोपहै। मंगल वदत एक मृतक बहावै दूरि वारि माभा कौनु मूढ़ कौनु ज्ञान कोपहै ३४१॥ सवैया॥ एकहि ग्राम के पंथ अनेकन है दशहू दिशिते चलिआये। अंत सबै यकठाम मिलें मन सत्य असत्य न जात बनाये॥ ज्ञान दिशा विदिशा अध ऊरधनीर सबैजल राशि समाये। मंगल का-लयत बुद्धि सदा निरबुद्धि किधौं शुचि मारग धाये ३४२ दंडक॥ अंतजीव बाँधि यम धाम जात न्याय होत लहत स्वकर्म,फल एकन को ज्ञान है। एक मत जीवनको न्याय एक बाल होय उम्मतिरसूल वकसावे अनुमानहै॥ एक कहै ब्रह्म को अनादि तहां जीवजात एक भयो कर्मवश कौनु भगवानहै। मंगल विचारै एक जीव आपु ब्रह्मरूप ताको न्याय कौनुकरै मेटो कौने थानहै३४३॥ सवैया॥ जीव भयो

न अहै मन मूरख औ नहिं होय सुजान अगारी। क-र्म्मन के वश भ्रन्दन होवत नित्य अनित्य सकार अकारी॥ ताहि अघोरघ वासन भाषियहै अघ ऊरध ज्योति पसारी। मंगल पाप ग्रसै नहिं आतम दीप कि सूरज के तन भारी ३४४ तूपरमातम हैसब टामन कोटिन नामन लोग पुकारै। सोसुनिदेत मनोरथहै नित शुद्ध अशुद्धन चित्त बिचारै॥ कोउन रूपन धर्म्म सुकर्म्मन जातिनता मनतो अनुसारै। मंगल यांचत तोहिं दयानिधि सत्य मनोरथ दे अविकारै ३४५ कासन जाय कहौं अपनो दुख याभव में प्रभु तोहिं बिहाई। दूसरको न समर्थ बिलोकत जो मनमें जड़ता दृढ़ताई॥ मागत लोकचतुर्दश आपुन क्योंसम काज धरी निठुराई। मंगल मांगत जोरि दुवोकर देऊ मनोरथ मेंद नसाई ३४६ जौ लगि चित्त मनोरथ चाहत तौ लगि शुद्ध सतोगुण दूरी। जो अज्ञाय मिवश्य रहै सुरलोक अलोक दुवौ सुख मूरी॥ बंधन मोक्ष दुवौ मन भूल मनोरथ है न सजीवनमूरी। मंगल जो विषयी विष नाशत सो प्रभु सत्य रक्षा भरि पूरी ३४७ जानत है सबके मनको प्रभु सत्यअहै मन अंतरयामी। तासन कौनु मनोरथ भाषिय भाषतही नर जानत कामी॥ देइगो आपु दया निधि तोकहँ क्यों बकवादु करै नितवामी। मंगल ध्याउ सदा निज आतम जो सब में सबते परधामी ३४८ सुंदर मारगह्न उरजानत तूमन क्यों भवपंथ चलैरे। देखि मृषा दुविधा उर लावत क्यों मृगनायक धाइ दलैरे॥ काम सक्रोधन जीति सबै फिरि मोह किधौं निज हाथ मलैरे। मंगल संत समान न भावत ज्ञान कहा किधौं कौन यलैरे ३४९ ज्ञान दि-वाकर शुद्ध प्रकाश तहां न सकै निज वस्तु बिलोकी। तौ फिरि भक्ति कि चंद द्वितीय कोनैक विकाशत होत अलोकी॥ मोहनिशा अँधियार किसूझत नैनपसारत दृष्टि सशोकी। मंगल खोजि लै सत्य पदारथ दृष्टि सकै खल मोहन रोकी ३५० जीव चराचर आकार वारिज भूमि,

धरे अपने शिर भावै। भूमिहि शेष धरे शिर सोहत कच्छप पृष्टि कि शेष विलासै ॥ कच्छप वायु विमंडल में नभमें पुनि वायु अनीश निवासै। मंगल है नभ शब्द कि शक्ति सुशक्ति सनातन ब्रह्म प्रकाशै ३५१ शक्ति विना, कछु होत नही व्यवसाय उपायन कारण काजू। कौन अशक्ति सो को हत साधत मृत्युकर्धौ जडलौं तन साजू॥ शक्ति अनंत अपार अखै,श्रुति शक्ति ते देव त्रिलोकसमाजू। मंगल शक्ति हि चीन्हि लहै हरि कौनु अशक्ति करै भव राजू ३५२ सिद्धन के तन सिद्धि न लागत वृद्धन के सन वृद्ध न आवै। शूर शरीर न आतप व्यापत नाहिमतें हिमवान जडावै॥ पानक तेज न पावक दाहत सर्पमखै विषनाश करि जावै। मंगल त्योसन बुद्धि अचंचित चीनहि क्योंकन लाव-छुपावै ३५३ जाकर वृद्धिन हानि न ताकर जाकर हानि नवृद्धि न ताके॥ मावस औ पुणिमा कि कथा शशि क्षीण औ वृद्धि न कांत प्रभाके। वृद्धि औ हानि दुऔ दुख दायक आवत जावत को समता के॥ मंगल त्यौ अघ उरधमें श्रम जोरस एक तो को दुख वाके ३५४ देखिसि का जो कहै सबमें प्रभु जानिसिका जो कहै दूत नाही। ध्याइसि काजो पै दृष्टि न आव बताइसि का जो अकाय सदाही॥ पाइसि का जोमें हाथ न लागत गाइसि काजो अकथ्य कथाही। मंगल पूरण ज्ञान उदै अपने घरमें न इते उत जाही ३५५ पण्डित जानहिं आतम चीन्हत को कविता मन ज्ञान न जाके। संत कहा उर तोप चला नहिं भूप कहा भव सिद्ध न जाके॥ योग कहान समाधिहि धारत भोग कहा धन नारि विनाके॥ मंगल ज्ञान कहा भव है तिमि जोनरमें सगमें समताके ३५६ औरनको मन तुच्छ विलोकत आपुहि तुच्छन शोचित हेरै। गानन के गुण ग्राम वटै नित औगुण को अपने गृह ढेरै॥ चाहति पद्धति आपनिही खल निंदत है सबको अघतेरे। मंगलदीन कहै हम साहन साह भवो धन बातन केरे ३५७ कामे

प्रताप विलाप्न करै सुरधाम अधो द्विविधा दुखदाई। स्वर्ग अधोरु अधोपुनि स्वर्गते आवत जातबड़ी भ्रमताई॥ त्यागि शुभाशुभ कर्म सबै सुनि संत रहै निज अंग समाई। मंगल स्वर्ग न नर्क ग्रसै तिनको अपने पदमें ठहराई ३५८ प्राण विलासन है निरवाणक वा प्रभुको मन क्यों भ्रम भूला। सृष्टि बनाय न पालत मारत है विपरीत कथा तरु मूला॥ आदि कि शून्य कि ईश्वर आदि बताइसबौ कथनी प्रति कूला। मंगल को भव जाननहार अभाव कि बात बकै लघु थूला ३५९ बारिज पत्र रहै जलमें नित बारिन व्यापत त्यौं जग साधू। औ जल जीव रहै जलराशिहि बूड़त है नहिं नीर अगाधू॥ सर्प समाज रहै तरु चंदन शीतलहीन ग्रसै विषबाधू। मंगल ज्ञानि तथा भववीचिनि डोलत नीर सही क्षतलाधू ३६० गौरवमें गुरु लागि रहे अरु पीरन के दिल लागि पिराई। ईश्वर खोज लगेमुनि साधु रसूल रसालति की चतुराई॥ एक दुतीनि विचार करै बनिसंत बढ़ंत रचैकविताई। मंगलब्रह्म बखानकरैनहिं पूछत क्रोधि कहै चुप भाई ३६१ वेद कितेब बखान विचारिय आगम और हदीस कि बानी॥ आपुहि न्याय करै सबको नित शासित कारक जीव प्रमानी॥ है सुनता सबकी निज कानन तौ तन धारि परै अनुमानी। मंगल बुद्धि थकै न बकै अब जो कछुहै सो सही न कहानी ३६२ दीरघ में लघु जानि परै अरुहै लघुमें परिनाह शरीरी। थावरमें चर देखिय औ चरमें पुनि थावर सोगति धीरी॥ थूलनमें अति सूक्ष्म आवतलिंगनमेंजहुथूलकिथीरी। मंगल क्यौंकहिये प्रभुकी गतिज्यौं भवकीगतिमें मतिसीरी ३६३ ज्योंशिर औश्रुति मस्तक नाक सुलोचन औ मुख दंत गनावै। जीभ कहै पुनि कंठ भुजा उर पेट सनाभि गुनी समुझावै॥ लिंगगुदा पगस्यौं नखते शिषजौ जिमिहै तन नाम कहावै। मंगलत्यों तिहुंलोक अलोकज्ञ नामसनातन ब्रह्म बतावै ३६४ जाहि कहै समके शिरपै पुनि ताहि कहै

सबके तनवासी। भापि अनन्त अनादि वदै पुनि गाश्वत है रघुवंश प्रकाशी॥ रूप न रेस न रंगभयौ फिरि भापत येशको गीय विलासी। मंगलद्वैत किधौं यकभावन फलत गाल जो भ्रावतहासी ३६५ सीखकछू हमही सनज्ञान भिचार विवेक लहौ सुखजातै। ते हमको पुनि ज्ञान वदै गुणि छंदअनेक कथी कविताते॥आपनसें न द्विभावविलोकत नित्य सिखावत योगकि घातै। मंगलसांचु कहावतहै यह नानिके आगे ननौरे कि बातै ३६६ ओप्रथमै पितुतौ पुनि काकर पुत्र कह्यौ पितुहीन न सोई। वृच्छ बदे जिमि बीज बिना किमि बीजभयो बिनु वृच्छ न होई॥ कारण तौ बिनु कारण नाहिन कारण कारणहीनकि कोई। मंगल शून्यन एकबिनातिमिएकनशून्यविछायवदोई ३६७ राम निकाल भये सुत दोइ अक्रोध कहावत गाव्हणघाते। मोह बिना वडरोवत भ्रातहि लोभ बिना मुनिराज सुहाते॥ मान बिना निजनारि तजी हितकारक ज्योंनिजबंधुडुबाते। मंगल सिचतजे सनबीचहि सेवकआम स्वधामन जाते ३६८ जासन भापिय सत्यकथा अनखाय कहै वड निंदक तूहै। ज्योतिष के मतमें अटको नभकी बरनै नहिं जानत भूहै॥ बीज कि बागि न बूझि सकै लपिटाय अजान गहै नहि छूहै। मंगलज्यों समुझौ खग होरिल पांवदनी लकडी गत कूहै ३६९ गोमलते जिमि कीटभयो नहिं मातपिता निज जानतसोहै। त्यों प्रथमै समुझे किधौं आदम बुद्धि समान पिता निज जोहै॥ जानतनाहिं बनावनहारहि कोटिक वेद किते बनिटोहै। मंगलपंख कबूतर हेरत कोकविता दुबिधा न बिसोहै ३७० जादिन मैं मनुनारि समेत लिखा न पढा तब अच्छरकोई। बाढीनवे अतिसंतति ताकरकौन तबै गुणि आगम सोई॥ ब्राह्मण चत्रिय वैश्य नहीं तबनीच कुलीन दुधामति खोई। मंगल एकहिवर्ण तहां सबसोअब भांति अपार कथोई ३७१ ठाकुर औ तुलसी यकभावहि ताहि घरे शिर कामिनि राती।बाद इया दत साखिमृपा

कहि जूपछूसे निज धर्म कहाते ॥ आपतुला उत झूटि सदा परनारि औ मातुरि कै संगराते। मंगल निंदक सो किधौं मज्जन धर्म कहावत मूढ़ महाते २७२ ॥कवित्त ॥ तीरथ ति आइकरै हायन लगतु माप दुःख अति मारगमें कहां लौं गनाइये। असुक कुधान जहां भोगनग शेश मिलै अशुकसु-यान तहां वडो सुख पाइये ॥ शीतकी कहानी धूप देह वाडुभापि कहैमंदिरादि संहिमावतावै शुचिताइये।मंगल नहान प्रात धकाधकी चोर ठग भीतको मिलन गावै मुक्ति कौन आइये २७३ माघमें सवार गंग डुबकी लगाइ खोमै जलमधि लोचन कपाल निज पाइये। ठगन के मेलेमें भौमेलो परि भाँति भाँति वसनादिखोइ खाय घूसिघर आइये ॥ पांच ओर आगि बारि ग्रीषम में देह जारि मुक्तिन दि-खानि राम रामरट लाइये। मंगल असात जीवें आयुषापु भल वश सथिर न होत जाति दुविधा नशाइये २७४ मूढ़ता को बासतन पंडित प्रसिद्ध भूलि गूढ़ता न जानै ज्ञान भक्ति काको नामहै। गणक कहावै न गणित बात बूझै कछु न्पति न सूझिरंच सैन धन धामहै ॥ साधकारि खर्वाति जानै साधना न एकऔन बाधक न मारै जीव संसति संवामहै। मंगल तथाहि ज्ञानि विदित कुधाम देखु दृढ़ता न ध्यानकी न सुतनै विरामहै २७५ एक जलविन्दु बढ़ि भरत पिपीलि जौन मन मत करत पयोधि अवगाहिहौं। लघुक उड़ात पक्षी मसक विचारै चित्त गगन निरंत ताको अंतलौं ससा-हिहौं ॥ आतप बिलोकि जात पारद बिलाइ सोऊ करत मनोरथ दिनेश धाम गाहिहौं। मंगल विमूढ़ तैसे खोजत अगूढ़ वस्तु गूढ़ देखि भाषित कहत मूढ़ौं काहिहौं २७६ सवैया॥ व्यास पुराणकिये कितने एकभावन सो बहुभाँति पुकारैं। दायक मुक्ति बदैयक ब्रह्म कहै यक शंकर जीवहि तारैं ॥ विष्णु कहैं अर्क शक्ति भयो यक राम कथा किधौं श्याम विचारैं। मंगल भूल परो मन पंडित आतमै त्यागि फिरै मझधारैं २७७ योगिन के मतयोग समाधि रुजंगम के

कालस्वभाव दुभांतिरच्यो प्रभुजानत सन्तसुभाव कुभाज॥ कर्म कछावत धर्म बिहाय न व्यापक रूप बिहीन दुठाज। मंगलको सखुभावत बालक अक्षर पाठक वेद प्रभाज ३८५ कालमें केतिक बीति गये युग आतम भूत मुरारि पुरारी। केते अकाश मही बिनशे सुर भानु दिनश निशा-चर धारी॥ वेद पुराण बिलास अनेक न आगम कोरक ज्ञान बिचारी। मंगल आदि अनादि नहीज्यहि गायसकै न प्रवीण अनारी ३८६ शब्द स्वरूप वदैं यक जीवहि नाहिं परै सुनि कान लगाये। एक भवैं परिपूरण ज्योति न हाथ जरै भ्रम भूलगमाये॥ आदि अनादि न जीवन गावते दूसर घोर चलैं मुद छाये। मंगल जन्म अपार न खोजत बीति गये न घरै फिरि आये ३८७ कोटि बिचार बिचारि मरै कबिता पढ़ि कोटि बनाय सरैरे। कोटिन तीरथ धाइ फिरै ब्रत नेम अचार अपार करैरे॥ पावक तापि तपाइ मरै मग एक दुपाद खड़ो बिचरैरे। मंगल बूझि परै न बिना गुरु आतम साधनसों न सरैरे ३८८ वेद पढ़चा बहु बूझि भ्रमैं बहु आयत बूझि कुरान पढ़ैरे। ब्राह्मण होइ कि शेख बनै पढ़ पण्डित आलिम नाम बढ़ैरे॥ आन गढ़ी नित भाखि रहै बहु चातुरिकै बहु आप गढ़ैरे। मंगल जाने बिना निज आतम या भवतै कबहूं न कढ़ैरे ३८९ साधन साधि अनेक महीतल बैठि रहे उर ज्ञान बिचारी। छंद कवित्त अपार बनाइ चुपाइ रहै बिमुतान निहारी॥ योग समाधि तजे जल अन्नहिं पै न लगा कछु हाथ अगारी। मंगलहै परमातम सत्य न देखि सकै विषयी तन धारी ३९० जीवहि क्यों भरमावत तू जड आन कि आन कथा कथि भारी। पारस को खल पाथर गावत कांच गहावत बुद्धि बिसारी॥ शांति न होत बिना दृढता मति तर्क अनेक किये अविचारी। मंगल पूरि रहा सबही थल एक तुही न द्वितीय व्यकारी ३९१ जन्म जरा न तजै अपनी मति ज्ञान विवेक अपार न गाये। तीरथ न्हाय किये ब्रत संयम साधन साधि दुरौ

मतचेतन वानी। जैन अनादि कहैं अरुकर्म सन्यास ह आतमधी निरमानो॥ वादि निराश भणै दुरवेश पुनायर ब्राह्मण पावक पानी। मंगल ये पटराग किधौ कछ राइत रागन आन कहानी ३७८ तीरथ वासि वदै शुचि मंगल मूरति पूजक पूतरि ध्याना। गायक मंत्र विधान सिखावत पाठक पाठ षरांग प्रमाना॥ ध्यानि स्व आतम ध्यान कहैं निज ज्ञानि गुणावत उत्तम ज्ञाना। मंगल शाखि सुमुच्च सवैयन पोषत ज्यांकछ चोच विधाना ३७९ ईश्वर अंशसही यह जीवहै वेद पुराण कुरान बतावै। पै अवगाह सकै ढिग तासुन अंगमें क्योंकर जाइ समावै॥ कोटि उपाय विधान करैं जप पाठ सुतीरथ लौं फिरि आवै। मंगल शोचत लौं सिगरे अपने घरमें निज वस्तु लखावै ३८०॥ यथा॥ ज्यौं तरुते महिपात परो फिरितांहि लगेअहिं कोटि उपाई। जदपि औ अथ आवत जावत संधि शरीर भले बहुताई॥ रोवत है विललात दशौ दिशि क्यौं लिखलानि लहै दुचिताई। मंगल ब्रह्म न पावत जीव तथा उपचार इथाहि लखाई ३८१ या तनकी मति वाढि घटैमन भूषण दूषण अवलंब अभूषण। जीव सदा परमानँद मूरत ताकहु नाहिँ विदूष विदूषण॥ ग्रीषम शीत यथा गति आतप चौगत छूतन कन भूषण। मंगल ज्ञान गुणी उर लागत क्योंकन भूरतु के मन तूषण ३८२ एक दिशा चिड़िया भरमैं यक उरध्व भी अध डोलत डोलै। एक उपायन में अटकै यककाम भतीप सदागति वोलै॥ एक भणै हरिकी महिमा यक आपनके अपनी गढ़ि छोलै। मंगल एकसवै भ्रम त्यागत है थिरभाव स्वभाव निचोलै ३८३ क्यों भटकै मन ज्ञान विहाय विभ्रभासित रूप अरूप न दोहै। ब्रह्म अनादि सही वह सर्वन्ध ठाम कुठाम दुधा किमि सोहै॥ स्वर्ग वहै पुनि नर्क तिन्है गुरुशिष्य वहै मुनि पंडित मोहै। मंगल क्यौंनतजै दुविधा उत सोइ विराजि रहा इत जोहै ३८४ याहि काल जबै जस जाकहँ होत तबै तस काल मटाल

पढ़ै किमि सीख उलूकन कांत प्रभाकी। मंगल ज्यों उपदेशत
अमृत बारि द हेरत अंतर ताको ३९९ ज्यों जग लोग बढ़ै
तसभाधिय अंतर आपनि हत्ति विराजै। कर्म सुधर्म अकाम
निमोह कहावत सो कहिये सुख साधै॥ निंदक मूढ़न
वादि कथै ज्यहि कारण सो शुचि शुद्ध सभाजै। मंगल सत्य
छुपाय धरौ उर झूठ बदौ भव आदर काजै ४०० ज्यों मन
झूठ कहौ अब बीथिन आदर कौन निरादर कारे। तूवि-
षयो रस लंपट दे मन संमत देत विषय रस भोरे॥ अंत
वियोग हि लौकिक संसृत दुष्टसहाय सबाबनतोरे। मंगलसो
लखगो अपने मल छांह लगे न सिखाहि विचारे ४०१ लोक
लिये परलोक न भावत मोह बिलद्धि लहै मन मांही। जो
परलोक गहै तो रहै चित लोकहिमें सब लोग सो नाहीं॥
जीवनमें सब भांति सदा सुख जीवन में दुखकी परिछाहीं।
मंगल ज्ञान बखानत टूटत है गुण वेद कितेब कहाहीं ४०२
संमत साधु सदा सुखदा मति नीच अधागति दानि कहा
वै। जो जन संत असंत न चीन्हत सो दुख भोग कबौं नहिं
पावै॥ आपनि हत्ति समाधि रहीन हितैय विलोकनि
जीवहि आवै। मंगल सो जग जीवन मुक्त न जात अधोरध
महा समावै ४०३ त्यागि सबै भ्रम ध्याउ सदा हरि ध्यान
भरोस बिहाय अरे मन। ज्ञान समेति सुकीरति ताकर
गाय करै शुभ काज लहेतन॥ मुक्ति पदारथ हाथ लगै फल
आनन्द पाय गुणै सुखको गन। मंगल सत्य विवेक लिये नहिं
स्वारथ संतन को हितियेसन ४०४ मोह कुमारग में भटकै
सविवेकन तू हरि को पद ध्यावै। दानि अभिप्रिय दूसर
नाहिन क्यों नहिं तू दृढ़ता मन लावै॥ नाम प्रताप दशौ
दिशि मंडित पंडित दान औ जाचक गावै। मंगल भूलन जा-
नत ईश्वर तू भ्रम आयु अमोल गमावै ४०५ संगते पंडित
होत महोतम संगते दुष्ट मलीन बनेरे। संगते मूढ़ कुकर्म
विलोकित संगत नीच कुलीन गनेरे॥ संगत वेद विधानगुणै
मत योग समाधि सुध्यान सनेरे। मंगल संग प्रकाशक ज्ञान

दिशि धावे॥ जौलगि आतम भाव गहै नहिं पंथ कुपंथ सुपंथ चलावे। मंगल सन्त सनै निज गावत पै न वचै मृतु पासहि आवे ३९२ अन्त समय जस आश लहै तस्यो मुनि आगम भेद बतावे। भाविवहै बहुसाधन गावत क्यों दुविधा अपनी मिटि जावे॥ कर्म कियें बिनु कर्म कियें यक आन मवान लहै नहिं आवे। मंगल सिद्धि उपाव इते निसि वासर जोह छुये हरि भावे ३९३ त्यागि शुभाशुभ आश रमै भव भाव उदास रहै चित धारे। काङ्क्षा वैर सनेह न मानत मोहन मूरति चित्त पधारे॥ ऊपरके तजि त्याग सबै शुचि अन्तर पूरण ज्ञान बिचारे। मंगल साधु सही सहिते जन सादर अन्त स्वच्छन्द बिहारे ३९४ आनँद रूप रहै निशि वासर त्यागि सबै सुख दुःख अकारण। मौन रहै कि भरो हरि कीरति अस्तुति संस्तुति जीवन मारण॥ आपबिन जितआशिर्नोदन हौन समस्तविषयनिधि धारण। मंगल सन्त स्वतंत्र निहारत सुन्दर भाव किधौं भवतारण ३९५ एक नदीतट सेत रचावत बूझतएक कहांजलयाहा। पैरत एक न पावत पारहि डूबहि एक घड़े दुखदाहा॥ बांधि घड़ा सुति मार चले यक भूमि चढ़ै कि निरन्त प्रवाहा। मंगल यो गुरु बोहित पाय बिना श्रम एक तरै अवगाहा ३९६ ऊमरि के फल वासि यथा नहिं जानत दूसर देश बसेरे। त्यों यह जीव धरातल डोलत लोक अलोकन चित्त असेरे॥ लोक अपार किये करतार तहां बहु भांति गुणी बिलसेरे। मंगलपै ललखैयहि लोको हि जो अनुमानन एक लसेरे ३९७ केतिक ग्रंथ पुराण सुने पढ़िकेतिक पुस्तक भौनधरीरे। केतिक तीरथ न्हायय थों बहु मंत्र गयन्दो सुभाय धरीरे॥ केतिक पूजन पाठ किये व्रत नेम अपार कुचालि छरीरे। मंगल आसन साधन तेंपन श्रावन मूठी खुली न ढरीरे ३९८ आपन में करिये मकते पर दोष विवाद बड़े दुर वाके। मौन भलो यहि कारण रैमन जीवन मृत्यु वृथा नित ताके॥ आधार पाठकयंथ

पढ़ै किमि होत उलूकन, कांत प्रभाकी। मंगल ज्यौं उपदेशत
असत बाहिर हेरत अंतर कांकी ३९९ ज्यों जग लोग कहैं
तसभाषिय अंतर आपनि वृत्ति विराजै। कर्म सुधर्म अकर्म
निमोह कहावत सा कहिये सुख साधै॥ निंदक मूढ़न
बादि कथै ज्यहि कारण सो शुचि शुद्ध लजावै। मंगल सत्य
छुपाय धरै उर झूठ बदै भव आदर कावै ४०० ज्यौं मन
झूठ कहै भव बीथिन आदर कौन निरादर कोरे। तू वि-
षयो रस लंपट है मन संमत देत विषय रस भोरे॥ अंत
वियोग हि लोकिय संसृत दुष्ट महा भ्रम जाल नतोरे। मंगल सो
नलगी अपने जल हाथ लगैन सिलाहि निचोरे ४०१ लोक
लिये परलोकन भावत मोह विवद्धि लहै मन मांही। जो
परलोक गहै तो रहै कित जो यहि में सब लोग सोहाहीं॥
जीवनमें सन भांति सदा सुख जीवन में दुखकी परिछाहीं।
मंगल ज्ञान बखानत टूटत है गुण वेद कितेक काहाहीं ४०२
संगत साधु सदा सुख हासति नीच अधागति हानि कहा
वै। जो जन संत असंत न चीन्हत सो दुख भाग कबौं नहि
पावै॥ आपनि वृत्ति समाधि रहीन द्वितीय बिलोकनि
जीवहि आवै। मंगल सो जग जीवन मुक्त न जात अधोरध
ब्रह्म समावै ४०३ त्यागि सबै भ्रम ध्याउ सदा हरि आन
भरोस बिहाय अरे मन। ज्ञान समेति सुकीरति ताकर
गाय करै शुभ काज लहै तन॥ मुक्ति पदारथ हाथ लगै फल
आनंद पाय गुणै सुखको गन। मंगल सत्य विवेक लियेनहिं
स्वारथ संतन को हितियेमन ४०४ जो हठ कुमारग में भटकै
सविवेकन तू हरि को पद ध्यावै। हानि अभिप्रिय दूसर
नाहिन क्यों नहिँ तू दृढ़ता मन लावै॥ नाम प्रताप दशौ
निधि संडित पंडित दान अजा करवावै। मंगल भजन जा-
नत ईश्वर तू बस आयु अमोल गमावै ४०५ संगते पंडित
होत मलीनन संगते दुष्ट सरीर बनैरे। संगते मूढ़ कुकर्म
बिलोहित संगते नीच कुलीन गनैरे॥ संगते वेद विधानगुणै
भूत योग समाधि सुध्यान सनैरे। संगत संग प्रकाशक ज्ञान

कुसंगति उत्तम भ्रष्टपनैरे ४०६ स्त्रांगनमें दूत आयु गमावत रोगन को मन भोग बिसारै। संगति भावति मूढ़नकी सत संगतिमें न घटी कुविहारै॥ स्वाद विषय रस वित्त बस्यो अब क्यों शुचि ज्ञान हिये में प्रचारै। मंगल चेति अजौं भजि ले हरि जन्म द्वितीय व्यकारहि टारै ४०७ जीवन है धग या भव में हरि त्यागि विषय रस जे जपिटाने। कीट पतंग पशू खग भूधर तेपि भले रस इंद्रिय साने॥ जेनर कायहि पाय न ध्यावत आतम शुद्ध स्वभाव प्रमाने। मंगल ते जड़ ते जड़ जानिय क्यों करतार तिन्हैं निरमाने ४०८ तोहिं महाधिक है मन मूढ़न त्यागत आपनि चंचलता को। झूठ विषय में प्रयुक्त रहै सत मारग पैन खजानहिं ताको॥ काम कला, मदकी मदता तजि लोभ भजै किनकांत रमाको। मंगल सौख अपार दई नहिं तुणत शुद्ध भयो दुख काको ४०९ आतमही परमात है तटही नहिँ दूरि फिरै दिग्विचारी। बस्तु धरी अपने घरमें प्रति द्वार कि खोजत ज्ञान बिसारी॥ पूछो न थान बतावन दूसर जोपि बदै परधाम बिहारी। मंगल आपनि नाक न टोवत मूरख धावत काक पछारी ४१० आतम वास शरीर सही कवि संत न भाषि बताय सकैरे। याथल बुद्धि नहीं मनकी गति कोटि कुयोजन धाइ थकैरे॥ ज्यों त्रिय भोग कराय विना न बखानि सकै बहुकोटि बकैरे। मंगल आपुहि जानत आपुहि ज्ञान द्वितीय न बुद्धि पकैरे ४११ या जग फागुन फाग लगै अपने गृह फागु कि बारह मासी। लोग निलज्ज रहै यक मास इतैनित काम करावत हाँसी॥ नारि इतैं फगुवा गहि मांगत छानित लोभ मजारि बिनासी। मंगल यातनं ते भवकी भल जो मर्याद गई न बिनासी ४१२ जेतिकला गुलगाउ रहै न यहू रसको भ्रम छूटि गयोरे। शुद्ध सतोगुण चित्तबसो तम मोहनशी रवि ज्ञान उयोरे॥ खोजत नाहि सो आपुमिलो भ्रम भूल कि पद्धति को मितयारे। मंगल सौन कि राम जपैं [illegible]

नाम विवेक भयोरि ४१३ जोभ्रम आगिल पाछिल को अरु सगुण निर्गुण को व्यवहारू। सो अवएक प्रमाण लखो दुविधा निज अंग बिकल्प विचारू॥ निर्गुण नाहिंन सगुण कोपि वहै सवठाम स्वछंद विहारू। मंगल नागर ग्राम्य बनी त्रिपु पुरुष एक विवेक निहारू ४१४ सौंपि स्वराज्य सबै निज मंत्रिन भूप गयो बन ज्यौं मृगयाको। ज्यौं हरि आवहुतै तनधारि सु मोहन रूप बनै शुचि थाको॥ कानन राजहि जानत ते जनहै जिनदीख कर्यौ न्रप तांको। मंगल संत तथा पहिंचानत ब्रह्म स्वरूपहि श्याम प्रभाको ४१५ चाहिय आपन शुद्ध स्वभाव कहा च्युत अच्युत सों निज काजू। ब्रह्महिं श्यामजु श्यामहिं ब्रह्म स्वभांति दुभांति न ज्ञान समाजू॥ दो विधि तौ भज एकहि तौ भज तू अपनी कऊत्यागिकुसाजू। मंगलहोइ महीपतिकौनऊंदासकहाय न पावत राजू ४१६ जाकर राज प्रजा हमताकर जो हमहीं तौ प्रजान भुपालु। को अवतार धरैभवमेंपुनित्यागि कलेवर जात सख्यालु॥ जानब है अति दुर्लभ चीन्हब दुस्तर भाव फँसा भवजालु। मंगल घापुहि भूलि कहा फल दूसर को समुझिहवालु ४१७ ढूंढतकाहि फिरै मनमूरख देशविदेश सकष्ट बटाऊ। सिंहपर्यो पिंजराजिमि दौड़त तोड़तताहि न भूलप्रभाऊ॥ त्योंभ्रमपासपरीगलमें नहिंत्यागत चंचलता व्यवसाऊ। मंगल हैतो तुहीनहिं दूसर अंतर बाहिर एक सभाऊ॥ ४१८ मुंड मुड़ाय गहे करवा दुख भोजन के घर गेहि के आवे। जौन गृहस्थसो बंधन में सुत नारि प्रयोजन चित्त सतावे॥ जो नहिं संत गृहस्थ नहीं तिनकी कुदशा न कथे कथि जावे। मंगल कौनऊ भांतिनहै सुख संस्टत में दुखऊ दुखपावै ४१९ संतनटेक तजैंअपनी भवव्याधि अपार सतायमरैंरे। कोटि उपायकरैंपित्त ज्यौं प्रह्लाद सदा हरिनाम ररैंरे॥ जानिदुखी निज सेवक साहिब धाइ सहाय प्रसिद्धकरैंरे। मंगलक्यौं खलदेखि डरैंनित आपनि ह्रितिहि में सधरैंरे ४२० दृष्टि दिये जगराग विलोकत

कुसंगति उत्तम भ्रष्टपनैरे ४०६ रोगनमें इत आयु गमावत रोगन को मन भोग बिचारै। संगति भावति मूढ़नको सत संगतिमें न घटी कुबिहारै॥ स्वाद विषय रस बिस बस्यो अब क्यों शुचि ज्ञान हिये में प्रचारै। मंगल चेति अजौं भजि ले हरि जन्म द्वितीय उबारहि टारै ४०७ जीवन है धृग या भव में हरि त्यागि विषय रस के जपिटाने। कीट पतंग पशू खग भधर तेपि भले रस इंद्रिय साने॥ जेनर कायहि पाय न ध्यावत आतम शुद्ध स्वभाव प्रमाने। मंगल ते जड़ ते जड़ जानिय क्यों करतार तिन्हैं निरमाने ४०८ तोहिं महाधिक है मन मूढ़न त्यागत आपनि चंचलता को। झूठ विषय में प्रयुक्त रहै सत मारग पैन सुजानहिं ताको॥ काम कला मदकी मदता तजि लोभ भजै किनकांत रमाको। मंगल सीख अपार दई नहिं तूजड़ शुद्ध भयो दुख ताको ४०९ आतमको परमात है तरको नहिँ दूरि फिरै दिशिचारी। वस्तु धरी अपने घरमें प्रति हार कि खोजत ज्ञान बिसारी॥ पूछत ज्ञान बतावन दूसर जोपि बदै परधाम बिहारी। मंगल आपनि नाक न टोवत मूरख धावत काक पछारी ४१० आतम वास शरीर सही कवि संत न भाषि बताय सकैरे। यायल बुद्धि नहीं मनकी गति कोटि कुयोजन धाइ थकैरे॥ ज्यों तिय भोग कराय बिना न बखानि सकै पर कोटि बकैरे। मंगल आपुहि जानत आपुहि ज्ञान द्वितीय न बुद्धि सकैरे ४११ या जग फागुन फाग लगै अपने गृह फागु कि बारह मासी। लोग निलज्ज रहै यक साथ रतैनित काम करावत हासी॥ नारि इतै फगुवा गहि मांगत ज्यों नित लोभ बभारि बिनासी। मंगल यातन ते भवकी भग जो मरयाद गहै न बिनासी ४१२ जेतिकगा गुनगाय रहे न यहृ रसको अब छुटि गयोरे। शुद्ध सतोगुण चित्तबसो तम मोहनस्यो रबि ज्ञान उयोरे॥ खोजत जाहि सो आपु मिलो भ्रम भूल कि पद्धति को बितयारे। मंगल मौन कि राम लपै रस नीरस

विकवस्तु अमानी४२७ श्रीअनटान जड़ाउ देख्यो नहिं सत्त-
काभूति न चंदन रोरी। वासित अंग अवासित नाहिन ती-
रथ औ व्रत तेमति भोरी ॥ मठन संगणना अपनी कवि
पंडित कीन कथा कछु मोरी। जंगलदीन दशौ दिशि लै प्रभु
आइ परो शरणागति तोरी ४२८ मोहन मूरति हौ पर-
मानंद सत्यचिदानंद वेद बखाना। याभ्रम भूल भजै विधि
देखियकाहि कहौं मनको अनुमाना॥ एकनहीतल एक
बसै सुरधाम दुऔ किमि एकसमाना। जंगलदीन जहांतहं
मावहिं हौं शरणागति तू भगवाना४२९ कोटिन भावकुभाव
विचारिय कोटिन तीरथ धावत डोलैं। कोटिन जापन पै अव-
पापुनि पाठक कोटिन वाणि सकोलैं॥ कोटिन पंडित आलिम
हैं अरु कोटिन वैद्य रसौंपधि घोलैं जंगल ईश्वर को कछु खोजन
पावत है कितनी गठि खोलैं ४३० जे गुरुको पदको रज
सेवत तेपि सुजान कहै कविताई। जेन गुरू गति जानत मू-
रख तेन सुजान भयो भ्रमताई॥ जो गुन सेवक नाम दूतै
शुचि भाव भये दुविधा मिटि जाई। जंगल जौन रहौ न
जाहौ कछु सत्य सनाथ करौ सेवकाई ४३१ जो दृढ़ता
अपनी मति में नहिं तौ व्रत नेम वृथा तन पीडा। सिद्धि
उपाय स्वभाव वहै नत संत समाज उठावत बीड़ा॥ भोग
विलास विषय भ्रम रूपक मोलहि जीव प्रकाशक क्रीड़ा।
जंगल ब्रह्म विधान को बूझत धर्मप्रवृत्ति किधौ गहि मीड़ा
४३२ गावत होत प्रयोग ऋचै मग औ यजु अध्वर जाहि
बतावै। साम भयो उदगात प्रयोगहि वेद अथर्वण शांति
लखावै॥ पुष्टि समोहन वश्य उचाटन मारण थंभन
आदि गुणावै। जंगल वेद पै धर्म सनाक्य बखानत सो उप-
नद भावै४३३ जाग्रत का यक सार विचारत स्वप्नविधान
गुनैं यक सारा। एक सुषुप्ति विवादलगे पुनि एक तुरीय
प्रमाणविचारा॥ पै नहिंजानत कौतुकविनोदतनाद विवाद
अखण्ड पसारा। जंगल बूझ भली नहिं आवत मूरख
खोजत सिंधु करारा ४३४ जंगमरूप कहै यक साधु बतां-

कामैवशी निरवाण भिवादो। रागरहीन वदै दुखपारसता रसको कुछ्जानन स्वादो॥ मोहमयी मति वासन आवत ज्यौं पशुपै शुचि चन्दन नादो। मंगल ज्ञान हृषीहिवदै जड़ वानर जानत स्वादकि आदो ४२१ ताल नजैनचलावन धारकै राग अलाप नगायक कोई। देखनहार बिना चप सूरति नृत्यक पाद बिहीनलखोई॥ शून्य गलीं तहँ आपुविराजत ग्रामतहां बनएक नहांई। मंगलसत्यनदन्त कथागुरु गंम्य लखै दुबिधा सन खोई ४२२ मारगमें सन देवनसै गणनाथ सहेश रमापति देखे। सूर निशाकर गंग तरंगिनि सूर सुतर सगिरा त्रिपु लेखे॥ दंडदुतीनि कुसाधनमें सब अर्हत बातकि नैन निमेषे। मंगल योगवदै सिधि साधक अंधन बूझत चक्षुनपेखे ४२३॥ कबित्त॥ कोटि समुझावै गुरुमूरखन बूझै बात यथाकाकस्वेत होय धोवत न गंगमें। गोपै नखभोषी गुहा बाहिर को रंग काच कछुक सो हाथ जौलौं रहत सुसंगमे॥ छूटिजात कालपाय कि धौं मटजात होत सुबुधि कुसंग तजि नापाज्यो कुरंगमे। मंगलन भले ज्ञान संपति अपार पाय सत्य धाम पुरुपविगोकै नित अंगमे ४२४॥ सवैया॥ को अमज्ञान गुणे मन मेंमति शुद्धप्रकाश विचारि वृषानी। मारण हारन पालनहारन शिर्जनहार चिदाभक शानी॥ एक स्वरूप अखंड विराजत तीनि प्रकार कहै मन जानी। मंगल सिंधु कथान पिपीलवताय सकै भ्रम पंथ भुलानी ४२५ भास्कर भानु उद्योत करैनिशि मेघशिखैचर होत प्रकाशी। आदि अनादि दुधाविधि भ्रावत शुद्धस्वभाव गिये खविलाशी॥ ईश्वरमय सबुभासिपसैनिगुईश्वर अंध प्रभाकित नाशी। मंगल धन्य अहै करतार रचाजिहि ताहि रचो न दुभासी ४२६ सत्यदियानिधि तुमअटाम नरघात दास सदाहिय मानी। कोउवकीरति गायसकै अति विस्तर रूपन जात बखानी॥ धानिप्रकाश प्रभाकर मूरति मोख निशा भ्रमरूपसिरानी। मंगल जोति वदै करुणाकरदेऊसर्मा-

जानि सकैं गुणको मनते किमि निर्गुण भेद बिचारैं। बेचत नित्य वराटिका जे नहिं ते सखि माणिक मोल उचारैं॥ कर्म बशी भव भूत जिते नहिं ते शुचि आतम ज्ञान निहारैं। मंगल खेल खिलारिन के सँग मूरख के सँग जीतत हारैं ४४३ वांद खनै यक मूल भखैं फल खाय तपैं एक छीर अहारी। ग्रीषम पावक मध्य दहैं तन शीत रहैं जलमें दुख भारी॥ पावस में तजि छाह रहैं जप पाठ करैं सब आगमसारी। मंगल चीन्हत आतम को नहिं तौं भ्रम मेटि सकै न अनारी ४४४ ज्ञान गर्वी न चलो कबहूं तिनको कस सिद्धि सतोगुण होई। बाणि सुने निर्वाण बिभास कि चन्दन चौंधि रहे बुधि खोई॥ चित्त शुची यह दंत कथा जप पाठ विधान न पूजन कोई। मंगल दंत निकारत मूंदतमूढ़ कि दर्पण को कपि जोई ४४५ ब्राह्मण पूज्य गृहस्थन के घर धाय सबैजन पाई परैंरे। बेग्रपने मदमे अटके कछु मंत्र विधान न चित्त धरैंरे॥ जानत वेद न भेदन भावन भक्ति न ज्ञान न याग करैंरे। मंगल भेड़ि धसान गही मग पंच कहैं जस तैस करैंरे ४४६ वासव तापस नारि रमी नर देवनता कहँ दोप लगावैं॥ कौशिक पातरिकै सँग निन्दित धनिचते शुचि विप्र कहावैं। विष्णु जलंधर नारि ठगी सब बंदत कोउन लीव लगावैं॥ मंगलपंच करैं सो करी मत सत्य कहे जग निन्दक गावैं ४४७ दीख अनेक गुणी कवि कोविद जे कविता सविता सम गावैं। आखिर फ़ाज़िल शेष व आरिफ आय तजौन क़ुरान बतावैं॥ वातन के निर्वाण लिखे बड़ ऊपर वेर बिचार लखावैं। मंगल अंतर की गति गावत आपुहि बूझत आपु लजावैं ४४८ आसन पूंछिय सन्ति गलीघो बढ़े जप तीरथ पाठ अचारा। जो करि कोटिन थाकि रहे फिरिको भटके मनध्यान प्रचारा॥ है तनमें सो मरै न तरै जो मरैं औ तरैसो शरीर व्यकारा। मंगल चित्त समाधि न साधत बूझत आतम मंत्र विचारा ४४९ जो सब के सिर ऊपर राजत तासु कथा किमि जात बखानी।

वत यावर्है यकसंता। भेद न जानत वादि वखानतहै दुर्ज्ञ भाव प्रमाण निरंता॥ आपनि भूल विवादत आन कि वोधन होत पुराण अनंता। मंगल आतम शुद्ध सतोगु ताहि विसारि भ्रमै मति वंता ४३५ सूधचपानन देखिस द्दग मूंदि लखे वह्ननैन पसारी। उलटि द्दष्टि विलोक ऋूपहि सत्य कथा मुनि राज विचारी॥ देखतही निजह्द मनोहर सोह नयी भ्रम देत विसारी। मंगल सानँद सु सहीतल दंभविलास किआतनियारी ४३६॥ छंद॥ सातें आसमान के ऊपर अर्शमुअल्ला कुर्सी है। आपी तहां वि राजत मालिक हरसायत गति उर्सी है॥ जाननहार दूजा। नाही योंकह बाणी फुर्सी है। मंगल हद रही नहि वेहद खास खुयाली पुर्सी है ४३७ ऊपर को सब सैन वु आवें नीचें की सुधि नाहीं है। भटकत फिरें भूल सायावे पूजा पाठ न लाहोहै॥ कहतासुनतातर्कअनेकान गुढअगूढ कथाही है। मंगल मै न वूझमें आवत है जैसा तैसाही है ४३८ यकनासूत नतावें सच्चा यक वन ऋूत लखातेहै॥ एकु कहै जलकूत देखिये यका लाहूत सुझाते है। यक मारी से न्यारे डाले घरहाहूत बताते है। मंगल भूली भटकी गावें इतकी उत दरशाते है ४३९ जागृत सोना सूत बताइव खाव वाघा जवरूती है। ,हैसल' कूत खाव गफलत में निश चाता लाहूती है॥ जहां ते आया तहां समाया सो आ- लम हाहूती है। मंगल पंच दशा ये अपनी जानकहै मति सूती है ४४० सूरज का प्रकाश जर्रोसानूर दूजाही ऐसा है। सर्दी गर्मी कुछ नहिं उसमें नाथि प्रकाश धौ जैसाहै॥ वेनजीर वेचून नाम है भया न होइन वैसाहै। संगल ससु- झि लीजिये दिलमें है वह जैसा तैसा है ४४१ अद्भुत मूरति श्रोकाहिनावे हियभावें जिय आवैन। जिह्वा कहत वनत नहिं कैसेऊ फिरि क्योकरि समुझावैजू॥ सैन दुझावें वूझन आवें कर्म किये नहिं पावैजू। मंगल सत्य भगत मुनि साधू ज्यों गुंगा गुड खावैजू ४४२॥ सवैया॥ ये नहिं

तीरथ मूरति मन्दिर मसजिद धायमजार फिरै भ्रमसाना। जंगल जौलगि बूझ न आवत तौलगि जौन करै सोगसाना ४५७ काग कि बाणि अशुद्ध निचारत शुद्ध बखानत ओणत. ताता। यावत चित्त द्विभाव रम्यो तनतावत शुद्ध अशुद्ध समोता॥ बोधभये दुविधा मिटिजाय विषव द्धिसे मुनि खाय न गोता। जंगलदेखु तुम्हान कि आंखिन धौ इतसो उतओंझन होता ४५८ सत्यअसत्य अपार न भायत लोग-नको ठगिके धनजोरै। बाहिर हंस स्वरूप मिये अरु अंतर लोभ सुकर्मनि तोरै॥ नीर सवाद .वढै नित निर्गुण मोह भयो मति धर्म न ह्रोरै। जंगल या जगरूप प्रपंचक जानेविना दुविधा किमिछोरै ४५९ सिंधु कि थाह पिपील न पावत थाहत आपन जीव गमावै। ज्यों निष अंत न पच्छिक जोवत कोटि उड़ान उड़ै फिरि आवै॥ लक्ष मशाल करै सिकता कण नाहिं दिनेश प्रकाशहि पावै। जंगल त्यों यह जीव न जानत ब्रह्म सनातन सूरति भावै ४६० ज्यों जनबुद्धि गुणा-निगुणै सुनि, वेद पुराण कथा अनुमाना। मोह निशातजि देखु दिवाकर आतमरूप अरूप प्रमाना॥ है सब माहिं परंतु नदीसत या जलकीन कथा न पुराना। जंगल बूझत आपनरूपहि वैठिरहै तजिजान अमाना ४६१ देह बिहाय न जीव बिलोकिय जीव बिहून रहै न शरीरा। जीवहि देहअरु तनजीवहि मूलकपूल दुधाछत पीरा॥ बंधन जोप दुवौ इतहो तन बंधित जीव अवंध सबीरा। जंगल ताहि न ज्ञान अलेसक जोनहिं जानत जीव अधीरा ४६२ संपुट पाठकरैं यक पंडित एक मृत्युंजय जाप करैरे। गोसत दान दिवावत बायल पर्वत अन्न लुटाव धरैरे॥ दान अवाशनि एक करावत गाय पुजावत द्रव्य हरैरे। जंगल हंस चलै परधामहि काऊके कर्म कछू न सरैरे ४६३ एकहि लग्न नक्षत्रघरी तिथिवार ससंवतजाति विचारिय। द्वै जनजन्म लियो यकठामहिं एकहि योगकरन्न सम्हारिय॥ पंडित भोगक मूढ़ द्वितीय धनीयक दूसर दीन भिखारिय। जंगल

जौन चढ़ै तस होत तबै इत बंधन मोच कथा न कहानी॥
घाव परै शरणागत ताकर भाकर नाम जपै सनिमानी।
मंगल भूल मिटै सिगरी अपनी पदवी नहि छोड़ अमानी
४५० आपन बूझ बुझावत आनहिं सो किमि मूझि सकै
मति घूना। सूरज की दुति होत, नहो सिकता चमकावत
है प्रति कूना॥ दंभ कि जानत ज्ञान विधानहिं जो सब
भांति नशावत सूना। मंगल मेंडि चरावन हार चुकावत
क्यों गव मोल अभूना ४५१ ईश्वर की रचना लखिकै बुधि
होत ठगी सिन बूझत भेदै। कोटि प्रपंच करै व्यनसाउ यथा
घनछेदत होतनछेदै॥ बीजविलोकि निहारत पादपके कि
उठै लहिकै उर खेदै। मंगल को करता गति जानत पंडित
बैठि रहै तजि वेदै ४५२ जो कछु नेति कहा निधिकी गति
जानत सो नति तादिन बूझै। अंध कि संकल आपन दे-
खत ता पग पांव दिये मग सूझै॥ कोमल सूत इतै अरुझो
सुलझावत ज्यों जित निज्ञ अरूझै।, मंगल सो किमि ताहिं
उबारिहि जो पहिले अपने रण जूझै ४५३ पाहन नाव न
नीरतरै किमि पंथिचढाय लगावत पारा। ज्योंबसि सूरज
लौ भटकै निशिवासर ब्याउ सदा करतारा॥ पंथ अनेक
प्रपंच बखानत ईंकत आनहिं आन विचारा। मंगल सत्य
कहे न बनै इत भापिय लोगन के अनुसारा ४५४ क्योंसुख
देखि लखै सुटको मन औ दुख हेरि लहै अघभारो। देहन
को शुचि आतम मानत दैत्यनके जडता व्यभिचारो॥ एक
स्वभाव सुधी समथी नहिं आनहिते नेहि धाम विहारो।
मंगल सत्य विवेक लिये निशिवासर नीरस एक प्रचारो
४५५ शुद्ध सतोगुण ज्ञानप्रकाशत बूझतही निरवाण कि
बानी। पंडितमंडन घंटबजावत गावतहै अपनी मतिमानी॥
वागविलाय सुअविज्ञन डोलहिलोगकहै जडता वश्यमानी।
मंगल जौलगि बूझन आवत तौलगि नेम अचार प्रमानी
४५६ निर्गुणवस्तु विचार भयेउर दंभसबै तजिदेत सुजाना।
को निरचै दिशिपूरव पश्चिम आगमवेद पुराण कुराना॥

कोई ॥ धावन वस्तु अनेक गहै कबहूं नहिं वाहि ग्रहीण गहोई। संगल आतम मोह बिवर्जित सोहन रूप वसै तन सोई ४७२ जो मन औ चित को भरमावत शुद्ध अशुद्ध गली नति खोई। बुद्धिहि मोहित नित्य करै यदि बोधत है तदि बोध न होई ॥ सर्व प्रकार शरीर लगावत आपुस कष्ट न देखि परोई। संगल आतम मोह बिवर्जित सोहन रूप बसै तन सोई ४७३ जाहि बिचारि थकी मनकी गति चित्त थकावत आपु चुपोई। ज्ञान कि सौन विवेक रहो उत जातन दूसर मारग कोई ॥ बुद्धि महा जड़ता चित धारत जाहिन बूझ सुकोटि बढ़ोई। संगल आतम मोह बिवर्जित सोहन रूप बसै तन सोई ४७४ दंभ बिवाद किये कितने पढ़ि वेद किताब चुपाइ रहोई। बूझि फिरो बहु ज्ञानिन सों जेहि योग समाधि अपार भनोई ॥ जासु कथा सुनि बाहिर देखत भीतर खोजत बाहिर जोई। संगल आतम मोह बिवर्जित सोहन रूप बसै तन सोई ४७५ आतम जोनि बसै तन में तेहि नाहिं छुधा न तृषा कछु व्यापै। दुःख नताप जरा न जरा नित आनँद रूप बिराजत आपै ॥ सोहनही सुतवित्त तिया धन आपु स्वछंद स्वसंच सुजापै। संगल बूझत आतमभावहि ब्रह्मसनातनकौतुमगापै ४७६ दृष्टिबिलोकत रूपसबै नहिं दृष्टिहि रूप बिलोकत ग्यानी। बाणि बखानत वेद पुराणन बाणिहि गाय सकै अनुमानो ॥ शोच सुनै बहु शब्द यथा नहि शोचसुनै द्वितिये शुण खानी। संगल त्योंनिज आतमहै मन बुद्धि सकै नहिं ताहि बखानी ४७७ दृष्टिहि ब्रह्म जो देखत है सब ब्रह्म किधौं बरबानि बताइय कौ श्रुतता जो सुनै सबबाद किहै मन ब्रह्म सदा गति गाइ-य ॥ बुद्धिहि ब्रह्म जो चीन्हत ज्ञानहिं पै भ्रम एक नहीं दृढ़ताइय। संगल सर्व सुपुष्टि किलैं यहितै जड़ भासत ब्रह्म न पाइय ४७८ ज्यों कविता कबितै उपजै कविता सतही कवि नामहिं पावै। मेघहि तैं जल नीरतै मेघ धनी धनतैं औ धनी धनधावै ॥ दंजते बीज बियाहिते पादप कोनिर-

ज्योतिष वादसु आनहिं ईश्वरकौकरणी कछु न्यारिय ४६४ दूरितेदेखतथूललगैलघु ऊंचचढ़ैलघुनीचवसेरी। नैनदियेचश-मा लघुदीरघ हेरतहैदुविधा गतिघेरी॥ भेदनही कछुअच-विलोकिय जीवहि द्रापनहै बुधि मेरी। मंगल आपन बूझ हिमें भल पंडितको ढिग बुद्धि किढेरी ४६५॥ छंद॥ पंडित वेद ऋचा दरशावें त्रिविधि अर्थ करि गावेंजू। आलिम फा-जिल वड़ा मौलवी आयत बांचि सुनावैंजू॥ जिन वह वेद कितेब बनाई तिनकी गति नहिँ पावैंजू। मंगल समुझि ली-जिये दिलमें क्यो अवज्ञान सिखावैंजू ४६६ पूजा पाठ जाप तीरथ व्रत वर्णाश्रम सद भुल्लहै। मद्य विवाद दंभ नाना की पिये वचन गति भुल्लहै॥ विद्याधन नृपता को आफू सूंदत चप काऊं खुल्लहै। मंगल है निर्गुण मत विजया यकचुल्लू में उल्लहै ४६७ बूझतहौ, निर्गुण मतवानी सिगरो कायभुला-नीहै। अब आन उत्तर कुछ आनै देत सुमति बौरानी है॥ जिसको पहिले दुष्ट बखानै अब कहै परम ज्ञानीहै। मंगल बूझि [illegible] ना पारस गिल बूझत की मति जानीहै ४६८ जो कुछ वेद कितेब न जाना सो अब कौनु बतावैरे। बूझ भये अपने उर अंतर बाहिर क्यों कहि आवैरे॥ जो वाहनैसुननै की नाही को अब ताकह गावैरे। मंगल है परदेकी बीबी परदा खुलै न पावैरे ४६९॥ सवैया॥ सत्य कि प्राविट धीरज आवश ज्ञान जलोट दशा दिगि प्राची। नायु निलोह चमा नहि वर्षत पुन्द विचार दुबी जग नाची॥ गालि विवेक संतोप जहा सुख पाखँड अर्क अपर्थ कुराची। मंगल संत किसान समोदित भापतहै वरषा यह सांची ४७० आँखिन मों सबको निरखै नहिं नैनन देखिसकै तेहि कोई। सूंघ-वासु सबै नित नाकन वाकह वासित जात कहोई॥ स्रौनी-अपार सुनै स्रुति द्वार न ताहि सुनो स्रुति काटि धरौनी। मंगल आतम सोह निवर्जित मोहनरूप बसैतन सोई ४७१ गावत ज्ञान कथा इतिहासहि वाणि सदा नहिं वाहिम-योई। स्वाद चखै रसना जिनसे नहिं नीरस स्वाद लखे तन

कोई ॥ हाथन वस्तु अनेक गहै कबहूं नहिं वाहि अजीव गहोई। मंगल आतम मोह विवर्जित मोहनरूप बसै तन सोई ४७२ जो मन औ चित को भरमावत शुद्ध अशुद्ध गनो मति खोई। बुद्धिहि मोहित निश्चय करै यदि बोधत है तदि बोध न होई ॥ सर्व प्रकार शरीर जगावत आपुस कष्ट न देखि परोई। मंगल आतम मोह विवर्जित मोहनरूप बसै तन सोई ४७३ जाहि विचारि थको मनकी गति चित्त चवाउते आपु चुपोई। ज्ञान कि मौन निवेक रहो उत जातन दूसर मारग कोई ॥ बुद्धि महा जड़ता चित धारत जाहिन बूझ सुकोटि घटोई। मंगल आतम मोह विवर्जित मोहन रूप बसै तन सोई ४७४ दंभ विवाद किये कितने पढि वेद किताब चुपाइ रहोई। बूझि फिरो बहु ज्ञानिन सों जेहि योग समाधि अपार भनोई ॥ जासु कथा सुनि बाहिर देखत भीतर खोजत बाहिर जोई। मंगल आतम मोह विवर्जित मोहन रूप बसै तन सोई ४७५ आतम जोनि बसै तन में तेहि नाहिं छुधा न तृषा कछु व्यापै। दुःख सताप जरा न जरा नित आनँद रूप विराजत आपै ॥ मोहनही सुत वित्त तिया धन आपु स्वछंद स्वसंच सुनापै। मंगल बूझत आतम भाव हि ब्रह्म सनातन को निज मापै ४७६ दृष्टि विलोकत रूप सबै नहिं दृष्टिहि रूप विलोकत प्रानी। बानि बखानत वेद पुरानन बानिहि गाय सकै अनुमानो ॥ श्रोत्र सुनै बहु शब्द यथा नहिं श्रोत्र सुनै द्वितिये गुण खानी। मंगल त्यों निज आतम है मन बुद्धि सकै नहिं ताहि बखानी ४७७ दृष्टिहि ब्रह्म जो देखत है सनु ब्रह्म किधौं वरवानि बताइय कै श्रुतता जो सुनै सब नाद कि है मन ब्रह्म सदा गति गाइ-य ॥ बुद्धिहि ब्रह्म जो चीन्हत ज्ञानहिं पै भ्रम एक नहीं दृढ़ताइय। मंगल सर्व सुषुप्ति मिलैं यहि तैं जड भासत ब्रह्म न पाइय ४७८ ज्यों कविता कवि तें उपजै कविता सतहीं कवि नामहिं पावै। मेघहि तें जल नीर तें मेघ घनो घन तें औ घनो घन आवै ॥ इंधन तें बीज क्रियाहि तें पादप को निर

धार सुजान बतावै। संगत त्यों तन छीन कथा कहते न बनै यदि चित्तहि आवै ४७९ जो मनहि गोर खिझो पंच जानब भानु निमेष नछत्र कहावै। लोक दिशा विदिशा चपला घन वेद सबद्ध औ भाव बतावै॥ बाणि सहट त्वचा श्रुतता मन भास अभाव जा गुरु गनावै। संगत जोर विलोक किते सब में यक आतम आपु लखावै ४८० आतम प्रास विहनव, जीवन औ दृढ़ता, नहिं देखि परैरे। जातन आतम काव निवास सो मृत्युग्रस्या जगनाठ हरैरे॥ कोटि उपाय करै व्यवसायहि जालन डोलन सोन करैरे। संगत संत सदा शुचि भूतल जो निज आतम में दिवरैरे ४८१ लोक अलोक लखै नभ में नभह्न अहँकार में वास किये है। शक्तिमें है अहँकार जो शक्ति सो चेतन ब्रह्म को विंब लिये है॥ चेतन ब्रह्म अनादि अपार बखानत वेद सदा अविदे है। संगत तासुप्रभा निज जीवसो आनँदरूप विलाशहिये है ४८२ तत्व नहीं महतत्व नहीं अहँकार न शक्ति स्वतंत्र विलासी। नित्य प्रकाशित पै नहिं भानु बसै वर ठासन पौन प्रभासी॥ नैनन देखत बाखि न बोलत कान नहीं सुनता सुखरासी। संगत ताहि न दूसर जानत एक स्वछंद सदा अविनाशी ४८३ जाहि विचारि न भावत दूसर कोटि कथै कवि कोविद बानी। देखनहार त्रिलोकत रूपहि अंधस्वरूप भने अनुमानी॥ दोउन में यकभावन आवत यद्यपि पूरण वस्तु बखानी। संगत भूभाव आन यताउन आनहि है समुझै शुचि ज्ञानी ४८४ जासन आपन ज्ञान बखानिय सो अनखाय रिसाय परैरे। मौन भली यहि कारण यागग सत्य कहै दुविधा पसरैरे॥ ज्यों बक हंस कहै लघु धीनहिं हंस कहै बुधलोगु लरैरे। संगत दंभ लिये उर आनन ऊपर स्वांग अनेक करैरे ४८५ आवत है मन उत्तम पूरुष एक अनादि त्रिलोक भलैरे। हर्ष अपार तरंग उठै उर पैसर बाहिर कोन भजैरे॥ लोग कहैं हमको समुझाव रे संगत तूकन देय बजैरे। सो नहिं शांति में आवत कैसहु संत विचारि

विवादु तजैरे ४८६ कासुभाइय रूप न रंग न धाम न नाम न मात पिता है। ज्योति न तत्व अमेय अमान अलिप्त अलक्ष्य परे कविता है॥ ऊंच न नीच न पूरा न सूक्षम आदि न अंत सदा रमिता है। संगल बुद्धि न बूझि सकै तिऊं लोक प्रकाश नहीं सविता है ४८७॥ दंडक॥ सकल समाज चारि खानि जलजात देखु जल पर मानजात सोतौ भूताकाश है। भूताकाश अंतरिक्ष चंद्रलोक लोक तौ नक्षत्र लोक पावत बिलाश है॥ असुर बनाव देव लोकही ते देव लोक लोक गंधर्व सोतौ प्रजापति बास है। प्रजापति लोक सो बनायो ब्रह्म लोकपाय संगल अलोक आगे ब्रह्मविदा भास है ४८८ देव करि जानै ताको देव सो विवेक होत भूतकरि जानै ताको भूतरूप बासी है। बायु सो बिचारै ताहि भासत समीर सम नाकरूप वादै ताको नभसो विभासी है॥ भानु अनुमानै ताहि भावत दिनेश तुल्य सगुणप्रमाणै वाके सतन बिलासी है। एकरूप सोई न द्वितीय तात तीनि लोक संगल बिचारि देखा सत्य अविनाशी है ४८९ जड़वत रहत न जानत विधान वेद हंसरूप काग होत अचरज बानी है। जानिबूझि त्यागि भूल सत्यपंथ लेतजौन तासुबात सबबिधि सुजन प्रमानी है॥ रतन को भाव कोई जानत जवाहिरी न जानत वणिक जौन बेचत अंबानी है। संगल समस्त वस्तु प्रथम बिचारि देखै फिरि परित्यागै सत्य भाव चित्त आनी है ४९० जाने बिनु भापत लगात जीव आपु मूढ़ पूछत निकारै दांत अनहद बानी है। ज्ञान औ विवेक किधौं बसत सुठाम जाहि बदत प्रमाण आदि कथा कि कहानी है॥ अलख बताय समुझावै सत्य भाव कहां अंधन में राजा जाके एक आंखि कानी है। संगल स्वरूप आपु दूसरो कुरूप देखै मूढ़ता कि चातुरी बखानै कोई ज्ञानी है ४९१ एक ग्रंथ काहुबिधि पाठकीन्ह अर्थहीन ज्ञानिन से वाद करै बोलि बोलि बानी है। ज्ञान औ विचार कौन सूझत न शुद्ध चित्त चारि ओर मोह माया तन लपिटानी है॥

धार सुजान बतावै। संगत लों तन छीन कथा कहते न बनै
यदि चितहि आवै ४७९ ज्यों ससि मोर सिखी पंच कानख
भानु निशेश नचाव कहावै। लोक दिशा विदिशा चपला
घन वेद सबन्न औप्राय बतावै॥ वाणि सृष्टि लचा सुतता
मन भास अभास जा गुरु गनावै। संगत जोर त्रिलोक जितै
सब में यक आतम आपु लखावै ४८० आतम वास विहङ्गन
जीवन औ दृढ़ता नहिं देखि परैरे। आतम आतम कोन
निवास सो मृत्युग्रस्य चाण ना ठहरैरे॥ कोटि उपाय करै
व्यवसायहि वाजन डोलन सोन करैरे। संगत संत सदा
सुचि भूतल जो निज आतम में विचरैरे ४८१ लोक अलोक
सबै नभ में नभहू अहँकार में वास किये है। शक्ति में है अ-
हँकार जो शक्ति सो चेतन ब्रह्म को बिंब लिये है॥ चेतन
ब्रह्म अनादि अपार बखानत वेद सदा अविवे है। संगत
तासु गसा निज जीवसो आनँदरूप विलासहि ये है ४८२ तत्व
न हो महतत्व न हो अहँकार न शक्ति स्वतंत्र विलासी। नि-
त्य प्रकाशित पै नहिं भानु ससै सब ठासन पौन प्रभासी॥
नैनन देखत वाखि न बोलत कान नहीं सुनता सुखरासी।
संगत ताहि न दूसर जानत एक स्वछंद सदा अविनासी
४८३ ताहि विचारि न आवत दूसर कोटि कथै कवि को-
विद बानी। देखनहार त्रिलोकत रूपहि अंधस्वरूप भनै
अनुमानी॥ दोउन में यकभावन आवत यद्यपि पूरण वस्तु
बखानी। संगत वूभाव आन वृताउव आनहि है सब्भै शुचि
ज्ञानी ४८४ आसन आपन ज्ञान बखानिय सो जनखाय
रिसाय परैरे। मौन भली यहि कारण याजग सत्य कहै
दुविधा पसरैरे॥ ज्यों बक हंस कहै लघु मीनहिं हंस कहै
बुधलोग डरैरे। संगत दंभ लिये डर आनन ऊपर स्वांग
अनेक करैरे ४८५ आवत है जन उत्तम पूरण एक अनादि
त्रिलोक सबैरे। हर्ष अपार तरंग उठै घर पैसर बाहिर
कोन भजैरे॥ लोग कहै हमको समुझाउ रे संगत तू कस
देर लगैरे। सो नहिं शाखि ले आवत कैसहु संत विचारि

विवादु तजैरे ४८६ कासगुर्भाद्य रूप न रंग न धालन नाम न मात पिताहै। ज्योति न ०त्वग्रमेय ग्रमान ग्रखिलग्रकथ्य परेकविताहै॥ ऊंच न नीच न यूल न सूक्षम ग्रादि न ग्रंत सदा रमिता है। मंगल बुद्धि न बूझि सकै तिहुं लोक प्रकाश नहीं सविता है ४८७ ॥ दंडक ॥ सकल समाज चारि खानि जल शत देखु जल धन लानशत सोतौ भूताकाशहै। भूताकाश ग्रंतरिच्छ चंद्रलोक सोऊ तौ नक्षत्र लोक पावत बिलाश है॥ भपुर बनाव देव लोकही ते देव लोक लोक गंधर्व सोतौ प्रजापति वासहै। प्रजापति लोक सो बनायो ब्रह्म लोकपाय मंगल ग्रलोक ग्रागे ब्रह्मचिदा भासहै ४८८ देव करि जानै ताको देव सो बिवेक होत भूतकरि जानै ताकै भूतरूप बासीहै। बायु सो बिचारै ताहि भासत समीर सम नाकरूप वादै ताको नभसो बिभासी है॥ भानु ग्रनुमाने ताहि भावत दिनेश तुल्य सगुणप्रभासै वाके सतन बिलासी है। एकरूप सोई न द्वितीय तात तीनि लोक मंगल बिचारि देखा सत्य ग्रविनाशी है ४८९ जड़वत रहत न जानत विधान वेद हंसरूप काग होत ग्रचरज बानीहै। जानिबूझि त्यागिभूल सत्यपंथ लेतजौन तासुबात सवविधि सुजन प्रमानी है॥ रतन को भाव कोई जानत जवाहिरी न जानत बणिक जौन बेचत ग्रंवानीहै। मंगल समस्त वस्तु प्रथम बिचारि देखै फिरि परित्यागै सत्य भाव चित्त ग्रानीहै ४९० जानै बिनु भाषत लजात जीव ग्रापु मूढ पूछत निकारै दांत ग्रनहद बानीहै। ज्ञान ग्रौ बिवेक किधौं बसत सुठाम जाहि बदत प्रमाण भाषि कथा कि कहानी है॥ ग्रलख बताय समुझावै सत्य भाव कहां ग्रंधन में राजा जाके एक ग्रांखि कानी है। मंगल स्वरूप ग्रापु दूसरो कुरूप देखै मूढ़ता कि चातुरी बखानै कोई ज्ञानी है ४९१ एक ग्रंथ काहुविधि पाठकीन्ह ग्रर्थहीन ज्ञानिन से बाद करै बोलि बोलि बानीहै। ज्ञान ग्रौ बिचार कौन बूझत न शुद्ध चित्त चारि ग्रोर मोह माया तन लपिटानी है॥

आपु सम दूसर न मानत विमूढ संत साधुता कि बातदूरि बडो अभिमानी है। मंगल न माने राउ सांची तौ काहा वत है चिडिया क धाम धरी जैसै कौडो मानीहै ४९२ सवैया ॥ तू सन जानत है अपनी गति तापर मारग वाक सिधावै। जो विभुताहि प्रजा सम जानत को अब तोकाहे ज्ञान सिखावै॥ पावक नीर बुझावत है जोपै नीर मरै फिरिकौंनु बुझावै। मंगल मकरु संत सिखावत संत अभाय काहा बनि आवै ४९३ वेद विधान बतावत पंडित आपु दुं-चित्त विषय लपिटाना। वाहिर उज्जल अंतर श्याम रँगे पग चोंचन हंस प्रमानो॥ औरन का भ्रम कूप गिरावत आपुन सूक्ष ज्ञान भुलानो। मंगल काकहिये छल वा-दिहि सत्य मिटाय असत्यहि सानो ४९४ एकान कि प्रणपाठ विना जल पान करै नहिं वासर काहू। रोग ग्रस्यो प्रण त्यागि पियोजल आनि परो डर अंतरदाहू॥ प्र व्रत पाठ टपा अति व्यापित जो जलसे नहिं पाठ उछाहू। मंगल दंभ परित्यजि जो व्रत सो सतकर्म बटै विरुगाहू ४९५ अं-तर श्रीहरि ध्यान विराजत बाहिरकाज विषयरत जाई। ताकहु संत बखानत कोविद पाप अपाप ग्रसै नहिंकोई॥ जाविधि भाव रहै जग ता विधि कर्म सुकर्म न जात वदोई। मंगलसंत समान सुधीनहिं भाव द्वितीय धरै हियसाई ४९६ चौन्हत सूरज पाय सबै दिनमें निशि चन्द्र प्रकाशहि पाई। ग्रस्त भये दुहु अग्नि प्रकाश सौं पावक नाशत शब्द प्रभाई॥ शब्द विहीन न चौन्हि सकै तब आतम की सुधि चेतन ताई। तानल लोक तिहूं पहिचानत मंगल आपनिवस्तु पराई ४९७ यह्नि दर्शी तन इन्द्रिय वीन्हि के पांचहु प्राण समेटि चलैहै। चित्त चपंडत है मन बुद्धिहि, संग प्रसंग रचैसु चलैहै॥ जागृत की सब वस्तु दिखावत देखि प्रसन्नत सत्य छलैहै। मंगल याकि सुषुप्ति गहै इनहूं सबको तजितीन घलैहै ४९८ कोटि करौनहिं नैन बिलोकहि कान सुनैनहि शभिमपानै। नाफनसूंघ त्वचाम-

रसैनहिं आनऊं इंद्रिय कर्मनठानै ॥ चिन्तहि चित्त नहीं अहँकारित औमनधावन बुद्धि प्रमानै । मंगल चेतन आतसहीन नथैसिगरे नहिं आपुहि जानै ४९९ जागि दि-लारिचलो पुनि खेलहि तासुप्रताप सबै जन जागे। शब्द सुनै परसै अरुदेखत चाखत सूंघतही अनुरागे ॥ कर्म रक इंद्रिय ज्ञानकरै निज बुद्धि मनादि स्वमारग लागे। मंगल चेतन आतम आपुहि तासिनहैं जडतासब पागे ५०० आपन तेतुर तोनिपसारत ज्योंमकरी निजजाल पसारै । नेक घटै नसमेटि बढ़ैतिमि अंतसबै हरिअंग निहारै॥ संत असंत गुणीऽगुणी सुरदैत्यकथा उतकौन विचारै। मंगल एकहिभाव कृपानिधि जाननहार किआपुहि हारै ५०१ ब्रह्म सनातन ज्योति निराकृति पावक भानु निशाकर नाहीं। रत्न नछत्र न वस्तु प्रकाशित प्राण प्रभासन भासि सकाहीं ॥ देखत जीवलहे पदआपन जोपरमातम कीपर-छाहीं। मंगल कोउपमा जाअनूपम बैठिनुपाइ्रहीं घर-माहीं ५०२ ॥ छन्द ॥ पहिला चक्र गुदाऊपर द्वितिय स्थिस्तकै आगे है । नाभिस्थल तीजा चौथा हिय पंचम कंठसथागेहै ॥ षष्ठम त्रिकुटी धाम अनाहत ध्वनि जहंसु-नि सुखजागेहै। मंगल अंगहोत नहिं कतहूं यकरसह-श विधि लागैहै ५०३ यहध्वनि सुनतपरम पदपावै निज आतम अनुरागैहै। पुनि त्यहि नाहिंअविद्याव्यापै विधवा लहत सुहागैहै॥ एकभाव चहुंखानि विलोकै जोन्हत हंसन कागैहै। मंगल चितानन्द गहिनिचरै नहिं दाता नहिंमागैहै ५०४ जेहिध्वनि सुनी अनाहत नाही हृदय कमलमें डोलैहै। त्रिविधि भांति दुखसुख संसृत में ख।वत आयुसमोलैहै ॥ मायामोह ग्रसैमन वाको दुविधि गिरा गति बोलैहै। मंगल जौलगि आपुन जानत तौ लगि नर प्रभुतोलैहै ५०५ ॥ दंडक ॥ अमित विधान श्रुतिआगम ब-खानदेखि बुधिधिर होतनाही दुविधाके धानसे। जानत प्रकाशरूप मानत विभास जाहिमोहत विमोह आपु मन

बुधिप्रानमें॥ तीनिदेह पंच कोपपांच गुणभूल भाव एक आपु हितिय न आवत सुज्ञानमें। मंगल प्रवीन सोई एक भाव जाके चित्त नातो भ्रमभाट फिरै मायाहूकी स्थान में ५०६ ज्ञानिनमें ज्ञाननाहीं ध्यानिन में ध्यान नाहीं वादिनमें वादनाहीं सत्य बुझआनेते। जापिन मेंजापना- हीपाठिनमें पाठनाहीं योगिनमें योग नाहीं आतमा स- जानेते॥ त्यागिनमें त्यागनाहीं भोगिनमें भोगनाही दुः- खिनमें दुःखनाहीं अंतज्ञान जानेते। देहिनमें देहनाहीं गेहिनमेंगेहनाहीं नेहिनमें नेहनाही शुद्धभावमानेते ५०७ जाके नाम होतताके रूपहू विशेष होत रूपवान जौनवा- की नामसे विन्हारहै। नामरूप हीनताहि जानत न बुद्धि भाव कोटिभांति भादिबदै मनको विचारहै॥ जहां लग रूप नामतहंलग मायाभास मायाहीन पारब्रह्म अकथ अपार है। मंगल भनावै सोइ पाखंड कि आग पाय गुरुता दिखावै शिष्य बोधै करतार है ५०८ आतम न बूझै ज्ञान हूंमनें अरूझै चलु आपनी न सूझै कहै आरसी को दाप है। धाय जाय चारि ओर तीरथानि भूमिछोर घूमि आवै बुद्धि भारनाहीं उरतोप है॥ ज्ञान उपदेशै जीवईश ग्रंथ तत्र जसि आपु भ्रम भेग्रै रहै जीव नोह रोप है। मं- गल बखानै जैसे ज्ञान कोन चित्तभास जानत अनित्यनित्य पायो कहां लोप है ५०९ अरथते अरथविराजै अथ अघ- हूते आगेहूते आगे पाछे पाछेहूते गाइये॥ थूलहूते थूल सोहै लिंगहूते लिंगरूप आतमाको आतमा प्रसिद्ध चित्त लाइये देवनको देवसुर तीनिहूं को अन्नदान गुणतत्रवेद गनिअवार गुणदये। मंगल निराजैराम ठासनमें न्यारो सोई सनकोशुनानि सोन ताको भेद पाइयें५१०एकते अनेक रूप चारि खानि देखियत अंत एक रूप होय साखी वेद गावै है॥ जालाज्यों पसारै कीटमकरी अपार तात खात ताहि जगद्रु में सुरति समायै है। मूढ ताको भाव नाके मानत न पार ब्रह्म जगत जनादि मादि ग्रंथको बनावैहै॥ मंगल

न भूलै ज्ञान मान संत शुद्ध भाव एकआनि सत्य सिंधुदृढ़ता दृढ़ावै है ५११ ॥ सवैया ॥ जौलगि जीवन याभर तौ लगि बंधु प्रिया सुतमात पिता है। संमति सिन अवास महीधर वाजि सुमाह्नस्यो रसिता है॥ आपन ध्यान बतावत बूझत मूढ प्रबोध सुधीस मिता है। मंगल अंत शरीर छुटे गति जीव की कौंनु कहै कविता है ५१२ स्वर्ग गयो यदि नर्क परयो पर तंत्र भया नहिं आतम मानिय। जौपै स्ववश्य प्रमुक्त कहौ वुध तौ नहिं जीव स्वतंत्र बखानिय॥ है पर तंत्र स्वतंत्र नहीं यक भाव न खानत जो अनुमानिय। मंगल लोगकहै कविकोविद कर्म विवश्य भ्रमो शुचि वानिय ५१३ आनंद रूप निरानँद नाहिंन बंधन मोष दुवौके परे है। जीवत है न मरै कतहूं वश कर्म न ऊपर जात तरे है॥ जो रूप आपुहि सेवक जानत सो भृत कर्म स्वशीश धरे है। मंगल बूझभये नहिं सेवक साहिब राज स्वतंत्र करे है ५१४ सिद्ध स्वरूप न साधित होवत ब्रह्म न मानव रूप ननावै॥ माह विलाश शरीर लहै वह सत्य प्रमाण महालनिगावै। सोइ कहै प्रति शक्ति विखंडित जौनु कारैसन सोवनिआवै। निर्गुण सर्गुण दोउन में भ्रम मंगल के चित चेत न भावै ५१५ जो गुण तीनि लिये सुरतीनि विरंचि सविष्णु महेश कहावै। तैतिक्ष रूपभये यक ठाम विराट शरीर दशौदिशिगावै मृत्यु विरंचि सरी स्वधीस पताल सदाशिव अंग सुहावै॥ मंगल त्यागि चिदेश न भासत को अज अव्यय ब्रह्मलखावै ५१६ पांच पचीस ग्रसे उरमीपट चित्त अहंमन बुद्धि लुटेरी। एक द्वितीय नतानहिं मानत जीवहि घेरि रहे चहुं फेरी॥ ज्यों खग नित्य नभे भरमे नहिं आवतअंत नआपु बसेरी। मंगल जीव अबध्य स्वतंनित याकत इन्द्रिय मूरति हेरी ५१७ क्यों मन बोध लहै अपनो दुविधा किकयाकवि पंडित गावै। ब्रह्म निरीह निरंजन व्यापि बहोरि बदै नरकाय बनावै॥ मोह विवर्जित पूरण रूप बताय कहै वन नारि ढुंढावै। मंगल मौन भगो नहिं तर्क चुपाने बनै

न कहै मनि आवै ५१८ जौन चहै सो करै करुणा निधिहै सब शक्ति मयी जग जानै। रूप अतर्क अकाथ्य सकथ्य विमढ़ न पण्डित जो अनुमानै॥ जन्म धरै न अजन्म रहै प्रतिभास निवास अभास विधानै। मंगल ज्यों समुझौ तस आवत ता कहँ ध्योंकरि वाणि बखानै ५१९ वाणिन में न अवाणिनमें मुनि ज्ञानिनमें न विलोकि परैरे। तर्कनमें न अतर्कनमें शुचि वक्रनमें न अवक्र चरैरे॥ मूढ़नमें न अमूढ़न में गति गूढ़नमें न निगूढ़ धरैरे। मंगल यत्र विचारिय तत्र न औ सब ठामनमें विहरैरे ५२० जो मन तोहिं सिखावत ज्ञान अनादि अनन्त विधान बतावै। ताकहँ तू नहिं चीन्हत मूरख कोटिन योजनलौं फिरिआवै॥ तीरथ मूरति में हरि खोजत दोष अदोषनमें भ्रमखावै। मंगल लोगकहै यहि कारण मूरखहै मनसत्य न भावै ५२१ पांचहि तत्त्वन ते उपजै सब जीव चराचर देख विचारी। ह्वहि लहै सुख दुःख सहैं बहु ज्ञान विधान करै व्यभिचारी॥ अन्त समय मिलि जात सबै यह तत्त्वहिमें मुनि वाणि पसारी। मंगल वाण अवाण विकल्पन भूल कि पद्धति भूतल न्यारी ५२२ यद्यपि जीव वनस्पतिहू महँ पै मनहै तिनके उर नाहीं। पच्छि पतंग चतुष्पद नागमें जोवसहो वुधिमा तिनमाहीं॥ उत्तम काय मनुष्य धरातल नामधि वुद्धि मनादि लखाहीं। मंगलताकहँपाय न ध्यावत आतमहै जडता परछाहीं ५२३ तत्त्र रचे गुण देव अदेव वनस्पति कीट पतंग वनाये। पच्छि सरी सप औ पशु खेचर आदि विना श्रम सर्व उपाये॥ पै न प्रमोदित भो करता तब वुद्धि स्वरूप किधौं मनुजाये। मंगल तादिनते करतार चराचरजीवनहीं निरमाये ५२४- स्वेद प्रसादते स्वेदज होवत चीलड लीख जुआँ जगजानै। अण्डते अण्डज कीट खगाहि पिपील सरीसृप आदि प्रमानै॥ भू जल वायु प्रयोग वनस्पति उद्भिज होत सदा निरमानै। यो निज मानव औ पशु सम्भव सो नर नारि प्रसंग न आनै ५२५ जागृतमें मनआन विचारत स्वप्न समय

कछु आन करैंरे। सो तजि देत सुपुष्टि प्रचारत आपनही सुधितै बिसरैंरे॥ तद्यपि ज्ञान न आवतहै चित क्यों भरसाय भुलाय मरैंरे। मंगल सूरण तामनके वश क्यों कहिये कथनी बिगरैंरे ५२६ आर्पानि बुद्धि अदोपित चाहिय अन्न सबै घल भापि परैंरे। जो दृढ़ता बुधि में नहिं तो जनु चित्रित पूतरि रंग भरैंरे॥ मूढ़ बिलोकि प्रणाम करैं बुध देखिगुणी गुणको पकरैंरे। मंगल काकहिये धिषणा निज बूझत भाव न आन धरैंरे ५२७ दायक दृशि समर्थ्य कृपानिधि पण्डित सज्जन वेद बतावै। देत सबै अनयास सदा नर जानि न तोप स्वचित्तहि लावै॥ नित्य भ्रमै प्रतिठाम बिमोहित पालक भूलि न जीव लगावै। मंगल ध्याउ सदा परमातम जो सब ठामन में छवि छावै ५२८॥ दण्डक॥ शैवी शिव ब्रह्मवादैं जैनी अरहन्तकहै बौधकहै बुद्ध आदि ब्रह्मअवतार है। कर्मही प्रधानभनै जगवद्ध मीमांसाज्ञानी न्यायी कहै त्रिपुरको एक करतार है॥ बदत वेदान्ती सत्य ब्रह्म अजयोनि योनि सगुण उपासी गावैं राम राम सार है। शंक्ति शुचिवादी भाखैं प्रणव प्रधान रूप मंगल असत्य नाहीं दुबिधा अपार है ५२९ वेदकी न आनै न कितैनकी बखानै कछु आन अनुमानै धन्य सन्तनकी बानी है। सत्य न दृढ़ावैं न असत्य मारग लावैं शुणि आनहीं सुभावैं सूधी उलटी कहानी है॥ जाहि बूझ आवै ताहि साहन सतावै आपु रंग रूप पावै नाहिं रंगति रँगानी है। मंगल प्रबोध होत चीन्हैं सत्य नात गोत चढै धाय ज्ञान पोत पार बाट जानी है ५३०॥ ग. पालछन्दः॥ यवा उपदेशै लखै न आप। प्रणव मंच अजपा को जाप॥ याग बतावै करै न सोय। मंगल बुध अबिवेक न होय ५३१ पण्डित आगम करै बिचार। ज्ञानी चर अचर बिस्तार॥ पढ़े मोलवी सुलवि कुरान। मंगल आपु न मावै जान ५३२ कायर बाना वीर बनाय। समर भूमिसो किमि ठहराय॥ त्यों पाखण्डी भव दरथाय। मंगल सन्त छलो नहिंजाय ५३३ अग्नि बिनाशै

जल बक्रताय। बड़वानल नहिं सकै बुझाय॥ मूरख क
दम्भी छलि खाय। मंगल ज्ञानी ठगो न जाय५३४ अप
हंस अन्तरित काग। ज्ञेउ भेउ वाणी अख नाग॥ साख
तिलक बिभूति निचोल। उदर निमित्त बचन बंडोल५३
वेद किताब न मानै जाहिं। पाखण्डी दरशावै ताहि
अलख बताय लखावै रूप। मंगल ज्ञानी मूढ़ अनूप५३६
वाणीमें नहिं ब्रह्म समाय। कोटि पुराण कुरान कथाय।
जोदेखो न कथा इतिहास। मिथ्या माया रूप बिलास५३
काष्टान्तर पावकको वास। पवन नीर कारि सकै न नास
त्यों शरीरबिच जीवप्रबीण। कालगहै कछुपरै न चीण५३
वेद उपनिषद आगमजौन। श्रवणकियो कबहूं नहिंतौन
पढ़ा एक है भाषा ग्रन्थ। मंगल बादी बिचरत पन्थ५३
ब्रह्म लखावै मोह मलीन। शुद्ध सतोगुण गहै गलीन॥ निर
बिस्तार भेदनहिं पावे। उपजत मरत स्वभाव अभाव५४
त्यागी भयो न त्यागे दम्भ। रचि पचि मूढ़ बालुकृत खम्भ।
येहिनसे नित होत ग्रहीत। पवन उड़ावत बालु भीत५४
गुदड़ी अलफी जटा लँगोट। नग्न अभूषण तरवर ओट।
आयु बिताइ तन दुखपाव। मंगलहाथ काछूनहिंआव५४२
जैते गुणगण ज्ञान बिलाय। जिह्वाग्र तू करत प्रकाश॥ सो
कित धरे रहैं तन माहि। जो समुझावै बूझौं ताहि५४३
ब्रह्मज्ञानी जो जग आहि। बन्धन मुक्ति न ब्यापत वाहि॥
जीवोद्धारण बोलै बैन। बैर प्रीति दुबिधा मन हैन५४४
निर्वाणी निर्गुण कृत बाद। जीभ चबाये लगत न स्वाद॥
जो पुरुषोत्तम ध्यावत सत्य। मंगल मेटत जन्म बिपत्य५४५
इष्टदेव फल देत समोद। फल आशा बन्धन चहुं कोद॥
निष्फल टहल न सेवत कोइ। सेवत जौन निराशा होइ५४६
जादिन गुरु न शिष्यब्यवहार। क्रियाकर्म जबनहिंकर्त्तार॥
तबहीं हैत कि ब्रह्म अकेल। ग्रन्थ किधौं यह अद्भुतखेल५४७
निराकार बोउभयो अकार। सबठांकोउ बैकुंठ बिहार
शिवनारायणलोगविचार। मंगलहोतनहीं निरधार५४८

प्रथमें ब्रह्म कि माया होय। बुधजन हमैं बतावैं सोय॥ जोपै बदैब्रह्महैआदि। मायाविषयकुमिथ्यावादि ५४८तौविज्ञान कहां ठहराय। सक्षमत दुबिधा कहो न जाय॥ माया नश्वर बदै प्रबीन। चेतन पुरुष अभिन्न अधीन ५५० माया नाशि पुरुष भिलिजाय। चौदहभुवन विभूतिनशाय॥ कौन बखानै जानै ताहि। मंगल यह मन मतो न आहि ५५१ मारग एक चलै संसार। नहिं द्वितीय कारण विस्तार॥ वहै पन्थ मुनि धारण कीन्ह। चीन्ह्यो आतम परम प्रवीन ५५२ कहै विपर्यय वाणी एक। मूरख क्यों करि सकै बिबेक॥ एक अनाहत वचन प्रकाश। मंगल वानी बुद्धिविनाश ५५३ छुधा पिपासा बिविश दिन रैन। प्रति पल फिरत प्रचारत बैन॥ आपनि नति थिरता गति हीन। मंगल परम हंस पद लीन ५५४ जो न पुरुष घट जानै आप। तथा प्रगट चलपा को नाप॥ यविरकी सबके घर खाय। सुपच अहै तेहिते अधिकाय ५५५ यत्र तत्र करि तथा बखान। प्रति कुलित वाणी निधीन॥ आमु विषय रस भोग प्रयुक्त मंगल सो जगजीवन मुक्त ५५६ पय घृत मिलित भोज्य मिष्टान। पावैं सदा प्रकाशै ज्ञान॥ व्यापै काम बैसनिका होय। निजकर रेत गिरावत कोय ५५७ करै बडाई आपनि आप। प्रति पल मिथ्या बचन प्रलाप॥ जो सुगन्धि सो आमु बसाय। गन्धी मुख चीन्ही नहिं जाय ५५८ ॥सवैया॥ यातन इक्षसबै परमातम जीव खगागि सदा सुखदाई। भोग विलास किधौं फल रूपक जीव गहै मन बुद्धि सभाई॥ तावश जीवन मुक्ति लहै अव भूतल यों स्मृतिवाणि सुनाई। मंगल है परमातम शुद्ध भये फल नाहिंन अन्तत आई ५५९ जो मत देखिय दृष्टि पसारि के तामहँ पाखँड देत दिखाई। शुद्ध सतोगुण कोउ गहै नहिं आपनि आपनि चाह बडाई॥ एक द्वितीय को उच्च बतावत को वड छोट कहै समताई। मंगल ठीक न आवत चित्तहि ब्रह्म सनातन देत लखाई ५६० वेद बदै सबके शिरपै पुरुषोत्तम

है अविनाश अकेला। वायन्न टीन सता नर नारिन पंडित आलिम औ गुरु चेला॥ जानत वा कहु दूसर नाहिन है अनुमान महान अपेला। मंगलबुद्धि लसै नहिं मूरति होत प्रकाश न भानु नवेला ५६१ ॥ छन्द ॥ जिन प्रकाश परछाहो देखो तिनकी मति बौरानी है। कोटिज्ञान पण्डित समुझावै कौनु सुनै विष बानी है॥ गृह बाहिर अलमस्त विराजै आनँदमय बिज्ञानी है। मंगलकहायुभावै औरहि अद्भुत् कथा कहानी है ५६२ ॥ सवैया ॥ नाम नही फिरि का कहि गाइय धाम नहो कित बास कहौरे। देह नही केहि ध्यान बखानिय द्वैत नहो जपै एक लहौरे॥ चेष्टित नाहिं जो नेह बताइय वस्तु नही कर काहि गहौरे। मंगल अद्भुत् बाद बडो इत हौं मन वैठि चुपाइ रहौरे ५६३ तू मन जौन कही सो कारी हम योजन केतिक धाय चले है। शासन वेद किताब लिये मत तीरथ मूरति पूजि भले है॥ छंद कवित्त रचे नवभांति विषय रस भाग सुगंध छले है। मंगल बूझ भये तजि पाखँड जानि वृथा निज हाथ मले है ५६४ मुक्ति कहूं नहिं बन्धन है मन तू अबहो भ्रम पद्धति धारे। बंधन मोक्ष कहावत नामहिनर्क रु स्वर्ग इत्याहि विचारे॥ जीवन मुक्त स्वरूप तुही लखु ज्ञानके अच्छ सुदृष्टि पसारे। मंगल बूझभये दुविधा गतहै अबनाहि दुवौ भ्रम टारे ५६५ क्यो निरदोष रचै अब बीचिन पापकुदृष्टि दुराश बसेरा। कोटि व्यकार बिथा तन व्यापत मानत है नहिंकामकोचेरा। जाहियुभाइय ज्ञान सुमारग सोसुनि जानत दुःख घनेरा। मंगल आतम कौनु विचारत दंभ विवाद् किये भट भेरा ५६६ मोह बिलास विषय परिहास समोदित तू मन चित्त पधारे। आव इतै चल खाड खरीदन खारि खरीदत ज्ञान बिसारे॥ संत स्वभाय न भापत है पर दुष्ट क्रिया हितसो लत न्यारे। मंगल ऊपर छाप लिये अक मुक्ति न होइ वृथा उपचारे ५६७ कौनु गृहस्थ जो इन्द्रिन के बश कौनु उदीन जोयुभात बानी कौनु गुरू

जो बुझावत आतम शिष्य कोइ जो खभाव अमानी॥ आशुष कौनु जो है समधी पुनि कौनु सहंत ख आसन थानी। मंगल संत का है जो असान नही दुबिधा ज्यहि की मति भानी ५६८ जेतिक लोग अहै मन भूतम ज्ञान बिना नहिं देखि परैरे। आसन मूढ़ कहौ सो लड़े उठि साधु कहे हित सों बिचरैरे॥ लागत है नहिं मानकि पद्ध-ति ज्ञानिन को सँगु कौनु करैरे मंगल तू बड़ मूरख या जग मान कुमारग पांव धरैरे ५६९ मान गहे भव बीधिन भाविक आन हिये सुख आनकरैरे। वेद किताबन अक्षर जानत आतम भाव का थाय गहैरे॥ आलस के बश होत परिश्रम नाशिन भिक्षुक भाव लहैरे। मंगल शिष्य किये धन के हित दंभ ग्रस्यौ नहिं सत्य अहैरे ५७० शीतल संत स्वभाव सदा नहिं क्रोध किपावक चित्त प्रजारै। भोग बि-षय किन आश हृदय नहिं काम बतास शरीर प्रचारै॥ वैर बिमोहन व्यापत जीवहि बुद्धिमनोहर बाणि उचारै। मंगलडोलत तापबिनखिडतखडितदंभबिवादप्रकारै ५७१ बाद बिषय नहिं भावत है नित ज्ञान बिबेक कथैं शुचि बा-नी। मौन्य रहै नत ध्यान हृदय हरि शुद्ध सतोगुणधी नि-रवानी॥ हंस दशा जड चेतन है विधि पण्डित बालक बालिन जानी। मंगल आतम ध्यान सदारति दूसरि बुद्धि न चित्त समानी ५७२ सोहत नित्य स्वआसन तापित शु-द्ध समाधि लिये पट भांती। जो बिचरै भवतौ मुद संयुक्त दूभत सुंदर जाति कुजाती॥ तीनि निशान बसै गृह काछ क बेद कि सीख सिखावतजाती। मंगल है तन एक गहे नहिं निन्दक और प्रसंशक खाती ५७३ जाय मिलै सत संगति संतन धाय गहै जन साधु बिचारी। आपन को सब ते लघु जानत आननको शुचि हा न निहारी॥ मात पिया गण तात सबै नर ऐसक एक कुलीन अनारी। मंगल संत महीतल है अस कौनु कथै महिमा बडि भारी ५७४ संत न को नित सोर प्रयास है संतन को हित नौमि सनेहा।

संतन को मन संतत हौं मन संतत के पद सों उरगेहा।
संतन की महिमा चित आवत संतन के हित आपनि देहा।
मंगल दम्भिन ते कुल दूरहि राखिय सोहिं अहै प्रण
एहा ५७५ कारण ब्रह्म अहै भवको उपजै तेहि ते पुनि ता-
हि समावै। कोउ भनै जग कारण काल है आपु रचै पुनि
पालि मिटावै॥ होत स्वतंत्र बहैं यक कोविद अन्तस्वछ-
न्दतसो जग आवै। मंगल भूल मिटाय सकै नहिं कोटि
पुरान कुरान सुनावै ५७६ एक कहै जगकारण कर्महि
एकउ पांचहि तत्व बतावै। है करतार सही यकभाषत
मैननमावन हार गुखावै॥ गावत एक कियो प्रकृती जग
अंत सबै टिक अंग मिलावै। मंगल भूल मिटाय सकै
नहिं कोटि पुरान कुरान सुनावै ५७७ कंचन गर्भ ते
है उपजो सब औ परिणामतहीं दिखिलावै। योग सबैकार
एककहै भवकारण निश्चितमरतु दृढावै॥ आपनि बाणिभलौ
सबकोयदि गुंगऊ है तदि दंडन न पावै। मंगल भूल मिटाय
सकै नहिं कोटि पुरान कुरान सुनावै ५७८ योगिनती तपसी
बुधमौनि उदासिकधीश्वर ज्ञानप्रवीनो। देवअदेव मुनीश्व
मनुज भूपति रंकावनी वनहीनो॥ संतगृहस्थ अधार्मि
धार्मिक आतमज्ञानि समाधिहिभीनो। मंगल कोउ रह
नयहीतल कालबली सबजीतन लीनो ५७९ विसभजै च:
चारमिलै चहुआश्रमि सनातन ब्रह्मविचारै। जैनवनै चहुंवौ:
गुनौ अपपंथचलै किमपंथ बिहारै॥ न्यायपढै वऊ सांख्यग
ढऊलीन सुकरम कोटि नवारै। मंगल कोउ बचै न जै
कालवली सबको भखि डारै ५८० यातन प्राण स्वब्रह्म स्वरूप
मिलाय दै मंगल रासिकहावै। ताकर ८ नवसै मनमोहन
चारिसुलोचन रूप लखावै॥ दृष्टि सुसंचट नित्य विचारिय
पायक इंद्रिय कार्यहुवावै। मंगल जोअस जानिभजै निज
आतम सापरमानंद पावै ५८१ यापन यावन जानतनेकऊ
काम अपार पसार करै। है तिनको फलबंधन जोप नजन्म
अनेकन नार धरै॥ ज्योंहितकोट कुशांलि खमंदिर आप-

हि मरख वंदिपरैरे। मंगलकर्म अकाम करैगा धर्मबढ़ैतन जीधतैरे ५८२ इष्टि विश्न शरीर छुटैनहिं वाणि विना न कलेवर नाशै। हीनित घाण तजै तनक्यों कर्णेन्द्रिय हीन न काय विनाशै॥ हस्तपदादिविहायरहै वपु नेवानहीं गो लग्नीन प्रकाशै। मंगलप्राणचलै तननाशत याहितप्राणस्वतं-चितभाशै ५८३ जायसुषुप्तिवसै जबप्राण तबै सबइन्द्रिन की गतिनाशै। ज्ञान कि कर्मकि वेदगा भातिहुँ जानै नहीं तन कोटि कुनाशै बुद्धिमनादिन भासिपरै कितजाय कियो दृढ़ चित्तनिवाशै। मंगलचेतन प्राणजगें सब याहितप्राण स्वतंचि तभाशै ५८४ विष्णु विरंचिमहेश सुरेशदिनेश निशेश फणी-श सुरेशा। राक्षसब्यास हृहस्पतिशुक्र पराशरव्यासहली-मिथिलेशा॥ देवशिष्ट सुधी प्रहलाद महामुनि आनहुजे शुचिसेशा। मंगलसर्वगृहस्थ सबाम भजैनिज आतमभाव सुदेशा ५८५ कौनु गृहस्थ दिगंबर कोजोपै आतम ध्यानरहैं चितएका। बंधन मोषविचारहन जीवहि अनंद मूरति शुद्ध विवेका॥ यायल वाथल भाव द्वितीयन शुद्ध सतोगुण पूरण टेका। मंगलजीवन मुक्तवहैमन दंभिननेतट वादअनेका५८६ मुक्तिकोदानि वहैपरमातम बंधन दानि वहै करतारा। जन्म कोदानि अजन्म कोदानि अभेदप्रदानि न आन विचारा॥ आपनिभूलमिटायभजै करुणाकरनामजो सांभ सबारा। मंगल जीवन मुक्तवहै शुचिज्ञान अभेद गहे श्रुति द्वारा ५८७ तूपरमातम सत्यसदा परिपूरण और त्रिलोक असारा। तू सतता सतिभासत नश्वर विश्वत सर्वहुहै अबि-कारा॥ कारण कारजएक नहोवत यद्यपि वेद वदैयकतारा। मंगल धन्य अहैपरमानंद जाहत अज्ञ तणाक पसारा ५८८ जागृत मेंभवकाज करै निजशक्तिसनैतन इन्द्रियमेरी सबचिलोकत हैमनद्वार अविमरहैसबठाम अहेरी। जाय सुषुप्तिमें साखि रहैजब इन्द्रियसर्ब अचेत न हेरी॥ मंगल सौतनआतमजानिय जाकहँ वेदवदै हरिटेरी ५८९ जेतिक व्याधि विषय रस होवत सो नहिं ताहि लगै मन माहीं

संतन को धन सतत ज्यों मन संतत के पद मो उरगेहा॥
संतन की महिमा चित भावत संतन के हित श्रावनि देहा
संगल दक्षिन ते गुरु दूरिहि राखिय सोहिं अहै भ्रम
एहा ५७५ कारण ब्रह्म नहिं भवको उपजै तेहिते पुनि ता-
हि समावै। कोउ भयो जग यारण काग्रहै आपु रचै पुनि
पालि मिटावै॥ होत रातंच बटै यक कोविद अन्तस्वछ-
न्दतयो जन गावै। संगल भूल मिटाय सकै नहिं कोटि
पुरान कुरान सुनावै५७६ एक कहै जगकारण कर्महि
एजधु पांचहि तत्व बतावै। है करतार सही यकभाषत
पैगम्बरन हार सुनावै॥ गावत एक कियो प्रकृती जग
श्रंत समेटि स्त श्रंग मिलावै। संगल भूल मिटाय सकै
नहिं कोटि पुरान कुरान सुनावै५७७ कंचन गर्भ ते
४ उपजो सब ग्रौ परिपालत हो मिलिणावै। योग सवैकर
एकहि भवकारण निश्चितस्त दृढावै॥ आपनिमाणिभली
सबको विदि गुंगरूहै तटि दंडन न पावै। संगल भूल मिटाय
सकै नहिंकोटि पुरानकुरान सुनावै५७८ योगिजती तपसी
बुधमौनि उदासिकधीश्वरज्ञानप्रवीनो।देवग्र देव मुनीश्वर
मूरखु भूपति रंकधनी बलहीनो॥ संतगृहस्य अधार्मिक
धार्मिक गातमभ्रानि समाधिहिभीनो। संगल कोउरहा
नसहोतन काग्रवणी सबको तन जीनो ५७९ निशभजै चक्र
जानर्मिर्न चक्रमाहि सनातन ब्रह्म विचारै। जैनबनै चहुंबौद्ध
हुवै अपपंयचलै निजपंथ बिहारै॥ न्यायपढैचेऊ सांख्यगढै
बऊदीन मुहम्मद को मितवारै। संगल कोउवचेन [illegible]
काकनतो सबको भपिडारै ५८० यातनआय स्वब्रह्म स्वरूप
चिनानंद संगल राखिकहावै। ताकर दूतनसै मनमोहन
वारिसुमोहन रूप लखावै॥ दृष्टि सुसंचट नित्य बिचारिय
पायक इंद्रिय कामगुणावै। संगल सोयस जानिभजै निज
आतम सापरमानंद पावै५८१ गापन भावन जानतनेकऊ
काके अपार पसार कावै। है तिनको फलवंधन सोय नवन्म
अनेकन बार धरैं॥ ज्योहतकोट कुशालि सुमंदिर आप-

भरमाती है। काहूड़ गुथलसुचि तनहिहेरों दुखिया ज्ञान नशाती है॥ सत संगति ते न्यारे डोलैं-विषयका बानि सुझाती है। मंगल जान ठगिनि ठग नाहिनअपना वदन चुराती है ५९७ सेवा करै अर्थ का पावै यहा धर्म बढ़ावैजू॥ तप फल सकल कामना पूजै भक्ति मोच दरशावै जू। चारो क्रिया ज्ञान गत बुध जन शोभा सुथल न पावै जू॥ ज्यों मंगल सुन्दरी नाक बिनु सदा निरादरभावैजू ५९८ ज्ञानी जिज्ञासु अर्थार्थी आरत नाम कहावै जू। सुजन चारिये प्रभुपद सेवकाविधावेद भरमावैजू॥ज्ञानकर्मओहै उपासना जिततितजेहि तेहिभावैजू।मंगल आतमज्ञान बिवर्जितनिज पदकोक्योंपावैजू५९९ख्युति निसिष्ट अद्वैतद्वैत बदिमुनि अद्वैत लखावैजू। मुक्तमुमुचु बिपयरत चैविधि श्रोतासुनि हर्पावैजू। तीनौ को यक भावहिलोकनि सोईहि कैसन आवैजू। मंगल जीवन मुक्त भवस्थल सोई स्थल सिधावैजू ६०० सवैया॥ आपनि भूल मिटाय सकैनहिं औरनकी कस बुद्धि सुधारै। आपुहि मूरख तूमन देखिय रैनि दिवाकर कानु निहारै॥ सानहि त्यागि मिटाय अहंपद क्योंनिज आतम कोन बिचारै। मंगल यों बहु लोग भ्रमे बिनु ज्ञानन श्रीहरि धाम बिहारै ६०१ आपनि बूभ भलीमन भावत आन कि बूभ गुणै सउपाधी। ज्ञान कथैन सुनै हितिये कि रहै बिपरीत कुसाधन साधी॥ बानि गहे निरवारा कि मारग धाइ चलै जो मताल कि काधी। मंगल साँच कहावतएक है आपनि और नहान कि आधी ६०२ मैं सत मारग में बिचरों सब मेरे चलैं सत मारग धाई। तू अभिमान भरो जनि तोरहु जात कुबाट गखे बहु धाई॥ मैं अब मोर जो तैं अब तोर गुणै स्युति रूप सोहै भ्रमताई। मंगल याहि निवारत जो जन जीवन मुक्त सो भूतल भाई ६०३ गंग औ कर्म बिनाशिनि को भ्रम औ मरु मालव की दुचिताई। ब्राह्मण अंत्यज उत्तम धाकर जीवनमृत्यु अमी विष पाई॥ देश अदेश गुणी अगुणी मुनि शोच अशौच किभून मिटाई।

संसृत के दुख औ सुख बंधन कोटि बिधान सतावत नाहीं॥ लिङ्गित इन्द्रिन के सँग देखिय पैनहिं लिप्तअलिप्त सदाही। संगल सातन आतम भाषिय बूझत जाहि सबै भ्रम छाहीं ५९० जानत तीनिउं लोक बिभूतिहि आपन थान रहैन चलै जू। चित्त अहंकृत धीमन को भरमावत है बिपयो कुथलै जू॥ काहू समय शुभ ज्ञान सिखावत सार असार कलै सकलै जू। संगल सोतन आतम जानिय जौन गहै अफलै सफलै जू ५९१ सूच्छम है मृतिका गति ते जल नीर ते सूच्छम पावक गाइय। अग्नितें सूच्छम वायु बिलोकिय मारुत ते नभ सूच्छम पाइय॥ व्योमते सूच्छम शब्द सदा पुनि शब्द ते सो अहंकार लखाइय। संगल सूच्छम है अहकार ते सो फिरि बुद्धि प्रत्यच्छ बताइय ५९२ देश बिदेश दिशा बिदिशा अध ऊरध में भरि पूर निहारिय। है सबमें न निवारत पंडित लच्छ कहू बिधा चितधारिय॥ पैन मिलै घन काहूयथा नभ कोटि उपाय नसौ निरधारिय। संगल व्योमकरि गाइ सकै श्रुति नेति कहै यहि हेतु बिचारिय ५९३ जाहि बिलोकिय या भवमे तेहि के सुख चाह उरस्यन व्यापै। या जग को सुखभोग बिषय करमाहि गहै अध जात सदापै॥ जानत गूढ न बूझत मूढ फिरै मतिहीन न पाठन जापै। संगल संतसदानँद पंडित आननको सखमूरति थापै ५९४ केतिक मारगमें भरम्यो मन बोध भयो न बिना गुरुपाये। आपनि आपनि बाट चलावत दूसर पंथ निहारि लजाये॥ क्यो फिरि ध्यावत तोष हिये जित टंभ तहान बिवेक सुहाये। संगल निश्चितजोगति पथान भूत किते हरिके गुण गाये ५९५ जो मन औ तन में नहि लागत या उपदेशत पंडित सोही। आपन भूमि अनेक भ्रम्यो भ्रम दूरि भयो न रह्यो मत द्रोही॥ क्यों हम सानत जानत जाहि न चेतन को जड रूप बटोही। संगल जाने बिना शुचि आतम बोध न होत कथा न दाधोही ५९६॥ छंद॥ माया जगत अपार देखिय तना सब्को

को स्वबग ध्यान में लागे॥ जोपै जाय कतऊं धिपवन ढिग तौ न करै अनुरागै दुष्टन के सँग बसै रैनि दिन पै न दुष्टता पागै।संगल निज आतम नितध्यावै चीन्है हंस न कागै ६११ जब मन शुद्ध सतोगुण आया। जो भ्रम रहै ब्रह्म मायाको जीवईश विविरूपा॥ सो अयएक भाव सों देखत सकल एक ही काया १ त्रिगुणनास त्रिधि हरिहर भाषत सर्ग स्थिति लयकर्मा ॥ सो विभाति नहिं एक ब्रह्म है तीनि नाम सौं गाया २ स्वर्ग नर्क अपवर्ग वासको आशसबै जग रांधा॥ बूझत जीव शुद्ध चित आतम कौनु विधागति धाया ३ आगम वेद उपनिषत देखौ क्या कहि जीवहि गावै॥ संगल बोध भयागुरु पाये भ्रम सतदूरि बहाया ६१२ ॥ सवैया ॥ केति कु ज्ञान सिखाय थके भणि केतिक न्याय गुणी समुझावै। केतिक वस्तु प्रत्यक्ष बताय पदारथज्ञान कि सिद्धि लखावै॥ केतिक तीरथ को चलिजाय न्हवाय कि मुक्ति सुपंथ बतावै। संगल ध्याये विना निजआतम कोटिकरै मन हाथ न आवै ६१३ या भवको सनकाम तजै प्रियबंधु सुतासुत नारि दुरावै। नग्न रहै तजि लाज सबै नित भोजन हाथ लगै तिलखावै ॥ नित्य विवेक अचार लियेरहै औ व्रतमें निज जीव दुखावै। संगल ध्याये विना नित आतम कोटि करै मनहाथ न आवै ६१४ जाय सुपंथ में मुण्ड मुडाय भ्रमाय दृगौ दिवि वायुग्रसोसो। बौध कि जैन कि शैव कि न्याय कि सांख्यक विष्णु विचारक जोसो॥ मुक्ति पदारथ खोजि मरै न तरै चकाई भवडारि फसोसो। संगल आतम बोध विना अध ऊरध को जगमें निवसो सो ६१५ बौध न जानत न्याव कथा अरु जैन न मानत शैव कि बानी। सांख्यक आदि लगे अपने मत दूसरमें नहिंबुद्धि समानी॥ जो हठरादि कि पद्धति गावत सोन महामुनि उत्तम ज्ञानी। संगल सारगहै सबकोतव बूझत आतमकी गतिमानी ६१६ एकारसूल बइत्तरि सिल्लत चारि किताब कहैं मतचारी। आपस में बकवादु करैयक दूसरको बदि क्षा फिरभारी॥

मंगल एकहि भाव विलोकत जीवन मुक्ति मनोहरता भाई॰
६०४ उत्तम ज्ञान गहे प्रभु सब्रत वंचकता न लगावनवैठो। आतम में लयलीन सदा तप साधन चोर कुकर्म नवैठो॥ काहू के वैर सनेह न बंधित दंभि कहै तिन को ठग डेठो मंगल साँचु कहावत है यह नाचिनआवत आँगनटेढो ६०५ एक बिमूढ कहै इम पंडित धर्म निरीश्वर को दरशावे एकअपार बखानत कालहि उत्पति इस्थिति नाश सभावे दोउनमें न सुजान विलोकिय जो निरधारि सुवस्तु बतावे मंगल सत्य सदा परमातम जो सब ठामन दृष्टिहि आवे ६०६ मानि परैन बिना गुरु अद्भुत देखि सुनी न कही निज आखो। क्यों दृढता मतिमें निवसै दुविधा बहु लोगन ग्रंथन भाखी॥ सारगहै तजिभूल असारहियाकार है निगमागम साखी। मंगल शुद्ध सतोगुण आनत बुद्धि रहै परमानँद माखो ६०७ सिंधु काहते अगाध लगै अरु बिंदुवदे अतिही लघुताई। सिंधन बिंदु रहै जलसो प्रभु दोउनसें इसिवानि सुनाई॥ ताहि विचारि सुजान रहे चुपि ईश्वर जीव दुभाव मिटाई। मंगल क्यो लघु दीरघ बूझत आन को आन विलोकि लखाई ६०८ सिंधुर ज्योंअति थूल कलेवर पैवहु जानत हौं लघु देही। तद्द पिपील गहे सुख अनहि बूझत हौं सनते बढिकेही॥ ज्यों गज हेरि पिपील भडै बड औ करि सो लघुते लघुतेही। मंगल जीव दुवो यक भावहि है तन गो सुधि आपुन एही ६०९॥ जिलुपद॥ प्रभु गति कहते नाहिं बनै। जो कहिये तो हृदय नहिं भासे ज्ञानीमूढ गनै। है सब मे अरु काहू में नाहिन ऐसी वेद भनै १ जडवत कहे जगत चैतनता चैतन जडै सनौरूप बखान अरूपहु आवत दुविधा रहत मनै २ कहियअकर्त्ता है पुनि कर्त्ता मौदह पूरअपनै। पालकलिखौ सँहारक सोई क्यों यकतान ठनै ३ यह निरधार करन हित संतौ सुनि जन य फेरनै। मंगलसो किमि बरनि बतावै माया तोरि तिनै ६१० यह मन बूझ भये भ्रम त्यागै। तजि रंगता विषय माया

मान कि साखि बसै दिलमें निज पाकन पान्ह छिपी मत
धारी। मंगल एक खुदाय सही छतमाहु दुतै सु प्रवीन अ-
नारी ६१७ दूसर को परमातम है तजि पावक तेज स्वरूप
त्रिलोका। जासु प्रताप तपैनभमे रविजीव प्रभाज्यहि अंश
बिलोका॥ तेज प्रकाश जहां लगु है सबुवेद जभास वदैक
अशोका। मंगल भूलग्रसे न सुनैहठ पंथगहे जड़ ज्यों शशि
कोका ६१८ व्योमहि ब्रह्म विचारत कौनऊ तर्क अपारन
सिद्धि दिखाई। चौदह लोक हटौहरिजु शशिभानु सुरा-
सुर बास लखाई॥ दृष्टिन आव अनादि अनंत अनीह,
अरूप अजन्म गनाई। मंगल ब्रह्म द्वितीयन बूझत ऊमरि के
फल कीट किनाई॥ ६१९ कोउ प्रभंजन की गतिहेरि भु-
लाय रहैत्यहि को शरणाई। आनहि ईश्वर जानत नाहिन
खेचर ज्यों नभ त्यागि न जाई॥ ध्यावत गावत मोह बिमं-
डित पूजत पूजतप्रेम बढ़ाई। मंगल वौनु बुझाय सकै विष
और बढै अहि दूध पिलाई ६२० संभव सर्व चराचर को
जल योग बिना नहिँ दृष्टिहि आवै। नीर अपार अखंड
असंडित सिद्ध,स्वतंत्रसुजीवहटावै॥ पूजतहै जलराशिसमो-
दितआतमसत्यनहीलखिपावै।मंगलज्ञानयथास्थिच चोरत
डांटिदिये त्यहि त्यागि न धावै ६२१ सेवतभानु विचारि
स्वतंत्रितआनँदसे नित साँझप्रभाता। ब्रह्मद्वितीय न मानत
कोटिऊज्ञान बखानि बुझाइयबाता॥ जानत तीनिऊलोक
प्रकाशित है रवितै नहिं आन बिभाता। मंगलसूर प्रका-
शत जो प्रभु ताहि न बूझत यो भ्रम जाता ६२२ जीवन है
थिकाया भव मंगल जो न स्वआतम की गति जानी। भोग
किये पशुली विषयी रसभूप धनी पदवी मतिसानी॥ अंत
अनेक विचार विमोहित देखिजगै छतवेद बखानी। स्वर्ग
अधोनिज कर्म समानहि भोग यहोरि धरो तन प्रानी
६२३ कोटिन,धाय मरे न तरे नर कोटिन भूप पियासहि
त्यागी। कोटिन मूरति पूजि थके पुनि कोटिन तापि थके
जग आगी॥ कोटिन ज्ञान बखानि चुपैरहु कोटिन छन्द

कवित्तहि पागी। मंगल ब्रह्मविचार विना चित चेत भयो न कबौं बुधि जागी ६२४ ज्ञान वहै जेहि ब्रह्म विचारिय। ध्यानवहै जेहि बुद्धि सुधारिय।पूजन सोइ चितानँदराशिहिपूजि सदा परमानन्द धारिय॥ इन्द्रिय निग्रह है तप साधन पाठ कि धौं अजपा निरधारिय। मंगल शुद्ध सतोगुण सोइहै जावत मूरति आपु निहारिय ६२५ मिश्रित कीन्ह सबै मत सन्तन सिद्धि पदारथ एक भयो है। द्वैत अद्वैत बिचारि लियो दृढ़ मारग में पशु सत्य दयोहै॥ भूल मिटे भ्रम टूटि भयो प्रभुके पद नेह समोद छयो है। मंगल है पुरुषोत्तम सत्य असत्य कि आंखि जहां चितयो है ६२६ जो अब बूझ भई मनमें सो कहै न बनै न लिखे बनि आवै। गाये बनै नबताये बनै समभावत सैननमें न समावै॥ ज्यों षटहू रस मिश्रित जो रस सो कस पंडित भाषि बतावै। मंगल संत सदारत आतम सो यह भेद सबैलखि पावै ६२७ तापबिना न छुटै भवदोष विषय रसमें मनधाइ मरै॥ सत्य असत्य अशुद्धबशुद्ध न बूझत मूरखताइ धरै। कोटि उपाय विधान क्रिया करि भूषक्रिलाय न काज सरै। मंगल तोष भये दृढ़ता उर बास लहै सत संग करै ६२८ शांति बिहूनन क्रोध कि पावक नाशत कोटि उपायन सौंरै। मोह मिटे न सधै तपसा शुचि कर्मन के न चलै मन जौंरै॥ काम कला निवसै उर अंतर खोजत नित्य विषय सुख कौंरै। मंगल शांति भये सुख सम्यक पावत जीव समोद अजौंरै ६२९ चित्त सतोगुणि बूझि भये उपजै उर सात्त्विक ज्ञान अमाया। जाहि लहै चित चेत न बूझत त्यागि दुवौ भ्रम पुण्य अदाया॥ स्वर्ग अधोन बिचारत सो जन पाकन पाकस नारि अभाया। मंगल पंच स्वछंद विचारत सन्त सदा भव में लहि काया ६३० ज्ञान बिना सत संग न आवत संग त्रिभाति सुमारग केरै। श्री गुरु पुस्तक साधु बतावत जो नरमैं भ्रम दोष निबेरै॥ सोगुरुता बिभुता थिरता जन पावत सत्य भणे कहि टेरै। मंगल ज्ञान

मान कि बागि बसै दिलमें निज पाकन पाक छिपी मत धारी। मंगल एक खुदाय सही क्षतवादु दुतै जु प्रवीन अनारी ६१७ दूसर का परमातम है तजि पावक तेज स्वरूप विलोका। जासु प्रताप तमैनभमें रविजीव प्रभाज्यहि अंश विलोका॥ तेज प्रकाश जहां लगु है सजुवेद जभास वदैक अशोका। मंगल भूलग्रसे न सुनैहठ पंथगहे जड़ ज्यों शशि कोका ६१८ व्योमहि ब्रह्म विचारत कौनहु तर्क अपारन सिद्धि दिखाई। चौदह लोक हरीहरिसू शशिभानु सुरासुर बास जगाई॥ दृष्टिन आव अनादि अनंत अनीह अरूप अजन्म गनाई। मंगल ब्रह्म द्वितीयन बूझत जमरि कै फल कीट किनाई॥ ६१९ कोउ प्रभंजन की गतिहेरि भुलाय रहैत्यहि को शरणाई। आनहि ईश्वर जानत नाहिन खेचर ज्यों नभ त्यागि न जाई॥ ध्यावत गावत मोह विमंडित कूजत पूजतप्रेम बढ़ाई। मंगल कौनु बुझाय सकै विष और बढै अहि दूध पिलाई ६२० संभव सर्व चराचर को जल योग बिना नहिँ दृष्टिहि आवै। नीर अपार अखंड असंडित सिद्ध स्वतंत्रसुजीवहढावै॥ पूजतहै जलराशिसमोदितआतमसत्यनहीलखिपावै।मंगलजानयथास्थिच चोरत डांटिदिये त्यहि त्यागि न धावै ६२१ सेवतभानु विचारि स्वतंत्रितआनँदने नित साँभप्रभाता। ब्रह्मद्वितीय न मानत कोटिकुज्ञान बखानि बुझाइयवाता॥ जानत तीनिहुलोक प्रकाशित है रविते नहिं आन विभाता। मंगलसूर प्रकाशत जो प्रभु ताहि न बूझत क्यों भ्रम जाता ६२२ जीवन है धिकया भव मंगल जो न स्वआतम की गति जानी। भोग किये पशुलों विषयी रसभूप धनी पदवी मतिसानी॥ अंत अनेक विचार विमोहित देखिजगै क्षतवेद बखानी। स्वर्ग अधोनिज कर्म समानहि भोग बहोरि धरो तन आनी ६२३ कोटिन धाय मरे न तरे नर कोटिन भूप मियासहि त्यागी। कोटिन मूरति पूजि थके मुनि कोटिन तापि थके जग आगी॥ कोटिन ज्ञान बखानि चुपैश्रव कोटिन छन्द

दुःखनश्रावा। मंगल चित्त विचार घरैसन ईशकितै बिन जीव कहावा ६३८॥ कवित्त॥ मानकोन त्यागै मन दीनता को दूरिगन प्रीतिन प्रतीति सन संत रूप धारै है। लोभ कोनिवास तन हिये नाहीं ज्ञान वनखोजै प्रतिहार धन कंतको विसारैहै॥ तोपनाही एक घन वेद औपुराण अन बाधे आन नारि जन दंतकथ्य टारैहै। मंगल प्रवीन बन ध्यानन को तुच्छ गन कूरधौं विनोदैरन अस्त्र दूरि डारै है ६३९ ब्रह्मको बखानै जाहि वेदहू न जानै बानिदै निर वानै मोह माया चित्त बासीहै। ज्ञान गीत गानैऔ प्रमा-ण कोटिथानै झूठीबात अनुमानै द्वैत कायामें विलासीहै॥ ऊंच नीच जानै हरि दासन पिछानै जौन चार देह मानै मोह छाया धौंविनासीहै। मंगल नठानै एक भावन समा-नै और दुःख सुखमानै तातें कैसोधौं उदासीहै ६४० जहां देखौ तहां एक रूपको विलास होतभांति भांति आयत प्रमाण ज्ञान मानीहै। भिविधि किताब ग्रंथ एक भाव सत्य कहै द्वैतनाहीं शून्य वादै बौध जैन मानीहै॥ पंचन कीबात किप्रणाम भूमि स्वर्ग लोक एक नर यात तात कौने सत्य मानीहै। मंगलको भापैशून्य एककोन भाव दासै बड़ोभ्रम भासैजाकी कथानकहानीहै ६४१ जाको बुद्धि गावैताको बानि न बतावै जाहिबाणिसमुझावै सोनावद्धिहूप्रमानैहै॥ कानन्को काम कहां आंखिकर पावै अरूनैनन को काम करै श्रवण बखानैहै। जाको जौन काज तौन करत स्वभाव नित्य दूसर नजानै व्यवसावै झूठठानैहै॥ मंगल सुजान संत जांचि देखैं कोटि भांति शून्य कोअभाव इहां एकही प्र-धानैहै ६४२ एकतन सकल समाज भूमि देखियत नाकहू में एक रूप तारागण भासैहै। देवगुरु दैत्य गुरु होतन ख-गेशसूर कीटऔपतंग एक कायामें निवासैहै॥ एक भूमि नीरवायु पावक सव्योम देव द्वितिय नहोत यदि मिथित विकासैहै। मंगल सुजान संग जांचि देखैं बारबार शून्यको अभाय इहांएकही प्रकासैहै ६४३ देहबिनु जीवको नि-

उपाय न भूतल वेद किताब अनेकन हेरे ६३१ ॥ कवित्त ॥
अनघ अपार आदि एकन अनादि सब ठामन में एकको
द्वितीय करि गाइयै। रूप औ अरूप दोउ ब्रह्म ही के भेद
भाव सत्य औ असत्य ते न जासुभेद पाइयै॥ केतिक विचा-
रिगये केतिक विचारैं आगे केतिक विचार हात चित्त चुप
लाइयै। मंगल को जानै जो अज्ञान नाश भापियत दुविधा
दुराय ताकी लीजै शरणाइयै ६३२ ॥ सवैया ॥ ब्रह्मते बुद्धि
भई उत्पन्न बढ़ै सुनिज्ञान निधान प्रवीना ॥ बुद्धिते तत्त्वरू
तत्त्वतिधातु सुधातुते जन्म वनस्पतिलीना॥ जन्म वनस्पतिसे
पशु कोपसु तेनरऔनर तेसुरचीना। मंगलदेव मिल्योप्रभु
मेंयह मारग कुंडल जीव अचीना ६३३ देवशरीर कुकर्म
विमोहित होत मनुष्य सुबुद्धिअमाना। आतमभूलिपशूनर
होवतऔपशुतेजोवनस्पतिमाना॥ होत वनस्पतितेजडधातु
सुधातुतेतत्त्वस्वरूपसमाना॥ मंगलतत्त्वतेबुद्धिभयोबुधितेप्रभु
लीनविलोमवखाना६३४ ज्ञानकहां मन द्वैत विखंडित कर्म
कहां यदिजीव अनूपा।कौनुउपासक सोऽह विमर्जित आप
कहां यदिएक स्वरूपा॥ पाठकहां अनुमान विचारतपूज-
नको निरवाण निरूपा। मंगल मुक्त कहांभव बंधित कौनु
प्रजा यदि होइन भूपा ६३५ द्वैतकि ज्ञानविहाय विना
शतकर्मकि छूटतजीव विजाने। छूट उपास्य कियागि असो-
ह छुटै जप धौंकि विनायक ध्याने॥ पाठकि छूटविनानिर-
लोभ किपूजन छूट निरातम ज्ञाने। मंगल बधन मुक्ति कि
छूटअहम्मद संत विषय रस साने ६३६ सत्य कहांको अस-
त्य नहीं अरु लोक कहांको अलोकन गाइय। देवकहांको
अदेव अभासित ज्ञानकहां जोअज्ञान प्रमाइय॥ हद्दिकहां
जोपै धानिन सज्जन कौनु असज्जन जोन बताइय। मंगल
चित्तविचारु अरेमन ईश कहां सोअनीश मिटाइय ६३७
कोकरतार जोसृष्टि नहीं अरु कोभरतार जो दास अ-
भाया। ठाकुर कौनु प्रजाविनु भापत सज्जन कौनु अनुज्ज-
न धाया॥ कोधनवान जोरंक नहीं अरु सौख्यकि तैजोपै

आनिपरो शरणागत तेरी ६५० कर्मकिये जग नर्क निवास केख्यों अब होंउं सुधासब सेरी। निद्रक पंथ गह्यो निशि वासर त्यागि सुवाट जोमुक्ति किढेरी॥ नीच प्रसंग नसाधु समान विवाद किये बहु ग्यान निवेरी। संगल कौन गर्लो जगसोप किआनि परो शरणागततेरी ६५१ जात जितै तित सोइ पयो निधिकाम समीर कुवीचि करेरी। मुक्ति उड़ो भरमै नर है थिर खेवक ज्ञान थक्यो बुधि मेरी॥ कर्म विवाद उडै पतवार सहाय नकोउ कहूँ जेहि टेरी। संगल कौनगलो जगसोप किआनि परो शरणागत तेरी ६५२ शुद्ध स्वभाव न होत खघी इत कर्म उपायन सों चित हेरी। जो समुझावत सोन शुनै मन आनकि आन बढ़ै बहुतेरी॥ सत्य असत्य गुणानि करै नृप औ कतहूं नरकौ खल टेरी। संगल कौनगलो जग सोपकि आन परो शरणा गत तेरी ६५३ भोजन जानि दया करिकै करशीश धरो पकरो क्षुन मेरी॥ तौंअसहीन तजौं भवसागर जाय नशाय अधोरध फेरी। नातरु यौंहि भ्रमो भव वीथिन संसृत में दुखसौं भट भेरी॥ संगल कौ।नगलो जगसोप कि आन परो शरणागत तेरी ६५४ कोउ तरै करि तीरथ सेवन कोउ तरै इत साध न साधी। कोउतरै करिनेमअचारनि कोउतरै मनको इत व्याधी॥ कोउतरै पढ़ि वेदपुराणनि कोउ तरै प्रभुनाम अराधी। संगल कैसेतरै करुणाकर कीन्ह सुकर्मनहो जग आधी ६५५ ज्ञान गुणे तरिगे कितने करि योग समाधि तरे कितने हैं। तापस रूप बनाय तरे बहु गाय तरे वहुनाम सने हैं॥ पाठ किये बहु मोचि गये करि गाय अनेक स्वमुक्त भने हैं। संगल कैसे सुचै करुणाकर एकहु भांति न कर्म बने है ६५६ संत समानहि सेदृसुचे बहु पूजत मूरति भक्त भयेहैं। कंच प्रभाव लही बहु मुक्ति अगढ गुणे भ्रमरूप हये॥ है धारा अवाध विवेक सुचे बहु ध्यान अखंड शिवै चितये है। संगल कैसे तरै करुणाकार एकहु अंग न शुद्धभयेहै ६५७ बंधन कोयक भाठमखानि

वास कौनु भापि सकै जीव हीन काया कौन बलत उप-
है। आतप बिहायन प्रकाश भानु भापियत भानु ह्वै
आतप न चिपुर लखायहै॥ पितु बिनु सूनुन प्रमाणतन सु
बिनु पितहूं कहावै ऐसो दुबिधा को भायहै। मंगल सुन
न संत बाचिदेखैं बारबार तैसे ब्रह्ममाया एकद्वैतमें हढार
है ६४४॥ सवैया॥ देवन मेंसन सर्व समर्थजोदेव अशेसोल
मन चीती। दुष्टनमें जडता अति देखिय जैन भनेसुर सो
प्रतीती॥ दानि अभिप्रिय देवफली बिनु पास गये का
द्रव्य चहीती। मंगल काम कलानि लिये नित ध्यावत दे
विषय मति जीती ६४५ दीप सुगंधि लिये जलगंग सम्रे
सदेवन कोमन मोदैं। पाय मनारथ होत प्रमोदित को
टिक ज्ञान सुनैन बिनोदै॥ ज्यों रस नीरस एक नहोवत
त्योंहत काम अकाम प्रमोदैं। मंगल एक गहै सुख होवत
दोउनमें किमि जाय दुकोदै ६४६ मुक्ति दई प्रभु कोटि
को बिनु युक्तिवटै कवि कोबिट ज्ञानी। स्वर्गनिवास अपा
रनको तुम दीन्ह दयाल स्वधीजन जानी॥ कैतिक गो
पुर में बिलसेनऊ सत्य सुलोक बसेवर प्रानी। मंगल को
नहिं नर्क बिहाय बसाय सकौ काऊ सारंग पानी ६४७
पुण्य प्रभाव तरे कितने नर कैतिक मोक्ष भये व्रतधारी।
पूजन पाठन सौंयश मेटि भये बहुधा जनस्वर्ग बिहारी॥
योग बियोग लियेभय कैतिक जाव समीप बसे सुखकारी।
मंगल केशिर पातक गाठरि क्यों तुमतारि सकौगिरिधा-
री ६४८ जाकर पूजव पुण्य प्रकाश दयाकर ताकहं तारि
दयोहै। बांछित कर्म किये भव उत्तम ताफल उच्च अवास
लयोहै॥ पूरब पुण्य नजीवत वैठात जन्म कुसारगमें बित-
योहै। संगम काकस तारि सकौ प्रभु यामनमें जिय
शोच भयोहै ६४९ कौनु दुराव अहै तुमसौं प्रभु जानतहौ
मन कीसन मेरी। आठऊ याम न भावतहै जग पाप बिहा-
य बिषय मति फेरी॥ ज्ञान बिराग बिबेक नगावत काम
कथा किउछाहु घनेरी। मंगल कौन गली जगमोप कि-

आनिपरो शरणागत तेरी ६५० ज्ञासंकिये जग नर्क निवास केवलों अब होंउं सुधासब सेरी। निद्रक पंथ गह्यो निशि बासर त्यागि सुवाट जोसुक्ति कि ढेरी॥ नीच प्रसंग नसाधु समान विवाद किये वज्ञ ज्ञान निवेरी। मंगल कौन गलो जगमोष किआनि परो शरणागततेरी ६५१ जात जितै तित सोह पयो निधिकाम सरीर कुवीचि कारेरी। मुक्ति उड़ो भरमै नर हेधिर खेवक ज्ञान यको बुधि प्रेरी॥ का- र्म विवाद उड़े पतवार सहाय नकोउ कहूँ जेहि टेरी। मंगल कौनगलो जगमोष किआनि परो शरणागत ते री ६५२ शुद्ध खभाव न होत खधी दृत कर्म उपायन सों चित ढेरी। जो समुझावत सोन गुणै मनआनकि आन वढ़े वक्रतेरी॥ सत्य असत्य गुणानि करै चुप औ कतर्क्क व- रणै खल टेरी। मंगल को नगलो जग मोषकिं आन परो शरणा गत तेरी ६५३ जोजन जानि दया करिकै करधीश धरो पकरो भुज मेरी॥ तौ असहीन तरौं भवसागर जाय नजाय अघोरध फेरी। नातरु यौंहि भ्रमो भव बीथिन सं- सृत मे दुखसौं भट भेरी॥ मंगल कौनगलो जगमोष कि आन परो शरणागत तेरी ६५४ कोउ तरै करि तीरथ से- वन कोउ तरै व्रत साध न साधो। कोउतरै करिनेमअचा- रनि कोउतरै मनको व्रत व्याधी॥ कोउतरै पढ़ि वेदपुरा णानि कोउ तरैप्रभुनाम अराधी। मंगल कैसेतरै करुणाकर कीन्ह सुकर्मनहीं जग व्याधी ६५५ ज्ञान गुणे तरिगे कि- तने करि योग समाधि तरे कितने हैं। तापस रूप बनाय तरे वक्र गाय तरे वक्रनाम सने है॥ पाठ किये वक्र मोचि गये करि गाय अनेक रसमुक्त भने हैं। मंगल कैसे सुचै करु- णाकर एकहु भांति न कर्म बने है ६५६ संत समाजहि सेइसुचे वक्र पूजत मूरति मुक्त भयेहैं। संच प्रभाव लही वक्र मुक्ति अगढ गुणे स्वरूप हये॥ हैं वास अवाप विवेक सुचे वक्र ध्यान अखंड शिवै चितये हैं। मंगल कैसे तरै करुणा- कर एकहु अंग न शुद्धभयेहैं ६५७ कंचन कोयक झूठवखानि

निर्वक्छन्दे प्रमाणत गुह्य कहावे। शून्य विचारि विमोहत हैं यक आपन ग्रंथ प्रसिद्ध सुनावै॥ एकन मूरति तीर मानत व्यापकजानि भली गतिपावैं। मंगलकैसेतरै करुणाकर एकहु भाति न जीय दृढ़ावै ६५८ पण्डित के बल बुद्धि प्रसिद्ध कहै कविको बलबाणि सुहावन। गौरव को गुरु को बल देखिये शिष्य सुमंत्र लिये दृढ़ भावनि॥ ज्ञान बली धनमान बली बलवान बली पद उच्च प्रभावनि। मंगलकौ नुभरोस करै प्रभु देहु बताय परौ मन तावनि ६५९ विष्णु पदसब विधि विषय कसोमन खामी। जतनअनेककिये यांभव तल छोड़ं नाथ अनुगामी॥ मैन सदृढ़ मनभयो कृपानिधिहौ तुम अंतरयामी १ कौ दुराव तुमसन करुणाकर मोह मलिन श्री कामी। किये अपार कुकर्म देहधरि अजामील को नामी २ सो भ्रम समुझि होत मनबावर भूतकाल गति धामी॥ क्यों निरवाह होइ गो हरिजू क्रूर भये संग्रामी ३ अखिल ज्ञान विज्ञान निरसरस बूझि धाम परधामी। मंगल शरण गही प्रभुतेरी तारिय द्विज बरगामी ६६० आनकौनकी शरण गहौंहौं॥ देखिनपरत द्वितिय दाया निधि टीन पाल पुर तीनौं। निज स्वारथ रथ सकल वेद बद फिरिकास सुगम लहौंहौं॥ १ ॥ केतिक जन्म बूझि बिनु भटक्यो सेवत चरण थकानौं। हारिमानि तुव पद रजवन्दी अब अघ ओघ दहौहौं २ जो भय रहैं नर्क सुर पुर को सो मनते बिसरायो॥ बंधन मुक्ति दुनौ कारण निधि तुव पद तजिन चहौंहौ ३ दुख सुख को व्यवहार देह धरि नर्क स्वर्ग सोइगायो। मंगल प्रभु पद रजशिर लायत को सुद बरणि कहौंहौं ६६१ जानि परी तमहीं जन तारण। अबलगि रहै महा भ्रम चितमें निखिंथ ग्रंथ नतिलागी॥ सो भ्रममिटो भयोतुअ पदरज नेह सभोद अकारण १ दास विपति नाशकन द्वितिय प्रभु त्यागि तुमहि तिहुं लोकनि॥ बासव कोपजानि रच्योइन गिरि कीन्हो नखधारण २ नचवाम समग्रंथ विरचि तहँ

पांडु सुतन दियबासा॥ पावक प्रबल अर्द्ध निशि प्रज्वलित तुव प्रभु कीन्ह निवारण २ द्रुपद सुता लज्जा गोपिन प्रण तुम राखो बनवारी॥ मंगल शरण गही करुणा कर अब करिये उद्धारण ६६२ आपन मोह कहौं अब कासन॥ वेद पुराण कुरान ग्रंथबहु रचे गुणिन गुणिहौमें॥ त्यहि मारग विचरत सुख भवतल होत मोद शुचि दासन १ जो विपरीत चलतनिज पथते तजि मर्याद पुरानी॥ त्यहि विलोकि जग कारत बतकही यहजड़ धर्म बिनाशन २ जित तित अब निंदक मत देखिय गहत सकल जनहीते॥ मिटी मेड़ श्रुति कलि दिशि चारौ युग प्रभावहै तासन ३ प्रथम सोर मन अचल सचल अब सचल अचल पहिचानो॥ मंगल चंपकि रहीगनि भाख्यौ त्यागिनाम गरुड़ासन ६६३ निज मनकी मन धरौ चुराई॥ गुप्त प्रगट इत है मत देखिय दूनौंकी निपुणाई॥ यक अंतर यक बाहिर हेरत निजनिज बूझ बडाई १ तिमि निरगुण सरगुण की गणना यथा अग्नि युगरूपा॥ एक हश्य यक काष्टान्तर है क्यों बड छोट लखाई २ कष्ट सहित यक मिलत सुलभही प्रगटगुप्त मिलिजाई॥ सन्त सुजान ज्ञान मूरति जे ते समुझौ चितलाई ३ अगुण सगुण तनजीव कथाहै यक बिनु द्वितिय को जानै॥ मंगल यहि कारण तन धरिकै भजिय सदा यदुराई ६६४ पालो काहिन सेवक जानी॥ जिनहि देखि शिव यल तजि भागे जानिगोत्र बधकारी॥ समर भूमि तिनकी रक्षाहित प्रणत्यागो रुचिमानी १ भिक्षा द्वारदेत कोउ नाहीं द्विज व्याकुल युतनारी॥ भुज भरि भेटि दई संपति त्यहि गिरा न सकत बखानी २ मगध नाथ गृह भूमिपालगण बन्दि परे दुखरूपी॥ ते तुमहीं मोचे लखि अधमय जरा सन्धि खल भानी ३ यहि प्रकार अगणित जन भव तल मालें पालत पालौ॥ मंगल दीन शरण तुव मोहन हरिय बिपति सुखटानी ६६५ अबको आनभजौं गिरधारी॥ जानि बूझिजन बल्लभ श्रीप्रभु बनौ मूढ़ अधिकारी॥ मोहि त्यागि गहौं

विज्ञान यहा नहीं चित्त संताप कामादि को सत्य ध्यान नहीं मोच रथ्या कहुं दृष्टि आवै जितै हौं चलाऊं सुध बुद्ध जानै। सबै आसको त्यागि हौं पाहि श्री श्याम मे योग जोहो दूसो देऊ थानै ६७८ कहा कीजिये जाइ धाइ को आस कोऊ नहीं मुक्ति को पंथ देखौं। बड़ो दंभ आचार हेरौं निराचार अद्यापि निर्मोहनो ग्रंथ लेखै बनै सोन मोसों जुहै वेद गाये। पुराणादि भाषा सुकर्मी विशेषौं। यहै शोचकै चाहि है पाहि श्री श्याम हौं दूसरो मुक्ति दाता न पेखौं ६७९ तुम्हीं सत्य संज्ञा तुम्ही सत्य बाणी तुम्हीं अव्ययी आदि अंता वखानी। तुम्ही देव दाता तुम्हीं वेद धाता तुम्हींसर्वज्ञाता अवादी सवानी॥ तुम्हीं कौतुकी योई धोएक काया तुम्हीं दिग्गजौ दैत्य मानापमानी। नहीं दूसरो चाहि पटास हेरौं वदौं श्याम श्रीश्याम ज्ञानानु मानी ६८० तुम्हैं औ हमैं कौनु एकत्व भासै तुम्हैं औ हमैं द्वैतको मूढ़गावै। तुम्हैं औ हमैं स्वामि औ भृत्यदेखै तुम्हैं औ हमैं देवता पुंस भावै॥ तुम्हैं औ हमैं को अनीशीस जानैं तुम्हैं औ हमैं बूझि आपैस-मावै। तुम्हैं औ हमैं जोन जानै महाराज सोई महामूढ़ ह्वै पंथ धावै ६८१ तुम्हैं औ हमैं गाइके बोध पावै तुम्हैं औ हमैं ध्याय भेटे दुभावै। तुम्हैं औ हमैं पूजिके जन्महारै तुम्हैं औ हमैं जाचि दारिद्र दावै॥ तुम्हैं औ हमैं वन्दि वन्दै न आनै तुम्हैं औ हमैं एकही चित्त लावै। तुम्हैं औ हमैं जोन जानै महाराज सोई महामूढ़ ह्वै पंथ धावै ६८२ तुम्हैं औ हमैं बूझतै द्वैत नाशै तुम्हैं औ हमैं शोचतै द्वैत आवै। तुम्हैं औ हमैं सत्य औ झूठ जानै तुम्हैंऔ हमैंधन्य बाणी सुनावै॥ तुम्हैं औ हमैं एकही रूप देखै तुम्हैं स्वा-मिजूलों हमैं त्यागि गावै। वहै संत ज्ञानी गुणी ब्रह्मध्यानी नतो मूढ़ भूलो दुवो पंथधावै ६८३ करै जोई तू नाथ सोई भलो गाय कोई नहीं साथ मांया बसेरो। परो द्वार तेरे न जानों [illegible] नहीं न [illegible] दास तेरो॥[illegible]

औ उदासीनास तेरी दयासिंधु पापी बड़ो हौं किधौं मोह मेरी। बड़ौं दीन बानी सुनौं श्यामश्यामा गहौ बांह मेरी रहैमान मेरो ६८४ अहौ नाथ तारे किते तारिहौं सांचु मोकों लखेकों गही मौन बानी। बड़ो भिक्षु ह्वैं टरौं गोन टारो सुभिक्षा लहौं जो किते धा बखानी॥ नतौ भी तनौं द्वार रैहों परो आरि माढी सुतैका करोगे अमानी। यहै शोचिके मोंगियें सुनु श्रीश्याम दीजै बसेरो निजै राजधानी ६८५ ॥दोहा॥ समरथ सब विधि नाथ तुम भापत वेद किताब। मंगल को दुख दारियै अबन सहै नो ताब ६८६ जैयी गुरु जै श्याम जू जैति सन्त छलहीन॥ जैति सार बानी कथन जैजन हरिमद लीन ६८७ उक्ति युक्तिकरिसप्तमतसार कहा चित लाय। लिखितसातहू वि-बुध जन बूझिहि बाणि सुभाय ६८८ निज मतपर मत बहु मतो पच्छ अपच्छ बखान॥ शिक्षामत सर्वांग युत कियेसात परमान ६८९ समुझि सप्त मत संत जन बूझै सहित विवेक बूझ भये सर्वांग की तजै बादिनी टेक ६९० मूढ़ पढ़ै स-मुझैनहीं निंदककरैंबिचार। कौमतिगुणजानेबिनाज्योंमणि तजैगवांर ६९१ आतम बादीमन्नबिद विज्ञानी जो प्रवीन सोसमुझैगोमुदितमन मणिजौहरि कबदीन ६९२ सत्यबस्तु औ सत्यमतसत्यरूप सतकाय॥ क्योंसमुझै माया ग्रसित कर्म बशीभवआय ६९३ गोपुरमें प्रभुशरणपरिजीवकतारथहोत॥ दूहां ध्याय श्रीश्याम पद पावत परम उदोत ६९४ अपनी करणी सबतरै हरि करणी संसार॥ मंगल यहजाने बिना माया बश्य यमद्वार ६९५ जो अपनी मति मोह मय औ सतसंग बिहीन॥ तौन बोधनी गाइयै रहै भर्मस्थलदीन ६९६ राणा राम सुनाम शुभ श्रीबासी कायस्थ॥ बसत ग्राम स-रही सदा निज मत काया सुस्थ ६९७ बुध गणेश तिनके तनय हरि सेवक त्रैकाल॥ तिनके सुत निज मत सदृढ़ भये बिहारी लाल ६९८ महा शुद्ध मति छल रहित तिन तन बकसी राम॥ तिनको बालक मूढ़ मति हौं मंगल सम

नाम ६९९ किये काव्य बहु हरिकथा ज्ञानमार्ग बिस्तारि॥
बोध भयेयह सप्तसत बरनौ सुमन बिचारि १००॥

महि गुणमय खग भूमियुत संवत अश्विनि मास।
प्रतिपद शुक्लावार रवि पूरण ग्रंथ निवास १०१॥

इतिश्री सत्समस्त अज्ञान तिमिर सूर प्रकाशिका सर्वसिद्धान्त
सप्तसतिका भगवत दास विरचिता
समाप्ता॥१॥